डीएलएड, प्रथम वर्ष

हिंदी का शिक्षण

(प्राथमिक स्तर के लिए)

DELED-10

मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय – भोपाल

MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY - BHOPAL

Reviewer Committee

1. Dr. Mamta Bakliwal
   Professor
   Rajiv Gandhi College, Bhopal (M.P.)

2. Dr. Anil Prakash Shrivastava
   Assistant Professor
   I.E.S. College Of Education, Bhopal (M.P.)

3. Dr. Pushpita Rajawat
   Assistant Professor
   Rajiv Gandhi College, Bhopal (M.P.)

Advisory Committee

1. Dr. Jayant Sonwalkar
   Hon'ble Vice Chancellor
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)

2. Dr. L.S.Solanki
   Registrar
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)

3. Dr. Hemlata Dinkar
   HOD, B.Ed.
   Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal (M.P.)

4. Dr. Mamta Bakliwal
   Professor
   Rajiv Gandhi College, Bhopal (M.P.)

5. Dr. Anil Prakash Shrivastava
   Assistant Professor
   I.E.S. College Of Education, Bhopal (M.P.)

6. Dr. Pushpita Rajawat
   Assistant Professor
   Rajiv Gandhi College, Bhopal (M.P.)

COURSE WRITER

Dr Urmila Dinkar Patil, Retd. Prof., J.D.M.V.P Samaj's Arts, Science and Commerce College, Jalgaon, Maharashtra
Units: (1-13)

Copyright © Reserved, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal

All rights reserved. No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the Registrar, Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal.

Information contained in this book has been published by VIKAS® Publishing House Pvt. Ltd. and has been obtained by its Authors from sources believed to be reliable and are correct to the best of their knowledge. However, the Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal, Publisher and its Authors shall in no event be liable for any errors, omissions or damages arising out of use of this information and specifically disclaim any implied warranties or merchantability or fitness for any particular use.

Published by Registrar, MP Bhoj (Open) University, Bhopal in 2020

VIKAS®

Vikas® is the registered trademark of Vikas® Publishing House Pvt. Ltd.

VIKAS® PUBLISHING HOUSE PVT. LTD.
E-28, Sector-8, Noida - 201301 (UP)
Phone: 0120-4078900 • Fax: 0120-4078999
Regd. Office: A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi 1100 44
• Website: www.vikaspublishing.com • Email: helpline@vikaspublishing.com

SYLLABI-BOOK MAPPING TABLE

हिंदी का शिक्षण (प्राथमिक स्तर के लिए)

Syllabi	Mapping in Book
खण्ड–1 भाषा (उत्पत्ति, क्षेत्र, महत्व) **इकाई–1 भाषा की उत्पत्ति** • भाषा का अर्थ • भाषा की परिभाषा • भाषा की विशेषताएँ	**इकाई 1 :** भाषा की उत्पत्ति **(पृष्ठ 3–16)**
इकाई–2 हिंदी का स्वरूप • वर्ण (स्वर और व्यंजन) • शब्द • वाक्य	**इकाई 2** : हिंदी का स्वरूप **(पृष्ठ 17–31)**
इकाई–3 हिंदी भाषा का क्षेत्र • ग्रामीण • प्रादेशिक • राष्ट्रीय • अंतर्राष्ट्रीय	**इकाई 3** : हिंदी भाषा का क्षेत्र **(पृष्ठ 33–44)**
इकाई–4 हिंदी भाषा का महत्व • बौद्धिक विकास • संवेगात्मक विकास • सांस्कृतिक विकास • आर्थिक विकास	**इकाई 4** : हिंदी भाषा का महत्व **(पृष्ठ 45–59)**
खण्ड – 2 पद्य एवं गद्य **इकाई–5 पद्य शिक्षण** • पद्य का अर्थ • पद्य के प्रकार • पद्य वाचन (आरोह–अवरोह, यति–गति)	**इकाई 5** : पद्य शिक्षण **(पृष्ठ 61–79)**
इकाई–6 गद्य शिक्षण • गद्य का अर्थ • गद्य की विधाएँ • गद्य वाचन	**इकाई 6** : गद्य शिक्षण **(पृष्ठ 81–99)**
इकाई–7 कथा शिक्षण • कथा का स्वरूप एवं परिभाषा • कथा के तत्व • कथा के प्रकार	**इकाई 7** : कथा शिक्षण **(पृष्ठ 101–112)**
इकाई–8 जीवनी शिक्षण • जीवनी का अर्थ • जीवनी की विशेषताएँ • जीवनी के तत्व	**इकाई 8** : जीवनी शिक्षण **(पृष्ठ 113–122)**

खण्ड – 3 व्याकरण

इकाई–9 व्याकरण शिक्षण — **इकाई 9** : व्याकरण शिक्षण **(पृष्ठ 123–134)**

- व्याकरण का अर्थ
- व्याकरण की परिभाषा
- व्याकरण शिक्षण की विधियाँ

इकाई–10 हिन्दी व्याकरण — **इकाई 10** : हिंदी व्याकरण **(पृष्ठ 135–146)**

- संज्ञा
- सर्वनाम
- क्रिया
- विशेषण

इकाई–11 शब्द शिक्षण — **इकाई 11** : शब्द शिक्षण **(पृष्ठ 147–171)**

- उपसर्ग
- प्रत्यय
- संधि
- समास

इकाई–12 वाक्य शिक्षण — **इकाई 12** : वाक्य शिक्षण **(पृष्ठ 173–182)**

- साधारण वाक्य
- मिश्र वाक्य
- संयुक्त वाक्य

खण्ड – 4 रचना

इकाई–13 रचना शिक्षण — **इकाई 13** : रचना शिक्षण **(पृष्ठ 183–210)**

- कहानी रचना
- निबन्ध रचना
- पत्र रचना
- पल्लवन

विषय–सूची

परिचय **1–2**

खण्ड–1 भाषा (उत्पत्ति, क्षेत्र, महत्व)

इकाई 1 भाषा की उत्पत्ति **3–16**

1.0 परिचय
1.1 उद्देश्य
1.2 भाषा की उत्पत्ति
1.3 भाषा का अर्थ
1.4 भाषा की परिभाषा
1.5 भाषा की विशेषताएँ
1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
1.7 सारांश
1.8 मुख्य शब्दावली
1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 2 हिंदी का स्वरूप **17–31**

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 वर्ण (स्वर और व्यंजन)
2.3 शब्द
2.4 वाक्य
2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.6 सारांश
2.7 मुख्य शब्दावली
2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 3 हिंदी भाषा का क्षेत्र **33–44**

3.0 परिचय
3.1 उद्देश्य
3.2 हिंदी भाषा का क्षेत्र
3.3 ग्रामीण क्षेत्र
3.4 प्रादेशिक भाषा
3.5 राष्ट्रीय भाषा– (राष्ट्रभाषा) का क्षेत्र
3.6 अन्तर्राष्ट्रीय भाषा
3.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
3.8 सारांश

3.9 मुख्य शब्दावली
3.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
3.11 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 4 हिंदी भाषा का महत्व **45—59**

4.0 परिचय
4.1 उद्देश्य
4.2 हिंदी भाषा का महत्व
4.3 बौद्धिक विकास
4.4 संवेगात्मक विकास
4.5 सांस्कृतिक विकास
4.6 आर्थिक विकास
4.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
4.8 सारांश
4.9 मुख्य शब्दावली
4.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
4.11 सहायक पाठ्य सामग्री

खण्ड – 2 पद्य एवं गद्य

इकाई 5 पद्य शिक्षण **61—79**

5.0 परिचय
5.1 उद्देश्य
5.2 पद्य (काव्य) शिक्षण
5.3 पथ का अर्थ
  5.3.1 काव्य के लक्षण
  5.3.2 काव्य का स्वरूप
5.4 पद्य (काव्य) के भेद
  5.4.1 महाकाव्य
  5.4.2 खण्ड काव्य
  5.4.3 मुक्तक काव्य
  5.4.4 गीतिकाव्य
5.5 पद्य (काव्य) वाचन
  5.5.1 काव्य–वाचन परिभाषा
  5.5.2 काव्य–वाचन के उद्देश्य
  5.5.3 काव्य शिक्षण की विशेषताएँ
  5.5.4 काव्य वाचन के तत्व
5.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
5.7 सारांश
5.8 मुख्य शब्दावली
5.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
5.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 6 गद्य शिक्षण 81—99

6.0 परिचय
6.1 उद्देश्य
6.2 गद्य—शिक्षण
- 6.2.1 गद्य शिक्षण की उपादेयता
- 6.2.2 गद्य शिक्षण के उद्देश्य
- 6.2.3 गद्य—शिक्षण की विधियां

6.3 गद्य की अर्थवत्ता
- 6.3.1 गद्य का स्वरूप
- 6.3.2 गद्य का विस्तार

6.4 गद्य की विधाएँ
- 6.4.1 नाटक
- 6.4.2 एकांकी
- 6.4.3 उपन्यास
- 6.4.4 निबंध
- 6.4.5 रेखाचित्र
- 6.4.6 आत्मकथा
- 6.4.7 हिंदी में लिखी गई सर्वप्रथम रचनाएं

6.5 गद्य—वाचन
- 6.5.1 गद्य—वाचन के उद्देश्य
- 6.5.2 सस्वर वाचन का महत्व
- 6.5.3 सस्वर वाचन के अंग (तत्व)
- 6.5.4 वाचन शिक्षण की विधियां

6.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
6.7 सारांश
6.8 मुख्य शब्दावली
6.9 स्व—मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
6.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 7 कथा शिक्षण 101—112

7.0 परिचय
7.1 उद्देश्य
7.2 कथा शिक्षण
7.3 कथा : स्वरूप एवं परिभाषाएं
7.4 कथा—कहानी के तत्व
7.5 कथा (कहानी) के प्रकार
- 7.5.1 उद्देश्यों के आधार पर कहानी के भेद
- 7.5.2 तत्वों के आधार पर कहानी के भेद
- 7.5.3 विषय वस्तु के आधार पर कहानी के भेद

7.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
7.7 सारांश
7.8 मुख्य शब्दावली
7.9 स्व—मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
7.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 8 जीवनी शिक्षण **113—122**

8.0 परिचय
8.1 उद्देश्य
8.2 जीवनी शिक्षण
8.3 जीवनी का अर्थ
8.4 जीवनी की विशेषताएं
8.5 जीवनी के तत्व
8.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
8.7 सारांश
8.8 मुख्य शब्दावली
8.9 स्व—मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
8.10 सहायक पाठ्य सामग्री

खण्ड — 3 व्याकरण

इकाई 9 व्याकरण शिक्षण **123—134**

9.0 परिचय
9.1 उद्देश्य
9.2 व्याकरण शिक्षण
9.3 व्याकरण का अर्थ
9.4 व्याकरण की परिभाषा
9.5 व्याकरण शिक्षण की विधियां
9.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
9.7 सारांश
9.8 मुख्य शब्दावली
9.9 स्व—मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
9.10 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 10 हिंदी व्याकरण **135—146**

10.0 परिचय
10.1 उद्देश्य
10.2 हिंदी व्याकरण
10.3 संज्ञा
10.4 सर्वनाम
10.5 क्रिया
10.6 विशेषण
10.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
10.8 सारांश
10.9 मुख्य शब्दावली
10.10 स्व—मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
10.11 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 11 शब्द शिक्षण **147—171**

11.0 परिचय
11.1 उद्देश्य
11.2 शब्द शिक्षण
11.3 उपसर्ग
11.3.1 संस्कृत के उपसर्ग
11.3.2 उर्दू के उपसर्ग
11.3.3 हिंदी के उपसर्ग
11.4 प्रत्यय
11.4.1 हिंदी प्रत्यय भेद
11.4.2 संस्कृत से आगत कृत प्रत्यय
11.4.3 उर्दू से हिंदी में आगत कृत प्रत्यय
11.4.4 हिंदी के कृत प्रत्यय
11.4.5 हिंदी कृत प्रत्ययों के भेद
11.4.6 तद्धित प्रत्यय
11.4.7 उर्दू से आगत तद्धित प्रत्यय
11.4.8 अंग्रेजी से आगत तद्धित प्रत्यय
11.4.9 हिंदी के तद्धित प्रत्यय
11.4.10 हिंदी तद्धित प्रत्ययों के भेद
11.5 संधि
11.5.1 संधि के भेद
11.5.2 व्यंजन–संधि
11.5.3 विसर्ग–संधि :
11.6 समास
11.6.1 तत्पुरुष समास
11.6.2 द्वंद्व समास
11.6.3 बहुव्रीहि समास
11.6.4 द्विगु समास
11.6.5 अव्ययीभाव समास
11.6.6 कर्मधारय समास
11.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
11.8 सारांश
11.9 मुख्य शब्दावली
11.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
11.11 सहायक पाठ्य सामग्री

इकाई 12 वाक्य शिक्षण **173—182**

12.0 परिचय
12.1 उद्देश्य
12.2 वाक्य शिक्षण
12.2.1 वाक्य शिक्षण की आवश्यकता
12.2.2 वाक्य का स्वरूप
12.3 वाक्य के भेद
12.3.1 साधारण या सरल वाक्य
12.3.2 संयुक्त वाक्य
12.3.3 मिश्र या मिश्रित वाक्य
12.3.4 वाक्य और पद

12.4 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
12.5 सारांश
12.6 मुख्य शब्दावली
12.7 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
12.8 सहायक पाठ्य सामग्री

खण्ड – 4 रचना

इकाई 13 रचना शिक्षण **183–210**

13.0 परिचय
13.1 उद्देश्य
13.2 रचना शिक्षण
13.2.1 कहानी रचना
13.2.2 कहानी–रचना–स्वरूप
13.2.3 मुद्दों पर आधारित कहानी रचना
13.3 निबंध रचना
13.3.1 निबंध के भेद
13.3.2 निबंध लेखन के उद्देश्य
13.4 पत्र–रचना
13.4.1 पत्र की विशेषताएं
13.4.2 पत्र–रचना के प्रकार
13.5 पल्लवन
13.5.1 पल्लवन के विषय : (कुछ प्रारूप) :
13.5.2 पल्लवन विषयक कुछ विषय सूत्र
13.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
13.7 सारांश
13.8 मुख्य शब्दावली
13.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
13.10 सहायक पाठ्य सामग्री

परिचय

टिप्पणी

प्रस्तुत पुस्तक 'हिंदी का शिक्षण' (प्राथमिक स्तर के लिए) का लेखन विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित डीएलएड के पाठ्यक्रमानुसार किया गया है।

विश्व में हिंदी समझने और बोलने वालों की संख्या अधिक है। सर्वव्यापकता, प्रचुर एवं समृद्ध साहित्य–रचनाएं, भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हिंदी है। इसलिए हिंदी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित हुई है।

भारतीय संविधान में सन् 1950 में हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसके लिए समय की सीमा निर्धारित करने के बावजूद अंग्रेजी का प्रभाव बना रहा है। 'राजभाषा' शब्द का अर्थ है राज–काज (कार्य) की भाषा। राजकाज के लिए हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है।

भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है, बल्कि वह हमारे जीवन–मूल्यों, संस्कृति, संस्कारों की संवाहक एवं परिचायक है। हिंदी पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक विकास के बीच की मजबूत कड़ी है। देश–विदेश की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक विकसित और व्यवस्थित भाषा है। कथन, श्रवण, संप्रेषण, पठन, लेखन के लिए अपनी मूलभाषा उपयोग तभी संभव होगा, जब हम उसका शुद्ध ज्ञान प्राप्त करेंगे।

हिंदी भाषा शिक्षण के द्वारा भाषा की उत्पत्ति, उसका क्षेत्र, महत्व समझ लेने के बाद इस बात की ओर ध्यान देना होगा कि किसी भी क्षेत्र या प्रदेश में, शिक्षा, तकनीकी, कानून, औपचारिक स्थितियां, लेखन, प्रशासन संबंधी गतिविधियां तथा शिष्ट समाज में प्रयोग करने के लिए मानक का स्थान महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि मानक भाषा से संप्रेषण सही और शुद्ध हो सकता है।

भाषा शिक्षण केवल भाषा सीखने और सिखाने तक सीमित नहीं है। उसका राष्ट्र, समाज और मनुष्य से अनुबंध होता है। भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, वह हमारी पहचान है और यह पहचान राष्ट्र का हिस्सा है।

भाषा में प्रयुक्त शब्द, उनका अर्थ, सार्थक संवाद, वैचारिक आदान–प्रदान, निर्भयता तथा आत्मविश्वास से भावों की अभिव्यक्ति–निपुणता, उच्चारण, लेखन, वाचन, पठन कौशल्य का निर्माण भाषा शिक्षण से संभव है।

विद्यालय में जाने के पहले बच्चों में जन्मजात क्षमता होती है। वे नियमबद्ध भाषा व्यवस्था, व्यावहारिक कुशलता का ज्ञान शिक्षकों द्वारा प्राप्त करते हैं। भाषा से संबंधित व्याकरणिक नियमों के शिक्षण से छात्रों में शुद्ध शब्द उच्चारण, शब्द बोलना, शुद्ध लेखन करने की रुचि बढ़ती है।

इन सभी बातों का महत्व जानकर हिंदी भाषा शिक्षण का पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए समूचे पाठ्यक्रम को चार खण्डों में निबद्ध तेरह इकाइयों में समायोजित किया गया है। इन का विवरण इस प्रकार है–

प्रथम खण्ड में समायोजित इकाई एक से चार में क्रमशः भाषा की उत्पत्ति, हिंदी का स्वरूप, हिंदी भाषा का क्षेत्र एवं हिंदी भाषा का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

टिप्पणी

द्वितीय खण्ड गद्य एवं पद्य विधाओं पर आधारित है। इसमें शामिल इकाई पांच से आठ में क्रमशः पद्य शिक्षण, गद्य शिक्षण, कथा शिक्षण एवं जीवन शिक्षण पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय खण्ड व्याकरण सम्मत ज्ञान से हमारा साक्षात्कार कराता है। इसमें आबद्ध इकाई नौ से बारह में क्रमशः व्याकरण शिक्षण, हिंदी व्याकरण, शब्द शिक्षण एवं वाक्य शिक्षण को रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ खण्ड रचना पर आधारित है। इसमें दी गई इकाई तेरह में क्रमशः कहानी रचना, निबंध रचना, पत्र रचना एवं पल्लवन की मीमांसा की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यक्रम निर्धारित सभी विषयों का सांगोपांग उल्लेख सरल एवं रुचिकर भाषा में लिया गया है। विषय–विश्लेषण से पूर्व प्रत्येक अध्याय में उसका परिचय और विद्यार्थियों के स्व–मूल्यांकन के लिए बीच–बीच में 'अपनी प्रगति जांचिए' स्तंभ के तहत वैकल्पिक प्रश्न भी दिए गए हैं। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक अध्येताओं का ज्ञानवर्धन एवं मार्गदर्शन करने में सहायक सिद्ध होगी।

खण्ड–1
भाषा (उत्पत्ति, क्षेत्र, महत्व)

टिप्पणी

इकाई 1 भाषा की उत्पत्ति

संरचना

1.0 परिचय
1.1 उद्देश्य
1.2 भाषा की उत्पत्ति
1.3 भाषा का अर्थ
1.4 भाषा की परिभाषा
1.5 भाषा की विशेषताएँ
1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
1.7 सारांश
1.8 मुख्य शब्दावली
1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1.0 परिचय

मानव समाज में रहता है, विविध प्रकार के कामकाज करता है। एक–दूसरे के साथ संपर्क में आता है। जब वह अपने भाव, विचार दूसरों तक पहुंचाने का प्रयास करता है, तब वह जिस माध्यम का उपयोग करता है, उसे ही 'भाषा' कहते हैं। इससे यह बात स्पष्ट है कि भावों, विचारों के आदान–प्रदान के लिए भाषा महत्वपूर्ण साधन है।

मनुष्य जिस परिवार में रहता है, जिन सदस्यों के साथ रहता है, उनके साथ बातचीत करता है। वह जिस भाषा का प्रयोग करता है, वह 'मातृभाषा' कहलाती है। समाज में विविध भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। उनकी मातृभाषा भी अलग–अलग होती है। व्यवहार, विविध कामकाज के कारण भिन्न भाषिकों के साथ वह आदान–प्रदान के कारण उन भाषाओं के शब्दों का सहज प्रयोग अपनी भाषा में करता है। परिणामस्वरूप भाषा का मूल रूप परिवर्तित होता है। प्रश्न–निर्माण होता है कि भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई है? भाषा का स्वरूप कैसा था? भाषा का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने भाषा के संदर्भ में क्या कहा है? भाषा की विशेषताएं कौन सी हैं?– इसकी जानकारी इस इकाई से प्राप्त हो सकेगी।

पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक क्षेत्रों के अतिरिक्त भी भाषा की उपयोगिता रही है। सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आर्थिक, अनुसंधानात्मक, शैक्षणिक आदि क्षेत्रों में भी भाषा की उपयोगिता है। अर्थात् भाषा का क्षेत्र बहुत व्यापक है इसीलिए भाषा का रूप बदलता है। अतः भाषा का अध्ययन अनिवार्य है।

इस इकाई में भाषा की उत्पत्ति का निरूपण किया गया है, जिसमें भाषा का अर्थ, परिभाषा और विशेषताओं का अध्ययन किया गया है।

टिप्पणी

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- भाषा की उत्पत्ति की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- भाषा का अर्थ समझ पाएंगे;
- विद्वानों द्वारा समझाए गए भाषा के स्वरूप को जान पाएंगे;
- भाषा की विशेषताओं से अवगत हो पाएंगे;
- भाषा की उपयोगिता को समझ पाएंगे।

1.2 भाषा की उत्पत्ति

सामान्य मनुष्य के मन में प्रश्न निर्माण होता है कि भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई है? आज जो भाषा प्रचलित है, उसका स्वरूप आरंभ में कैसा रहा होगा? भाषा का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने माना है कि भाषा का निर्माण मनुष्य की आवश्यकता रही है। उसका निर्माण ही उसकी पूर्ति का परिणाम है और मनुष्य के विकास के साथ–साथ भाषा का भी विकास होता रहा है। अनेक दृष्टिकोणों से भाषा उत्पत्ति के संदर्भ में विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किए हैं।

भाषा–उत्पत्ति के सिद्धांत

भाषा मानव सृष्टि के साथ ईश्वरीय शक्ति से उत्पन्न हुई है। देवता ने वाग्देवी को उत्पन्न किया है, उसका प्रयोग सभी करते हैं। भाषा ईश्वर प्रदत्त है, इसलिए विविध धर्म ग्रंथों के निर्माण को ईश्वर की देन मानने वाला एक वर्ग है।

- संकेत सिद्धांत मानने वालों का मत है कि मनुष्य आरंभ में हाथ, पैर, सिर आदि की प्रक्रिया से भावों को व्यक्त करता था। फिर सामाजिक रूप में भावों और वस्तुओं को ध्वनि संकेतों द्वारा व्यक्त करने लगा था। इससे भी मनुष्य को अपूर्णता महसूस हुई थी।
- धातु या अनुरक्षण सिद्धांत का प्रवर्तन प्लेटो ने किया, तो प्रोफेसर हेस ने उसे व्यवस्थित रूप दिया और मैक्समूलर ने उसका पल्लवन किया। इसमें कहा गया है कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु की अपनी ध्वनि होती है। मनुष्य जब वस्तुओं के संपर्क में आता तो उन ध्वनियों के आधार पर शब्द बनाता। शब्दों के मूल रूप धातु है। आरंभ में धातुओं की संख्या अधिक थी। ध्वनि संकेतों की प्राप्ति से भाषा का निर्माण हुआ। किंतु यह बात सच है कि केवल धातुओं से भाषा का निर्माण संभव नहीं। भाषा के निर्माण में उपसर्ग, प्रत्यय आदि की आवश्यकता होती है।
- आवेग या मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धांत में कहा है कि मनुष्य के सुख, दुःख, हर्ष–विषाद, घृणा, क्रोध आदि भावों को बताने के लिए वा, वा, हाय–हाय, ओह, छिः–छिः आदि शब्दों का निर्माण हुआ और इनसे ही भाषा की उत्पत्ति

हुई है। हम समझ सकते हैं कि केवल इतने शब्दों से भाषा की निर्मिती कैसे होगी। भाषागत वाक्यों में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

- श्रम परिहार सिद्धांत के प्रवर्तक न्वायर ने कहा है– परिश्रम का काम करते समय मनुष्य की श्वास–प्रश्वास की गति तेज हो जाती है तब अपने आप उसके मुख से ध्वनि निकलती है। जैसे– धोबी कपड़े धोते समय हियो–छियो करता है, तो मल्लाह नौका चलाते समय हैया–हैया करता है। इन शब्दों से भाषा की उत्पत्ति हुई है।
- अनुकरण सिद्धांत कहता है कि प्रकृति में पशु–पक्षी, नदी–नाले, बादल–बिजली आदि चीजों से ध्वन्यात्मक आवाज निकलती है। इस दृश्यात्मक अनुकरण से भाषा उत्पन्न हुई है। जैसे– कौए की काँय–काँय, कोयली की कूँ–कूँ, बादलों की गड़–गड़, बिजली की चमचम। इन शब्दों से भाषा निर्माण हुआ है।
- इंगित सिद्धांत के प्रवर्तक डॉ. राय मनुष्य की आंगिक चेष्टाओं के अनुकरण पर भाषा का निर्माण बताते हैं। जैसे– पानी पीते समय होंठों के स्पर्श से 'पा–पा' ध्वनि निकलती है।
- संगीत सिद्धांत के समर्थक डार्विन, स्पेन्सर, येस्पर्सन कहते हैं कि आरंभ में मनुष्य संगीत प्रिय रहा होगा। मन ही मन कुछ गुनगुनाता होगा, इससे अनेक ध्वनियाँ विकसित हुई होंगी। इन सार्थक ध्वनियों से ही भाषा बनी है।
- संपर्क सिद्धांत द्वारा मनोवैज्ञानिक जी–रेवेज ने कहा है कि मानव समाज निर्माण के समय संपर्क भावना से कुछ ध्वनियाँ सहज निकली होंगी। इनके विकास से ही भाषा की उत्पत्ति हुई है।
- समन्वय सिद्धांत में हेनरी स्वीट ने अनुकरण, आवेग, प्रतीक या ध्वनि संकेतों के आधार पर कहा है– "जिस प्रकार संसार की सभी वस्तुओं का विकास होता है, उसी प्रकार भाषा का भी विकास क्रमिक रूप में हुआ है। भाषा की उत्पत्ति विभिन्न ध्वनियों के आधार पर निर्मित शब्दों के विकास क्रम में हुई है।" स्वीट ने भाषा उत्पत्ति के उक्त विविध मतों का समन्वय करते हुए अपना स्वतंत्र सिद्धांत प्रस्तुत किया है जो सर्वसम्मत है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. धातु या अनुरक्षण–ध्वनि संकेतों से भाषा की उत्पत्ति मानने वाले विद्वान कौन हैं?

   (क) डॉ. रॉय (ख) प्लेटो

   (ग) न्वायर (घ) डार्विन

2. "भाषा की उत्पत्ति विभिन्न ध्वनियों के आधार पर निर्मित शब्दों के विकास क्रम में हुई है"– यह किसका मत है?

   (क) हेनरी स्वीट (ख) स्पेन्सर

   (ग) येस्पर्सन (घ) प्रोफेसर हेस

1.3 भाषा का अर्थ

टिप्पणी

संस्कृत के 'भाष्' धातु से भाषा शब्द बना है जिसका अर्थ है 'बोलना' या 'कहना'। जो बोली जाती है या जो कही जा सकती है वह 'भाषा' है। उसमें ध्वन्यात्मकता होती है। गूंगा व्यक्ति केवल इशारों द्वारा बात करता है, किंतु उसकी यह सांकेतिक भाषा सभी नहीं समझ सकते। अतः अपने भावों–विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का माध्यम भाषा है, जिसमें ध्वनि–संकेतों और वाचिक संकेतों का प्रयोग होता है। ये ध्वनि–संकेत सार्थक होते हैं और यादृच्छिक होते हैं (माने हुए होते हैं) अगर यह संबंध सहज, स्वाभाविक होता तो सभी भाषाओं में एक वस्तु के लिए एक ही शब्द प्रयोग किया जाता, किंतु अलग–अलग भाषाओं में शब्द रूप अलग–अलग मिलते हैं। जैसे– मराठी का पाणी शब्द, हिंदी में पानी, अंग्रेजी में वाटर, फारसी में आब, संस्कृत में नीर कहा जाता है।

व्यक्ति और समाज के बीच व्यवहार में आने वाले भावों विचारों का आदान–प्रदान करने वाली, विचारों को लिखित या कथित रूप में दूसरों तक पहुंचाने वाली, परंपरा से अर्जित चिंतन–मनन संस्कृति की रक्षा करने वाली, साहित्य–लेखन के लिए प्रेरित एवं जीवन को उन्नत बनाने वाली, परस्पर बातचीत से मनुष्य की गतिविधियों को व्यक्त करने वाली मनुष्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है "भाषा"। इसके बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में उसका जन्म होता है, समाज में ही पलकर वह बड़ा होता है। समाज के अन्य सदस्यों से उसका संबंध जुड़ता है। अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उसे शब्दों और वाक्यों की सहायता लेनी पड़ती है। कभी–कभी वह संकेतों से काम चला लेता है– जैसे हाथ–पैर पटकने से गुस्सा, उछलने से हर्ष, मुंह में उंगली दबाने से आश्चर्य, मुंह–टेढ़ा–मेढ़ा करने से अनिच्छा भाव व्यक्त किए जाते हैं।

रेलगाड़ी का गार्ड लाल–हरी झण्डी दिखाकर भाव व्यक्त करता है कि रेलगाड़ी रूक जाए या अब चलने को तैयार है। किंतु भाषा में इस प्रकार के संकेतों का महत्व नहीं। इनसे विचार सही और स्पष्ट व्यक्त नहीं हो पाते हैं। अतः यह बात स्पष्ट है कि भाषा सार्थक ध्वनि संकेतों से ही बनती है और ध्वनि संकेत उच्चारित होते हैं।

कक्षा में अध्यापक अपनी बात बोलकर समझाते हैं और छात्र सुनकर उसे समझते हैं। घर में छोटा बच्चा अपनी मां के साथ बोलकर अपने मन की बात या भाव प्रकट करता है तो मां उसकी बात सुनकर समझती है।

अध्यापक द्वारा समझाई गई बात को लिखकर छात्र अपनी समझ में आई हुई बात बताता है। बच्चे, छात्र, अध्यापक, माँ आदि सभी अपने मन की बात या भाव को व्यक्त करने के लिए जिस माध्यम का उपयोग करते हैं वह "भाषा" है। व्यापक रूप में भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य भावों और विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपना विकास कर सका है। मैक्स–मूलर ने कहा है कि "भाषा यदि प्रकृति की देन है तो निस्संदेह यह प्रकृति की अंतिम और सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसे प्रकृति ने केवल मनुष्य के लिए ही सुरक्षित रखा था।" वैज्ञानिकों के

टिप्पणी

मतानुसार मनुष्य की शारीरिक और मानसिक रचना इस प्रकार की है कि वह भिन्न–भिन्न प्रकार की ध्वनियाों का निर्माण करने में सक्षम है। अन्य प्राणियों से उसकी इंद्रियां भिन्न हैं। अतः बाह्य वातावरण और परिस्थितियों की प्रेरणा से उसकी इंद्रियां भिन्न हैं। अतः वह बाह्य वातावरण और परिस्थितियों की प्रेरणा से विविध वस्तुओं के लिए प्रतीकात्मक शब्द, शब्दों से वाक्य निर्माण कर सका है। धीरे–धीरे भाषा की उत्पत्ति और विकास होता गया। भाषा के कारण ही वह सामाजिक रचना, सहयोग करते रहा है, साथ–साथ सभ्यता और संस्कृति का विकास होते गया। ज्ञानार्जन का मुख्य साधन होने के कारण भाषा शिक्षा को समस्त क्रियाकलापों का आधार माना गया।

भावों, विचारों, आकांक्षाओं का संप्रेषण दूसरों तक पहुंचाने का यह सरल–सुलभ साधन है। सुनना, बोलना तो भाषा कौशल है और संप्रेषण का साधन है, तो पढ़ने, लिखने का कौशल शिक्षा के द्वारा संभव है। इसलिए भाषा को "मानवीय कलाकृति" कहा गया है।

मनुष्य सामाजिक कार्यों, विचार–विनिमय के लिए भाषा का आधार लेता है। सामाजिक दृष्टि से भी भाषा का महत्व अधिक है। व्यक्ति–व्यक्ति के आपसी संबंध, वार्तालाप, विचार–विमर्श, चर्चा, शिष्टाचार प्रदर्शन भाषा से ही संभव है। प्रभावी, सुसंस्कृत, सभ्य भाषा से व्यक्ति सामाजिक जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। भाषा के बिना विचारों की निर्मिती और अभिव्यक्ति नहीं हो सकती। सामाजिक क्रियाकलापों द्वारा संस्कृति का निर्माण होता है। बौद्धिक, भावात्मक और सामाजिक विकास, मनुष्य को मनुष्य बनाने की क्षमता, श्रेष्ठ साहित्य निर्मिती भाषा से ही होती है। सामाजिक आचरण का पाठ मां, पिता, मित्र, पड़ोसी, शिक्षक भाषा के द्वारा पढ़ाते हैं। वेद पुराणों से लेकर आधुनिक साहित्य भाषा के कारण ही संरक्षित है जिससे अपनी परंपराओं के वास्तविक चित्रण को पढ़कर मनुष्य को प्रेरणा मिलती है।

अपनी प्रगति जांचिए

3. भाषा का अर्थ क्या है?
   (क) ध्वनि–प्रतीक (ख) भाव–विचार
   (ग) सभ्यता–संस्कृति (घ) बोलना या कहना
4. व्यक्ति–व्यक्ति के आपसी संबंध, वार्तालाप, विचार–विमर्श, चर्चा, शिष्टाचार प्रदर्शन किससे संभव है?
   (क) सहयोग (ख) भाषा
   (ग) ज्ञानार्जन (घ) कौशल

1.4 भाषा की परिभाषा

भाषा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति कर सकता है। मुख से उच्चारित शब्दों वाक्यों आदि का वह समूह है जिसके द्वारा वह अपने मन की बात बता सकता है। कहा जाता है कि भाषा वह साधन है जिसकी सहायता से व्यक्ति बोलकर, सुनकर, लिखकर एवं पढ़कर अपने भावों और विचारों का

बड़ी सरलता और सहजता से आदान–प्रदान कर सकता है और दूसरा व्यक्ति उसकी बातों को समझ सकता है।

टिप्पणी

भाषा के स्वरूप को अधिकाधिक सुस्पष्ट करने के लिए अनेक विद्वानों ने उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। विद्वानों द्वारा बताई गई कुछ परिभाषाएं निम्न हैं–

संस्कृत और हिंदी के विद्वानों द्वारा प्रदत्त भाषा की परिभाषाएं

- आचार्य दण्डी के मतानुसार "तीनों लोक घनघोर अंधकार में रहते हैं, यदि शब्दार्थ ज्योति हमारे संसार में प्रकाशित नहीं होती, तो मानव का जीवन पशु–पक्षियों जैसा होता। पूर्वजों का अनुभव व ज्ञान उत्तराधिकार के रूप में ना मिलता, ना हम अपना अनुभव व ज्ञान अपनी संस्कृति को दे पाते। भाषा के अभाव में ना हम नए आविष्कार कर पाते और न चिंतन का क्षेत्र विस्तृत हो पाता।

इसलिए भाषा की उपलब्धि के कारण ही सभी प्राणियों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ एवं शक्तिशाली बन पाया। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए भाषा वरदान साबित हुई है।"

स्पष्ट है कि मनुष्य अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए संकेतों और शब्द ज्योति (प्रतीकों) का सहारा लेता है। प्रत्येक भाषा में इन प्रतीकों के संकेत–अर्थ निश्चित होते हैं। मनुष्य अपने व्यवहार में इनका प्रयोग करता है।

- आ. पतंजलि ने भाषा की परिभाषा करते हुए कहा है– "जिस वाणी में वर्णों के माध्यम से अभिव्यक्ति होती है वे ही वाक् है।" अर्थात् वर्णों के रूप में बोली जाने वाली ही "भाषा" है।
- **पं. कामता प्रसाद गुरु** : 'हिंदी व्याकरण' नामक पुस्तक में लिखते हैं कि "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों तक भली–भांति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्पष्टतया समझ सकते हैं।"
- **डा. बाबूराम सक्सेना** : 'भाषा विज्ञान' में अपना मत व्यक्त करते हुए लिखते हैं– विभिन्न अर्थों में सांकेतिक शब्द समूह ही भाषा है, जिसके द्वारा हम अपने विचार या मनोभाव दूसरों के प्रति बहुत सरलता से प्रकट करते हैं।
- **आ. देवेंद्रनाथ शर्मा** : "भाषा विज्ञान की भूमिका" में लिखा है– "उच्चारित ध्वनि–संकेतों की सहायता से भाव या विचार की पूर्ण अभिव्यक्ति भाषा है।"
- **डॉ. सरयू प्रसाद** : "भाषा वाणी द्वारा व्यक्त स्वच्छंद प्रतीकों की रीतिबद्ध पद्धति है जिससे मानव समाज में अपने भावों का परस्पर आदान प्रदान करते हुए एक–दूसरे को सहयोग देता है।"
- **डा. देवीशंकर द्विवेदी** : "भाषा यादृच्छिक वाक्य प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके माध्यम से मानव समुदाय परस्पर व्यवहार करता है।"
- भाषा वागेंद्रिय द्वारा निःसृत उन ध्वनि प्रतीकों की संरचनात्मक व्यवस्था है, जो अपनी मूल प्रकृति में यादृच्छिक एवं रूढ़िपरक होते हैं और जिनके द्वारा किसी भाषा–समुदाय के व्यक्ति अपने अनुभवों को व्यक्त करते हैं, अपने विचारों को संप्रेषित करते हैं और अपनी सामाजिक अस्मिता, पद तथा अंतर्वैयक्तिक संबंधों को सूचित करते हैं।

- **डा. श्यामसुंदर दास** : "मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि–संकेतों का जो व्यवहार होता है उसे 'भाषा' कहते हैं।"
- डॉ. भोलानाथ तिवारी 'भाषा विज्ञान' पुस्तक में लिखते हैं कि "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित मूलतः प्रायः यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रदत्त भाषा की परिभाषा

- प्लेटो ने विचार को भाषा का मूलाधार माना है। उन्होंने कहा है– "विचार आत्मा की मूक बातचीत है, पर वह जब ध्वन्यात्मक होकर होंठों पर प्रकट होते हैं तो उसे भाषा की संज्ञा दी है।"
- हेनरी स्वीट की दृष्टि से "जिन व्यक्त ध्वनियों द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होती है, वह भाषा है।"
- ए.एच गार्डियर– "विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्त एवं स्पष्ट ध्वनि संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उनके समूह को भाषा कहते हैं।"
- मैक्समूलर के मतानुसार "भाषा और कुछ नहीं है, केवल मानव की चतुर बुद्धि द्वारा आविष्कृत ऐसा उपाय है, जिसकी मदद से हम अपने विचार सरलता और तत्परता से दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं और चाहते हैं कि इसकी व्याख्या प्रकृति की उपज के रूप में नहीं बल्कि मनुष्यकृत पदार्थ के रूप में करना उचित है।"
- ब्लॉक और ट्रेगर ने कहा है कि "भाषा मुखोच्चरित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समुदाय के सदस्य परस्पर विचार विनिमय करते हैं।"
- बोद्रिय– "भाषा एक तरह का संकेत है। संकेत से आशय उन प्रतीक चिह्नों से है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को प्रकट करता है। भाषा की दृष्टि से तो प्रतीक वह वस्तु है जो किसी व्याख्यात अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है।" कर्णग्राहय, नेत्र ग्राहय, स्पर्श ग्राहय प्रतीकों में कर्णग्राहय प्रतीकों को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं।
- स्रुत्वा ने भाषा की परिभाषा के संदर्भ में लिखा है कि "भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं संपर्क करते हैं।"
- इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में भाषा की यह परिभाषा दी है– "भाषा को यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र माना है जिसके द्वारा मानव प्राणी एक सामाजिक समूह के सदस्य और सांस्कृतिक साझदारी के रूप में एक सामाजिक समूह के सदस्य संपर्क एवं संप्रेषण करते हैं।"
- मैरियो रूपे एवं फ्रैंक ग्रेनर ने भाषा के संदर्भ उन्होंने कहा है– "मनुष्यों के वर्ग में आपसी व्यवहार के लिए एक परंपरागत तथा जिनका आदान–प्रदान जीभ और कान के माध्यम से होता है उसे भाषा कहते हैं।"

टिप्पणी

विविध भाषा–भाषी विद्वानों की भाषाविषयक परिभाषाओं के आधार पर निम्नांकित कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं–

- भाषा विचारों और भावों के आदान–प्रदान का विश्वसनीय साधन है।
- भाषा में वाचिक ध्वनि या संकेतों का उपयोग किया जाता है।
- भाषा के ध्वनि–संकेत किसी समाज या वर्ग के आंतरिक और बाह्य कार्यों के संचालन या विचार विनिमय में सहायक होते हैं।
- हर वर्ग या समाज के ध्वनि–संकेत अपने–अपने होते हैं अर्थात् दूसरों से भिन्न होते हैं और ध्वनि संकेत स्पष्ट होते हैं।
- भाषा यादृच्छिक संकेत है। ये संकेत रूढ़ होते हैं। परंपरा और युगों से इनका प्रयोग होते आया है।
- भाषा में केवल सार्थक शब्दों और शब्द समूहों द्वारा मनुष्य अपनी आवश्यकताएं, इच्छाएं, भावनाएं आदि व्यक्त करते हैं।
- भाषा समुदाय की परंपरा एवं संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखने का साधन है।
- वस्तुतः भाषा मनुष्य के ध्वनि अवयवों से निःसृत ध्वनि समूह है। वे ध्वनियां सार्थक होती हैं। इनसे बने शब्दों का भाषा में प्रयोग किया जाता है।
- प्रत्येक भाषा की अलग–अलग व्यवस्था होती है।
- वक्ता और श्रोता के पारस्परिक विचार–विनिमय के लिए समान भाषा–भाषी आवश्यक हैं। अर्थात् एक समझाता है तभी दूसरा समझता है।
- भाषा का संबंध एक व्यक्ति से संपूर्ण मानव जाति तक है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए भाषा वरदान साबित हुई है–परिभाषा किसकी है?

   (क) आचार्य दण्डी (ख) आ. पतंजलि

   (ग) आ. रवीन्द्रनाथ (घ) आ. देवेंद्रनाथ शर्मा

6. हेनरी स्वीट की भाषाविषयक परिभाषा कौन–सी है?

   (क) "विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जिन व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि–संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उनके समूह को भाषा कहते हैं।"

   (ख) भाषा मुखोच्चारित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से एक समुदाय के सदस्य परस्पर विचार विनिमय करते हैं।

   (ग) जिन व्यक्त ध्वनियों के द्वारा विचारों की अभिव्यक्ति होती है, वह भाषा है।

   (घ) भाषा यादृच्छिक भाष् प्रतीकों का तंत्र है जिसके द्वारा एक सामाजिक समूह के सदस्य सहयोग एवं संपर्क करते हैं।

7. उच्चरित ध्वनि–संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति भाषा है– यह परिभाषा किसकी है?

(क) डॉ. सरयूप्रसाद (ख) डॉ. कामता प्रसाद गुरु

(ग) डॉ. बाबूराम सक्सेना (घ) आ. देवेंद्रनाथ शर्मा

टिप्पणी

1.5 भाषा की विशेषताएँ

प्रत्येक भाषा की मूल प्रवृत्ति या विशेषताएं होती हैं। इसे ही भाषा की प्रकृति या लक्षण कहा जाता है। प्रत्येक भाषा दूसरी भाषा से भिन्न होती है। किंतु संसार की समस्त भाषाओं में कुछ समान लक्षण या विशेषताएं मिलती हैं। उनका यहां विवेचन किया जा रहा है–

- **भाषा सामाजिक संपत्ति है** : भाषा का मुख्य उद्देश्य यह है कि "भाषा का सामाजिक व्यवहार एवं कार्यों के लिए उपयोग किया जाएं।" भाषा के कारण ही मनुष्य कुछ सोचता है किंतु वह भाषा ध्वनि–प्रतीकों पर आधारित भाषा से भिन्न होती है। भाषा आदि से अंत तक समाज से संबंधित होती है। उसका निर्माण, विकास समाज में ही होता है। उसका प्रयोग भी समाज में होता है। उदाहरण के रूप में यह बता सकते हैं कि जो बच्चा जिस समाज में पैदा होता है, पलता है, वह उसी समाज की भाषा सीख जाता है। इसलिए भाषा सामाजिक संपत्ति है।
- **भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है** : समाज की यह धारणा और कानून भी है कि पिता जी की अर्थात् पैतृक संपत्ति (खेती, धन, घर आदि) पर उनके बेटे का अधिकार होता है। उनकी मृत्यु के बाद पैतृक संपत्ति पर बेटे का अधिकार हो जाता है। किंतु भाषा पैतृक संपत्ति न होने के कारण पिता की भाषा बेटे को प्राप्त नहीं होती। अगर भारतीय बालक को एक–दो वर्ष की अवस्था में विदेश में भेजा जाय तो वह उन लोगों के संपर्क में रहने के कारण विदेशी भाषा बोलने लगेगा और विदेशी बालक को भारत में हिंदी–भाषी परिवार में रखा गया तो वह अच्छी हिंदी बोलने लगेगा। यदि भाषा पैतृक संपत्ति होती तो बालक अपने माता–पिता की ही भाषा बोलने लगते। वास्तव में ऐसा नहीं होता।
- **भाषा अर्जित संपत्ति है** : भाषा परंपरा से और पैतृक संपत्ति के समान सहज प्राप्त नहीं होती। मनुष्य को भाषा सीखने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। भाषा का अर्जन करना पड़ता है। परिवार में बच्चा मातृभाषा धीरे–धीरे सीखता है। किंतु आस–पास रहने वाले भिन्न भाषिक लोगों की भाषा उसे सीखनी पड़ती है। परिवार हिंदी भाषिक है और पड़ोसी गुजराती है तो बच्चे को हिंदी के साथ गुजराती भाषा का अर्जन करना पड़ता है।
- **भाषा अनुकरणशील होती है** : दो–तीन साल का बच्चा अपने बौद्धिक विकास के साथ–साथ अपने पड़ोस के लोगों की ध्वनियों को सुनकर उनका अनुकरण करके उनका प्रयोग करने का प्रयत्न करता है। आरंभ में वह केवल

अ, ब, प आदि ध्वनियों का, फिर धीरे–धीरे दो–तीन–चार शब्दों को अपना लेता है। शब्दों के आधार पर छोटे–छोटे वाक्य बनाकर उनका प्रयोग करता है। पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण में व्यावहारिक भाषिक प्रयोग करना सीख जाता है।

टिप्पणी

छोटे बच्चे को अगर निर्जन स्थान पर छोड़ दे तो वह कुछ भी बोल न सकेगा और वापस अपने परिवार में आने के बाद भी उसे भाषा–व्यवहार का ज्ञान नहीं हो सकेगा। इससे यह स्पष्ट है कि भाषा अनुकरण के आधार पर सीख सकते हैं। मराठी व्यवहार के क्षेत्र में बच्चा अनुकरण से ही मराठी सीख लेता है, तो पंजाबी, गुजराती के क्षेत्र में बच्चा पंजाबी, गुजराती सीख लेता है। अनुकरण के द्वारा भाषा का अर्जन किया जाता है।

- **भाषा निरंतर गतिशील रहती है** : भाषा की शुरुआत समाज के साथ हुई है और आज तक वह प्रवाहमयी, गतिमान है। जब तक मानव समाज का अस्तित्व रहेगा तब तक भाषा का अस्तित्व रहेगा। किसी व्यक्ति या समाज के द्वारा भले ही उसमें कुछ परिवर्तन किये जाने से उसका रूप बदलता है, पर भाषा को कोई समाप्त नहीं कर सकता है। नदी के प्रवाह के समान ही भाषा निरंतर गतिमान या प्रवाहमयी है।
- **भाषा का संप्रेषण मूलतः वाचित है** : मनुष्य अपने भावों का संप्रेषण सांकेतिक, आंगिक, लिखित, यांत्रिक आदि द्वारा कर सकता है किंतु इनकी कुछ सीमाएं हैं। इन माध्यमों के द्वारा भावों की अभिव्यक्ति असंभव है। संकेत, अंगगत और लिखित भाषा भी भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से सक्षम नहीं है। वाचिक भाषा में आरोह–अवरोह, विविध भावों की सशक्त अभिव्यक्ति होने के कारण इसका भाषा की दृष्टि से महत्व माना गया है। क्योंकि उसका प्रयोग शिक्षित, अशिक्षित, स्त्री–पुरुष, युवा, प्रौढ़ आदि स्वाभाविक और सहज रूप से करते हैं।
- **भाषा चिरपरिवर्तनशील है** : संसार की अन्य वस्तुओं के समान भाषा भी परिवर्तनशील है। किसी भी देश की किसी एक कालखंड की पूर्ववर्ती और परवर्ती भाषा में कुछ न कुछ परिवर्तन हो जाता है। हमने यह देखा कि भाषा अनुकरण के द्वारा सीखी जाती है किंतु वाचिक भाषा का पूर्ण रूप से अनुकरण असंभव है। शारीरिक एवं मानसिक भिन्नता, सामाजिक, भौगोलिक तथा सांस्कृतिक भिन्नता, अनुकरण की अपूर्णता के कारण भाषा में नितपरिवर्तन होता है। परिणामतः पूर्ववर्ती शब्दों का अर्थ कभी व्यापक, कभी संकुचित, कभी अच्छे से बुरा तो कभी बुरे से अच्छा अर्थ, कभी तो संपूर्ण शब्द का अर्थ बदल जाता है। जैसे– "तेल" तिल से निकाला हुआ रस "तेल" कहलाता था, अब तो मूंगफली, खोपरा, सोयाबीन आदि के तेल का अर्थ प्रचलित हो गया है। आकाशवाणी, कुशल, प्रवीण, हरिजन, मृग, गोली, जलज, महाजन, दादा, साहसी, मुग्ध, कर्पट आदि उदाहरण दिए जा सकते हैं।
- **भाषा मूल रूप में मौखिक होती है** : भाषा के लिखित और मौखिक या वाचिक दो रूप हैं। भाषा का आरंभिक रूप मौखिक है। भाषा के स्थायी रूप

के लिए लिपि का विकास हुआ। ध्वनियों के अंकन से लिपि और लिपि की सहायता से भाषा का लिखित रूप बनाया जाता है। उच्चारित, मौखिक भाषा का प्रयोग स्वगत, संभाषण, संवाद, कथन आदि में किया जाता है। लिखित भाषा का रूप मौखिक भाषा पर आधारित होता है।

- **भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ती है** : भाषाओं के पूर्ववर्ती एवं परवर्ती अध्ययन से पता चलता है कि भाषा का आरंभिक रूप संयोगावस्था में था। उसमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहा और भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ने लगी।

  उदाहरण– रामः गृहं गच्छति।

  राम घर जाता है।

- **भाषा का प्रवाह कठिनता से सरलता की ओर जाता है** : मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है कि वह अल्प परिश्रम से अधिक कार्य करना चाहता है। इसी प्रवृत्ति का वह भाषा के क्षेत्र में प्रयोग करता है। कठिन शब्दों को वह बहुत सरल बनाकर बड़ी सहजता से उसका प्रयोग करता है। जैसे– मां साहब < मॉस्साब, उपाध्याय < ओझा, चतुर्वेदी < चौबे, चतुर्दश < चौदह, चतुर्थी < चौथ, < राजेंद्र < राजिंदर < रजुआ < राजू आदि।

- **भाषा का कोई अंतिम रूप नहीं है** : संसार का नियम है कि जिस चीज का निर्माण होता है, जब उसकी अवस्था पूर्ण हो जाती है तो उसका अंतिम रूप भी निश्चित हो जाता है किंतु भाषा के विषय में यह बात लागू नहीं है। भाषा चिर–परिवर्तनशील होने के कारण उसका अंतिम रूप प्राप्त नहीं हो सकता।

- **भाषा की निश्चित सीमाएं होती हैं** : किसी भी भाषा का प्रयोग क्षेत्र विशेष तक होता है। भाषा की सीमा भौगोलिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। भारत की प्रांतीय रचना भौगोलिक सीमाओं के साथ क्षेत्रीय भाषाओं का व्यावहारिक प्रचलन क्षेत्र निर्धारित करती है। जैसे– महाराष्ट्र में मराठी, गुजरात में गुजराती, पंजाब में पंजाबी।

  ऐतिहासिक कालखंड से संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

- **भाषा का स्वरूप मानकीकरण पर आधारित होता है** : प्रत्येक भाषा का मानक रूप निश्चित किया जाता है जो सर्वमान्य होता है। भाषा परिवर्तनशील होने के कारण भाषा की शब्द, वाक्य रचना अर्थ समझना आवश्यक है। भाषा का प्रयोग शुद्ध और सुविधाजनक हो, लिपि की दृष्टि से लेखन–मुद्रण–टंकन की सुविधा के लिए भारत सरकार के हिंदी निदेशालय ने हिंदी भाषा की वर्णमाला का मानक रूप विकसित किया है। आजकल सर्वत्र उसका ही प्रयोग किया जा रहा है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

8. भाषा किस प्रकार की संपत्ति है?
   (क) पैतृक संपत्ति (ख) संप्रेषण संपत्ति
   (ग) अर्जित संपत्ति (घ) भौगोलिक संपत्ति
9. भाषा का संप्रेषण मूलतः कैसा है?
   (क) वाचिक (ख) गतिशील
   (ग) परिवर्तनशील (घ) ऐतिहासिक
10. राजेंद्र < राजिंदर < रजुआ उदाहरण भाषा की किस विशेषता का संकेत करता है?
    (क) भाषा अनुकरणशील होती है।
    (ख) भाषा निरंतर गतिशील रहती है।
    (ग) भाषा का प्रवाह कठिनता से सरलता की ओर जाता है।
    (घ) भाषा संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर बढ़ती है।

1.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)
2. (क)
3. (घ)
4. (ख)
5. (क)
6. (ग)
7. (घ)
8. (ग)
9. (क)
10. (ग)

1.7 सारांश

भाषा का मनुष्य के जीवन में अत्यंत महत्व है। भाषा के बिना वह अधूरा है। विचारों और भावों की अभिव्यक्ति भाषा से ही संभव है। मनुष्य के विकास के साथ ही भाषा का विकास हुआ है। पशु–पक्षियों की भाषा से मनुष्य की भाषा भिन्न है क्योंकि उसका निर्माण वाचिक ध्वनि–संकेतों से हुआ है।

टिप्पणी

व्यक्ति और समाज के बीच भावों की अभिव्यक्ति, संप्रेषण के लिए भाषा ही महत्वपूर्ण साधन है। मनन–चिंतन, कथन, लेखन भाषा से संभव है। किंतु कभी–कभी आंगिक प्रक्रिया के द्वारा तो कभी संकेतों से भावों की अभिव्यक्ति होती है पर इनसे विचार सही और स्पष्ट न होने के कारण, भाषा में उच्चारित, सार्थक ध्वनि समूह मनुष्य के भावों और विचारों का आदान–प्रदान करने में सहायक बनता है।

व्यक्ति बोलकर, सुनकर, पढ़कर या लिखकर भावों का संप्रेषण करता है वह माध्यम भाषा है। विद्वानों ने भाषा की परिभाषा देते हुए यह मान्य किया है कि भाषा वाक् इंद्रियों से निःसृत, यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

प्रत्येक भाषा की कुछ प्रवृत्तियां या लक्षण होते हैं। अनेक भाषा वैज्ञानिकों ने इसके बारे में मत व्यक्त किए हैं। उनकी दृष्टि से भाषा अर्जित, सामाजिक संपत्ति है, वह चिरपरिवर्तनीय है, समाज में ही उसका निर्माण, विकास, प्रयोग होता है। अर्थात् भाषा का प्रयोग आरंभ से ही किया जा रहा है।

1.8 मुख्य शब्दावली

- **ईश्वरप्रदत्त** : ईश्वर द्वारा प्राप्त हुई।
- **वाग्देवी** : वाणी की देवी–वाचा (भाषा)।
- **उपलब्धि** : प्राप्ति।
- **उत्तराधिकार** : किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का अधिकार।
- **यादृच्छिक** : इच्छित, माने हुए।
- **संरचनात्मक** : रचना, बनावट पर आधारित।
- **आविष्कृत** : आविष्कार किया हुआ, प्रकट किया गया।
- **निःसृत** : बाहर आया हुआ।
- **संप्रेषण** : भेजना।
- **मानक** : परिनिष्ठित, सर्वमान्य।

1.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा की उत्पत्ति के संदर्भ में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।
2. भाषा अर्थ क्या है? उदाहरणों द्वारा विवेचन कीजिए।
3. भारतीय विद्वानों द्वारा प्रदत्त भाषा की परिभाषाओं की चर्चा कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा की प्रमुख विशेषताओं को विस्तारपूर्वक समझाइए।
2. भाषा भावों और विचारों के संप्रेषण का साधन है विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

1.10 सहायक पाठ्य सामग्री

टिप्पणी

1. भाषा और समाज– डॉ. राम विलास शर्मा – लोक भारती प्रकाशन दिल्ली
2. भाषा विज्ञान हिंदी भाषा और लिपि– राम किशोर शर्मा
3. मानक हिंदी का स्वरूप– डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत– रामकिशोर शर्मा – लोकभारती प्रका.
5. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र– डॉ. कपिल देव द्विवेदी
6. हिंदी का सांस्कृतिक परिवेश– डॉ. सिंह विश्वविद्यालय प्रका. वाराणसी

इकाई 2 हिंदी का स्वरूप

टिप्पणी

संरचना

2.0 परिचय
2.1 उद्देश्य
2.2 वर्ण (स्वर और व्यंजन)
2.3 शब्द
2.4 वाक्य
2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
2.6 सारांश
2.7 मुख्य शब्दावली
2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

2.0 परिचय

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी बात किसी के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। पहली इकाई में भाषा का अर्थ, परिभाषा और विशेषताओं की जानकारी प्राप्त की गई है। इस इकाई में हिन्दी भाषा के स्वरूप पर विचार किया जा रहा है। भाषा वर्ण, शब्द और वाक्यों के समूह द्वारा भावाभिव्यक्ति करने के लिए सक्षम बनती है, जब अध्ययन करने वालों को इनकी परिपूर्ण जानकारी होती है।

भाषा सीखने के लिए व्याकरण का ज्ञान अनिवार्य है क्योंकि भाषा का आधार व्याकरण है। वर्ण विचार, शब्द विचार और वाक्य विचार व्याकरण का अंग है। भाषा की रचनात्मक गतिविधियों के अंतर्गत मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति को बढ़ाने के लिए वर्ण, शब्दादि की जानकारी अत्यावश्यक है।

वाक् इंद्रियों की सहायता से उच्चारित ध्वनियों से बने–बनाए शब्दों के मेल से वाक्य बनाए जा सकते हैं जिससे अर्थ या भाव की अभिव्यक्ति होती है। वाक् उच्चारण से मौखिक भाषा में उच्चारित ध्वनियों को जब लिपि के द्वारा स्थायी रूप दिया जाता है, तब उसे लिखित भाषा कहते हैं।

इस इकाई में हिंदी भाषा का स्वरूप विवेचन किया जा रहा है। इससे शब्द रचना और अर्थपूर्ण वाक्य बनाने में सहायता हो सकेगी।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- भाषा की लघुत्तम इकाई वर्ण को समझ पाएंगे;
- वर्णों से बने शब्द, शब्दाशों से परिचित हो पाएंगे;
- वर्णों के भेद, शब्द–रचना का ज्ञान आत्मसात कर पाएंगे;
- शब्दों के समूह से बने अर्थपूर्ण वाक्य प्रक्रिया को समझ पाएंगे;

* अपने भाव या विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वाक्यों का प्रयोग करना सीख पाएंगे।

टिप्पणी

2.2 वर्ण (स्वर और व्यंजन)

प्रत्येक भाषा की वर्ण व्यवस्था–संरचना भिन्न–भिन्न होती है। हिंदी की वर्ण व्यवस्था मराठी, गुजराती, अंग्रेजी भाषाओं से भिन्न है। इनकी लिपि भी भिन्न है। भाषा को लिखने के लिए जो विशेष संकेत (चिह्न) निश्चित किए जाते हैं, उनके रूप को 'लिपि' कहते हैं।

जैसे– मराठी हिंदी, संस्कृति की लिपि 'देवनागरी' है, अंग्रेजी की लिपि रोमन है, उर्दू की फारसी, पंजाबी की गुरुमुखी है।

इन सभी लिपियों के चिह्न भिन्न–भिन्न हैं। अतः प्रत्येक शाखा की रूप–रचना, स्वरूप को जानना आवश्यक है।

वक्ता के द्वारा उच्चारित ध्वनियों को श्रोता कानों से सुनकर मानसिक बिंब उत्पादित करता है और मानसिक प्रतीति प्राप्त करता है, उसे ही 'अर्थ प्रतीति' कहा जाता है। अतः सही उच्चारण और सही सुनना ही अर्थप्रेषण है। ये ही भाषा उच्चारण के महत्वपूर्ण आयाम हैं। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि ध्वनि या वर्ण उत्पादन उनका संवहन और ग्रहण या श्रवण से बात भाव विचार समझ सकते हैं। इन बातों को समझने के लिए हिंदी 'वर्णमाला' का अध्ययन किया जाता है।

मनुष्य द्वारा व्यक्त की गई ध्वनियों को शब्द चिह्न के द्वारा व्यक्त किया जाता है उन्हें 'वर्ण' कहते हैं। वर्ण भाषा की सबसे लघु इकाई है। वर्णों के समूह को 'वर्णमाला' कहा जाता है। हिंदी की वर्णमाला स्वर और व्यंजन से मिलकर बनी है। उच्चारण के आधार पर 45 हैं वर्ण जिसमें स्वर 10 और 35 व्यंजन होते हैं, तो लेखन के आधार पर 52 वर्ण हैं। जिनमें 13 स्वर और 35 व्यंजन एवं 4 संयुक्त व्यंजन हैं।

भाषा की लघुत्तम इकाई ध्वनि है। ध्वनि को लिखित रूप में वर्ण के द्वारा प्रकट किया जाता है। 'वर्ण' शब्द प्रयोग ध्वनि और ध्वनि चिह्न के लिए प्रयुक्त किया जाता है। भाषा के मौखिक और लिखित रूपों के प्रतीक के रूप में 'वर्ण' का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'अक्षर' भी कहा जाता है। वर्ण या अक्षरों का विभाजन नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है। इसके अनुसार हिंदी वर्णमाला स्वर और व्यंजनों से युक्त है।

* **स्वर** : जिन ध्वनियों के उच्चारण में श्वास या प्राणवायु बिना अवरोध या रुकावट से मुख से निकलती है, वे स्वर हैं।

स्वरों के तीन भेद माने जाते हैं–

(1) ह्रस्व स्वर

(2) दीर्घ स्वर

(3) प्लुत स्वर

टिप्पणी

(1) ह्रस्व स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में अल्प समय लगता है उन्हें 'ह्रस्व स्वर' कहते हैं। इन्हें मूलस्वर भी कहा जाता है।

ह्रस्व स्वरों की संख्या 4 है– (अ इ उ, ऋ)

'ऋ' का प्रयोग संस्कृत के तत्सम शब्दों में किया जाता है–

उदा.– ऋषि, ऋतु किंतु इनका उच्चारण– रिसी, रितु कहते हैं।

(2) दीर्घ स्वर– इन्हें बोलने में ह्रस्व स्वरों की तुलना में थोड़ा अधिक समय लगता है, उन्हें 'दीर्घ स्वर' कहते हैं।

दीर्घ स्वरों की संख्या 7 है– (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)

(3) प्लुत स्वर– जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से तीन गुना अधिक समय लगता है, उन्हें 'प्लुत स्वर' कहते हैं।

जैसे– ओ३म्। हिंदी में प्लुत स्वरों का प्रयोग लगभग ना के बराबर होता है।

अं और अः स्वरों को अयोगवाह वर्ण कहते हैं।

उदा.– प्रपंच, कंठ, छंद; प्रातः अतः, संभवतः आदि। इन्हें क्रमशः अनुस्वार, विसर्ग कहा जाता है।

- **व्यंजन**– व्यंजन वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में प्राणवायु मुख–विवर या नासिक संधि–स्थल में अवरुद्ध होकर मुख या नासिका मार्ग से बाहर निकलती है। इसलिए व्यंजनों को स्पर्श तथा स्फोट ध्वनियाँ भी कहा जाता है।

हिंदी भाषा में कुल 41 व्यंजन ध्वनियाँ हैं–

(1) स्पर्श व्यंजन– इस प्रकार की ध्वनियों में जिह्वा का मुख विवर में ऊपरी भाग में कहीं न कहीं स्पर्श होता है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहा जाता है। इनकी संख्या 27 है।

जैसे–

(अ) कंठय व्यंजन 'क' वर्ग– क् ख् ग् घ् ङ्

(ब) तालव्य– 'च' वर्ग– च् छ् ज् झ् ञ्

(स) मूर्धन्य– ट वर्ग– ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) दंत्य– त वर्ग– त् थ् द् ध् न्

(य) ओष्ठय– प वर्ग– प् फ् ब् भ् म्

अन्य व्यंजन– ड़ ढ़

(2) अंतस्थ– स्पर्श ध्वनियों की तुलना में इनके उच्चारण में प्राण–वायु हल्की सी रोकी जाती है। इनकी संख्या 4 हैं– य, र, ल, व (इन्हें अर्ध स्वर भी कहा जाता है।)

(3) उष्म या संघर्णी व्यंजन– इनके उच्चारण में श्वास बहुत अधिक संघर्ष के साथ निःसृत होती है। इनकी संख्या 4 है– श् ष् स् ह्।

(4) आगत– फारसी भाषा से आए हुए व्यंजन 2 हैं– ज़ फ़।

टिप्पणी

(5) संयुक्त व्यंजन– दो व्यंजनों के योग से बने व्यंजन 4 हैं–

क् + ष् = क्ष

त् + र् = त्र

ज् + त्र् = ज्ञ

श् + र् = श्र

- **स्वर और व्यंजन में अंतर :**

स्वर के उच्चारण में कम समय तो व्यंजनों के उच्चारण में स्वरों की तुलना में अधिक समय लगता है।

स्वर स्वतंत्र तो व्यंजनों को स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है।

स्वरों का उच्चारण निरंतर तो व्यंजनों का उच्चारण निरंतर नहीं होता।

स्वर मुखर होते हैं अतः स्पष्ट सुनाई देते हैं, व्यंजनों में मुखरता नहीं।

हिंदी वर्णमाला की तालिका

स्वर (11)

ह्रस्व स्वर अ, इ, उ, ऋ

दीर्घ स्वर आ, ई, उ, ए, ऐ, ओ, औ

प्लुत स्वर ओ ऽ ऽ ऽ म्

व्यंजन (41)

स्पर्श व्यंजन (27)

कंठय–क् ख् ग् घ् ङ्

तालव्य– च् छ् ज् झ् ञ्

मूर्धन्य– ट् ठ् ड् ढ् ण्

दंत्य– त् थ् द् ध् न्

ओष्ठय– प् फ् ब् भ् म्

अन्य–ड़ ढ़

अंतस्थ व्यंजन (4)

य् र् ल् व्

आगत व्यंजन (2)

ज़ फ़

उष्म व्यंजन (4)

श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन (4)

क्ष, त्र, ज्ञ, श्र,

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. हिंदी में दीर्घ स्वरों की संख्या कितनी है?

   (क) 11 स्वर (ख) 7 स्वर

   (ग) 4 स्वर (घ) 2 स्वर

2. स्पर्श व्यंजन पहचानिए।

   (क) श ष स ह (ख) य र ल व

   (ग) प फ ब भ म (घ) क्ष त्र ज्ञ श्र

3. मनुष्य द्वारा व्यक्त की गई ध्वनियों को जब शब्द–चिह्न के द्वारा व्यक्त किया जाता तब उसे क्या कहते हैं?

   (क) वर्ण (ख) शब्द

   (ग) वाक्य (घ) इनमें से कोई नहीं

2.3 शब्द

भाषा का सबसे छोटा तत्व "शब्द" है जिसे शब्दार्थ या व्यावहारिक सामग्री के साथ अलग किया जाता है। "एक या एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र सार्थक इकाई को "शब्द" कहा जाता है।

जैसे– एक वर्ण से न तो शब्द बनता है और न ही कोई अर्थ व्यक्त होता है। एक से अधिक वर्णों के समूह से शब्द बनते हैं–

उदा.

- क्+अ+म्+अ+ल+अ वर्णों के योग से 'कमल' शब्द बना है।
- प्+अ+र+अ+म्+आ+त्+म्+आ = परमात्मा
- न्+अ+य+न्+अ = नयन

अनेक वर्णों के समूह से बने शब्द स्वतंत्र रूप से अपना अर्थ प्रकट करते हैं तो सार्थक शब्दों से वाक्य बनता है।

कमल, परमात्मा, नयन, धरती, आसमान, फल, फूल पानी, दूध, चीनी आदि शब्दों का प्रयोग मनुष्य द्वारा किया जाता है। वे सभी सार्थक शब्द हैं क्योंकि ये सार्थक ध्वनियों से बने हैं और इन सबका निश्चित अर्थ हैं। शब्द सार्थक ध्वनियों के मेल से बनते हैं और सार्थक शब्द अपना विशेष अर्थ प्रकट करते हैं।

मनुष्य सामाजिक व्यवहार में विचार–विनिमय के लिए केवल शब्दों से काम नहीं चला सकता क्योंकि शब्द भले ही स्वतंत्र रूप में प्रयोग करते समय अर्थ प्रकट करते हैं किंतु वे भावों की अभिव्यक्ति नहीं कर सकते। सार्थक शब्दों के समूह से बने वाक्यों से ही भावाभिव्यक्ति संभव होती है। मनुष्य जिस भाषा के द्वारा ध्वनि, शब्द वाक्यों के प्रयोग से अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास करता है, उस भाषा को समृद्ध

बनाना आवश्यक होता है। इस समृद्धि का आधार है शब्द भंडार। जैसे–जैसे आवश्यकता बढ़ती गई मनुष्य नए–नए शब्दों को स्वीकार करते गया। आज हमें गर्व है कि हिंदी भाषा का शब्द–भंडार बहुत समृद्ध है। अतः हिंदी शब्द निर्माण के आधारों का विवेचन यहाँ असंगत नहीं होगा।

टिप्पणी

(अ) व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द निर्माण

(1) रूढ़ शब्द– विशेष अर्थ में प्रकट होने वाले शब्द जिनका विभाजन नहीं किया जा सकता।

जैसे : बालक, बंदर, हाथी, पेड़

(2) यौगिक शब्द– कई शब्दों के मेल से बने हुए शब्द यौगिक शब्द कहलाते हैं–

जैसे : दिवाकर, प्रभाकर, भालचंद्र, सुधांशु

(3) योगरूढ़– यौगिक होते हुए भी इन शब्दों का सामान्य अर्थ व्यक्त नहीं होता, अतः उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे– जलज, पंकज, वारिज

(ब) अर्थ के आधार पर शब्द निर्माण

- **अनेकार्थी शब्द**– कुछ शब्द एक से अनेक अर्थ देते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है। जैसे–

अंक– संख्या, गोद; तीर– किनारा, बाण;

नग– पर्वत, नगीना; पानी–जल, जलना

काल– समय, मृत्यु; आम– सामान्य, एक फल

हार– माला, हारना; कर– हाथ, करना

- **वाक्यांश के लिए एक शब्द**

जैसे– कविता लिखने वाला– कवि

चित्र बनाने वाला– चित्रकार

रोगी का इलाज करने वाला– डॉक्टर

पर्वत पर चढ़ने वाला– पर्वतारोही

सप्ताह में एक बार होने वाला– साप्ताहिक

फसल उगाने वाला– किसान आदि।

- **पर्यायवाची शब्द**

लगभग एक जैसा अर्थ बताने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं। जैसे–

अंग– तन, देह, काया, शरीर

वन– जंगल, कानन, अरण्य, विपिन

गृह– घर, भवन, सदन, निकेतन

आकाश– आसमान, गगन, अंबर, नभ

टिप्पणी

पेड़– तरू, पादप, विटप वृक्ष

पुत्र– बेटा, तनय, सुत, नंदन

माता– माँ, जननी, अंबा, अम्मा

समुद्र– जलधि, उदधि, पयोधि, सागर, रत्नाकर आदि

- **विलोम शब्द–**

एक–दूसरे का विपरीत या उलटा अर्थ बताने वाले शब्द, विलोम शब्द कहलाते हैं। जैसे–

आदि × अंत	जन्म × मरण
अमृत × विष	सुख × दुःख
आस्था × अनास्था	आशा × निराशा
दिन × रात	उपकार × अपकार
मलिन × निर्मल	राजा × रंक आदि

(स) रचना के आधार पर शब्द निर्माण

उपसर्ग, प्रत्यय, समास आदि के कारण नए–नए शब्द निर्माण किए जाते हैं।

शब्द के आगे जुड़कर आने वाले "उपसर्ग" तो शब्द के बाद जुड़कर शब्द बनाने वाले "प्रत्यय" कहलाते हैं।

जैसे– वि, सु; अति, कम, बाद, अन औ उपसर्गों से बने शब्द

वि– विदेश, वियोग, विज्ञान विनाश

सु– सुगम, सुपुत्र, सुदूर, सुकर्म

अति– अतिरिक्त, अतिव्याप्ति

कम– कमसिन, कमबख्त, कम, उम्र, कमजोर

बद– बदनाम, बदबू, बदसूरत बदहजमी

अन– अनपढ़, अज्ञान, अमोल, अनाथ, अनबन

औ– औरत, औगुन, औसर आदि।

प्रत्यय से बने शब्द–

क– पाठक, गायक, वाचक

आका– धमाका, लड़ाका

ना– खाना, जाना, गाना

इमा– लालिमा, नीलिमा, हरीतिमा

एरा– लुटेरा, चचेरा, सपेरा, ममेरा

गर– बाजीगर, कारीगर, जादूगर आदि।

समास से बने शब्द–

दो या उससे अधिक शब्दों के योग से बने नए शब्द को 'समास' कहते हैं। मिला हुआ शब्दों का योग "समस्तपद" कहलाता है। समास के अनेक भेद हैं। उनके कुछ उदाहरण–

जैसे– प्रतिदिन, यथाशक्ति, यथाविधि, भरपेट माखनचोरी, राजभवन, धर्मभ्रष्ट, दानवीर, नवग्रह, दोपहर, चौमासा, त्रिवेणी, पीतांबर, नीलकंठ, चतुरानन, शूलपाणी, पाप–पुण्य, रात–दिन, राधा–कृष्ण आदि।

उपसर्ग, प्रत्यय, समास आदि की सहायता से शब्द–संपदा निश्चित ही समृद्ध हुई है। इस विषय से संबंधित विस्तृत अध्ययन खण्ड तीन में किया जाएगा। यहाँ केवल कुछ उदाहरणों द्वारा शब्द निर्माण अर्थात् शब्दों की विविधता बताई गई है।

(द) उत्पत्ति के आधार पर शब्द निर्माण

हिंदी भाषा में संस्कृत से तत्सम तद्भव शब्द देशज एवं विदेशी भाषाओं से भी अनेक शब्दों को स्वीकार किया गया है।

- **तत्सम शब्द**– संस्कृत के रूप में ही जो हिंदी में आए शब्द हैं उन्हें 'तत्सम' कहा जाता है–

  जैसे– क्षेत्र, नृप, ज्योति, दिव्य, आत्मा, स्वर्ग, पुण्य, अग्नि आदि।

- **तद्भव शब्द**– जो शब्द संस्कृत प्राकृत से रूप परिवर्तित करके या उनसे निर्मित किए गए हैं उन्हें 'तद्भव' कहते हैं।

  जैसे– कर्म < कम्म < काम; अग्नि < अगिन < आग; धर्म < धम्म < धाम, क्षेत्र < खेत; सूर्य < सूरज आदि।

- **देशज शब्द**– क्षेत्रीय प्रभाव से उन बोली–भाषाओं में प्रचलित शब्दों का उसी मूल रूप में प्रयोग किया जाता है उन्हें देशज या देशी शब्द कहा जाता है।

  जैसे : पगंडी, पेट, थैला आदि।

- **विदेशी शब्द**– अपने देश की भाषा से परकीय भाषा के शब्द जो हिंदी में प्रयुक्त किए जा रहे हैं, उन्हें विदेशी शब्द कहते हैं।

जैसे– अंग्रेजी के पेन, पेन्सिल, प्रिंसिपल, हॉस्पीटल, टाईम, मिनिस्टर, क्लास, स्कूल, बिल्डिंग, प्रिन्स, रोड, आदि शब्द।

- फारसी के– अनार, दरबार, रुमाल, नमक आदि।
- अरबी के– अमीर, औलाद, कलम, कानून, गरीब आदि।
- पुर्तुगाली के– अचार गमला, चाबी, फीता, तौलिया आदि।
- तुर्की के– कैंची, लाश, बारूद, दरोगा आदि
- जापानी के– रिक्शा
- चीनी के– चाय, पटाखा, तूफान आदि।

(य) प्रयोग के आधार पर शब्द निर्माण

प्रयोग के आधार पर शब्दों को आठ वर्गों में विभक्त किया गया है।

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक

टिप्पणी

विकार के आधार पर शब्दों को दो भागों में बांटा गया है।

विकारी शब्द   अविकारी शब्द (अव्यय)

(1) विकारी शब्द : जिन शब्दों में परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और संज्ञा में लिंग, वचन, कारक आदि से विकार या परिवर्तन होता है।

जैसे : संज्ञा – लड़का, लड़के ने, लड़के के लिए

सर्वनाम – मैं, मुझे, मुझसे, तुम, तुमसे, तुम्हें, तुमको

विशेषण – पीला, पीली, पीले

क्रिया – जा, गया, जाता है, जाएगा

(2) अविकारी शब्द : जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन नहीं होता उन्हें अविकारी कहते हैं।

जैसे– क्रिया विशेषण अव्यय – जल्दी–जल्दी, धीरे–धीरे

संबंधबोधक अव्यय – आगे–पीछे, ऊपर–नीचे

समुच्चय बोधक अव्यय – यदि, अगर, और, अथवा

विस्मयादिबोधक अव्यय – अहा, अरे, वाह वाह,

इनसे विविध शब्द एवं शब्द समूह का ज्ञान मिलता है और हिंदी भाषा का शब्द–भंडार समृद्ध एवं संपन्न बनाने में सहायता मिलती है।

अपनी प्रगति जांचिए

4. एक या एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र, सार्थक इकाई को क्या कहते हैं?

(क) वाक्य   (ख) ध्वनि

(ग) अर्थ   (घ) शब्द

5. रचना के आधार पर शब्द निर्माण में किसकी सहायता ली जाती है?

(क) वर्ण–अर्थ   (ख) उपसर्ग, प्रत्यय

(ग) स्वर–ध्वनि   (घ) संज्ञा–क्रिया

6. क्षेत्र, आत्मा, स्वर्ग, पुण्य आदि किस प्रकार के शब्द माने जाते हैं?

(क) देशज शब्द   (ख) विदेशी शब्द

(ग) तत्सम शब्द   (घ) संमिश्र शब्द

2.4 वाक्य

टिप्पणी

वर्ण और शब्द का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। ध्वनियों के संयोग से शब्द निर्माण होते हैं। जो शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य होते हैं उन्हें 'रूप' या 'पद' कहा जाता है। रूपों का समूह वाक्य कहलाता है। भाषा की महत्तम इकाई वाक्य है। वाक्यों के बिना भावों और विचारों का संप्रेषण संभव नहीं है।

वाक्य की परिभाषा

किसी भाव या विचार को पूरी तरह प्रकट करने वाले सार्थक शब्दों के समूह को 'वाक्य' कहा जाता है।

उदा.–

- मीना पत्र लिख रही है।
- राधा नाच रही है।
- पंछी आसमान में उड़ रहे हैं।
- आम फलों का राजा है।
- माँ सबके लिए भोजन पकाती है।

इन वाक्य प्रयोग से निम्न बातें सामने आती हैं–

- सभी वाक्य एक से अधिक शब्दों के योग से बने हैं।
- प्रत्येक वाक्य में क्रिया का प्रयोग अंत में किया गया है।
- प्रत्येक वाक्य में शब्दों का सही–सार्थक प्रयोग किया गया है।
- सभी वाक्य अपना पूर्ण अर्थ देते हैं।

अब कुछ अन्य उदाहरण देखते हैं–

- रही थी गाना गा विहा।
- है लिशा कक्षा में आई प्रथम।
- टीका चाहिए कोरोना का लगवाना।

उपर्युक्त वाक्यों में कर्ता, कर्म, क्रिया का प्रयोग किया गया है किंतु वाक्यों का अर्थ स्पष्ट नहीं हो रहा और कर्ता क्रिया आदि का क्रम भी सही नहीं है। अतः वाक्य में प्रयुक्त कर्ता, कर्म, क्रिया के स्थान पर ध्यान देना आवश्यक है।

जैसे– विहा गाना गा रही थी।

लिशा कक्षा में प्रथम आई है।

कोरोना का टीका लगवाना चाहिए।

शब्दों का व्यवस्थित रूप जिससे मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है, उसे ही वाक्य कहा जा सकता है। एक सार्थक वाक्य में कर्ता, कर्म क्रिया होते हैं।

वाक्य के अंग

वाक्य रचना को समझने के लिए वाक्य के अंगों की जानकारी आवश्यक है। वाक्य के दो प्रमुख अंग माने जाते हैं–

(1) उद्देश्य

(2) विधेय

(1) उद्देश्य— वाक्य का वह खंड जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं।

टिप्पणी

जैसे— रमेश पुस्तक पढ़ता है। मैं स्कूल जा रहा हूँ।

पूजा आम खाती है। गुलाबी रंग पसंद है।

इन वाक्यों में उद्देश्य कर्ता है। उद्देश्य अधिकतर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि होते हैं।

इन वाक्यों में रमेश, पूजा संज्ञा; मैं, सर्वनाम; गुलाबी विशेषण आदि उद्देश्य हैं।

(2) विधेय — वाक्य में क्रिया या क्रिया का विस्तार कर्म से होता है। वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है उसे 'विधेय' कहते हैं। दूसरे शब्द में कह सकते हैं कि "वाक्य का वह अंश विधेय है जो उद्देश्य के बारे में सूचना देता है।

जैसे— मोर बारिश में नाचता है।

चीता बहुत तेज दौड़ता है।

वीणा पटना गई थी।

इन वाक्यों में—

उद्देश्य— मोर तो बारिश में नाचता है — विधेय है।

उसी प्रकार चीता, वीणा उद्देश्य हैं और बहुत तेज दौड़ता है, पटना गई थी— विधेय हैं।

वाक्य के गुण :

संस्कृत आ. विश्वनाथ वाक्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हैं, उनके अनुसार वाक्य के गुण हैं— योग्यता, आकांक्षा और आसक्ति। कुछ भाषाविदों ने सार्थकता और आन्विति गुणों की चर्चा की है।

- **योग्यता**— शब्दों या पदों का समुचित प्रयोग योग्यता कहलाता है। पदों में पास्परिक संबंध की योग्यता अर्थ और व्याकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण होती है।

  जैसे— वह पेड़ों को आग से सींचता है।

इसमें "आग से सींचा नहीं जाता" इसलिए यह 'योग्यता' वाला पद नहीं है। अर्थ की दृष्टि से इसमें बाधा आती है।

लिंग, वचन विभक्ति आदि के व्याकरणिक उचित पदों का वाक्य में प्रयोग होना चाहिए। तभी अर्थपूर्ण वाक्य बनता है

जैसे— सुमन जाता है। रमेश आती है।

इन वाक्यों में लिंग के कारण बाधा आने से योग्यता का अभाव है। अतः ये सुमन जाती है। रमेश आता है। योग्यता युक्त वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से उचित, शुद्ध हैं।

टिप्पणी

- **आकांक्षा**– का अर्थ है अपेक्षा, जिज्ञासा। वाक्य के प्रयोग में शब्दों की कमी न हो जिससे अर्थग्रहण करने में बाधा न हो।

  जैसे– 'मोहन' कहने से वाक्य पूरा नहीं होता, जिज्ञासा बनी रहती है कि वह क्या करता है?

'पढ़ता है' कहने पर भी आकांक्षा बढ़ती है कि वह क्या पढ़ता है–

पाठ्यपुस्तक कहने पर ही आकांक्षा की पूर्ति करने वाला वाक्य बनता है।

जैसे– मोहन पाठ्यपुस्तक पढ़ता है।

- **आसक्ति**– का अर्थ है समीपता। वाक्य बोलने या लिखने में निरंतरता हो। शब्दों के उच्चारण में अधिक समय का व्यय करने से पदों का क्रम टूट जाने से वाक्य नहीं बनेगा।

जैसे– कोई सुबह कहे– मैं खाना

एक घण्टे बाद कहे– दोपहर में

और एक घण्टे बाद कहे– खाऊँगा

उक्त शब्दों– पदों से कोई अर्थ स्पष्ट नहीं होता। इसके लिए समय की समीपता आवश्यक है। पदों की क्रमबद्धता से अर्थपूर्ण वाक्य बनता है– मैं खाना दोपहर में खाऊँगा।

- **सार्थकता** – का अर्थ है वाक्य में प्रयुक्त शब्द सार्थक हो।

जैसे– कमल राष्ट्रीय फूल है। म. गांधी राष्ट्रपिता हैं।

- **अन्विति** – व्याकरण की दृष्टि से अन्विति, समुचित प्रयोग के लिए लिंग, वचन, कारकों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। योग्यता गुण के अंतर्गत इसका समावेश किया जा सकता है।

वाक्य के भेद : भाषा के विद्वानों ने वाक्य भेदों के मुख्य दो आधार माने हैं–

(अ) अर्थ के आधार पर वाक्य भेद

(ब) रचना के आधार पर वाक्य भेद

(अ) **अर्थ के आधार पर वाक्य भेद**–

(1) विधानसूचक– इसमें सामान्य कथन से भाव प्रकट किया जाता है, उसे 'विधानसूचक' वाक्य कहते हैं।

जैसे– मध्य प्रदेश एक राज्य है।, बहुत तेज हवा चल रही है।

(2) निषेधसूचक– जिसमें नकारात्मक भाव व्यक्त होते हैं उसे 'निषेधसूचक वाक्य' कहते हैं।

जैसे– मैंने आज पढ़ाई नहीं की।, वह आज बाहर नहीं गया।

(3) आज्ञासूचक– जिसमें आज्ञा या आदेश का भाव होता है, उसे 'आज्ञासूचक वाक्य' कहते हैं।

जैसे– चुप रहो। इस अध्याय को पढ़ो।

टिप्पणी

(4) **इच्छासूचक**– जिसमें इच्छा या आशीर्वाद सूचक मान प्रकट होता है उसे 'इच्छासूचक' वाक्य कहते हैं।

जैसे– तुम जुग–जुग जिओ। जीवन में तुम्हें सफलता मिले।

(5) **संदेहसूचक**– जिसमें शुद्ध निर्माण होने का भाव होता है उसे 'संदेहसूचक वाक्य' कहते हैं।

जैसे– शायद, मैं कल नहीं आ पाऊँगा। वह आयेगा या नहीं।

(6) **प्रश्नार्थक**– जिससे प्रश्न पूछा जाता है उसे प्रश्नसूचक वाक्य कहा जाता है।

जैसे– तुम्हारा नाम क्या है? क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे?

(7) **संकेतार्थ**– जब कोई बात दूसरी बात पर आश्रित होती है तब वह 'संकेतार्थ वाक्य' कहा जाता है।

(8) **विस्मयादिबोधक**– हर्ष शोक, दुःख, घृणा आदि भावों की अभिव्यक्ति जिससे होती है उसे विस्मयादिबोधक वाक्य कहते हैं।

जैसे– ओह! क्या सुंदर दृश्य है। छिः छिः कितनी गंदगी है।

(ब) रचना के आधार पर वाक्य–भेद

(1) **सरल या साधारण वाक्य**– इसमें एक कर्ता और एक क्रिया होती है– उदा. –मुझे किताब चाहिए। मुन्नी घर गयी।

(2) **संयुक्त वाक्य**– गरीब मेहनत करते हैं किंतु उन्हें भरपेट रोटी नहीं मिलती।

(3) **मिश्रवाक्य**– इसमें एक प्रधान तथा अन्य आश्रित उपवाक्य होते हैं– उदा.–मैं चाहता हूं, तुम लिखो–पढ़ो और नाम कमाओ।

अपनी प्रगति जांचिए

7. वाक्य के बिना किसका संप्रेषण नहीं होता?

(क) भाव (ख) भाषा

(ग) शब्द (घ) क्रिया

8. वाक्य के प्रमुख अंग क्या हैं?

(क) वर्ण और शब्द (ख) उद्देश्य और विधेय

(ग) कर्ता और कर्म (घ) लिंग और वचन

9. योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति किसके गुण हैं?

(क) ध्वनि (ख) वाक्यांश

(ग) वाक्य (घ) व्याकरण

10. विधानसूचक, निषेधसूचक, संकेतसूचक वाक्य–भेद का आधार कौन–सा है?

(क) शब्द (ख) भाव

(ग) विचार (घ) अर्थ

2.5 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

टिप्पणी

1. (ख)
2. (ग)
3. (क)
4. (घ)
5. (ख)
6. (ग)
7. (क)
8. (ख)
9. (ग)
10. (घ)

2.6 सारांश

भाषा की लघुत्तम इकाई वर्ण या अक्षर है। ध्वनि के लिखित रूप को वर्ण द्वारा प्रकट किया जाता है। हिन्दी वर्णमाला स्वर और व्यंजनों से बनी है। वाक् इंद्रियों की सहायता से उच्चरित ध्वनियों के निर्माण में प्राणवायु–श्वास–प्रश्वास द्वारा बाहर निकलती है। मुख–विवर में रगड़ खाती हुई वायु की कम अधिक मात्रा से स्वर–व्यंजन निर्माण होते हैं। हिंदी में ग्यारह स्वर और इकतालीस व्यंजन माने गए हैं। इनके समूह से शब्द बनते हैं।

शब्दों के समूह से वाक्य बनते हैं। भाषा में शब्द निर्माण का महत्व है। जिस भाषा का शब्द भंडार समृद्ध होगा, वह अधिक संपन्न मानी जाती है। भाषा के मूल शब्दों के साथ संस्कृत, अंग्रेजी, अन्य विदेशी भाषाओं से, उपसर्ग प्रत्ययों के योग से शब्द संपदा विकसित की जाती है।

सार्थक शब्दों के समूह से बने वाक्यों से भावों और विचारों का संप्रेषण किया जाता है। छोटे–बड़े वाक्यों का व्यवहार में उपयोग किया जाता है। वर्ण, शब्द और वाक्य का अध्ययन आवश्यक ही है।

2.7 मुख्य शब्दावली

- **प्रतीति** : अनुभूति।
- **अर्थप्रेषण** : अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति, भेजना।
- **प्लुत स्वर** : तीन मात्राओं का स्वर, जिसका चिह्न ऽ होता है।
- **रूढ़ शब्द** : प्रसिद्ध–प्रचलित शब्द।
- **तत्सम** : उसके समान (संस्कृत से सीधे हिंदी में आए शब्द) मूल रूप में।

- **अर्थग्रहण** : समझना।
- **आश्रित** : सहारा दिया हुआ।

टिप्पणी

2.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. स्वर को परिभाषित करते हुए उसके भेदों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
2. स्वर और व्यंजनों के अंतर पर प्रकाश डालिए।
3. व्यंजन का सामान्य परिचय दीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा निर्माण के लिए स्वर और व्यंजनों की सहायता आवश्यक होती है विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. वाक्य की परिभाषा स्पष्ट करते हुए उसके अंगों की चर्चा विस्तारपूर्वक कीजिए।
3. वाक्य के गुणों को विस्तार से समझाइए।

2.9 सहायक पाठ्य सामग्री

1. मानक हिंदी का स्वरूप – डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका – कैलाशनाथ पाण्डेय
3. भाषा विज्ञान – हिंदी भाषा और लिपि – डॉ. रामकिशोर शर्मा
4. हिंदी भाषा की संरचना– डॉ. भोलनाथ तिवारी
5. भाषाविज्ञान– डॉ. बाबूराम सक्सेना
6. हिंदी व्याकरण– आ. कामता प्रसाद गुरु
7. प्रयोजनमूलक हिंदी– भाग 1, 2 डॉ. उर्मिल पाटील।

इकाई 3 हिंदी भाषा का क्षेत्र

टिप्पणी

संरचना

3.0 परिचय
3.1 उद्देश्य
3.2 हिंदी भाषा का क्षेत्र
3.3 ग्रामीण क्षेत्र
3.4 प्रादेशिक भाषा
3.5 राष्ट्रीय भाषा– (राष्ट्रभाषा) का क्षेत्र
3.6 अन्तर्राष्ट्रीय भाषा
3.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
3.8 सारांश
3.9 मुख्य शब्दावली
3.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
3.11 सहायक पाठ्य सामग्री

3.0 परिचय

हिंदी भाषा का संबंध भारोपीय परिवार से रहा है। इसका भौगोलिक क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि क्षेत्रों में हिंदी प्रमुखता से बोली जाती है।

हिंदी भाषा की ब्रज, बुंदेली, कन्नौजी, अवधी, बिहारी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, भोजपुरी, मारवाड़ी आदि अनेक बोलियाँ हैं। इनका प्रयोग पारस्परिक व्यवहार में किया जाता हैं। प्रत्येक बोली अपनी विशेषताओं को संरक्षित करते हुए एक दूसरी पर प्रभाव डालती हैं। अतः हिंदी भाषा ने भी अनेक बोलियों के अनेक शब्दों को सहज स्वीकार किया है।

गाँव, प्रदेश, राष्ट्र और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाने लगा है। इस इकाई में हिंदी भाषा प्रयोग के इन्हीं क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.1 उद्देश्य

इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- हिंदी भाषा विकास की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- गांव, प्रांत, राष्ट्र आदि क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग से परिचित हो पाएंगे;
- विविध क्षेत्रों में बोली जाने वाली हिंदी के अंतर को समझ पाएंगे;
- हिंदी की विविध बोलियों की सामान्य जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- हिंदी के विविध क्षेत्रों की विशेषताओं को समझ पाएंगे।

3.2 हिंदी भाषा का क्षेत्र

टिप्पणी

अनेक बोलियों के समुदाय से हिंदी भाषा का उन्नयन हुआ है। भारत के विस्तृत भूभाग में बोली जाने वाली यह समृद्ध–संपन्न भाषा है। विविध रूपों में यह समग्र समाज में व्याप्त है। युगों–युगों की संचित सभ्यता एवं संस्कृति की संरक्षिका के रूप में वह सामाजिक, सांस्कृतिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करती रही है। मनुष्य की सही पहचान भाषा के द्वारा ही होती है।

डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन के अनुसार भारत में लगभग 179 समृद्ध भाषाएँ हैं और 544 बोलियाँ प्रचालित हैं। हिंदी भाषा की बोलियों का अस्तित्व भी बहुत पुराना है। ये बोलियाँ अपने–अपने क्षेत्र में विकसित हुई हैं। वैज्ञानिक अध्ययन करने वाले विद्वानों ने बोलियों को पाँच वर्गों में विभाजित किया है।

हिंदी बोलियों की तालिका

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी	बिहारी हिंदी
(1) खड़ी बोली (कौरवी)	(1) अवधी	(1) भोजपुरी
(2) बांगरू (हरियाणवी)	(2) बघेली	(2) मगही
(3) ब्रज	(3) छत्तीसगढ़ी	(3) मैथिली
(4) बुंदेली		
(5) कन्नौजी		

राजस्थानी हिंदी	पहाड़ी हिंदी
(1) मारवाड़ी (पश्चिम राजस्थानी)	(1) पश्चिमी पहाड़ी
(2) जयपुरी (पूर्वी राजस्थानी)	(2) मध्यवर्ती पहाड़ी
(3) मेवाती	(3) कुमाऊँनी
(4) मालवी	(4) गढ़वाली

इन बोलियों का अपना–अपना विशेष क्षेत्र रहा हैं। लोक व्यवहार, लोक–साहित्य स्थानीय बोलियों में ही होता है। ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, मारवाड़ी, राजस्थानी, मौथिली आदि बोलियों में काव्य, महाकाव्य, गीतिकाव्य की रचनाएँ मिलती हैं। विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई की रचनाएँ हिंदी साहित्य की अनुपम निधियां हैं 'हिंदी की इन बोलियों का अपना स्वतंत्र क्षेत्र, स्थान एवं विशेषता रही हैं। इससे हिंदी भाषा के व्यापक क्षेत्र का पता चलता है।

खड़ी बोली गंगा–जमुना के दोआब की प्रमुख बोली है। मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरपुर, देहरादून के मैदानी भाग, बिजनौर, मुरादाबाद, अंबाला, कुरूक्षेत्र की परिधि तक इसका क्षेत्र हैं।

ब्रज आगरा, ग्वालियर, अलीगढ़, मैनपुरी, धौलपुर, भरतपुर, गुड़गांव के इलाकों में बोली जाती है। ब्रज में प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है।

मध्यकालीन हिंदी साहित्य में तो यह साहित्य की भाषा बन गई थी। संपूर्ण कृष्णभक्ति साहित्य, रीतिकालीन सहित्य, इसी भाषा में लिखा गया है। सूरदास की

सूरसागर ने विश्व में कीर्तिपताका फहराई है। केशवदास, नंददास, बिहारी, देव, मतिराम, धनानंद, रसखान आदि ब्रज भाषा के श्रेष्ठ कवि हुए हैं। लोकसाहित्य की दृष्टि से ब्रज संपन्न भाषा है।

पूर्वी हिंदी की अवधी महत्त्वपूर्ण बोली है। लखनऊ, रायबरेली, फतेहपुर, सीतापुर, उन्नाव, फैजाबाद, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, सुलतानपुर आदि स्थानों पर यह बोली जाती है।

अवधी साहित्य की रचनाएँ मध्यकाल में ही होने लगी थी। भक्तिकाल में रामलीला काव्य, सूफी प्रेमाख्यान काव्य अवधी में मिलते हैं। विश्व प्रसिद्ध श्रीरामचरित मानस तुलसीदास कृत रचना अवधी में ही है। जायसी कृत पद्मावत, जगनिक का आल्हाखंड की रचना भी अवधी में ही है। सूफी कवियों में जायसी के अतिरिक्त कुतुबन, मंझन, उसमान, मुल्लादाऊद आदि ने अवधी का ही उपयोग किया हैं।

हिंदी की अन्य बोलियों में भी कम–अधिक मात्रा में साहित्य लिखा गया है।

हिंदी की विविध बोलियों के समुदाय से हिंदी भाषा का स्वरूप अत्यंत व्यापक बना है। बोलियों के समुदाय से भाषा बनती है किंतु भाषा से बोलियाँ नहीं बनती। बोलियों के क्षेत्र के कारण हिंदी भाषा का क्षेत्र काफी विस्तृत–विशाल बना है। अतः हिंदी केवल भाषा नहीं वह तो देश की पहचान है। भाषा हमारे जीवन मूल्यों और संस्कृति की संवाहक और संप्रेणक है। ग्रामीण क्षेत्र में बोली, प्रांतीय क्षेत्र में प्रांतीय भाषा, राष्ट्रीय क्षेत्र में राष्ट्रभाषा, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय रूप मे हिंदी के स्वरूप, उपयोगिता– विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

अपनी प्रगति जांचिए

1. पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ हैं–

(क) खड़ी बोली, ब्रज	(ख) अवधी बघेली
(ग) भोजपुरी मैथिली	(घ) जयपुरी, मालवी

2. श्रीरामचरित मानस की रचना किस बोली में लिखी गई है?

(क) मेवाती	(ख) ब्रज
(ग) अवधी	(घ) मारवाड़ी

3.3 ग्रामीण क्षेत्र

ग्रामीण क्षेत्र उस भौगोलिक क्षेत्र को कहा जाता है जो नगरों या शहरों और कस्बों के बाहर होता है।

इसे कुछ लोग ठेठ हिंदी कहते हैं। खड़ी बोली से तात्पर्य उस बोली से है जिस पर ब्रज या अवधी आदि की छाप न हो, वह ठेठ हिंदी है यह निम्न स्थानों पर बोली जाती है– मेरठ, बिजनौर, अंबाला, पटियाला के पूर्वी भाग, कलसिया, सहारनपुर, देहरादून के मैदानी भाग, रामपुर और मुरादाबाद आदि।

टिप्पणी

मेरठ की खड़ी बोली आदर्श मानी गई है जिससे आधुनिक हिंदी भाषा का जन्म हुआ है। तो मुजफ्फरपुर, सहारनपुर बागपत में खड़ी बोली में हरियाणवी की झलक मिलती है। बांगरू और हरियाणवी पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खड़ी बोली है जो दिल्ली करनाल, हिसार, रोहतक, जींद पटियाला के ग्रामीण क्षेत्र में बोली जाती है।

'खड़ी शब्द का अर्थ है खरी, शुद्ध या ठेठ हिंदी बोली। जब भारत में अरबी–फारसी और हिंदुस्तानी (मिश्रित उर्दूभाषा) का एवं ब्रज, अवधी का प्रचलन था तब शुद्ध हिंदी (ठेठ हिंदी) को खरी या खड़ी बोली कहा जाता था। कुछ गद्यकारों ने 18वीं शताब्दी में ठेठ हिंदी में लिखना आरंभ किया उसी ठेठ हिंदी को 'खड़ी हिंदी' कहा गया। आज की भाषा पूर्व हिंदी का वह रूप है जिसने परिनिष्ठित हिंदी का एक स्वरूप धारण कर लिया है।

भारत में जब मुसलमानों ने दिल्ली पर राज करना शुरू किया तब उन्होंने मेरठ के आस–पास की बोली को स्वीकार किया और उसका नाम खड़ी बोली रखा। इसमें उन्होंने अरबी–फारसी शब्दों को मिलाकर उस भाषा का प्रयोग करने लगे। वर्तमान उर्दू भाषा का निर्माण हुआ। पहले–पहल अमीर–खुसरो ने चौदहवीं शताब्दी में इसका प्रयोग काव्य में किया।

मुसलमानों ने अरबी–फारसी के शब्द मिश्रित करके उर्दू भाषा बनाई तो हिंदुओं ने इसमें संस्कृत के अधिकतम शब्दों को मिलाकर वर्तमान हिंदी प्रस्तुत की और अनेक सहित्यकार इसमें काव्य लिखने लगे। ब्रज, अवधी आदि बोलियों में साहित्य का पार्थक्य स्पष्ट दिखाने के लिए आधुनिक हिंदी साहित्य को "खड़ी बोली साहित्य" कहा जाने लगा है।

खड़ी बोली की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है। भोज और हम्मीर देव के समय अपभ्रंश काव्य परंपरा में खड़ी बोली के प्राचीन रूप की झलक मिलती है। भक्तिकाल में संत कवि इस बोली का व्यवहार सधुक्कड़ी भाषा में करते थे।

मुगल साम्राज्य ध्वंस के बाद मीर, इन्शाअल्ला आदि उर्दू शायर दिल्ली से पूरब की ओर चले गए। तो आस–पास के व्यापारी जीविका के लिए प्रयाग, काशी पटना आदि पूर्वी क्षेत्रों में चले गए। उन शहरों की भाषा खड़ी बोली हो गई। (18वीं शताब्दी में साहित्यिक गद्य के रूप में लल्लू जी लाल ने "प्रेमसागर" की रचना खड़ी बोली में की है। लल्लू जी लाल और सदल मिश्र खड़ी बोली के उन्नायक हैं तो सांस्कृत्यायन ने सर्वप्रथम खड़ी बोली नाम दिया है।)

लल्लू जी लाल, सदल मिश्र, इंशाअल्ला खा, मुंशी सदा–सुखलाल खड़ी बोली गद्य के प्रतिष्ठापक माने जाते हैं। तो आधुनिक खड़ी गद्य की परंपरा की प्रतिष्ठा का श्रेय भारतेंदु हरिशचंद्र एवं राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद को हैं। इनकी प्रसिद्ध रचानाएँ क्रमशः है– प्रेमसागर, नासिके तोपाख्यान (चंद्रावती), रानी केतकी की कहानी, सुखसागर (श्रीमद्–भागवत का अनुवाद); भारतेंदु ने कवि–वचन–सुधा और सितारे हिंद ने बनारस नामक पत्रिका का आरंभ किया। अर्थात् खड़ी–बोली हिंदी का विकास आधुनिक काल तक होता रहा है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

3. नगरों या शहरों और कस्बों के बाहर वाले क्षेत्र को क्या कहते हैं?
   (क) ग्रामीण क्षेत्र (ख) शहरी क्षेत्र
   (ग) राष्ट्रीय क्षेत्र (घ) प्रादेशिक क्षत्र
4. साहित्यिक गद्य की 'प्रेमसागर' रचना में खड़ी बोली का प्रयोग किसने किया?
   (क) भारतेंदु हरिश्चंद्र (ख) सदल मिश्र
   (ग) इन्शाअल्ला खाँ (घ) लल्लू लाल

3.4 प्रादेशिक भाषा

विशेष क्षेत्र, प्रदेश, प्रांत की भाषा क्षेत्रीय, प्रादेशिक या प्रांतीय भाषा कही जाती है। भारत आबादी, भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ा देश है। विश्व में सभी देश बँटे हुए हैं। देश की तरक्की में कोई बाधा पैदा न हो। इसलिए भारत देश राज्यों–प्रदेशों में बँट गया हैं। राज्यों की प्रगति पर ही देश की प्रगति निर्भर होती है। भारत में विभिन्न जाति, धर्म, भाषा के लोग रहते हैं। किंतु भाषा के आधार पर भारत के प्रदेशों–राज्यों की रचना की गई।

भारत में सन् 1917 में केवल 17 राज्य थे। आगे चलकर अन्य राज्यों की माँग की जाने लगी। सन् 1948 में संविधान सभा के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश एस.के. धर के नेतृत्व में भाषाई राज्य आयोग की स्थापना की। इसमें चार सदस्यों की समिति कार्य करने लगी। इस आयोग ने भाषा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का विरोध किया और प्रशासनिक सुविधा के आधार पर राज्यों के पुनर्गठन का समर्थन किया। किंतु यह मत भी स्वीकृत नहीं हुआ।

भाषाई आधार पर राज्यों की माँग के अनुसार 1956 में भारत के विविध राज्यों का निर्माण हुआ। सन् 2020 के अनुसार भारत के कुल राज्य 28 और केंद्रशासित प्रदेश 09 हैं–

जैसे– आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, अरूणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ, गुजरात, हरियाणा, झारखंड, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, गोवा, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान सिक्किम, तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और अण्डमान और निकोबार, चण्डीगढ़, दिल्ली, दादरा और नगर हवेली, लक्षद्वीप, जम्मू और कश्मीर, पुदुचेरी, दमन और दिव और लद्दाख केंद्रशासित प्रदेश हैं।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में इन राज्यों की 22 भाषाएँ शामिल हैं– असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, बांग्ला, हिंदी, मराठी, संस्कृत तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मलयालम, मणिपुरी, नेपाली, बोडो, मैथिली, संथाली, सिंधी। जनसंख्या की दृष्टि से भारत में सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश है सबसे कम सिक्किम की है।

क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य राजस्थान है, तो सबसे छोटा राज्य है गोवा।

प्रत्येक राज्य की भौगोलिक सीमा के अंतर्गत वहाँ की भाषा का व्यवहार, शिक्षा, सरकारी दफ्तरों में प्रयोग किया जाता है। जैसे– महाराष्ट्र राज्य या प्रदेश की मराठी भाषा, गुजरात राज्य की गुजराती भाषा, पंजाब में पंजाबी भाषा, बंगाल में बांग्ला भाषा का प्रयोग किया जाता है।

महाराष्ट्र और गुजरात की सीमा पर मराठी और गुजराती का संमिश्र रूप मिलता है। नौकरी, व्यापार, शिक्षा के कारण एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने के कारण अपनी भाषा को मनुष्य कैसे मूल रूप में संभाल सकता है? अतः मनुष्य वहाँ की प्रादेशिक भाषा व्यवहार में प्रयोग करना सीख जाता है किंतु उसकी भाषा का रूप बदल जाता है।

भारतीय प्रदेशों की भाषाओं में अनुपम, संपन्न साहित्य का सृजन होता रहा है। जैसे कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, जायसी, रहीम, मीरा, प्रसाद, पंत, निराला जैसे लोकप्रसिद्ध साहित्यकारों ने हिंदी भाषा द्वारा अपनी अनुभूतियों को व्यक्त किया है।

कबीर ग्रंथावली, सूरसागर, रामचरित मानस, पद्मावत, रहीम के दोहे, मीराबाई के पद, प्रसाद की कामायनी, पंत जी की चिदंबरा, निराला की अनामिका आदि रचनाओं से हिंदी साहित्य समृद्ध बना है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ शामिल हैं?
   - (क) 08 भाषाएँ
   - (ख) 28 भाषाएँ
   - (ग) 22 भाषाएँ
   - (घ) 09 भाषाएँ
6. भारत के केंद्रशासित प्रदेश हैं–
   - (क) आंध्र प्रदेश, बिहार
   - (ख) जम्मू और कश्मीर, दिल्ली
   - (ग) पंजाब, मेघालय
   - (घ) हरियाणा, नागालैंड

3.5 राष्ट्रीय भाषा– (राष्ट्रभाषा) का क्षेत्र

राष्ट्रभाषा– वह भाषा है जो एक देश या संपूर्ण राष्ट्र द्वारा समझी, बोली जाती है। उस राष्ट्र की संस्कृति से उसका संबंध होना है। वह भाषा जो देश या राष्ट्र के राजकार्य के लिए प्रयुक्त होती है, राष्ट्रभाषा कहलाती है। देश के विभिन्न भागों के लोगों के बीच संपर्क के लिए एवं राज–काज के लिए प्रयोग में लाई गई भाषा "राष्ट्रभाषा" है। म. गांधी ने कहा है– "राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो सरकारी कर्मचारियों के लिए सहज और सुगम हो। जो धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में एकता स्थापित करने की शक्ति रखती हो। जिस भाषा को बोलने वालों की संख्या अधिक हो।"

बी. कृष्णस्वामी अय्यर ने कहा हैं कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' कहते हैं– "राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"

अनंत गोपाल शेवडे ने लिखा है– "राष्ट्रभाषा हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से कोई संघर्ष नहीं है।"

पाश्चात्य विद्वान बीम्स कहते हैं– "आर्यों की सबसे प्रचलित भाषा हिंदी ही है। इसमें तद्भव शब्द सभी भाषाओं से अधिक हैं।"

सन् 1918 में आयोजित हिंदी साहित्य सम्मेलन में म. गांधी ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की अपील की थी। अनेक साहित्यिकारों, धर्म प्रचारकों, सुधारक विद्वानों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए संघर्ष किया है। म. गांधी ने कहा है कि "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है हिंदी हृदय की भाषा है।" राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है।

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है क्योंकि देश में सर्वाधिक प्रचलित भाषा को राष्ट्रभाषा कहा जाता है। भारत में प्रत्येक प्रांत की भाषा अलग–अलग है। प्रत्येक प्रदेश का काम–काज उनकी भाषा में चलता है। किंतु सन् 1949 से 14 सितंबर को संविधान सभा ने एक ऐतिहासिक फैसला लेकर बताया है कि "हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा रहेगी।"

राष्ट्रीय या राष्ट्रभाषा का पद या दर्जा प्राप्त करने के लिए हिंदी भाषा को काफी संघर्ष करना पड़ रहा है। आज भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करने और उसे प्रतिष्ठा का दर्जा देने हेतु कुछ राज्यों के लोगों की नाराजगी है। अनेक सरकारी कार्यालयों में आज भी हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग किया जा रहा है।

राष्ट्रीय भाषा का सम्मान करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। हिंदी भाषा ही सर्वसाधारण की भाषा होने के लिए उपयुक्त है। राष्ट्रीय भाषा का साहित्य के साथ घनिष्ट संबंध है। उसकी उन्नति से ही देश की उन्नति संभव है। इसलिए पुरूषोत्तम दास टंडन जी ने कहा है कि भाषा ही राष्ट्र का जीवन हैं। इसका प्रचार देश उन्नति का द्वारा है। राष्ट्रीय भाषा हिंदी द्वारा समूचे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। डॉ. बाबूराम सक्सेना कहते हैं कि– "हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्र निर्माण का प्रश्न है।" हिंदी का किसी क्षेत्रीय भाषा से संघर्ष नहीं है। इस विशाल प्रदेश के हर हिस्से में, शिक्षित, अशिक्षित, शहरी और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं। अपनी देश भाषा का आदर करना चाहिए। हिंदी केवल प्रांतीय भाषा नहीं बल्कि वह अंतःप्रांतीय राष्ट्रीय भाषा है। वह राष्ट्र की आन बान और शान है। स्वाभिमान, देशप्रेम, एकता, राष्ट्रीयता संस्कृति के संवर्द्धन का महत्वपूर्ण सूत्र है।

राष्ट्रभाषा हिंदी की विशेषताएँ

- हिंदी भाषा सबसे अधिक सरल और लचीली है।
- इसका शब्दभंडार बहुत विशाल एवं समृद्ध है।
- हिंदी के शब्दकोश में एक भाव को व्यक्त करने के लिए अनेक शब्द मिलते हैं।
- हिंदी लिखने के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपी अत्यंत वैज्ञानिक है।
- इसकी वर्णमाला व्यवस्थित है। स्वर और व्यंजनों का स्वतंत्र अध्ययन उनके उच्चारण, स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर किया जाता है। जैसे– स्वर, व्यंजन, संयुक्त व्यंजन आदि वैज्ञानिक क्रम से वर्णों का वर्गीकरण मिलता है।
- वर्णमाला ध्वन्यात्मक होने के कारण इसकी हर ध्वनि के लिपि चिह्न स्वतंत्र हैं।

टिप्पणी

- हिंदी जैसे बोली जाती है वैसे ही उसको लिखा जाता है। अंग्रेजी के समान गूंगे वर्ण (Silent letters) नहीं होते।
- अन्य भाषाओं के शब्दों को पचाने की इसमें क्षमता है। हिंदी को संस्कृत शब्द संपदा एवं नवीन शब्द–रचना सामर्थ्य मिला है। देशी भाषाओं एवं बोलियों से भी शब्दों को स्वीकार किया गया है। विदेशी भाषाओं से भी अनेक शब्दों को आत्मसात किया गया है। अंग्रेजी के तो लगभग 90,000 शब्द हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं।
- हिंदी, बोलने एवं समझने वालों की संख्या 50,000000 पचास करोड़ से अधिक है।
- हिंदी भाषा का साहित्य समृद्ध है।
- भारत की संपर्क भाषा है।
- भारत की राजभाषा है।
- हिंदी भाषा आम जनता से जुड़ी हुई है। अहिंदी भाषी भी हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं।
- हिंदी दुनिया की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है।
- सच्चे अर्थ में वह विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है।
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम स्वभाषा प्रेम, स्वाभिमान की संवाहिका है।
- विदेशों में–मॉरीशस, कनाडा, अमेरिका, मलेशिया, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिडाड, नेपाल आदि स्थानों पर भारतीय निवासियों की संख्या उल्लेखनीय होने के कारण अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था की गई है।

अपनी प्रगति जांचिए

7. राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है– यह किसका विचार है?

   (क) म. गांधी　　(ख) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

   (ग) अनंत गोपाल शेवडे　　(घ) बी. कृष्णा स्वामी अय्यर

8. वर्तमान में देशप्रेम, स्वभाषा प्रेम, स्वाभिमान की संवाहिका का सम्मान भारत की किस भाषा को प्राप्त हुआ है?

   (क) संस्कृत　　(ख) गुजराती

   (ग) हिंदी　　(घ) नेपाली

3.6 अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

विदेशी देशों और लोगों के बीच संचार के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। उसे "अन्तर्राष्ट्रीय" भाषा कहा जाता है। इस स्तर पर भाषा की प्रतिष्ठा केवल उस भाषा

बोलने वालों की संख्या पर आधारित नहीं होती। बल्कि उसके क्षेत्रीय विस्तार की व्यापकता भी देखी जाती है। उस भाषा का उपयोग करने वालों द्वारा विस्तृत क्षेत्र में बस जाने से ही वह भाषा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो सकती है। अर्थात–

टिप्पणी

- उपयोग करने वालों की संख्या और उनका क्षेत्रीय विस्तार।
- उस भाषा में उपलब्ध साहित्य की व्यापकता और उसका स्तर।
- अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क, सेवा एवं वाणिज्य के क्षेत्र में उसका उपयोग।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रचलन।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामरिक महत्व।

उपर्युक्त बिंदुओं पर भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर निर्भर होता है।

स्वतंत्रता के उपरांत अनेक वैज्ञानिक, डॉक्टर, वकील आदि इंग्लैंड, अमेरिका, आदि देशों में जाने लगे थे, हिंदी भाषी वहाँ हिंदी के वाहक बने। हिंदी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने का कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 20 जनवरी 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन नागपुर में किया गया था। सम्मेलन के दौरान वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की आधारशिला रखी गई। भविष्य में भी ऐसे सम्मेलनों के आयोजनों से हिंदी भाषा एवं हिंदी लेखकों अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों और संपर्क पर बल दिया गया। इसके बाद मॉरीशस, दिल्ली, मॉरीशस, त्रिनिदाद, लंदन आदि में विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन होता रहा।

लंदन के इस छठे विश्व–सम्मेलन का महत्व निम्न दृष्टि से महत्वपूर्ण है–

- हिंदी का अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकास।
- अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयों की स्थापना।
- विदेशों के लिए हिंदी का मानक पाठयक्रम तैयार करना।
- विश्व हिंदी–पत्रिका का प्रकाशन।
- हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाना।
- मॉरशिस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना।
- हिंदी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना।
- भारत में मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण।
- विदेशी हिंदी–लेखन के प्रकाशन की व्यवस्था एवं उसको पाठयक्रम में स्थान दिलाना।

इसके बाद के सम्मेलन क्रमशः सूरीनाम, न्यूयार्क, जोहान्सबर्ग और दसवाँ फिर से मॉरिशस में ही हुआ। देश–विदेश के अनेक विद्वानों ने सम्मेलनों में हिस्सा लेकर हिंदी के प्रति रूचि दिखाई है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाएँ छह हैं– इंग्लिश, फ्रेंच, स्पैनिश, रशियन, चीनी और अरबी। भारत की हिंदी को भी इस संघ में आधिकारिक भाषा दर्जा प्राप्त करने के लिए प्रयत्न हो रहे हैं।

विदेशों में फिजी, आस्ट्रेलिया, कनाडा, त्रिनिदाद, अमीरात, द. अफ्रीका में हिंदी का प्रयोग किया जा रहा है, यह संख्या बढ़ रही है। विश्व के लगभग 950

टिप्पणी

विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। दूरसंचार पर हिंदी कार्यक्रम देखे जा रहे हैं। हिंदी सिनेमा, गानों की मांगें बढ़ रही है। पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा हैं–हिंदी चेतना (कनाडा), पुरवाई (यू.के.), विश्व (अमेरिका) आदि। नॉर्वे, जापान, रूस, फ्रांस आदि में अनेक अध्यापक हिंदी का प्रसार कर रहे हैं। अनेक विद्वान विभिन्न भाषाओं के साहित्य का हिंदी में अनुवाद कर रहे हैं। हिंदी के लेखक अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, परिसंवादों में हिस्सा ले रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आज हिंदी की स्थिति निश्चित ही संतोषजनक है। किंतु अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में अंगेजी और चीनी के समान प्रतिष्ठा नहीं मिल रही। 14 सितंबर 1947 में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 383 से 349 तक हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिये जाने के बाद भी उच्च न्यायालय, संसद एवं विधान मंडलों द्वारा निर्गमित पत्राचार की भाषा अंग्रेजी ही है। अधिकांश विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में उच्चशिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी–विद्यालयों में हिंदी माध्यम कम मात्रा में दिखाई देता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने में हिंदी को अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। इस सत्य को नजरअंदाज नहीं कर सकते। यथा–

- विज्ञान की शिक्षा में आने वाली कठिनाई। मानक शब्दावली का प्रयोग न करने से एक शब्द के भिन्न–भिन्न अर्थ या अनुवाद से छात्रों में भ्रम।
- अनुवाद कर्ताओं की कमी।
- वैश्विक स्तर पर रोमन लिपि मान्य। अतः देवनागरी लिपि को रोमन लिपि में लिखना होग।
- दुभाषियों की कमी। हिंदी–अंग्रजी पर अधिकार प्राप्त व्यक्ति।
- संगणक, इंटरनेट प्रशिक्षण के लिए प्रोत्साहन योजनाओं हेतु सरकार की आर्थिक व्यय करने की इच्छा।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुचंने की क्षमता है।

अपनी प्रगति जांचिए

9. विदेशी लोगों के बीच संचार के लिए जिस एक भाषा की आवश्यकता होती है। उसे क्या कहा जाता है?

   (क) प्रादेशिक (ख) अन्तर्राष्ट्रीय

   (ग) राष्ट्रीय (घ) ग्रामीण

10. विश्व के लगभग कितने विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है?

   (क) 950 (ख) 50

   (ग) 500 (घ) 1500

3.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ग)
3. (क)
4. (घ)
5. (ग)
6. (ख)
7. (ख)
8. (ग)
9. (ख)
10. (क)

3.8 सारांश

हिंदी भाषा के प्रयोग का क्षेत्र बहुत व्यापक है। हिंदी भाषा में अनेक बोलियां अन्तर्भूत हैं। ब्रज, अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी, जयपुरी खड़ी बोली आदि। ब्रज और अवधी में सूरदास की सूरसागर और तुलसीदास की श्री रामचरित मानस रचनाओं ने विश्व में हिंदी साहित्य की कीर्ति पताका फहराई है। हिंदी की अन्य बोलियों में भी लोक–साहित्य कम–अधिक मात्रा में मिलता है।

ग्रामीण क्षेत्र से निकली ठेठ हिंदी या खड़ी बोली में लल्लू जी लाल ने प्रेमसागर नामक गद्य रचना की। साथ ही साथ सदल मिश्र, इन्शाअल्ला खाँ, भारतेंदु आदि साहित्यिकारों का नाम लिया जाता है।

हिंदी भाषा की अनेक विशेषताओं के कारण वह भारत की मुख्य राष्ट्रभाषा मानी गई। सरल, लचीली, जीवनमूल्यों का रक्षण, देशप्रेम, स्वाभिमान जागृत करने वाली, देवनागरी लिपि के कारण वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा हिंदी ही महत्वपूर्ण है।

प्रादेशिक भाषा एवं बोलियों से हिंदी ने अनेक शब्दों को ग्रहण किया है। अतः उसका शब्दभंडार संस्कृत के साथ प्रादेशिक भाषाओं से समृद्ध बना है। वे सभी शब्द हिंदी के अपने हो गए हैं।

अनेक विशेषताओं के कारण हिंदी अब विदेश में रहने वाले भारतीयों के कारण उन्नत हो रही है। अमेरिका, कनाडा आदि स्थानों के विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन एवं अध्यापन कार्य हो रहा है। वैश्विक स्तर पर हिंदी के कदम बढ़ रहे हैं। कम्प्यूटर और इंटरनेट जैसे माध्यमों के कारण हिंदी घर–घर में ही नहीं देश से विदेश तक पहुँच गई है।

3.9 मुख्य शब्दावली

टिप्पणी

- **संरक्षिका**– संरक्षण, पालन–पोषण करने वाली।
- **संवाहक**– से जानेवाला, वाहक।
- **सधुक्कडी**– समिश्र, मिश्रित भाषा।
- **निर्भर**– अवलंबित।
- **पुनर्गठन**– फिर से गठन या बनाना।
- **प्रौद्योगिकी**– औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित अध्ययन।
- **नजरअंदाज**– अनदेखा करना।

3.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. हिंदी भाषा के विविध क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए किसी एक क्षेत्र की विवेचना कीजिए।
2. ग्रामीण बोली से क्या तात्पर्य है, उसके क्षेत्र एवं साहित्य का विवेचन कीजिए।
3. राष्ट्रीय भाषा की विशेषताएँ लिखिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्रीय भाषा के क्षेत्र का विस्तार से विवेचन कीजिए।
2. हिंदी के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र एवं तत्संदर्भित विकास का परिचय दीजिए।

3.11 सहायक पाठ्य सामग्री

1. भाषा विज्ञान की भूमिका– डा. देवेद्रनाथ शर्मा
2. मानक हिंदी का स्वरूप– डा. भोलानाथ तिवारी
3. सामान्य भाषा विज्ञान– डा. भोलानाथ तिवारी – किताब महल नई–दिल्ली
4. भारतीय भाषाएँ– डा. कैलाशचंद्र भाटिया प्रभात प्रकाशन दिल्ली
5. व्यावहारिक तथा प्रयोजनमूलक हिंदी– डा. अंबादास देशमुख
6. हिंदी उद्‌भव विकास और रूप– डा. हरदेव बाहरी।

इकाई 4 हिंदी भाषा का महत्व

टिप्पणी

संरचना

4.0 परिचय
4.1 उद्देश्य
4.2 हिंदी भाषा का महत्व
4.3 बौद्धिक विकास
4.4 संवेगात्मक विकास
4.5 सांस्कृतिक विकास
4.6 आर्थिक विकास
4.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
4.8 सारांश
4.9 मुख्य शब्दावली
4.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
4.11 सहायक पाठ्य सामग्री

4.0 परिचय

हिंदी भाषा कभी अपने भाषा क्षेत्र की सीमाओं में बंधी नहीं रही। भारत में हिमाचल से कन्याकुमारी, द्वारका से कटक तक भारतीय इसका प्रयोग कर रहे हैं। भारत के विविध राज्यों या प्रदेशों में हिंदी भाषा एवं इसकी बोलियाँ बोली जाती हैं। व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए, व्यापार, उद्योग, शिक्षा के लिए मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को सीखता है। भाषण, संभाषण के लिए वह विविध भाषिक संदर्भों का उपयोग करता है।

भाषा के द्वारा मनुष्य सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भावनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण कर सकता है। भाषा केवल भावों एवं विचारों का आदान–प्रदान करने का माध्यम ही नहीं अपितु विचार करने का सशक्त आधार है। बौद्धिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी हिन्दी भाषा द्वारा विकास संभव है।

इस इकाई में हिंदी भाषा की महत्ता के आलोक में मन, बुद्धि एवं समाज के विविध पहलुओं के विकासात्मक दृष्टिकोण से संबंधित जानकारी दी जा रही हैं।

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- बौद्धिकता का अर्थ एवं उसके विकास क्रम को समझ पाएंगे;
- नियंत्रित संवेगों से होने वाले लाभ को पहचानकर उसका उपयोग करना सीख पाएंगे;
- सांस्कृतिक विकास से परिचित हो पाएंगे;
- हिंदी भाषा के विविध विकासात्मक क्षेत्रों का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- हिंदी भाषा के विकास से आर्थिक विकास को समझ पाएंगे।

4.2 हिंदी भाषा का महत्व

टिप्पणी

प्रकृति ने मनुष्य को ही भाषा का वरदान दिया है। पशु–पक्षी भी विशिष्ट आवाज निकाल अपनी बात करते हैं किंतु इनसे केवल अनुमान लगा सकते हैं कि उनकी कुछ इच्छा है। मनुष्य भाषा में अपनी बात और विचार एवं मनोभावों को पूरी तरह व्यक्त कर सकता है अर्थात इस प्रकार का सामर्थ्य भाषा में ही है।

भाषा संप्रेषण का साधन ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक क्रियाकलापों का आधार है। बौद्धिक तथा संवेगात्मक क्षमताओं के सामर्थ्य से विकास, उन्नति और स्वस्थ वातावरण निर्माण में होता है।

भाषा अनुकरण, अनुसंधान एवं अभिप्रेरणा का साधन है। बौद्धिक विकास का ज्ञान इससे ही संभव है। जन्मजात बुद्धि, बाह्य वातावरण, पारिवारिक अनुकरण से विकसित होती है। शैशव, बाल्य और किशोर अवस्था में धीरे–धीरे शब्द, शब्द समूह, वाक्य, के अंतर को समझकर उनका उपयोग करने की योग्यता प्राप्त करता है। मन और शारीरिक स्वास्थ्य ध्यान रखने से बौद्धिक विकास होता है। इस बात का ज्ञान भाषा से ही होता है।

मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है। समाज में रहकर घर–परिवार के अलावा बाह्य वातावरण से अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार नई–नई चीजों का ज्ञान प्राप्त करके, दूसरों को बताने की कोशिश करता है। जिज्ञासावश अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करके भाषा के द्वारा अभिव्यक्ति करने की क्षमता प्राप्त करता है।

बुद्धि के कारण मनुष्य कारीगर, चित्रकार, वकील, कवि, लेखक बनता है। अपनी प्रतिभा शक्ति से नवनिर्माण करता है। बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ मानसिक विकास होने से मन में अनेक भाव–भावनाएँ निर्मित होती है। बच्चे ही नहीं प्रौढ़ व्यक्ति भी भावनाओं की अनवरता के कारण उत्तेजित होते हैं। आवेश, भड़कना, गुस्सा होना, भयनिर्माण होना, डरना आदि संवेगों का निर्माण होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भाषा इन संवेगों का ज्ञान कराती है। इन पर काबू पाने के लिए माता–पिता, शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है जो इन संवेगों का रेचन या शुद्धि करके बच्चों एवं मनुष्य को अच्छे कार्य के लिए प्रेरित करते हैं। संवेगों पर नियंत्रण पाने पर आदर्श गुण, उत्तम विचार निर्माण हो सकते हैं।

मनुष्य समूह में रहना पसंद करता है। जिस समाज में वह रहता है, विचारों का आदान–प्रदान करता है, समाज के रहन–सहन जीवन–पद्धति का उसे ज्ञान होता है। पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान, अनुभवों, परंपराओं प्रथाओं में से अच्छी–अच्छी बातों को स्वीकार करके पुरानी बातों में परिवर्तन करता है। यही संस्कृति है। सामाजिक शास्त्र के अध्ययन से प्राचीन संस्कृति की जानकारी भाषा से संभव है। सांस्कृतिक प्रेम, मूल्य आदर्शों का ज्ञान, उनका संवर्द्धन एवं रक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक मानव समूह की है।

मानव समाज का सांस्कृतिक विकास आर्थिक विकास पर निर्भर होता है। क्योंकि मानव समूह की स्थिति एवं जीवन स्तर ऊँचा रखने के लिए आर्थिक विकास आवश्यक है। इससे देश, क्षेत्र एवं मनुष्य जीवन समृद्ध–संपन्न बन सकता है। आर्थिक विकास से जीवन स्तर में सुधार किया जा सकता है।

मानव समाज में बौद्धिक क्षमता, संवेग क्षमता, सांस्कृतिक जीवन प्रणाली, आर्थिक समृद्धि भाषा विकास में सहायक है। भाषा से इन बातों की जानकारी मिलती है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. भाषा का वरदान मनुष्य को किसने दिया है?
   (क) वाक्इंद्रिय (ख) क्रियाकलाप
   (ग) प्रकृति (घ) इच्छा
2. मन और शरीर के स्वास्थ्य से मूलतः कैसा विकास होता है?
   (क) सांस्कृतिक (ख) संवेगात्मक
   (ग) सामाजिक (घ) बौद्धिक

4.3 बौद्धिक विकास

भाषा विकास बौद्धिक विकास की एक कसौटी मानी जा सकती है। बालक को भाषा का ज्ञान सर्वप्रथम अपने परिवार से होता है। बाद में आसःपास के पड़ोसी, दोस्त एवं समाज के संपर्क में आने से ज्ञान विकसित होता है।

अमेरिका के चिकित्सा वैज्ञानिकों एवं मनोवैज्ञानिकों ने महाभारत काल पर सन् 1984 में अनुसंधान करके सिद्ध किया है कि गर्भ में ही भ्रूण सीखता है।

अंग्रेजी में बुद्धि को Intelligence इंटेलिजेंस कहते हैं। यह मनुष्य का सबसे बड़ा अस्त्र है। बालक की मानसिक योग्यता में बुद्धि का प्रभाव पड़ता है।

- वुडवर्थ ने लिखा है– "बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।
- गौल्टन के अनुसार– बुद्धि पहचानने और सीखने की शक्ति है।
- बीने ने कहा है– बुद्धि चार शब्दों में निहित हैं। ज्ञान, आविष्कार, निर्देश, आलोचना। तो हैनमान "ज्ञान की क्षमता और निहितज्ञान" दो तत्व मानते हैं। प्रिंटर के मतानुसार "बुद्धि का विकास जन्म से लेकर किशोरावस्था तक होता है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि "किसी बात को ठीक–ठीक समझने और समझाने एवं निर्णय लेने में बुद्धि का सक्षम होना ही बौद्धिक विकास है।"

बच्चे का शारीरिक विकास आरंभ में होता है, फिर बौद्धिक और फिर मानसिक विकास होता है। शारीरिक विकास ही बौद्धिक और मानसिक विकास की आधार भूमि है। बच्चे को उसकी आयु के अनुरूप शुद्ध और सात्विक आहार दिया जाना चाहिए। किंतु बच्चे के लिए घर–परिचार में अलग कुछ नहीं बनाया जाता। श्रम, समय और पैसों की बचत सामान्य परिवार का लक्ष्य होता है। घर में जो बनता है, वह उसे अच्छा लगे या न लगे, खिलाया जाता है। पर ध्यान रखा जाए कि अच्छे भोजन से मन और मस्तिष्क स्वस्थ होता है। शरीर स्वस्थ, मन सबल और बुद्धि प्रखर या तेज बन सकती है।

टिप्पणी

बौद्धिक विकास के कारक

- **अनुकूल वातावरण**— घर—बाहर का वातावरण शांत प्रसन्न रहने से बच्चों में बुद्धिवर्धक विचारों की क्षमता का निर्माण होता है। वह हर बात पर विचार करने लगता है। बुद्धि का अधिकाधिक उपयोग बौद्धिक विकास का साधन है।
- **चीजों का ज्ञान**— घर में एवं आस—पास की, प्रयोग और उपयोग में आने वाली चीजों का ज्ञान कराया जाए—

  उदा.— दूध कैसे प्राप्त होता है? उसका क्या उपयोग है? उसके क्या लाभ हैं? कपड़ा, अनाज आदि कैसे मिलता है? अच्छे—बुरे की जानकारी देना जरूरी है।
- **अन्वेषण और अध्ययन**— बच्चा, किशोर नित्य प्रयोग की चीजों के माध्यम से ज्ञानोपार्जन करते हैं। जिज्ञासा के कारण वह अधिक ज्ञान प्राप्त करता है। अन्वेषण और अध्ययन करने से बौद्धिक विकास होता रहता है।
- **बौद्धिक स्तर**— दो—तीन साल के बच्चे को घर में ही आरंभिक पढ़ाई करवाई जाए। बच्चे की रुचि किस विकास में है, इसका पता लगने से पाठशाला में भर्ती करने पर बच्चा न घबराएगा, न रोएगा। पाठशाला में भेजने की यह पूर्व सीढ़ी का तैयार करना ही बौद्धिक धरातल की तैयारी है।
- **शिक्षकों द्वारा सहयोग**— बच्चा किस विषय में कमजोर है, यह खोज कर, विषय में रुचि निर्माण करने में उसकी मदद करें।

शैशव, बाल और किशोर अवस्था में बौद्धिक विकास होता है। शिशु घोड़ा, बैल, गाय आदि देखकर घोड़ा, बैल आदि कहता है। प्रत्यक्ष देखने के बाद वस्तु एवं पदार्थों के गुणों का विश्लेषण करने लगता है। पशु विशेष के अंतर को भले ही ना समझे किंतु घोड़े को घोड़ा कहने लगता है। तीसरे—चौथे वर्ष की आयु में वह सरल, छोटे—छोटे शब्दों से वाक्य गढ़ने लगता है। उनका अर्थ वह नहीं समझता क्योंकि अब तक मानसिक विकास पूर्ण नहीं हो पाया है, धीरे—धीरे कथा सुनकर चित्र देखकर उसका वर्णन करने लगता है। बौद्धिक विकास मूर्त से अमूर्त ज्ञान एवं निर्णय की क्षमता भाषा शिक्षण से संभव है।

बुद्धि के भेद

- मूर्त या यांत्रिक बुद्धि— बालकों में यह आरंभ से ही रहती है। (घड़ी साइकिल आदि चीजें बनाने में कुशल बनता है— इंजीनियर, कारीगर)
- अमूर्त— वस्तु सामने न होते हुए भी उसके बारे में कुछ बनाता है—

  (चित्रकार, कवि, लेखक बनते हैं।)
- सामाजिक— समाज में रहकर समाज के अनुकूल रहने वाले, जो लोगों की भलाई चाहते हैं— नेता, समाज सुधारक बनते हैं।
- अतः स्पष्ट है कि व्यक्ति— व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता भिन्न होती हैं। बौद्धिकता बुद्धि के उपयोग विकास एवं अभ्यास को दर्शाती है।

बौद्धिक विशेषताएं

टिप्पणी

- बुद्धि सीखने की क्षमता है। समस्याओं को दूर करने की शक्ति है।
- अतीत के अनुभवों, ज्ञान का अर्जन करके नवीन प्रयोग करने की क्षमता है।
- बुद्धि हालांकि जन्मजात शक्ति है किंतु वंशानुक्रम और वातावरण का इस पर प्रभाव पड़ता है।
- यह अमूर्त चिंतन है। जो दिखाई नहीं देता। बुद्धिमानों का यह महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता है।
- लिंग भेद के आधार पर बुद्धि में भेद नहीं होता।
- विभिन्न संबंधों को समझने की क्षमता है।
- मनुष्य की अच्छा–बुरा, सत्य–असत्य, नैतिक–अनैतिक कार्यों में अंतर करने वाली योग्यता है।
- बुद्धि लब्धि

बौद्धिक क्षमता का मापन करने का प्रयास जर्मन के विल्यम बुंट ने वर्ष 1879 में किया, उनके सूत्र का आविष्कार टर्नर ने किया। सूत्र है–

IQ = मानसिक आयु / वास्तविक आयु × 100

सूत्रानुसार बुद्धि लब्धि (IQ) कि 140 से ऊपर हो तो व्यक्ति प्रतिभा संपन्न माना जाता है और यदि यह 25 तक हो तो बुद्धि लब्धि को जड़मति माना जाता है। मानस शास्त्रीय अध्ययन में इस संदर्भ में इसका प्रयोग किया जाता है। सीखने की योग्यता, नवीन परिवर्तन विषयक ज्ञान उपयोग में लाने की योग्यता बौद्धिकता–बुद्धि का निष्पादन है।

अपनी प्रगति जांचिए

3. मूर्त, अमूर्त एवं सामाजिक किसके भेद हैं?

   (क) बुद्धि (ख) मन

   (ग) कल्पना (घ) भाव

4. अनुकूल वातावरण एवं चीजों के ज्ञान आदि से क्या होता है?

   (क) शारीरिक विकास (ख) भावनिक विकास

   (ग) बौद्धिक विकास (घ) आर्थिक विकास

4.4 संवेगात्मक विकास

संवेग का अर्थ है भावानुभूति। अंग्रेजी शब्द Emotion से इसका अर्थ लिया गया है। संवेग एक भावात्मक स्थिति है। मनुष्य का मन जब उद्दीप्त होता है, इसी अवस्था को संवेग कहते हें। यह चेतनात्मक अवस्था होने से इसमें भावों की प्रधानता होती है। उसी प्रकार संवेग कल्पित प्रत्यय है, प्रतिक्रिया या व्यवहार से इसका अनुमान लगाया जा

सकता है। इसमें भाव, आवेश एवं शारीरिक प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित रहती हैं। भय, क्रोध, चिंता प्रसन्नता आदि भाव उद्दीप्त अवस्था के उदाहरण हैं।

टिप्पणी

- **संवेग की परिभाषा**— जब भावात्मक दशा तीव्रता में हो जाएं तब उसे संवेग कहते हैं— वैलेनटाइन

मैक्डूगल के मतानुसार— "संवेग मूल प्रवृत्ति का केंद्रीय अपरिवर्तनशील तथा आवश्यक पहलू है।"

आर्थर टी. जर्सीलड ने कहा है— संवेग शब्द किसी भी प्रकार से आवेश में आने, धड़क उठने तथा उत्तेजित होने की दशा को सूचित करता है।

वुडवर्थ कहते हैं— संवेग किसी प्राणी की हलचल पूर्ण अवस्था है। तो रॉस (Ross) ने कहा है— "संवेग चेतना की एक अवस्था है।"

संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(1) परिपक्वता

(2) सीखने की इच्छा

(3) बुद्धिमत्ता

(4) लिंग भेद

(5) परिवार

(6) सामाजिक वातावरण

(7) परिवार के सदस्यों की सोच

(8) आर्थिक स्तर

(9) शारीरिक स्वास्थ्य

(10) बच्चों पर दबाव

(11) शैक्षिक वातावरण

(12) दोस्तों की संगत का परिणाम

(13) दैनिक व्यवहार में परिवर्तन

बाल विकास की दृष्टि से यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चे भावनाओं को समझने, अनुभव करने, व्यक्त करने और उनका प्रबंधन करने तथा दूसरों के साथ सार्थक संबंधों को विकसित करने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

घर—परिवार में बच्चे परिवार के सदस्यों का अनुकरण करते हैं। अतः आदर्श व्यवहार, स्नेहपूर्ण बर्ताव, शांतिपूर्ण जीवन पद्धति से परिवार के सदस्य जीवन व्यतीत करते हैं। संवेगों से व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी पक्ष प्रभावित होते हैं। उत्तेजित होते हैं। संवेग जटिल भाव की वह अवस्था है जिसमें कुछ विशेष शारीरिक एवं ग्रंथीय क्रियाएं होती हैं। श्वसन, नाड़ी, ग्रंथिस्त्रावों आदि से उद्दीपन का विस्तार होता है।

संवेग विकास के दो पहलू हैं—

(1) **संवेग जन्मजात होते हैं**— पाश्चात्य विद्वान हॉलिगवर्थ मानते हैं कि प्राथमिक संवेग जन्मजात होते हैं।

वाटसन के मतानुसार– जन्म के समय बच्चे में तीन प्राथमिक संवेग– भय, क्रोध व प्रेम होते हैं।

(2) **संवेग अर्जित किए जाते हैं**– कुछ मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से संवेग विकास एवं वृद्धि की प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किए जाते हैं। इस संदर्भ में कुछ प्रयोग भी किए गए हैं, निष्कर्ष में कहा गया है कि जन्म के समय संवेग निश्चित रूप से विद्यमान नहीं होते। धीरे–धीरे बच्चा ऐसी निश्चित प्रक्रिया करते हैं जिससे ज्ञात होता है कि उसे सुख–दुख की अनुभूति होती है। किसी चीज की प्राप्ति से हर्ष, मांग की गई चीज न मिलने से क्रोध, नाराजगी, डरावनी चीज या प्राणी देखने से भय आदि संवेग निर्माण होते हैं। क्रोध, भय आदि संवेगों के कारण भड़क उठने या उत्तेजित होने से बच्चों के स्वास्थ्य पर असर होता है। इन पर नियंत्रण रखने के लिए परिवार के सदस्यों का बर्ताव स्नेहपूर्ण हो, माता–पिता के साथ ही शिक्षक का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

संवेगात्मक विकास में शिक्षक का योगदान

परिवार में माता–पिता तथा अन्य सदस्यों के अनुकरण से बच्चा सीखता है। जब वह पाठशाला में जाने लगता है तब यह काम करने की जिम्मेदारी शिक्षक पर आ जाती है।

शिक्षक के योगदान को निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता है–

- **स्नेहपूर्ण बर्ताव**– पाठशाला में आने वाले बच्चों से स्नेहपूर्ण बर्ताव से शिक्षक उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। उन पर दबाव न डाला जाय।
- **रुचि निर्माण**– पाठ आदि पढ़ाई में रुचि उत्पन्न करना।
- **संवेग नियंत्रण का ज्ञान**– उदाहरणों द्वारा क्रोध, घृणादि भावों पर नियंत्रण के ज्ञान से बच्चे को सभ्य, साहसी बनाने का प्रयत्न करना।
- **बच्चों को प्रेरित करना**– उत्तम विचार, आदर्श गुणों के निर्माण के लिए बच्चों को प्रेरित करना। भय, विषाद जैसे संवेगों का रेचन करके वातावरण प्रसन्न आह्लाददायी बनाना।
- **पाठ्यक्रम निर्माण**– सरल, सरस पाठ्यक्रम निर्माण, तन–मन से अध्यापन करने से बच्चे स्वयं अध्ययन में रुचि ले सकेंगे।

संवेगों की विशेषताएँ

- शारीरिक परिवर्तन – इस प्रभाव में चेहरे के भाव, अंगविन्यास, दिल की धड़कन, रक्तचाप की गति में परिवर्तन होने से संवेग व्यक्त। स्नेह में थपथपाना, हर्ष से उछलना, दुःख में रोना जैसी क्रियाएं होती हैं।
- मनोवैज्ञानिक क्रियाओं पर प्रभाव– संवेग से आपके सोचने, विवेचन, स्मृति आदि प्रभावों के कारण मनोवैज्ञानिक क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है।
- अधिक ऊर्जा का सृजन– इस स्थिति में अधिक मात्रा में ऊर्जा का निर्माण कठिन स्थितियों से निपटने से सहायक होता है।
- उदा. कुत्ता अगर आपके पीछे दौड़ता है तो आप भागने की सामान्य गति से अधिक तीव्र गति से दौड़ने लगेंगे।

टिप्पणी

- परिपक्वता और अध्ययन के लाभ– संवेग के विकास एवं अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।
- सुखद–दुःखद अनुभवों का परिणाम– सुखद संवेगों के अनुभव होने से आप खुश होते हैं, आपका मूड अच्छा रहता है। विपरीत दुःखद संवेगात्मक अनुभव से व्यक्ति दुःखी या नकारात्मक मूड के प्रभाव में आ जाता है।
- कार्य क्षमता का विकास करने में मदद– संवेग के अनुभव पहले आपके कार्यनिष्पादन की क्षमता को कुछ स्तर तक बढ़ा देते हैं किंतु यदि यह जरूरत से ज्यादा बढ़ता है या लंबे समय तक बना रहता है तो यह निष्पादन के स्तर को कम कर देता है।
- मौखिक अभिव्यक्ति– स्वर की सहायता से भी संवेगों की अभिव्यक्ति की जाती है। जैसे– उदास होने पर आवाज लड़खड़ाती है। दर्द होने पर कराहट, क्रोध के समय ऊँची आवाज निकलती है।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट है कि संवेगों के कारण शारीरिक, दैहिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अभिव्यक्ति में परिवर्तन होता है। संवेगात्मक अनुभव मूल प्रवृत्ति की उत्तेजना से जुड़े होते हैं। और विशेष अवयवों से दर्शाए जाते हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

5. संवेग के संदर्भ में वुडवर्थ की परिभाषा है–
   (क) संवेग चेतना की एक अवस्था है।
   (ख) संवेग किसी प्राणी की हलचलपूर्ण अवस्था है।
   (ग) भावात्मक दशा तीव्र होना ही संवेग है।
   (घ) एक भावात्मक स्थिति है।
6. संवेग में सुखद अनुभव का क्या परिणाम होता है?
   (क) खुश होना, मूड अच्छा होना।
   (ख) दुःखी होना, मूड नकारात्मक होता है।
   (ग) उत्तेजित होना है, भड़क उठता है।
   (घ) थपथपाता है, भागने लगता है।

4.5 सांस्कृतिक विकास

संस्कृति मनुष्य की अस्मिता और अस्तित्व का अभिन्न अंग है। संस्कृत की 'कृ' धातु से उत्पन्न संस्कृति शब्द का अर्थ है उत्तम स्थिति। मनुष्य प्रगतिशील प्राणी है। वह बुद्धि के प्रयोग से प्राकृतिक परिस्थितियों को सुधारता और उन्नत करता है। उसकी जीवन–पद्धति, रहन–सहन आचार–विचार, नई खोज और आविष्कार आदि के कारण उसका स्थान पशुओं से ऊँचा उठता है और वह सभ्य बनता है। सभ्यता संस्कृति का

अंग है। यह मनुष्य की भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित करता है तो संस्कृति से मानसिक क्षेत्र की प्रगति होती है।

संस्कृति के लिए अंग्रेजी शब्द है कल्चर। लैटिन के कल्ट या कल्टस से यह शब्द बना है जिसका अर्थ है– परिष्कृत या विकसित करना। लगभग यही अर्थ हिन्दी में प्रयुक्त हुआ है।

परिभाषा

अनेक विद्वानों ने संस्कृति के संदर्भ में अपने मतव्यवन किए हैं।

- एडवर्ड बनार्ट टायलर– संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा और अन्य सभी क्षमताओं तथा आदतों का समावेश होता है जिन्हें मनुष्य समाज के नाते प्राप्त करता है।
- रॉबर्ट बीरस्टीड– "संस्कृति वह संपूर्ण जटिलता है जिसमें वे सभी वस्तुएँ सम्मिलित हैं, जिन पर हम विचार करते हैं, कार्य करते हैं और समाज के सदस्य होने के नाते अपने पास रखते हैं।"
- हर्श कोविटस्– 'संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है।' जैसे– टेबल, कलम, धर्म, शिक्षा आदि मानव निर्मित सामाजिक पर्यावरण है।
- बोगार्डस– 'किसी समूह के कार्य करने एवं विचार करने के सभी तरीकों का नाम संस्कृति है।'
- पं. रामधारी सिंह दिनकर– संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है। यह एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य के स्वभाव में उसी तरह व्याप्त रहता है जिस तरह फूलों में सुगंध और दूध में मक्खन।'

परिभाषाओं से स्पष्ट है कि संस्कृति मानव जीवन व्यतीत करने की संपूर्ण विधि है जो व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक और अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। एक जनसमूह द्वारा अपनायी गई जीवन शैली ही संस्कृति है जिसमें भौतिक और अभौतिक दोनों पक्ष शामिल हैं। भौतिक पक्ष में वस्त्र, घर, पैसा, कलाओं का तो अभौतिक में विचार, दर्शन, विश्वास आदि अभिवृत्तियों का समावेश होता है।

संस्कृति का ऊँचा स्वरूप अर्थात् मानव सभ्यता के सांस्कृतिक विकास की वह स्थिति है जिसमें नगरों या महानगरों में रहना प्रारंभ कर देने से वे लोग उच्च श्रेणी के भौतिक जीवन या जीवन स्तर के प्रतीक बन जाते हैं। ऐसे जीवन में संस्कृति का अंश तब दिखाई देता है जब उसमें उच्च नैतिक मूल्यों को प्राप्त करने का कोई माध्यम बने।

संस्कृति की विशेषताएँ

- **संस्कृति समाज से सीखा हुआ व्यवहार है**– समाज में आदतें, व्यवहार आचरण के तरीके होते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा वह सीखता है। अतः संस्कृति व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्तियों या प्राणी शात्रीय विरासत से संबंधित नहीं बल्कि सामाजिक अनुभवों पर आधारित होती है।
- **हस्तांतरित होती है**– एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरण होने से इसमें प्रत्येक पीढ़ी के सूझ एवं अनुभव जुड़ जाते हैं। इसलिए संस्कृति में

परिवर्तन होता है। पिछले ज्ञान एवं अनुभवों के आधार पर नई चीजों का आविष्कार किए जाने से मनुष्य भाषा और प्रतीकों के द्वारा सांस्कृतिक विकास एवं विस्तार एक पीढ़ी से दूसरी तक पहुँचाता है।

टिप्पणी

- **संस्कृति सामाजिक संपत्ति है**– समाज, सामाजिक संबंधों, समाज की जीवन विधि का प्रतिनिधित्व करने के कारण संस्कृति व्यक्तिगत संपत्ति नहीं है।
- **मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली**– प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में संस्कृति आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। धर्म, विश्वास, ज्ञान, आचार, व्यवहार के तरीके एवं तरह–तरह की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों का मनुष्य ही निर्माण करता है।
- **प्रत्येक समाज की संस्कृति भिन्न–भिन्न होती है**– भौगोलिक एवं प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप संस्कृति का निर्माण होता है। पहाड़ी क्षेत्र, वन–जंगल, मैदानी क्षेत्र में रहने वाले समाज की संस्कृति भिन्न–भिन्न होती है।
- **लचीलापन**– समय एवं आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन को इसमें स्वीकार किया जाता है।
- **संस्कृति संतुलन एवं संगठन साधती है**– इसकी प्रत्येक इकाई एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करती। सम्मिलित रूप से कार्य करने से मनुष्य समाज में संतुलन से सांस्कृतिक ढाँचा निर्माण किया जाता है।
- **संस्कृति संग्रह का आदर्श**– प्रत्येक समाजवासी अपनी संस्कृति के मूल्यों एवं आदर्शों को दूसरी संस्कृति की तुलना में उच्च मानते हैं। ये आदर्श किसी व्यक्ति के नहीं समूचे समाज के ही होते हैं।
- **इसका संबंध आंतरिक है**– पंखा, टी.वी., कार आदि से सुख, किंतु यह बाह्यजीवन को सुखद अनुभूति कराने वाले साधन है। धर्म, कला, ज्ञान–विज्ञान आदि आंतरिक जीवन के साधन है। संस्कृति का संबंध आंतरिक साधनों से रहता है।

उक्त विवेचन से कहा जा सकता है कि भाषा और संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। समाज के विविध क्रियाकलापों से इसका निर्माण होता है। किसी स्थान, समाज के नागरिक का आचरण रहन–सहन, जीवन दृष्टि, सामाजिक संबंध कैसे हैं, इन बातों का भाषा पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि मनुष्य के क्रिया–कलापों का आधार संस्कृति है। भाषा के सांस्कृतिक महत्व के संदर्भ में ब्लूमफील्ड कहते हैं– "किसी भी मानव समाज को परखने के लिए हमें उसकी भाषा समझना आवश्यक है। यदि हम किसी समुदाय की जीवन पद्धति, उसके ऐतिहासिक उद्‌भव का गहराई से अध्ययन करना हो तो हमें उसकी भाषा का व्यवस्थित विवरण प्राप्त करना चाहिए।"

मानव जाति के संबंध में कुछ भी जानने के लिए विभिन्न समुदायों की भाषाओं का ज्ञान अवश्य अपेक्षित है। मानव संस्कृति का जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है। वह भाषा के अध्ययन का ही परिणाम है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

7. किसी समूह के कार्य करने एवं विचार करने के सभी तरीकों का नाम संस्कृति है— यह किसका मत है?
   (क) पं. रामधारी सिंह (ख) बोगार्डस
   (ग) रॉबर्ट बीरस्टीड (घ) एडवर्ड बनार्ट टायलर
8. आवश्यकताओं की पूर्ति, हस्तांतरण, समूह का आदर्श किसकी विशेषताएँ हैं?
   (क) सभ्यता (ख) नैतिकता
   (ग) संस्कृति (घ) आचरण

4.6 आर्थिक विकास

देशों, क्षेत्रों या व्यक्तियों की आर्थिक समृद्धि को आर्थिक विकास कहते हैं। नीति निर्माण की दृष्टि से आर्थिक विकास उन सभी प्रयासों को कहा जाता है जो किसी जन–समुदाय की आर्थिक स्थिति एवं जीवन–स्तर को उन्नत बनाने के लिए अपनाए जाते हैं।

आर्थिक विकास से देश के समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने से राष्ट्रीय आय और प्रत्येक व्यक्ति की आय में निरंतर और दीर्घकालिक वृद्धि होती है। जीवन स्तर एवं मानव विकास की स्थिति में सुधार हो सकता है। आर्थिक विकास से भाषा विकास होता रहता है। नए साधन–उपकरण, मशीन, उनका प्रयोग, उत्पादन के क्षेत्र— कृषि तथा अन्य उद्योग, प्राकृतिक साधन आदि के कारण भाषा का प्रयोग किया जाता है। आर्थिक विकास अर्थशास्त्र का क्षेत्र है। अतः अनेक अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास के तत्वों को निम्नानुसार बताया है।

आर्थिक विकास के तत्व :

- प्रो. हेरॉड और डोमर— के मतानुसार जनसंख्या वृद्धि की दर, पूंजी उत्पाद अनुपात, औद्योगिक विकास की दर, बचत एवं आय के अनुपात से आर्थिक विकास संभव है।
- प्रो. शुम्पीटर— की दृष्टि से नव–प्रवर्तन अर्थात उत्पादन की विकसित तकनीकी का सूत्रपात, नई तकनीकों से उत्पादन, नए बाजारों का उपलब्ध होना, उद्योगों में संगठन के नए स्वरूप एवं नए साधनों का प्रयोग महत्वपूर्ण तत्व हैं।
- डब्लू.डब्लू. रोस्टोव— पूंजी संचयन एवं श्रमशक्ति को आर्थिक विकास मानते हैं।
- प्रो. रिचार्ड टी. गील— जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक–साधन, पूंजी–संचय, उत्पादन में विशिष्टीकरण और तकनीकी प्रगति को महत्व देते हैं।

टिप्पणी

- प्रो. लुईस– बचत करने का प्रयत्न, ज्ञान वृद्धि और उसका उत्पादन में प्रयोग करना एवं प्रति व्यक्ति की पूंजी या अन्य साधनों की मात्रा वृद्धि करना ही आर्थिक विकास मानते हैं।
- किंडल बर्जर और हैरिक– ने भूमि तथा प्राकृतिक साधन, भौतिक पूंजी, श्रम–मेहनत का विस्तार, संरचनात्मक परिवर्तन को मान्य किया है।

विश्व के देशों में आर्थिक विकास होता रहा है किंतु प्रत्येक देश की वृद्धि एक दूसरे से भिन्न है। असमानता, आर्थिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, तकनीकी एवं अन्य कारणों से भिन्नता संभव हो सकती है। देश की प्रगति के लिए शिक्षा जरूरी है। साक्षरता नहीं क्योंकि शिक्षित व्यक्ति अपनी आय के साधन बढ़ा सकता है। प्राप्त धन की जमा या बचत से वह जीवन–स्तर को ऊँचा बना सकता है।

आर्थिक विकास के सर्वमान्य तत्व एवं कारक

- **प्राकृतिक संसाधन**– जलसंपदा, भूमि, वन–संपदा, खनिज पदार्थ, वर्षा, जलवायु भौगोलिक परिस्थिति, प्राकृतिक बंदरगाह आदि देश के प्राकृतिक संसाधन हैं। लोहा और कोयला के बिना औद्योगिकरण अधूरा है। अतः मानवीय प्रयासों से इनकी खोज की जाय। जापान में इन साधनों की कमी होते हुए भी आज वह विश्वपटल पर सर्वाधिक विकसित राष्ट्र है।
- **मानवीय संसाधन**– देश या राष्ट्र की जनसंख्या जो अपने देश के श्रम, उत्पादन का साधन है जीवन की आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की पूर्ति करने में सहायक बनते हैं। प्रो. स्मिथ के मतानुसार– "मानवीय श्रम ही वह शक्ति है जिस पर देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है।" देश का विकास देश के स्वस्थ, संपन्न एवं सुखी पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों में निहित होता है।
- **पूंजी संचय एवं पूंजी निर्माण**– यह आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। पूंजीगत वस्तुएं हैं– कारखाने, भवन, मशीनें, यंत्र, बांध, नहर, ईंधन, कच्चामाल आदि। इनकी अधिकता से देश की प्रगति होती है।
- **उद्यमशीलता**– जनसंख्या पर रोक, श्रम–गौरव की भावना, संचय पर बल दिया जाता है। तकनीकी ज्ञान एवं नई खोज का आर्थिक विकास की दृष्टि से व्यावहारिक प्रयोग करने का साहस जुटाना, अर्थात जोखिम उठाने से सफलता प्राप्त हो सकती है।
- **तकनीकी प्रगति एवं नव प्रवर्तन**– इस हेतु प्रो. गील ने विज्ञान की प्रगति एवं अभिरुचि, समाज मे शिक्षा का ऊँचा स्तर, उद्यमशीलता और नवप्रवर्तनों को व्यावहारिक रूप देना– इन चार कारकों को जिम्मेवार माना है तथा आर्थिक विकास के लिए राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं में भी वृद्धि महत्वपूर्ण मानी है।
- **विदेशी पूंजी**– अल्पविकसित देश के आर्थिक विकास में यह महत्वपूर्ण आवश्यक तत्व है। मशीनों व अन्य उपकरणों का आयात, विदेशी पूंजी का उपयोग, योजनाओं के क्रियान्वयन में विदेशी पूंजी का निवेश महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

- **निवेश की दर**– यह राष्ट्रीय आय के 4% से लेकर 90% या अधिक होती जाती है जो जनसंख्या की वृद्धि की दर से अधिक होने पर देश की जनसंख्या की उन्नति एवं विकास में महत्वपूर्ण योगदान करता है।

आर्थिक विकास की विशेषताएँ

- अर्थ व्यवस्था आत्मनिर्भर एवं स्वयं संचालित होती है।
- आर्थिक विकास की बाधाओं पर काबू किया जा सकता है– आर्थिक विकास विकास की प्रेरक शक्तियों का विस्तार होता है।
- गरीबी का निर्मूलन किया जा सकता है।
- आधारभूत उद्योगों की स्थापना से उत्पादन में तेजी आ सकती है।
- यह निरंतर प्रक्रिया है। आर्थिक विकास विभिन्न क्षेत्रों के अलग–अलग होने पर भी एक–दूसरे से जुड़े रहता है।

आर्थिक विकास में वृद्धि, दूरदृष्टि, जटिलता आदि प्रवृत्तियों का अत्यधिक महत्व है। इंग्लैंड में 18वीं शताब्दी में सर्वप्रथम औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हुआ बाद में उसका फैलाव अन्य यूरोपीय देशों में हुआ। यातायात, संचार के साधनों के विकास के कारण पश्चिमी देशों का अन्य देशों से संपर्क बढ़ने लगा।

जापान और सोवियत संघ में आर्थिक विकास 18वीं शताब्दी तो अन्य देशों में 1840 के बाद होने लगा था। प्राकृतिक, मानवीय संसाधनों की मात्रा एवं गुणों की पूर्ति से स्थिरता आती है। उसी तरह कृषि–उद्योग राष्ट्रीय आय का निर्माणकारी साधन है। उन सेवाओं से संचार, परिवहन, शिक्षा, बीमा आदि का विकास होने से मनुष्य का जीवन स्तर सुधरता है और उसकी भाषा का भी विकास होता है। निष्कर्षतः आर्थिक परिवर्तन का परिणाम साहित्य, संस्कृति और भाषा पर होना स्वाभाविक ही है।

अपनी प्रगति जांचिए

9. पूंजी संचयन एवं श्रमशक्ति को आर्थिक विकास किसने माना है?
   (क) प्रो. शुम्पीटर (ख) प्रो. रिचार्ड टी. गील
   (ग) डब्लू डब्लू रोस्टोव (घ) प्रो. लुईस
10. आर्थिक विकास के कारक कौन से हैं?
   (क) मानवीय संसाधन (ख) प्राकृतिक संसाधन
   (ग) उद्यमशीलता (घ) सभी

4.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ग)
2. (घ)
3. (क)

टिप्पणी

4. (ग)
5. (ख)
6. (क)
7. (ख)
8. (ग)
9. (ग)
10. (घ)

4.8 सारांश

बुद्धि मनुष्य को अस्तित्व से मिला हुआ वरदान है। इससे वह सोच सकता है, विचार कर सकता है। बचपन से ही बौद्धिक विकास का स्थान घर माँ तो बाहर स्कूल में शिक्षक योग्य रीति से दे तो बच्चे विकसित हो सकते हैं। बुद्धिवर्द्धन के लिए सात्विक आहार की जरूरत है।

संवेग भावानुभूति की स्थिति है। भावों के उद्दीपन से आवेश, भय, चिंता, क्रोध आदि संवेगों पर नियंत्रण रखने के लिए स्नेहपूर्ण वातावरण आवश्यक है। भयादि के निराकरण से ही वातावरण प्रसन्न होता है। बच्चों में रुचि निर्माण होने से वे उत्तम विचार ग्रहण कर सकते हैं।

ज्ञानसंवर्द्धन से, पूर्वजों के अनुभवों, परंपराओं, रहन–सहन, जीवन शैली से समाज विशेष के समुदायों के सांस्कृतिक विकास का परिचय होता है। संस्कृति के आदर्श, मूल्यों की सुरक्षा संस्कृति द्वारा होने से सांस्कृतिक विकास की जानकारी भाषा द्वारा संभव होती है।

देश, क्षेत्र तथा व्यक्ति की आर्थिक समृद्धि से ही विकास होता है। इससे मनुष्य समाज के जीवन स्तर की स्थिति में सुधार होता है। किसी चीज की कमी न होने से मनुष्य जीवन सुख संपन्न होता है।

4.9 मुख्य शब्दावली

- **अभिप्रेरणा**– कार्य के लिए प्रेरित करना।
- **अनावरता**– जो कार्य बार–बार न किया जाए।
- **निहित**– स्थापित, सौंपा हुआ।
- **अन्वेषण**– खोज, ढूँढ़ना।
- **उत्तेजित**– उकसाया या भड़काया हुआ।
- **अभिवृत्ति**– प्रवृत्ति, रुझान।
- **हस्तांतरित**– एक हाथ से दूसरे हाथ में आना।

4.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

टिप्पणी

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा का बौद्धिक, सांस्कृतिक विकास के संदर्भ में विवेचन कीजिए।
2. बौद्धिक विकास से आप क्या समझते हैं, उसके कारणों को स्पष्ट कीजिए।
3. संवेग को परिभाषित करते हुए शिक्षक के योगदान की जानकारी दीजिए।
4. संवेगों से सुख–दुःख की अनुभूति होती है, इस कथन की समीक्षा कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. संस्कृति मानव सभ्यता के सांस्कृतिक विकास में कैसे सहायक बनती है विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।
2. आर्थिक विकास में भाषा के योगदान का मूल्यांकन विस्तार से कीजिए।
3. सांस्कृतिक, विकास पर सारगर्भित टिप्पणी लिखिए।

4.11 सहायक पाठ्य सामग्री

1. सामान्य मनोविज्ञान का परिचय– श्रीमती सुमन
2. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास– डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
3. हिंदी साहित्य का इतिहास– आ. रामचंद्र शुक्ल
4. चिंतामणि भाग–1– आ. रामचंद्र शुक्ल
5. भाषी की, हिंदी भाषा तथा शिक्षण– डॉ. अबादास देशमुख।

टिप्पणी

खण्ड – 2

पद्य एवं गद्य

इकाई 5 पद्य शिक्षण

संरचना

5.0 परिचय
5.1 उद्देश्य
5.2 पद्य (काव्य) शिक्षण
5.3 पथ का अर्थ
  5.3.1 काव्य के लक्षण
  5.3.2 काव्य का स्वरूप
5.4 पद्य (काव्य) के भेद
  5.4.1 महाकाव्य
  5.4.2 खण्ड काव्य
  5.4.3 मुक्तक काव्य
  5.4.4 गीतिकाव्य
5.5 पद्य (काव्य) वाचन
  5.5.1 काव्य–वाचन परिभाषा
  5.5.2 काव्य–वाचन के उद्देश्य
  5.5.3 काव्य शिक्षण की विशेषताएँ
  5.5.4 काव्य वाचन के तत्व
5.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
5.7 सारांश
5.8 मुख्य शब्दावली
5.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
5.10 सहायक पाठ्य सामग्री

5.0 परिचय

सामाजिक जीवन के साथ ही मनुष्य का प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध रहता है। प्रकृति में बिखरे हुए सौंदर्य को देखकर वह प्रसन्न हो जाता है। उगता हुआ– डूबता हुआ सूरज, उषा की लालिमा, संध्या की मनोरम झाँकी, फूलों की महक, पक्षियों का कलरव, झिलमिल सितारे देखकर आकर्षित होना स्वाभाविक है। प्रभाववश इनसे ही भावों का सृजन होता है। सौंदर्यानुभूति की अभिव्यक्ति ही काव्य है।

भाव, कल्पना, शब्द, रस, अलंकारों के कारण काव्य आस्वादनीय बन जाता है। काव्य के अर्थबोध, भावबोध से आनंद की अनुभूति होती है। छात्रों में काव्य–वाचन, सस्वर पठन में रुचि पैदा हो इसलिए वाचन शिक्षण आवश्यक होता है। वाचन के लिए उच्चारण, लय, गति आदि का ज्ञान आवश्यक है। इनके आधार पर पद्य का अर्थ, उद्देश्य, स्वरूप, उसके प्रकार–महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य एवं गीतिकाव्य की विशेषताओं का परिचय कराया जाता है। इस इकाई में इन तथ्यों के उल्लेख के साथ ही प्रसिद्ध रचनाओं के उदाहरण दिए गए हैं।

काव्य–वाचन से छात्रों में रुचि–निर्माण करके उन्हें काव्य रचना कार्य के लिए प्रेरित करने हेतु काव्यशिक्षण की आवश्यकता पर इस इकाई में विचार व्यक्त किए गए हैं। पद्य के लिए इकाई में 'काव्य' शब्द प्रयोग किया है।

टिप्पणी

5.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- काव्य की विविध परिभाषाओं से काव्य–स्वरूप को समझ पाएंगे;
- प्रभावशाली पठन से, अनुकरण से काव्य कंठस्थ कर पाएंगे;
- काव्य की विभिन्न विशेषताओं से अवगत हो पाएंगे;
- काव्य के भेदों और प्रसिद्ध रचनाओं का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- काव्य के पठन–पाठन से स्वयं को कविता रचने के लिए प्रेरित कर पाएंगे।

5.2 पद्य (काव्य) शिक्षण

'काव्य' साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, उच्चतर माध्यमिक तथा अन्य स्तर पर काव्य का अध्यापन किया जाता है। काव्य के द्वारा समूह भावना, तादात्म्य, सामाजिक, पौराणिक स्थितियों का परिचय, काव्य के भाव, उसमें प्रयुक्त शब्दों का अर्थ आदि का ज्ञान मिलता है। काव्य की गति, यति, लय, आरोह–अवरोह काव्य सौंदर्य का आस्वाद लेने की योग्यता का निर्माण हो सकता है। काव्य तत्वों के लिए, काव्य की अनुभूति एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करने के लिए, कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए, काव्य की विविध विधाओं की जानकारी के लिए काव्य शिक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

केवल कविता पढ़ने से इन उद्देश्यों की पूर्णता नहीं हो सकती। उसके लिए शिक्षकों को रचनात्मक कार्य करने एवं करवाने का प्रयास करना होगा।

रचनात्मक कार्य :

काव्य मानव मन में संचित भावों की अभिव्यक्ति करता है। लय, गति, संगीतात्मकता के कारण काव्य–पाठन में रुचि निर्माण का कार्य शिक्षक कर सकते हैं।

- **प्रभावशाली पाठन**– कविता श्रव्य काव्य है अतः श्रवण के साधनों से जितना आनंद मिल सकता है उतना अन्य साधनों से नहीं। इसके लिए शिक्षक का कंठ काव्य पठन के लिए योग्य होना आवश्यक है। तभी छात्र उस प्रभावशाली पठन से प्रसन्न हो सकेंगे।
- **कविता कंठस्थ करना**– छात्रों को प्रभावपूर्ण शैली के द्वारा प्रेरित किया जाए। सस्वर कविता पाठ में छात्र रुचि ले सकेंगे और कविता कंठस्थ करेंगे।
- **काव्य रचनाओं का संकलन**– छात्रों में रुचि निर्माण करने का यह एक उपाय है।

टिप्पणी

काव्य रचनाओं के संग्रह से उनकी संचय वृत्ति विकसित होगी। विविध रचनाओं से उन्हें अनेक विषयों की जानकारी हो सकेगी।

- **कवि जयंती समारोह**– विविध कवियों के जयंती–कार्यक्रम द्वारा उनकी रचनाओं, उनके जीवन दर्शन की जानकारी मिल सकती है।
- **कवि सम्मेलन, परिसंवाद, गोष्ठियों का आयोजन**– युग विशेष के कवियों की वेशभूषा धारण करके, अभिनय के द्वारा उनकी रचनाओं का पठन करके, कवि सम्मेलन में कविता पठन से छात्रों को रचनाओं से परिचित कराया जाता है। प्रत्यक्ष रूप में कवि के अपनी कविता पठन करने से छात्रों को परमानंद होना स्वाभाविक है। कवियों से साक्षात्कार, संवाद करने का अवसर उन्हें मिल सकता है।
- **काव्य प्रतियोगिता का आयोजन**– छात्रों की काव्य–पठन की रुचि बढ़ाना प्रतियोगिताओं से संभव हो सकता है। काव्य–लेखन, काव्य–पठन, सुभाषित वाचन–कथन के द्वारा प्रतियोगिताओं का कार्यक्रम संपन्न किया जा सकता है। अच्छा कविता पाठ, कविता, सुभाषित आदि के लिए पुरस्कार रूप में काव्य–पुस्तकें दी जाएं। समारोह में विशेष कवि को बुलाकर उनका और प्रतियोगिता में जीतने वाले छात्रों का सम्मान किया जाए।

काव्य शिक्षण के सोपान

कविता पाठ शिक्षण के लिए शिक्षाविद् महत्वपूर्ण सोपान बताते हैं–

- **कवि परिचय–भूमिका**– कवि परिचय में उसका जीवन पट, परिस्थितियों का उल्लेख, काव्य लेखन की प्रेरणा मिलने वाले प्रसंग का कथन किया जाए।
- **पूर्व सूचना**– कक्षा में काव्य पाठ पढ़ाने के पहले ही सूचित किया जाए कि आज हम महादेवी वर्मा की कविता पढ़ेंगे। उसमें किस रस, शब्द–संगठन, अलंकारों का प्रयोग किया गया है–आदि बातें बताई जानी चाहिए।
- **वातावरण निर्मिति**– कविता पाठ के अनुकूल चित्र प्रसंग के द्वारा प्राकृतिक दृश्य दिखाकर काव्य विषय रोचक एवं ग्राह्य बनाया जाए।
- **प्रश्नोत्तर**– कविता पढ़ने के लिए छात्रों से प्रश्नोत्तर करने से वे सतर्क हो सकेंगे।
- **विषय का सारांश**– कुछ कविताएँ ऐसी होती हैं जिनकी पार्श्वभूमि बताने से ही उसका भाव ग्रहण करने में कठिनाई नहीं आ सकती।
- **दूसरी कविता से कविता पाठ का आरंभ**– समान विषय भाव से संबंधित कविता की पंक्तियों को सुनाकर कविता पाठ पढ़ाने की शुरुआत की जाए।
- **सस्वर पठन**– जिस कविता को पढ़ाने जा रहे हैं, पहले उसे शुद्ध उच्चारण से पढ़कर सुनाया जाए, जिससे छात्रों का ध्यान आकर्षित हो सकता है।
- **आदर्श पठन**– कविता शिक्षण के लिए आदर्श पठन महत्वपूर्ण हिस्सा माना गया है। कक्षा छोटी हो बड़ी हो शिक्षक कविता का सस्वर वाचन करना है। गति, यति, आरोह–अवरोह का ध्यान रखकर पठन करना चाहिए।

- **वाचन**– शिक्षक के आदर्श वाचन के बाद अनुकरण वाचन करवाया जाए। यथासंभव छात्रों की मदद की जाए। छात्रों के उच्चारण की ओर ध्यान देकर उन्हें समझाया जाना चाहिए, जिससे वे अपना उच्चारण सुधारकर शुद्ध उच्चारण करने का प्रयास करेंगे।
- **कथन और विश्लेषण**– पठित कविता में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ को अन्य उदाहरणों के द्वारा समझाना, कविता के भावसौंदर्य के स्थान बताना आवश्यक होता है। तभी छात्र कविता के पूरे भाव को समझ सकेंगे।
- **सौंदर्यानुभूति**– कविता के कलापक्ष अर्थात् शैली पक्ष तथा भावपक्ष, बुद्धिपक्ष एवं कल्पनापक्ष अर्थात् भावपक्ष को समझाना। कविता में कलापक्ष और भावपक्ष का अंतर्भाव होता है। पठित कविता की शब्द योजना, अलंकार योजना, रस योजना को समझाना शिक्षक का काम है।
- **दूसरा आदर्श पठन**– भावपक्ष एवं शैलीपक्ष की जानकारी देने के बाद शिक्षक छात्रों को दूसरी बार भावानुसार सस्वर पठन करके समझाता है।
- **अनुकरण वाचन की आवृत्ति**– कविता से छात्रों ने कहाँ तक भाव एवं काव्य सौंदर्य ग्रहण किया है। छात्रों से पुनः कविता पाठ का पठन करा लेना चाहिए। इससे छात्रों की समझने की क्षमता ग्रहणशीलता का पता लग सकता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि काव्य–पठन या वाचन से छात्रों की बौद्धिक क्षमता, उनका मानसिक स्तर, उनकी अभिरुचि, रसात्मक अनुभूति, काव्य के गुण और दोषों का विवेचन करने की योग्यता, समान भावों की दूसरे काव्य से तुलना करने की क्षमता काव्य शिक्षण से विकसित की जा सकती है। इसीलिए शिक्षक द्वारा काव्य विषय समझाने एवं छात्रों को समझने के लिए काव्य या पद्य शिक्षण महत्वपूर्ण माना जाता है।

काव्य या पद्य शिक्षण के द्वारा छात्रों की बौद्धिक क्षमता, भावों की अभिव्यक्ति, कल्पनात्मक दृष्टिकोण, रसास्वादन शक्ति विकसित करने में मदद हो सकती है। प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन से बाह्य प्रकृति के आँगन के दृश्यों की ओर आकर्षित होकर नयी–नयी कल्पनाओं के आधार पर छात्र अपने मन के भावों एवं संवेदनाओं की सहज अभिव्यक्ति कर सकते हैं। मन के इन भावों को रस, अलंकार, शब्द विन्यास, बिंब, प्रतीकों के द्वारा व्यक्त करने के प्रयास से ही कविता का निर्माण हो सकता है।

ज्ञान, समझ, व्यावहारिक कौशल की प्राप्ति काव्य शिक्षण से हो सकती है। काव्य केवल सौंदर्यात्मक अनुभूति ही नहीं कराता बल्कि वह भाषा सिखाने का उत्कृष्ट तरीका है। इसमें लय, ताल, गति होने के कारण शब्दों की आवृत्ति, ध्वन्यात्मकता के कारण पढ़ने वाला पढ़ाने वालों को जोड़ता है।

लय, ताल, गति से कविता का आनंद उठाना, काव्य रचना को समझना, अन्य कवियों की कविता पढ़ने के लिए प्रेरित करना, कल्पना शक्ति को बढ़ावा देना इन उद्देश्यों की पूर्णता के लिए शिक्षण की आवश्यकता है। स्वयं कविता पढ़ना, उसके कठिन शब्दों के अर्थ समझ लेना, कविता में अभिव्यक्त भावों को समझना और स्वयं कविता सृजन करने के लिए तैयार होना कविता के शिक्षण से संभव है।

कविता की रचना करने में रुचि संपन्न व्यक्ति (रसिक) या छात्र शब्द, वाक्य योजना के आधार पर अपने भावों की नयी–नयी कल्पनाओं द्वारा कविता लिखता है। इस सृजन से वह स्वयं संतुष्ट होता है। जब वह कविता अपने शिक्षक को दिखाता है, तब उसे प्रोत्साहन देना चाहिए। शिक्षक के प्रोत्साहन से प्रेरित होकर वह और भी कविताएं रच सकता है। काव्य का आस्वादन, काव्य–रचना में रुचि निर्माण करना, समुचित मार्गदर्शन करना आदि उद्देश्यों की सफलता के लिए काव्य–शिक्षण की आवश्यकता होती है।

अपनी प्रगति जांचिए

1. काव्य शिक्षण के रचनात्मक कार्य कौन से हैं?
   (क) काव्य में अभिरुचि निर्माण (ख) प्रतियोगिताओं का आयोजन
   (ग) संचय वृत्ति का विकास (घ) ये सभी
2. आदर्श काव्य–पठन हेतु क्या ध्यातव्य नहीं है?
   (क) गति (ख) आरोह
   (ग) लेखन (घ) अवरोह

5.3 पद्य का अर्थ

पद्य को कविता या काव्य भी कहा जाता है। साहित्य की यह महत्वपूर्ण विधा है। काव्य का शाब्दिक अर्थ है– "काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छंदों की शृंखलाओं में विधिवत् बांधी जाती है।

काव्य ऐसी रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो, जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है।

5.3.1 काव्य के लक्षण

(अ) संस्कृत आचार्यों की काव्य विषयक धारणा

- काव्य लक्षण के संदर्भ में सर्वप्रथम भरतमुनि ने परिभाषा दी है। लेकिन वह दृश्य काव्य से संबंधित है–अर्थ और क्रिया (अभिनय) से युक्त काव्य होता है।
- आ. भामह–शब्द और अर्थ के सहभाव को काव्य कहते हैं।

शब्दार्थ के आधार पर आ. भामह, रुद्रट, वामन, कुंतक, मम्मट, क्षेमेंद्र, राजशेखर, आनंदवर्धन आदि ने काव्य की परिभाषाएं दी हैं।

शब्द के आधार पर आ. दण्डी, जयदेव, जगन्नाथ, हेमचंद्र आदि ने काव्य में शब्द को महत्व दिया है। इनमें जगन्नाथ की काव्य की परिभाषा अनेक विद्वानों ने मान्य की है : "रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।।" अर्थात रमणीय अर्थ के प्रतिपादन को काव्य कहते हैं।

शब्द के रस और ध्वनि के आधार पर काव्य लक्षण प्रस्तुत करने में आचार्य विश्वनाथ हैं। उनकी दृष्टि से "वाक्यं रसात्मकं काव्यम्।" अर्थात् रसपूर्ण वाक्य ही काव्य है।

(ब) हिंदी विद्वानों की काव्य विषयक धारणा

आ. केशवदास, श्रीपति, आ. चिंतामणि त्रिपाठी, देव, भिखारी दास, सोमनाथ आदि हिंदी कवियों ने भी रस एवं ध्वनि को महत्व दिया है।

टिप्पणी

- आ. केशवदास ने लिखा है—जदपि सुजाति सुलच्छानी सुबरन सरस सुवृत।
  भूषन बिनु नणिराजई कविता, बनिता भित्त।।
- जयशंकर प्रसाद : काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है जिसका संबंध विश्लेषण विकल्प या विज्ञान से नहीं। वह एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञानधारा है।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'—कविता विमल हृदय का उच्छवास है।
- महादेवी वर्मा : कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है और वह चित्रण इतना ठीक है कि उससे वैसी ही भावनाएं दूसरे के हृदय में निर्मित होती है।
- सुमित्रानंदन पंत—साहित्य अपने व्यापक अर्थ में, मानव जीवन की गंभीर व्याख्या है।
- अज्ञेय—कविता सबसे पहले शब्द है और अंत में भी यही बात रह जाती है कि कविता शब्द है, कथन का विकास है।
- धूमिल—कविता, भाषा में आदमी होने की तमीज है।
- आ. रामचंद्र शुक्ल—जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की यह मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द—विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।
- आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी—अंतःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।
- डॉ. श्यामसुंदर दास—काव्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनंद एवं चमत्कार की सृष्टि करे।

हिंदी के इन आचार्यों, विद्वानों के अतिरिक्त डॉ. रामविलास शर्मा, डॉ. गुलाब राय, आ. नंद दुलारे वाजपेयी, लक्ष्मीनारायण सुधांशु, डॉ. नगेंद्र आदि ने काव्य लक्षणों की चर्चा की है। डॉ. नगेन्द्र कहते हैं—रसात्मक शब्दार्थ ही काव्य है और उसकी छंदोमयी विशिष्ट विधा आधुनिक अर्थ में कविता है।

हिंदी के विद्वानों ने रसध्वनि, छंद, शब्दों के अर्थ का महत्व काव्य की दृष्टि से आवश्यक माना है।

(स) पाश्चात्य विद्वानों का मत

पाश्चात्य विद्वानों ने भी काव्य के लक्षण बताते हुए उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है—

वर्ड्सवर्थ : "जब कवि वास्तविक घटनाओं से उद्बुद्ध भावों को काव्य के साँचे में ढालता है, तो भावों की प्रबलता के कारण भाषा सहज रूप से प्रभावी और अलंकृत रूप धारण करती है।"

टिप्पणी

कॉलरिज– "उत्तमोत्तम शब्दों की उत्तमोत्तम रचना काव्य है।"

अंग्रेजी विद्वानों की दृष्टि भी काव्य के शब्द, अर्थ, रस, भावों पर रही हैं।

कविता या काव्य का उद्देश्य है संतोष, आनंद की प्राप्ति। अतः काव्य का आनंद एक सीमा तक लय पर निर्भर करता है। शब्दों को एक विशेषण क्रम प्रदान करने से कविता में स्वाभाविकता के रूप में लय आ जाती है।

5.3.2 काव्य का स्वरूप

काव्य के स्वरूप की जानकारी के लिए उसके बाह्य एवं आंतरिक स्वरूप को समझना आवश्यक है।

(अ) काव्य का आंतरिक स्वरूप

आंतरिक स्वरूप के तत्व हैं : अनुभूति की तीव्रता, अनुभूति की व्यापकता, कल्पनाशीलता, रसात्मकता, सौंदर्य बोध और भावों का उदात्तीकरण।

(1) अनुभूति की तीव्रता–काव्य का संबंध हृदय से होता है। सामान्य लोगों से कवि अधिक संवेदनशील होता है। वाल्मीकि ने क्रौंच–पक्षी के जोड़े में से एक को मरते देखा और उनके मुख से श्लोक निकल पड़ा। कविवर पंत भी दुख, शोक को काव्य की उपज मानते हैं– "वियोगी होगा पहला कवि आह से उपजा होगा गान"

(2) अनुभूति की व्यापकता–वस्तु, दृश्य, घटनाएँ कवि के हृदय में भाव जागृत करते हैं।

(3) कल्पनाशीलता–ऐसी शब्दावली का प्रयोग जिससे कि कल्पना शक्ति बढ़ती है। विविध अलंकारों का सौंदर्य कल्पना पर ही निर्भर करता है।

(4) रसात्मकता और सौंदर्यबोध–रस कविता की आत्मा है। भाव–विभावादि से रसानुभूति, कविता से आनंदानुभूति होती है।

(5) भावों का उदात्तीकरण–काव्य केवल उपदेश देना नहीं है। सत्य, अहिंसा आदि भावों का इसमें उदात्तीकरण दिया जाता है।

(ब) काव्य का बाह्य स्वरूप

काव्य स्वरूप के छह तत्व हैं–लय, तुक छंद, शब्द–योजना, चित्रात्मकता, अलंकार

लय– प्राकृतिक दृश्यों में लय के दर्शन होते हैं और लय पर काव्य आनंद निर्भर होता है।

तुक– हिंदी कविता तुकांत होने के कारण उसमें गेयता आ जाती है–दोहा, चौपाई, कविता, सवैया आदि तुकांत होने के कारण स्मरण करना आसान हो गया है।

छंद– छंदों में भिन्न–भिन्न ढाँचों का योग होता है। चरणों के भीतर स्वर के उतार–चढ़ाव, मात्राओं में छंदों को बांधा जाता है जैसे–चौपाई, दोहा, कविता, सोरठादि।

टिप्पणी

शब्द–योजना– शब्द–चयन से कविता का सौंदर्य निखरता है, संयोजन से सौंदर्य बढ़ता है।

चित्रात्मकता–चित्रात्मक भाषा शैली के कारण कम शब्दों में अधिक भावाभिव्यक्ति होती है। चित्रात्मकता भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है।

अलंकार– अलंकारवादी आचार्य "अलंकारों के बिना कविता संभव नहीं।" ऐसा मानते हैं। भावोत्कर्ष, सौंदर्य की वृद्धि उपमा, रूपक, यमक, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों के प्रयोग से की जाती है।

कविता, काव्य या पद्य केवल शब्द और अर्थ का मिश्रण ही नहीं है। वह तो कवि के ह्रदय की झंकार है, भावों की सहज अभिव्यक्ति है, रसात्मक अनुभूति से आनंदानुभूति निर्मिति का केंद्र है। विवेचित, आंतरिक एवं बाह्य तत्वों से कविता लयबद्ध, गेयात्मक, आकर्षणीय बनने से सहज कंठस्थ हो जाती है।

अपनी प्रगति जांचिए

3. कविता, भाषा में आदमी होने की तमीज है–किसका मत है?
   (क) कॉलरिज (ख) आ. जगन्नाथ
   (ग) आ. रामचंद्र शुक्ल (घ) धूमिल
4. लय, छंद, तुक, अलंकार आदि काव्य के किस पक्ष को व्यक्त करते हैं?
   (क) बाह्य स्वरूप (ख) सौंदर्य रूप
   (ग) आंतरिक स्वरूप (घ) आनंदानुभूति

5.4 पद्य (काव्य) के भेद

काव्य भेदों के दो आधार माने गए हैं–

(1) स्वरूपानुसार काव्य भेद

(2) शैली के अनुसार काव्य भेद

(अ) स्वरूपानुसार काव्य भेद

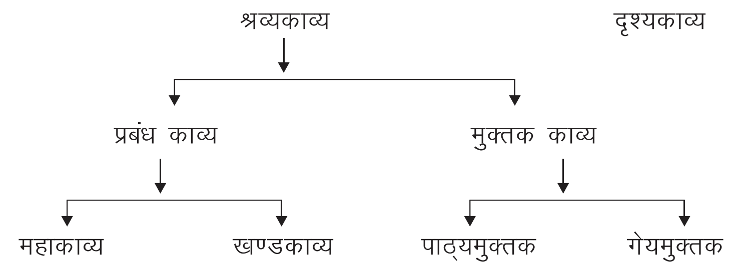

- **श्रव्य काव्य**– जिस काव्य का रसास्वादन दूसरे से सुनकर किया जाता है वह श्रव्यकाव्य कहलाता है। श्रव्यकाव्य के दो भेद हैं–(1) प्रबंध काव्य (2) मुक्तक काव्य और प्रबंध काव्य के दो भेद हैं–(1) महाकाव्य (2) खण्ड काव्य

- **प्रबंधकाव्य**– इसमें मुख्य कथा काव्य के आदि से अंत तक क्रमबद्ध रूप में चलती है। कथा क्रम बीच में नहीं टूटता। गौण कथाएँ बीच–बीच में सहायक बनती हैं। उदा.– रामचरितमानस में राम कथा प्रधान है, अन्य गौण कथाएँ हैं।
- **महाकाव्य**– जिसमें सर्गों का निबंधन हो वह महाकाव्य कहलाता है। वृहद कथा, विस्तृत विवरण, व्यक्ति के जीवन का संपूर्ण चित्रण इसमें किया जाता है।
- **खण्डकाव्य**– प्रबंधकाव्य का यह दूसरा भेद है। नायक के जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना, प्रसंग का संक्षिप्त वर्णन करने वाला खंडकाव्य है।
- **मुक्तककाव्य**– केवल एक पद या छंद स्वतंत्र रूप से किसी भाव या रस, कथा प्रसंग प्रकट करने में समर्थ होता है। उसे मुक्तक काव्य कहते हैं जैसे– दोहा, कविता आदि में।
- **गेय मुक्तक**– मुक्तक काव्य का एक भेद, इसे गीति, प्रगीति काव्य भी कहते हैं, इसमें भावात्मक, संक्षिप्तता, सौंदर्य बोध की प्रधानता होती है। गेय होते हैं– दोहा
- **पाठ्यमुक्तक**– इसमें किसी विचार, विषय की प्रधानता, भावानुभूति, कल्पनात्मक चित्रण किया जाता है।
- **दृश्यकाव्य**– स्वरूपानुसार काव्य का यह एक भेद है। जिस काव्य की अनुभूति अभिनय को देखकर एवं पात्रों के संवाद सुनकर होती है। उसे दृश्यकाव्य कहते हैं। उदा.– नाटक, चलचित्र आदि।

(ब) शैली के आधार पर काव्य के भेद

पद्य काव्य　　　　गद्य काव्य　　　　चंपू काव्य

- **पद्य काव्य**– जिसमें किसी कथा का वर्णन काव्य में किया जाता है, उसे पद्यकाव्य कहते हैं जैसे– गीतांजलि
- **गद्य काव्य**– कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है, वह गद्य काव्य है। गद्य में काव्य रचना करने के लिए कवियों ने छंदशास्त्र के नियमों से स्वच्छंदता अपनाई है जैसे– प्रसाद की कामायनी
- **चंपूकाव्य**– गद्य–पद्य मिश्रित रचना चंपूकाव्य है जैसे– मैथिलीशरण गुप्त की रचना– यशोधरा

प्रबंधकाव्य के दो भेद हैं– (1) महाकाव्य (2) खण्डकाव्य

- **महाकाव्य :**

इसमें पौराणिक या ऐतिहासिक महापुरुष की संपूर्ण जीवन कथा का आदि से अंत तक वर्णन किया जाता है।

- **खण्डकाव्य**– इसमें किसी के जीवन की एक घटना, प्रसंग का वर्णन होता है।

टिप्पणी

5.4.1 महाकाव्य

महाकाव्य को आदिकाव्य भी कहते हैं। जिसमें सर्गों का निबंधन हो उसे महाकाव्य कहा जाता है। इसमें क्षत्रिय कुलोत्पन्न, धीरोदात्त गुण संपन्न नायक होता है। शृंगार, वीर और शांत रसों में से कोई एक रस प्रमुख और अन्य रस गौण रूप में प्रयुक्त होते हैं।

महाकाव्य की विशेषताएं

- महाकाव्य की कथा इतिहास या पुराण प्रसिद्ध होती है।
- इसका नायक उदात्त चरित्र वाला होता है।
- इसमें मानव जीवन की विशद् व्याख्या होती है।
- यह सर्गों में रचित होता है। इसमें कम से कम आठ सर्ग होते हैं।
- इसमें शृंगार, वीर और शांत रसों में से कोई एक रस प्रधान होता है, अन्य रस गौण होते हैं।
- इसकी भाषा शैली विषयानुसार उदात्त होती है।
- इसमें मुख्य कथा के साथ–साथ अन्य सहायक कथाएं भी आदि से अंत तक आती–जाती हैं। बीच–बीच में गौण कथाएँ सहायक बनती हैं।
- इसमें पात्रों की संख्या अधिक रहती है।
- चतुर्वर्ग (धर्म अर्थ काम और मोक्ष) में से कोई एक महाकाव्य का फल होता है।
- महाकाव्य का कथानक और उद्देश्य उदात्त हो, नायक महान हो, प्रकृति का व्यापक चित्रण हो।

इससे स्पष्ट है कि महाकाव्य का कथानक उदात्त हो, कथा विवरणात्मक हो और नाटकीय ढंग से लिखी गई हो, शैली कलात्मक हो, अलंकारों का स्वाभाविक एवं भावानुकूल प्रयोग हो, महाकाव्य का नामकरण नायक, नायिका या प्रमुख घटना से संबंधित हो, युगीन चित्रण यथार्थ हो। इन विषयगत एवं कलागत विशेषताओं के कारण महाकाव्य प्राचीन काल से आज तक लिखे जा रहे हैं।

वाल्मीकि कृत रामायण (संस्कृत में) प्रथम महाकाव्य है तो चंदवरदाई कृत पृथ्वीराज रासो हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। विश्व में सबसे बड़ा महाकाव्य महाभारत तो प्राचीन भारत के रामायण, महाभारत प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। रघुवंश, कुमारसंभव (कालिदास कृत), महाभारत (व्यासकृत) शिशुपाल वध (माघकृत) बुद्धचरित (अश्वघोषकृत), नैषधीयचरित (श्री हर्षकृत) संस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्य हैं।

रामचरितमानस (तुलसीदास रचित)

रामचंद्रिका (आ. केशवदास)

साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

पद्मावत (जायसी)

प्रियप्रवास (अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध')–खड़ी बोली में लिखा गया पहला महाकाव्य है।

टिप्पणी

5.4.2 खण्ड काव्य

प्रबंधकाव्य का एक रूप खण्डकाव्य है। जीवन की किसी घटना विशेष को लेकर खण्डकाव्य लिखा जाता है। मानव जीवन की किसी एक ही घटना की (इसमें) प्रधानता होती है। कवि नायक के जीवन की किसी उत्कृष्ट घटना से प्रभावित होकर जीवन के उस खण्ड विशेष का काव्य में पूर्णतया उद्घाटन करता है।

खण्ड काव्य के संदर्भ में आ. विश्वनाथ लिखते हैं–किसी एक घटना विशेष को लेकर लिखा गया काव्य खण्डकाव्य कहलाता है।

आ. आनंदवर्धन ने ध्वन्यालोक में खण्डकाव्य का प्रयोग नहीं किया है। प्रबंध काव्य के लिए "सर्गबद्ध" शब्द प्रयोग मिलता है।

डॉ. शकुंतला दुबे–खंडकाव्य में जीवन का सर्वांगीण चित्रण न होकर किसी एक मार्मिक एवं रोचक पक्ष का उद्घाटन होता है।

खण्डकाव्य की विशेषताएँ

संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी के विद्वानों ने खंडकाव्य की निम्न विशेषताएँ मानी हैं–

- खण्ड काव्य में जीवन के एक खंड का चित्रण होता है संपूर्ण जीवन का नहीं।
- इसमें एक छोटी सी कथा होती है। प्रासंगिक कथाएँ नहीं होती।
- कथा या घटना तीव्र गति से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती है।
- इसमें पाँच से सात सर्ग होते हैं। सर्ग होना जरूरी नहीं किंतु इसकी कथा सुसंबद्ध तथा सुगठित होनी चाहिए।
- कथानक में एकात्मक अन्विति रहती है।
- इसमें महाकाव्य के समान विस्तार नहीं होता। कथा का आरंभ, मध्य और अंत क्रमशः विकसित होना चाहिए।
- इसमें वर्णित विषय, आदर्श चरित्र, जीवन–दर्शन, प्रेरक प्रसंग हो सकता है।
- नायक के कुल, वंश, गोत्र आदि का विस्तार से वर्णन नहीं होता फिर भी नायक में आदर्श गुण होना आवश्यक है।
- इसमें किसी एक रस की प्रधानता होती है। शेष गौण रूप में होने चाहिए।
- इसमें देश–काल की योजना नहीं होती। पात्रों की वेशभूषा, हाव–भाव तथा कथा–प्रसंग के द्वारा ही वातावरण को चित्रित किया जाता है।
- इसमें छंदों की विविधता नहीं होती। संपूर्ण खण्डकाव्य एक ही छंद में रचित होता है। यह नियम तो नहीं है, कभी–कभी एक से अधिक छंदों का प्रयोग भी किया जा सकता है।
- प्राकृतिक दृश्य आदि का चित्रण संक्षिप्त रूप में होता है।

प्रसिद्ध खण्ड काव्य हैं–

सुदामाचरित–नरोत्तमदास

जयद्रथवध, नहुष, पंचवटी–मैथिलीशरण गुप्त

पथिक–रामनरेश त्रिपाठी

टिप्पणी

हल्दी घाटी—श्यामनारायण पाण्डेय

कुरुक्षेत्र—रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रेम—पथिक—जयशंकर प्रसाद

तुलसीदास—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि।

5.4.3 मुक्तक काव्य

गेय मुक्तक—यह मुक्तक काव्य का एक भेद है। इसे गीति, प्रगीति भी कहते हैं। और दूसरा भेद है पाठ्यमुक्तक।

मुक्तक शब्द का अर्थ है, जो अपने आप में संपूर्ण हो।

मुक्तक काव्य की वह विधा है जिसमें कथा का कोई पूर्वापार संबंध नहीं होता, प्रत्येक छंद अपने आप में पूर्णतः स्वतंत्र होता है।

"मुक्तक" काव्य का वह रूप है जिसमें एक ही छंद में एक विचार एक भाव एक अभिव्यक्ति होती है।"

मुक्तक काव्य की विशेषताएँ

- मुक्तक काव्य महाकाव्य एवं खण्डकाव्य से भिन्न होता है।
- मुक्तक में एक भाव या एक अनुभूति और कल्पना का चित्रण होता है।
- यह महाकाव्य के समान धारावाहिक नहीं होता।
- इसमें वर्ण्य विलय अपने आपमें पूर्ण होता है।
- इसके पदों का आपस में संबंध नहीं होता, वे स्वतंत्र होते हैं।

सूरदास, मीराबाई के पद, रहीम, बिहारी के दोहे मुक्तक के उदाहरण हैं।

- **गेयमुक्तक**— इनकी विशेषता यह है कि ये सहज गाए जाते हैं। भावप्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, सौंदर्यात्मकता, कल्पना, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता आदि गेय मुक्तक की विशेषताएँ हैं। तुलसीदास, कबीर, रहीम के नीति के दोहे, बिहारीलाल, मतिराम, देव के दोहे इसके उदाहरण हैं।

पाठ्यमुक्तक

इनमें विषय की प्रधानता होती है।

विभिन्न विषयों की छोटी—छोटी विचार प्रधान रचनाएँ पाठ्य मुक्तक हैं। किसी भावानुभूति के चित्रण के लिए किसी प्रसंग को चुना जाता है।

उदा.— तारसप्तक की रचनाएँ; सुमित्रानंदन पंत की 'पतझड़', सूर्यकांत त्रिपाठी की भिक्षुक, वह तोड़ती पत्थर रचनाएँ।

5.4.4 गीतिकाव्य

यह कवि की वैयक्तिक अनुभूतियों का प्रकाशन है, जिसके द्वारा काव्य में निजी, विशिष्टता, मनोवेगों की तीव्रता, संवेदना की हार्दिकता, भावों की एकता, अनुभूति और अभिव्यक्ति की एकरूपता पाई जाती है, वह गीतिकाव्य कहलाता है।

गीति का अर्थ है गाया जाने वाला काव्य, किंतु प्रत्येक गाया जाने वाला काव्य गीति काव्य नहीं होता। मानव सभ्यता में गीत परंपरा प्राचीन है। गीत एवं संगीत का उसके जीवन में महत्व है। अतः लय के साथ गाया जाने वाला गीत कहा गया है। मनुष्य की रागात्मकता के कारण गीत का निर्माण हुआ होगा।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 'गीत' शब्द का प्रयोग मिलता है, तो 'गीतिकाव्य' शब्द का प्रयोग लोचन प्रसाद पाण्डेय ने 'कविता कुसुम माला' की भूमिका में किया है— गीतिकाव्य को उन्होंने स्वतंत्र विधा माना है।

हर्बर्ट रीड—"गीत से उस रचना का बोध होता है जिसमें सूक्ष्म अनुभूतियाँ हों, जो एकांत आनन्द से प्रबुद्ध होती है।"

हीगेल—गीतिकाव्य का एकमात्र उद्देश्य शुद्ध कलात्मक शैली में आंतरिक जीवन की विभिन्न अवस्थाओं, उसकी आशाओं, उसके आह्लाद की तरंगों और उसकी वेदना की चीत्कारों का उद्घाटन है।

प्रो. गुमरे ने गीतिकाव्य में वैयक्तिक अनुभूतियों को महत्व दिया है।

महादेवी वर्मा—सुख—दुःख की भाववेगमयी अवस्था विशेष का गिने चुने शब्दों में स्वर संधान से उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीति है।

डॉ. नगेंद्र—गीतिकाव्य की आत्मा है भाव, जो किसी प्रेरणा के भार से दबकर एक साथ गीत में फूट निकलता है।

डॉ. गुलाबराय गीतिकाव्य में एक ही केंद्रिय भाव की पुष्टि करते हैं। गीतिकाव्य की परंपरा प्राचीन है। वेदों में गीतिकाव्य रूप मिलता है, जयदेव की गीतगोविंद रचना में, विद्यापति की पदावली में, भक्तिकाल में कबीर, मीरा, सूरदास के मार्मिक पदों की रचना, वैष्णवों के लीला पद एवं विनय के पदों में राग—रागिनियों का प्रयोग, छायावादी कवियों ने इस विधा को लालित्य, माधुर्य एवं कल्पना का पुट प्रदान किया। महादेवी वर्मा सर्वश्रेष्ठ गीतकार मानी जाती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कवि के हृदय की मार्मिक अनुभूतियों या संगीतात्मक चित्रण गीतिकाव्य है।

गीतिकाव्य की प्रवृत्तियाँ

- भावप्रवणता—कवि कोमल भाव, सुख—दुःख की अनुभूतियों का आधार लेता है।
- आत्माभिव्यक्ति—कवि काव्य में निजी अनुभूतियों को व्यक्त करता है। पाठक का कवि की अनुभूतियों से तादात्म्य स्थापित हो जाता है।
- कल्पनाशीलता—बिंब, प्रतीक, अलंकार आदि के प्रयोग से, अनुभूतियों का कल्पना से भावों का परिष्कार किया जाता है।
- संक्षिप्तता—भावों को व्यक्त करने के लिए विस्तारपूर्वक वर्णन नहीं होता, संक्षिप्तता से काव्य को आकर्षक बनाया जाता है।
- संगीतात्मकता—कोमलकांत शब्दावली के प्रयोग से काव्य में रोचकता बनी रहती है।

- प्रभावान्विति–मार्मिक अनुभूति की अभिव्यंजना–सूरदास, मीरा, महादेवी की गीति रचनाओं में मिलती है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

5. जिसमें किसी के जीवन की एक घटना/प्रसंग का वर्णन होता है, उसे क्या कहते हैं?

   (क) महाकाव्य (ख) खण्डकाव्य

   (ग) प्रबंध काव्य (घ) इनमें से कोई नहीं

6. पंचवटी, नहुष, जयद्रथ वध के रचनाकार कौन हैं?

   (क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) जयशंकर प्रसाद

   (ग) नरोत्तमदास (घ) रामनरेश त्रिपाठी

7. रामचंद्रिका, रामचरितमानस काव्य के किस भेद के उदाहरण हैं?

   (क) मुक्तक काव्य (ख) चंपू काव्य

   (ग) महाकाव्य (घ) पाठ्य काव्य

5.5 पद्य (काव्य) वाचन

मनुष्य संवेदनशील प्राणी है, चेतना संपन्नता के कारण वह प्राकृतिक परिवर्तनों से सुंदर, मनोरम, भयानक भावों को ग्रहण करता है। प्रेम–घृणा, आशा–निराशा, सुखद–दुःखद आदि भावों की प्रेरणा से ज्ञान, आनंद आदि से उसके भावों का भण्डार भरता है। सृजन, संचन और संवर्धन करके उन्हें वह काव्य (साहित्य) का अंग बनाता है।

काव्य या पद्य को "सुख–दुःख की आवेशमयी अवस्था का स्वर कहा है।" काव्य में हृदयस्पर्शी, मार्मिक, प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति होती है।

काव्य–कविता के स्वर में गति लय भाव एवं आरोह–अवरोह के अनुसार कविता–वाचन का ज्ञान देना, रंगमंच के अनुरूप काव्य प्रस्तुत करना, काव्य के अर्थ को जानना एवं शिक्षण उद्देश्य का ज्ञान कराना काव्य–वाचन के प्रमुख उद्देश्य हैं।

काव्य के माध्यम से कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति बड़ी सरलता से करता है। काव्य में भावना, कल्पना एवं बुद्धि तत्वों का अंतर्भाव होता है किंतु इसमें भावों की ही प्रधानता मिलती है।

5.5.1 काव्य–वाचन परिभाषा

- डॉ. श्यामसुंदरदास के मतानुसार, "काव्यात्मक रीति से सजी हुई भाषा जिसमें भावों की अभिव्यंजना ही कविता कहलाती है।"
- आ. रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि "काव्य वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध की रक्षा होती है।"
- सुमित्रानंदन पंत के मतानुसार, "काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक, रसात्मक अनुभूति है।"

5.5.2 काव्य–वाचन के उद्देश्य

- काव्य में दिए हुए अर्थ एवं लक्षणा शक्ति और व्यंजना शक्ति को समझ पाना काव्य–वाचन से छात्रों के लिए सहज हो जाता है।
- अर्थपूर्ण और गंभीर काव्य पढ़ने के लिए प्रयुक्त भाषा के सौंदर्य के साथ–साथ सामाजिक विषमताओं, सामाजिक समस्याओं की ओर आकर्षित करना।
- अच्छी कविताओं के पठन–वाचन से लोगों को आनंद मिल सके।
- अच्छी कविता भाव जगाने का माध्यम है क्योंकि इनसे पढ़ने वालों और सुनने वालों को अतीत के अनुभवों को महसूस करने का अवसर मिलता है।
- भाव, विचार सौंदर्य, नाद सौंदर्य, अप्रस्तुत योजना सौंदर्य की अनुभूति कराना।
- काव्यगत सौंदर्यानुभूति के लिए प्रेरणा देना।
- छात्रों में स्वर, लय, गति एवं भावानुसार काव्य पाठन योग्यता, कल्पना, तर्क शक्ति का विकास करना।
- श्रवण, वाचन एवं पठन कौशल का विकास करना।

इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए काव्य–वाचन आवश्यक है।

कुछ विद्वानों ने काव्य शिक्षण के तीन स्तरों पर विचार किया है–

(1) प्राथमिक स्तर

(2) उच्च प्राथमिक माध्यमिक स्तर

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर

(1) प्राथमिक स्तर

- काव्य के द्वारा आनंदमय वातावरण उत्पन्न करना।
- काव्य या कविता गाकर अभिनय करना।
- काव्य पठन के प्रति रुचि पैदा करना।
- गति, लय एवं आरोह–अवरोह का ज्ञान उत्पन्न करना।
- समूह गीत के द्वारा एकता, सामंजस्य का परिचय कराना।
- काव्य के द्वारा अन्य वस्तुओं एवं विषयों की जानकारी देना।

(2) उच्च प्राथमिक स्तर

- काव्य के भावों को समझने की क्षमता का निर्माण करना।
- काव्य का सस्वर गायन करना, कराना।
- स्वरों की गति, लय, भाव एवं आरोह–अवरोह की जानकारी देकर उसके अनुसार काव्य–वाचन का ज्ञान देना।
- काव्य को रंगमंच के रूप में प्रस्तुत करने की योग्यता का निर्माण करना।

(3) उच्चतर माध्यमिक स्तर

- काव्य–पाठन से काव्यानुभूति का ज्ञान कराना।

टिप्पणी

- सौंदर्यात्मक अनुभूति का निर्माण करना।
- काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन कराने की प्रेरणा देना।
- छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना।
- काव्य की विविध विधाओं का ज्ञान प्रदान करना।
- छात्रों को कविता लिखने के लिए प्रेरणा देना।

5.5.3 काव्य शिक्षण की विशेषताएँ

- काव्य में अनुभूति की प्रधानता होती है। कवि के मन में संचित अनुभूति इतनी तीव्र होती है कि कवि अधिक समय तक उन्हें रोक नहीं पाता। मानो कविता उसे लिखने के लिए विवश कर देती है। भाषा के द्वारा उसके भाव अभिव्यक्ति के रूप में निकल पड़ते हैं।
- सत्यं शिवं सुंदरम् की भावना से प्रत्येक कविता में सत्य का प्रयोग होता ही है ऐसा नहीं है कवि सत्यता में कल्पना का मिश्रण कर देता है। इसलिए वह काव्य आकर्षक एवं सुंदर बनता है।
- भाषा सौंदर्य–काव्य की भाषा सरल, मधुर होनी चाहिए, जिससे काव्य सहज समझा जा सके।
- संगीतात्मकता– संगीत काव्य की आत्मा है। हृदय की गति है। इसलिए काव्य में लय, ताल, स्वरों का आरोह–अवरोह का ध्यान रखा जाता है। इनसे काव्य के भाव उभरकर आते हैं।
- रसानुभूति– रस काव्य का पूरक तत्व है। इसको काव्य की संजीवनी कहा जाता है। रसपूर्णता या आस्वादन काव्य में प्रयुक्त रसादि से होता है।
- स्थिरता– उत्कृष्ट काव्य कृति हमेशा स्थायी हो जाती है।

5.5.4 काव्य वाचन के तत्व

काव्य–वाचन में यति–गति, ताल–लय, आरोह–अवरोह महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यति–गति, आरोह–अवरोह आदि संगीत शास्त्र के विषय हैं तथा इनका उपयोग काव्य–वाचन के लिए अवश्य किया जाता है।

- यति– काव्य के चरणों का पठन करते समय बीच–बीच में रुकने की क्रिया को यति कहते हैं। छंदों के पठन में भी इसका उपयोग करते हैं।
- गति– काव्य में एक विशेष लय या प्रवाह होता है, इसे ही गति कहते हैं। शब्द–चयन और उनके गठन पर गति आधारित होती है, किंतु गति के संदर्भ में कोई विशेष नियम है।
- लय– यह संगीत की देन है। काव्य में लयात्मकता की आवश्यकता होती है। यह काव्य के भाव–प्रवाह को नियंत्रित करने का कार्य करता है। लयात्मक रचना ही काव्य कहलाती है क्योंकि काव्य का संबंध हृदय से होता है।
- ताल– काव्य में प्रयुक्त शब्दों का, स्वरों के साथ मेल ताल है। गति या काव्य के गायन में स्वरों का अनुबंध ताल है।

- आरोह–अवरोह संगीतात्मकता के कारण ध्वनियों का ऊँचा–नीचा उच्चारण होता है। अर्थात् आरोह–अवरोह के कारण यथास्थान विराम या यति की आवश्यकता होती है।

  गीत गायन में इसका अधिक ध्यान रखा जाता है। आरोह का अर्थ है स्वरों का चढ़ता क्रम, विपरीत अर्थात् स्वरों का उतरता क्रम अवरोह कहलाता है। सा रे गा मा पा धा नि सा आरोह और सा नि धा पा मा भा गा अवरोह स्वर संगीतशास्त्र में महत्वपूर्ण है। काव्य–वाचन में ऊँचा सुर और नीचा सुर आरोह–अवरोह है।

अपनी प्रगति जांचिए

8. "काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक, रसात्मक अनुभूति है"– यह परिभाषा किसकी है?

   (क) आ. रामचंद्र शुक्ल (ख) डॉ. श्यामसुंदर दास

   (ग) सुमित्रानंदन पंत (घ) डॉ. गुलाबराय

9. काव्य–वाचन के महत्वपूर्ण तत्व कौन से हैं?

   (क) यति, गति (ख) ताल, लय

   (ग) आरोह–अवरोह (घ) ये सभी

10. श्रवण, वाचन एवं पठन कौशल किससे संबंधित है?

    (क) काव्य–रचना (ख) काव्य–वाचन

    (ग) काव्य–गायन (घ) भाव–निर्माण

5.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (ग)
3. (घ)
4. (क)
5. (ख)
6. (क)
7. (ग)
8. (ग)
9. (घ)
10. (ख)

टिप्पणी

5.7 सारांश

काव्य साहित्य की विधा है। जीवन की विविध घटनाओं, प्रसंगों के द्वारा जो अनुभूति होती है, उसकी अभिव्यक्ति काव्य के द्वारा होती है। काव्य श्रवण से आनंद की प्राप्ति होती है। काव्य के इस सौंदर्य, अलंकारों के ज्ञान की जानकारी काव्य शिक्षण से होती है। काव्य रचना निर्माण की प्रेरणा से काव्य के काव्यपक्ष और भावपक्ष को समझकर समीक्षा करने की योग्यता काव्य–शिक्षण से होती है।

सुख–दुःख, प्रेम–विरह की अभिव्यक्ति काव्य में होती है इसलिए काव्य को सुख–दुख की आवेशमयी अवस्था का स्तर माना जाता है। विद्वानों ने काव्य स्वरूप, लक्षण, प्रवृत्तियों के द्वारा विभिन्न मत व्यक्त किए हैं।

काव्य के श्रव्य–दृश्य भेदों के विवेचन में महाकाव्य, खंडकाव्य मुक्तक काव्य, गीतिकाव्य, उनके स्वरूप और विशेषताओं को बताया गया है। प्रसिद्ध महाकाव्य (रामचरितमानस, पद्मावत) खंडकाव्य (पंचवटी, यशोधरा) आदि को उद्देश्य करके छात्रों की अभिरुचि को विकसित करने का प्रयास किया गया है।

काव्य वाचन प्रक्रिया द्वारा छात्रों की कविता पढ़ने में रुचि, शब्द गठन, काव्य–शैली, भावपक्ष का ज्ञान, सौंदर्यानुभूति, रसास्वादन की योग्यता का निर्माण होने में मदद होगी। छात्र कविता निर्माण करने के लिए प्रेरित होता है। इसलिए पद्य या काव्य की शिक्षा आवश्यक है।

5.8 मुख्य शब्दावली

- **मुक्तावस्था**– स्वतंत्र अवस्था।
- **उदात्तीकरण**– श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करना।
- **स्वच्छंदता**– बिना किसी भय, विचार या संकोच के।
- **लीलापद**– क्रीड़ा।
- **लालित्य**– रमणीयता।
- **अनुबंध**– संबंध, जोड़ी हुई वस्तु।
- **गठन**– बनावट, रचना।

5.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. पद्य शिक्षण की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।
2. पद्य शिक्षण के सोपान रेखांकित कीजिए।
3. काव्य–भेदों का उल्लेख करते हुए महाकाव्य की विशेषताएँ लिखिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. खण्डकाव्य किसे कहते हैं, उसकी विशेषताएँ विस्तारपूर्वक लिखिए।
2. काव्य–वाचन के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिए? विस्तृत विवेचन कीजिए।
3. काव्य–वाचन शिक्षण के उद्देश्य विस्तारपूर्वक बताइए।
4. गीति काव्य की प्रवृत्तियों पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

5.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. भारतीय काव्य शास्त्र के मानदण्ड– डॉ. वासंती सालवेकर, अन्य
2. रस छन्द–अलंकार कौमुदी– डॉ. उर्मिला पाटिल
3. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत– डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
4. हिंदी भाषा शिक्षण– मौलाना आजाद उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

इकाई 6 गद्य शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

6.0 परिचय
6.1 उद्देश्य
6.2 गद्य–शिक्षण
6.2.1 गद्य शिक्षण की उपादेयता
6.2.2 गद्य शिक्षण के उद्देश्य
6.2.3 गद्य–शिक्षण की विधियां
6.3 गद्य की अर्थवत्ता
6.3.1 गद्य का स्वरूप
6.3.2 गद्य का विस्तार
6.4 गद्य की विधाएँ
6.4.1 नाटक
6.4.2 एकांकी
6.4.3 उपन्यास
6.4.4 निबंध
6.4.5 रेखाचित्र
6.4.6 आत्मकथा
6.4.7 हिंदी में लिखी गई सर्वप्रथम रचनाएं
6.5 गद्य–वाचन
6.5.1 गद्य–वाचन के उद्देश्य
6.5.2 सस्वर वाचन का महत्व
6.5.3 सस्वर वाचन के अंग (तत्व)
6.5.4 वाचन शिक्षण की विधियां
6.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
6.7 सारांश
6.8 मुख्य शब्दावली
6.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
6.10 सहायक पाठ्य सामग्री

6.0 परिचय

आधुनिक युग में हिंदी गद्य साहित्य का अधिक विकास होने के कारण इसे 'गद्य–युग' कहा जाता है। आधुनिक युग के ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र से संबंधित साहित्य गद्य में मिलता है। साहित्य, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, कला–कौशल, वाणिज्य, व्यवसाय आदि से संबंधित लेखन गद्य में ही मिलता है।

मानव जीवन, शैक्षिक माध्यम, सामाजिक, सांस्कृतिक, अंतर्राष्ट्रीय स्थितियों की जानकारी गद्य से मिलती है। इनसे संबंधित तथ्य गद्य में सर्वथा उपलब्ध हैं। इनकी जानकारी के लिए गद्य शिक्षण की आवश्यकता होती है।

गद्य शिक्षण में छात्रों को शब्दों का शुद्ध उच्चारण, गद्य की विधाएं, उनकी भाषा शैली का परिचय कराया जाता है। छात्रों के शब्द भंडार में वृद्धि होने से उनके ज्ञान की क्षमता भी विकसित हो सकती है। वे पठन से रुचि विकास और लेखन की ओर

टिप्पणी

प्रवृत्त हो सकते हैं। गद्य शिक्षण से पाठों के भाव, भाषिक तत्वों का ज्ञान, समीक्षात्मक दृष्टिकोण, अभिव्यक्ति की क्षमता छात्रों में निर्मित व विकसित होती है।

इस इकाई में इन पहलुओं पर विचार किया गया है। इसके अध्ययन से अध्येता हिंदी भाषा के महत्व से परिचित होंगे। आत्मविश्वास से स्वयं वाचन–लेखन करने के लिए तत्पर होंगे।

6.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- गद्य की विविध विधाओं की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- प्रसिद्ध रचनाकार एवं उनकी रचनाओं से अवगत हो पाएंगे;
- नाटक, उपन्यास, जीवनी और निबंध के स्वरूप से परिचित हो पाएंगे;
- प्रमुख विधाओं की तत्वगत विशेषताओं को समझ पाएंगे;
- वाचन के महत्व को समझ पाएंगे।

6.2 गद्य–शिक्षण

गद्य की अनेक विधाएँ हैं– कहानी, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि। इन सभी विधाओं में अनेक साहित्यकारों का योगदान रहा है। गद्य विधाओं की जानकारी के लिए गद्य शिक्षण की आवश्यकता होती है।

गद्य का अर्थ है सीधे–सरल, अर्थपूर्ण शब्दों में तथ्यपरक अभिव्यक्ति। यह अभिव्यक्ति गद्य की विविध विधाओं में होती है।

6.2.1 गद्य शिक्षण की उपादेयता

- **दैनिक व्यवहार**– मनुष्य दैनिक व्यवहार के लेन–देन, व्यापार आदि में गद्य का ही प्रयोग करता है। स्कूल, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में दिया जाने वाला गद्य शिक्षण इन कार्य–व्यापारों को कुशलतापूर्वक संपन्न कराने में सहायक होता है।
- **ज्ञानार्जन**– आधुनिक युग में ज्ञानार्जन का साधन गद्य है। समाचार पत्र, पत्र–पत्रिकाएं, ज्ञान–विज्ञान में गद्य का उपयोग किया जा रहा है।
- **भाषा तत्वों का ज्ञान**– भाषा के तत्वों की जानकारी गद्य से मिलती है। उच्चारण, बलाघात, वर्तनी, शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, लोकोक्ति, पद, पदबंध, मुहावरे, वाक्य रचनाएं आदि भाषिक तत्वों का ज्ञान गद्य के माध्यम से दिया जाता है।
- **शुद्ध भाषा ज्ञान**– साहित्यकारों की कसौटी गद्य मानी गई है। गद्यकार को व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए लिखना पड़ता है। इससे उनकी भाषा परिनिष्ठित एवं परिमार्जित होती है। छात्र जब गद्य की पढ़ाई करता है तब उसकी भाषा भी व्याकरण सम्मत अर्थात शुद्ध हो जाती है।

- **भावात्मक विकास**– संस्कारों का परिमार्जन गद्य के माध्यम से संभव है। आज इस संदर्भ में विपुल मात्रा में साहित्य उपलब्ध है जिससे छात्रों का भावात्मक विकास हो सकेगा। "नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति" (सन 1986) में छात्रों के भावात्मक विकास पर बल दिया गया है।

6.2.2 गद्य शिक्षण के उद्देश्य

- व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
- शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग करना।
- शब्द भण्डार की वृद्धि करना।
- संक्षिप्त जीवनी लिख सकना।
- सभाओं एवं उत्सवों की रिपोर्ट तैयार करना।
- लेखन में सृजनात्मकता एवं मौलिकता का विकास करना।
- लेखन में लिपि के मानक रूप का प्रयोग करना।
- भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से (रूप, ध्वनि) शब्दों की वर्तनी का ज्ञान कराना।
- शब्दकोश को देखने की योग्यता को विकसित करना।
- विराम चिह्नों के ज्ञान से, सही प्रयोग करना।
- शब्दों, मुहावरों और पदबंधों का सही प्रयोग करना।
- देखी हुई घटना और प्रसंगों का वर्णन करना।
- सार लेखन, भावार्थ लेखन, व्याख्या लिखना।
- पठित या अपठित रचना का सारांश लिख सकना।
- किसी विषय को वर्णनात्मक और भावात्मक शैली में अभिव्यक्ति करना।
- विविध शैलियों में निबंध, कहानी आदि लेखन क्षमता को विकसित करना।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से भाव, विचार, अनुभव व्यक्त करना।
- पठित रचना की व्याख्या करना आदि।
- गद्य शिक्षण के उद्देश्यों की परिपूर्णता के लिए विविध प्रणालियों का उपयोग किया जाता है।

6.2.3 गद्य–शिक्षण की विधियां

कविता या पद्य कैसे पढ़ाया जाए? इस संदर्भ में काफी विचार–विमर्श हुआ है, किंतु गद्य के संदर्भ में इस बात पर अपेक्षाकृत कम विचार किया गया है। गद्य–शिक्षण की कुछ विधियों या प्रणालियों जिनका उपयोग किया जाता है वे निम्न हैं–

- **अर्थकथन विधि** : इसमें शिक्षक गद्यांशों का पठन करते चलता है, साथ–साथ कठिन शब्दों के अर्थ बताता है। गद्यात्मक वाक्यों के सरल अर्थ बताता है और जहां कठिनाई महसूस होती है वहां भावों को स्पष्ट करके, उनकी व्याख्या कर देता है। इस विधि में सारा कार्य शिक्षक ही करता है। छात्रों को सोचने–विचार करने का कुछ मौका नहीं मिलता।

टिप्पणी

- **व्याख्या विधि** : अर्थ कथन विधि का यह विकसित रूप है। इस विधि में अध्यापक शब्दार्थ के साथ–साथ शब्दों और भावों की व्याख्या करता है, उनके पर्याय बताता है, उन पर्यायों में भेद करता है– उपसर्ग, प्रत्यय, संधि एवं समास। इनकी व्याख्या करता है। अनेक उदाहरणों द्वारा गद्य पाठ की सामग्री को स्पष्ट करता है। अपनी बात के समर्थन के लिए उद्धरण देता है। इस प्रणाली में अधिकांश कार्य शिक्षक ही करता है। छात्र कम सक्रिय रहता है।
- **विश्लेषण विधि** : विश्लेषण विधि को प्रश्नोत्तर प्रणाली भी कहते हैं। इस प्रणाली में शिक्षक भावों एवं शब्दों की व्याख्या के लिए प्रश्नोत्तर का आधार लेता है। छात्रों को स्वयं सोचने और निर्णय करने का अवसर दिया जाता है। बच्चों के पूर्व ज्ञान पर आधारित प्रश्नोत्तर द्वारा नये ज्ञान का विकास किया जाता है। इस विधि में छात्र एवं शिक्षक दोनों ही क्रियाशील रहते हैं। अतः यह प्रणाली योग्य है।
- **समीक्षा विधि** : यह उच्च कक्षाओं हेतु उपयुक्त प्रणाली है। इसमें गद्य के तत्वों का विश्लेषण कर उसके गुण–दोष देखे जाते हैं। गद्य शिक्षण प्रणाली का मुख्य उद्देश्य भाषायी ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि करना है। उनकी वृद्धि के लिए शिक्षक संदर्भ ग्रंथ एवं रचनाओं के बारे में भी बताता है, जिनके अध्ययन से छात्र पाठ्य–वस्तु की समीक्षा कर सकें। छात्रों को इस विधि में अधिक मेहनत करनी पड़ती है। इस विधि से छात्र स्वाध्याय की आदत विकसित कर सकता है।
- **संयुक्त विधि** : माध्यमिक स्तर पर हम इसका उपयोग कर सकते हैं। उक्त सभी प्रणालियों का मिश्रित रूप से प्रयोग करके गद्य–शिक्षण को प्रभावी बना सकते हैं। भाषायी कौशल एवं ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्या एवं विश्लेषण प्रणाली को संयुक्त रूप से अपनाया जाए। इस विधि या प्रणाली से गद्य की शिक्षा रोचक, आकर्षक एवं प्रभावशाली ढंग से दी जा सकती है।

गद्य शिक्षण के सोपानों के आधार पर गद्य की विधाओं का अध्ययन संभव है– पूर्व ज्ञान, प्रस्तावना, उद्देश्य–कथन, प्रस्तुतीकरण, आदर्शवाचन, अनुकरणवाचन, मौनवाचन, बोध प्रश्न।

अपनी प्रगति जांचिए

1. गद्य शिक्षण की विधियां है–

   (क) अर्थकथन (ख) व्याख्या

   (ग) विश्लेषण (घ) उपर्युक्त सभी

2. शब्दों की वर्तनी का ज्ञान विरामचिन्हों का सही प्रयोग, शब्द भंडार की वृद्धि किसके उद्देश्य है?

   (क) गद्य शिक्षण (ख) भाषा उत्पत्ति

   (ग) भाव विकास (घ) उपन्यास लेखन

6.3 गद्य की अर्थवत्ता

वाक्यों में बंधी ऐसी रचना जो विचार प्रधान हो वह गद्य है। गद्य में बिना चमत्कार या अतिरिक्त प्रयास के मनुष्य की चेष्टाएं, मनोभाव, कल्पनाएं चिंतनशील मनःस्थितियाँ सुगमतापूर्वक, सहज, स्वाभाविक रूप से व्यक्त की जाती है। गद्य में बुद्धि तत्व की प्रधानता होती है।

"गद्य मौखिक और लिखित भाषा है, जो भाषण के प्राकृतिक प्रवाह का अनुसरण करती है।"

ऐसी रचना जो छंद, ताल, लय एवं तुकबंदी से मुक्त तथा विचारपूर्वक हो उसे 'गद्य' कहा जाता है।

सामान्यतः मनुष्य की बोलने या लिखने–पढ़ने की छंद रहित साधारण व्यवहार की भाषा को गद्य कहते हैं। साधारण व्यवहार की भाषा गद्य तभी कही जाएगी जब उसका रूप व्यवस्थित और स्पष्ट हो। उसी प्रकार मानव के कार्य–व्यापार, ज्ञानार्जन का मुख्य साधन गद्य ही है। हम विचारों एवं भावों को सरलतापूर्वक, सहज रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं।

गद्य शब्द संस्कृत के 'गद्' धातु से बना है जिसका है स्पष्ट कहना। आ. विश्वनाथ कहते हैं– गद्य वह शब्द योजना है, जो छंदबद्ध नहीं होती।

गद्य में उत्कृष्ट एवं परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया जाने से भावग्रहण संभव होता है। गद्य की विविध विधाओं के अनुरूप गद्य की भाषा में अंतर आता है। समुचित विराम चिह्नों के प्रयोग से गद्य–वाचन की योग्यता प्राप्त हो सकती है। इसलिए पाठ्य–पुस्तक में निहित गद्य की भाषा मानसिक, तार्किक, बौद्धिक एवं तार्किक शक्ति के अनुरूप की जाती है।

गद्य का अर्थ केवल पाठ्य–लेखन की भाषा तक सीमित नहीं है। बौद्धिक विकास, भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए एवं भाषायी कौशल्य को आत्मसात करने के लिए गद्य का उपयोग किया जाता है। भाषण देना, पत्र–लेखन, परस्पर संवाद, अत्याधुनिक विषयों, सूचनाओं और समसामयिक समस्याओं के संदर्भ को गद्य–लेखन द्वारा किया जा सकता है।

6.3.1 गद्य का स्वरूप

गद्य ने अनेक विधाओं में अपने पैर फैलाए हैं– निबंध, नाटक, कहानी, एकांकी, उपन्यास, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, आलोचना, जीवन, यात्रावृत्त, गद्य–काव्य, डायरी, जीवनी, पत्र आदि विधाएं गद्य की हैं। गद्य वह वाक्य बद्ध विचारात्मक रचना है, जिसमें हमारी चेष्टाएं, कल्पनाएं, मनोभाव और चिंतनशील मनःस्थितियां बड़ी सरलता से अभिव्यक्त की जाती है। शायद इसी कारण गद्य साहित्य विविध विधाओं के माध्यम से आधुनिक युग में लोकप्रिय होता जा रहा है। गद्य की प्रत्येक विधा आकार, प्रकार, शैली, विषयों आदि की दृष्टि से अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के कारण इनकी जानकारी छात्रों के लिए आवश्यक ही है।

टिप्पणी

गद्य लेखन में शब्दों के वस्तुनिष्ठ प्रतीकात्मक अर्थ को ग्रहण किया जाता है। इसीलिए पाश्चात्य विद्वान हर्बर्ट रीड ने गद्य को "निर्माणात्मक अभिव्यक्ति" कहा है। यह अभिव्यक्ति ऐसी होती है कि जिसमें शब्दों का निर्माणकर्ता उनके रूप को प्रयोग के लिए तैयार करता है। गद्य के कथ्य को समझाने का प्रयत्न किया जाता है। गद्य में कथ्य का महत्व उस पर अंकुश का काम करता है। अतः गद्य का अनुशासन भाषा के रचना सौंदर्य के बोध का सर्वोत्तम साधन है। टी.एस. इलियट कहते हैं कि "शब्दों में अच्छे गद्य के गुण होने चाहिए।"

गद्य का प्रारंभ इतिहास, विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, कला आदि की भाषा के रूप में हुआ। कथा, इतिहास, जीवनी, यात्रा के वर्णनात्मक विवरण; विज्ञान, धर्म, दर्शन आलोचना, सौंदर्य शास्त्र, नीतिशास्त्र, विधि, राजनीति आदि विवेचनात्मक; आत्मपरक निबंध, नाटक एवं वर्णनात्मक, विवेचनात्मक विषयों आदि भावात्मक रूपों में गद्य का विस्तार होता रहा। विषयों के अनुसार गद्य में प्रवाह, स्पष्टता, चित्रमयता, लय, व्यक्तिगत अनुभूति, अलंकरण आदि लेखक की रुचि और प्रयोजनानुसार परिवर्तन होता रहा है। गद्य का यह प्रयोगात्मक रूप उसके विकास की ओर संकेत करता है। स्पष्ट है कि गद्य की विस्तार सीमा अनंत है।

6.3.2 गद्य का विस्तार

निबंधकार अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करता है।

उपन्यास हिंदी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधि है। इसके विकास की प्रक्रिया में हिंदी के मौखिक उपन्यासों के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में लिखे महान ग्रंथों के अनुवाद हिंदी विकास में सहायक बने हैं। इस कार्य के लिए गद्य ही अधिक उपयुक्त है। इसी कारण आधुनिक युग की मुख्य विशेषता गद्य की प्रधानता रही है। इससे ही आधुनिक काल गद्य काल माना जाता है।

रेखाचित्रों में पीड़ा और दर्द के चित्रण के साथ अभावग्रस्त पात्रों के प्रति सहानुभूति निर्माण और आक्रोश व्यक्त किया जाता है। महादेवी के अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, रामवृक्ष बेनीपुरी के लालतारा, रेखाचित्र हैं।

द्विवेदी युग से गद्य विद्या संस्मरण का आरंभ हुआ है। निम्न वर्ग के पात्रों के प्रति मानवता को उजागर किया है। राधिकारमण प्रसाद सिंह ने अपनी कृतियां, सावनी समां, सूरदास में, महादेवी के पथ के साथी, रेणु का वन तुलसी की गंध, अज्ञेय की स्मृति लेखा प्रसिद्ध संस्मरण है।

जीवनी या चरित काव्य कार्तिक प्रसाद खत्री की– अहिल्याबाई, छत्रपति शिवाजी, मीराबाई प्रसिद्ध जीवनियां हैं। विष्णु प्रभाकर, अमृतराय रामविलास शर्मा (निराला की साहित्य साधना) प्रसिद्ध हैं।

आत्मकथा का लेखक और नायक एक ही व्यक्ति होता है, स्वयं का मूल्यांकन करके घटनाओं की कड़ियों से अनुभवों को व्यक्त करता है। गुलाब राय की मेरी असफलताएं, बनारसीदासकृत अर्धकथा, यशपाल की सिंहावलोकन आत्मकथाएं हैं।

यात्रा वृत्तांत में मानवीय संवेदना का स्पर्श, उल्लास, ऊर्जा, सूक्ष्म निरीक्षण कठिनाइयों का सामना, प्राकृतिक सौंदर्य की सरस अभिव्यक्ति होती है। राहुल

सांकृत्यायन के किन्नर देश में, दार्जिलिंग परिचय; अज्ञेय का अरे यायावर रहेगा याद; निर्मल वर्मा का चीड़ों पर चांदनी (यूरोप की यात्रा वर्णन) प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

साक्षात्कार रिपोर्ताज डायरी (व्यक्ति की अपनी निजी संपत्ति है) गद्य की ही विधाएं हैं। साक्षात्कार में संवाद शैली के कारण समकालीन जीवन दर्शन के संदर्भ समझाए जाते हैं। प्रभाकर माचवे ने जैनेंद्र और शुक्ल जी के साक्षात्कार लिए थे, जो "जैनेंद्र के विचार" पुस्तक में प्रकाशित किए हैं। नामवर सिंह और रामविलास शर्मा के साक्षात्कार प्रकाशित हो चुके हैं। साक्षात्कार में उत्सव, मेला, बाढ़, अकाल, युद्ध, महामारी आदि संबंधित सुख–दुःख का प्रत्यक्ष देखा हुआ घटना चित्रण होता है। रांगेय राघव का तूफानों के बीच (बंगाल के अकाल का चित्रण) रेणु के ऋण जल धन जला में बिहार के अकाल का चित्रण है तो नेपाली क्रांति कथा में नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना के लिए हुए आंदोलन का चित्रण है।

डायरी में लेखक आंतरिक जीवन का चित्रण मिलता है। घनश्याम दास की 'डायरी के पन्ने', धीरेंद्र वर्मा की मेरी कॉलेज की डायरी; मुक्ति बोध की एक साहित्यिक की डायरी आदि प्रसिद्ध डायरियां हैं। इन विधाओं के अतिरिक्त उपन्यास नाटक, एकांकी, कहानी, पत्र साहित्य आलोचना गद्यगीत, विज्ञान–कथा आदि में भी गद्य का ही आधार लिया गया है। गद्य का अर्थ विधाओं के कारण अधिक विस्तृत होकर फैल रहा है। अन्य विधाओं का विवेचन गद्य के भेदों के अंतर्गत किया जाएगा।

अपनी प्रगति जांचिए

3. गद्य का अर्थ क्या है?

    (क) छंद रहित रचना — (ख) रसयुक्त रचना

    (ग) छंद बद्ध रचना — (घ) अलंकार प्रधान रचना

4. भाषा कौशल, भाषण एवं पत्र लेखन किससे संबंधित है?

    (क) नाटक — (ख) गद्य

    (ग) पद्य — (घ) संवाद

6.4 गद्य की विधाएँ

गद्य में विविध विषयों को स्थान दिया गया है। गद्य साहित्य की व्यापकता विषयों की विविधता के कारण हिंदी गद्य साहित्य संपन्न एवं समृद्ध रहा है। उसकी विधाएँ अनेक हैं–

हिंदी गद्य की विधाएँ

नाटक	एकांकी	उपन्यास	कहानी	निबंध जीवनी	रेखाचित्र
संस्मरण	आत्मकथा	आलोचना	गद्यकाव्य	डायरी	
लघुकथा	यात्रावृत्त	भेंटवार्ता	हास्य–व्यंग्य	रिपोर्ताज	
प्रहसन	पत्रसाहित्य	साक्षात्कार	गद्यगीत		
विज्ञानकथा	रेडियोनाटक		इंटरव्यू		

इतनी विधाओं का समग्र अध्ययन कठिन काम है। इसलिए यहां केवल कुछ विधाओं के तत्व, विशेषताएं, अर्थ आदि पर विचार किया गया है।

टिप्पणी

6.4.1 नाटक

अभिनय की दृष्टि से संवादों एवं दृश्यों पर आधारित, विभिन्न पात्रों द्वारा रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए लिखी गई रचना 'नाटक' कहलाती है। नाटक दृश्यकाव्य और श्रव्य काव्य भी है। दोनों दृष्टियों से नाटय लेखन में अंतर आ जाता है।

"भारतेंदु ने नाटक के संदर्भ में कहा है– नाटक शब्द अर्थ नट लोगों की क्रिया है।" नाटक गद्य का वह कथात्मक रूप है, जिसे अभिनय, संगीत, नृत्य संवाद आदि के द्वारा रंग मंच पर अभिनीत किया जाता है। डॉ. गुलाब राय ने नाटक को जीवन की अनुकृति को शब्दगत संकेतों में संकुचित करके, सजीव पात्रों द्वारा सप्राण रूप में अंकित करने की बात कही है।

भारतेंदु द्विवेदी, प्रसाद एवं प्रसादोत्तर युग में नाटकों का विकास होता रहा है। भारतेंदु, पं. महावीर प्रसाद, जयशंकर प्रसाद, हरिऔध, हरिकृष्ण प्रेमी, सेठ गोविंद पंत, उपेंद्रनाथ अश्क नाटककार हैं। समाज जागरण, सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक विषयों से संबंधित अनेक नाटकों का निर्माण हुआ है।

पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने नाटक के निम्न तत्व माने हैं–

कथावस्तु, पात्रचरित्र चित्रण, संवाद–कथोपकथन, भाषा शैली, देशकाल और वातावरण, उद्देश्य, संकलनत्रय, रंगमंचीयता– पाश्चात्य दृष्टिकोण से ये तत्व हैं।

भारतीय दृष्टिकोण से– कथावस्तु, नायक, अभिनय, रस, वृत्ति, उद्देश्य आदि प्रमुख तत्व हैं।

नाटक के तत्व

- कथावस्तु : नाटक की आधारशिला या प्राणतत्व है कथावस्तु। पौराणिक, ऐतिहासिक काल्पनिक कथाओं के द्वारा कथानक की प्रस्तुति की जाती है।
- पात्र–चरित्रचित्रण– अभिनय के लिए पात्रों की आवश्यकता, गुणसंपन्न नायक, कथानक गति प्रधान, पृष्ठभूमि विषयानुकूल, भाषा, वेशभूषा का ध्यान।
- संवाद– मनोरंजन, जीवन की विविध समस्याओं–सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक से अवगत कराना, धार्मिक–नैतिक शिक्षा नाटकों से दी जा सकती है।
- देश–काल वातावरण– नाटक में संजीवता निर्मिती के लिए वातावरण निर्मिती होनी चाहिए, प्रकाश–योजना, पर्दे आदि की व्यवस्था। रोचकता, उत्सुकता का इससे ही निर्माण होता है। नाटक की सफलता की यह कुंजी है।
- भाषा शैली– कथावस्तु एवं पात्रानुकूल भाषा प्रयोग, छोटे–छोटे संवाद हों।
- वेशभूषा– व्यक्ति एवं पात्रों का परिचय इससे संभव होता है।
- ध्वनि और प्रकाश योजना– संवाद दूर तक बैठे दर्शकों तक पहुंचने चाहिए, तभी दर्शक उन्हें सुन सकेंगे, प्रकाश योजना से दृश्य, दृश्य परिवर्तन सजीव एवं स्वाभाविक बन सकते हैं।

- रंगमंचीयता– रंगमंच को ध्यान में रखकर नाटक लिखा जाता है।

नाटक की विशेषताएं–

- अनुभूतियों का नाटकीय प्रकाशन।
- बाह्य जगत को अधिक महत्व नहीं दिया जाता।
- विषयवस्तु नाटकीय होता है।
- घटना, प्रसंगों की व्यवस्था में अधिकाधिक प्रभाव उत्पन्न होता है।
- टूटते जीवन मूल्य, जीवन की असंगतियों आदि का चित्रण
- विविध भाषा शैलियों का उपयोग
- जीवनोपयोगी संदेश
- हिंदी के प्रसिद्ध नाटक एवं नाटककार हैं– अंधेर नगरी (भारतेंदु), ध्रुवस्वामिनी (जयशंकर प्रसाद), अंधायुग (धर्मवीर भारती), बकरी (सर्वेश्वरदयाल), एक और द्रोणाचार्य (शंकर शेष), महाभोज (मन्नू भंडारी) आदि।

6.4.2 एकांकी

एक अंक वाले नाटक को (एक अंकी) एकांकी कहा जाता है। जयशंकर प्रसाद कृत "एक घूंट" एकांकी को प्रथम एकांकी माना जाता है तो कुछ लोग रामकुमार वर्मा कृत "बादल की मृत्यु" को प्रथम रचना मानते हैं। इन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य में एकांकी सम्राट माना गया है।

एकांकी के तत्व :

- इसमें एक अंक होता है।
- एक कथा अथवा कथा का अंश होता है।
- पात्रों की सीमित संख्या
- संवादों में संक्षिप्तता
- भाषा शैली (देशकाल के अनुसार)

एकांकी और नाटक के तत्व लगभग समान है किंतु दोनों में मौलिक अंतर है–

- नाटक में किसी भी पात्र या चरित्र का क्रमशः विकास दिखाया जाता है तो एकांकी में चरित्र पूर्णतः विकसित दिखाया जाता है।
- नाटक में कथानक का विस्तार होता है तो एकांकी में घनत्व होता है।
- नाटक में सभी पात्र कहानी को बढ़ाते हैं एकांकी में ऐसा नहीं होता है।
- नाटक में मुख्य कथा के साथ सहायक गौण कथाएं होती है तो एकांकी में केवल एक कथा का वर्णन होता है।
- नाटक में दो, तीन या अधिक अंक होते हैं, एकांकी में केवल एक अंक होता है।
- नाटक की विकास प्रक्रिया धीमी होती है, एकांकी का विकास तीव्र गति से होता है।

टिप्पणी

6.4.3 उपन्यास

गद्य लेखन की यह एक विधा है। उपन्यास का अर्थ है "निकट रखी हुई वस्तु। जिसमें एक दीर्घ कथा का वर्णन गद्य में किया जाता है। मानव जीवन से संबंधित सुखद एवं दुःखद किंतु मर्मस्पर्शी घटनाओं का विस्तारपूर्ण चित्रण उपन्यास में किया जाता है। साहित्य की यह लोकप्रिय विधा जिसमें समाज और व्यक्ति की विविध अनुभूतियां और संवेदनाएं अनेक प्रकार के दृश्य, घटनाएं और बहुत प्रकार के चरित्र तथा विभिन्न शैलियों में कथा कही जा सकती है।"

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी करते हैं कि "उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए गद्य के प्रचार के साथ ही उपन्यास का प्रचार हुआ है।"

डॉ. श्यामसुंदर दास उपन्यास को मानव के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा मानते हैं।

डॉ. जे.बी. क्रिस्टले कहते हैं– 'उपन्यास जीवन का विशाल दर्पण है और इसका विस्तार साहित्य के किसी भी रूप से बड़ा है।'

देवकी नंदन खत्री कृत चंद्रकांता और उसकी संतति, प्रेमचंद का सेवासदन, अज्ञेय की शेखर एक जीवनी आदि भी उपन्यास माने जाते हैं।

उपन्यास के तत्व :

- कथावस्तु– उपन्यास में इसे सर्वाधिक महत्व दिया जाता है।
- पात्र– कथा को गति देने में सहायक होते हैं।
- संवाद– इससे पात्रों के गुण विशेषताओं का पता चलता है।
- देश–काल वातावरण–जीवन के विविध पक्षों के वर्णन से वातावरण का निर्माण होता है।
- भाषा–शैली– भाषा की विविध शैलियों द्वारा विषयों और भाषागत विशेषताएं व्यक्त होती है। पात्रानुकूल भाषा प्रयोग से रोचकता आ सकती है।
- उद्देश्य– जीवन दर्शन मुख्य उद्देश्य होता है। जीवन और जगत के प्रति, उसकी प्रत्येक समस्या के प्रति उपन्यासकार का विशेष दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

उपन्यास की विशेषताएं

- मानव जीवन का यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया जाता है।
- अभिव्यक्ति की कला का महत्व, विविध शैलियों का प्रयोग।
- विविध क्रियाकलापों द्वारा मानव के चरित्र का वास्तविक चित्रण इसका मुख्य विषय है
- मुख्य कथा के साथ अन्य प्रासंगिक एवं गौण कथाएं कथावस्तु का विकास करती है।
- आकार में उपन्यास बृहद् होने के कारण इतिवृत्तात्मक, वर्णनात्मकता की स्वतंत्रता।

- संवादों से पात्रों के चरित्र एवं कथानक का विकास।

हिंदी के उपन्यास और उपन्यासकार

परीक्षा गुरु (श्रीनिवास दास), भाग्यवती (पं. श्रद्धाराम फुल्लौरी), कुसुम कुमारी (किशोरीलाल गोस्वामी), अधखिला फूल (अयोध्या सिंह उपाध्याय), सेवासदन, निर्मला, गोदान (प्रेमचंद), कंकाल (जयशंकर प्रसाद), वृंदावनलाल वर्मा कृत संगम, लगन; जैनेंद्र कृत परख, सुनीता, सुखदा; अज्ञेय कृत अपने–अपने अजनबी, यशपाल कृत दिव्या, अमिता; अमृतलाल नागर कृत– अमृत और विष, सुहाग के नूपुर; फणीश्वरनाथ रेणु कृत मैला आँचल; श्रीलाल शुक्ल कृत रागदरबारी, भीष्म साहनी कृत– तमस, निर्मल वर्मा कृत लाल टीन की छत आदि।

6.4.4 निबंध

'निबंध' का शाब्दिक अर्थ है– "अच्छी तरह से बांधा हुआ। विषयानुकूल भाषा से भावों, विचारों और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने वाली विधा निबंध है। डॉ. गुलाब राय– 'निबंध' उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठवता और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बन्धता के साथ किया गया हो।"

आ. शुक्ल जी निबंध के संदर्भ में कहते हैं– "यदि पद्य कवियों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की।"

डा. श्याम सुंदर दास कहते हैं कि जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तारपूर्वक और पांडित्यपूर्ण ढंग से विचार किया गया हो यह निबंध है।

निबंध के तत्व– संक्षिप्तता, गद्य की अनिवार्यता, व्यक्तित्व की प्रधानता, सजीवता, भाषा शैली।

निबंध के विविध भेद हैं– वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक भावात्मक आदि।

निबंध की विशेषताएं–

- निबंध में कसावट, प्रभावशाली भाषा, विषयानुकूलता
- निबंध में उद्धरणों की भाषा न बदली जाए।
- इसमें विराम चिन्हों का समुचित प्रयोग हो।
- विषय पर चिंतन–मनन किया जाए, विचारों का बिखराव न हो।
- विचारों में क्रमबद्धता हो, विचारों में संतुलन हो– प्रमुख बातों पर लक्ष्य हो।
- विषय–सामग्री का विचार के बदलाव अनुसार अनुच्छेदों में लेखन किया जाए।

विविध विषय और शैलियों में लेखन करने वाले निबंधकार हैं–

श्रीलाल शुक्ल– अंगद के पांव, शरद जोशी– जीप पर सवाल झल्लियां, आ. नंद दुलारे– रीति और शैली; रामवृक्ष बेनीपुरी– गेहूं और गुलाब; महावीर प्रसाद– लेखांजलि, रामचंद्र शुक्ल– लोभ और प्रीति; आ. हजारी प्रसाद– शिरीष के फूल, रामविलास शर्मा– आस्था और सौंदर्य, भगीरथ मिश्र– साहित्य और समीक्षा आदि।

टिप्पणी

6.4.5 रेखाचित्र

रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है। रेखाचित्र एक भाव प्रधान रचना होती है किंतु शाब्दिक रेखाओं में उनका अंकन किया जाता है।

जिस विधा में क्रमबद्धता का ध्यान न रखकर किसी व्यक्ति की आकृति उसकी चाल–ढाल या स्वभाव का, किन्हीं विशेषताओं का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया जाता है, उसे रेखाचित्र कहते हैं।

रेखाचित्र के तत्व–

चित्रात्मकता	संवेदनशीलता	प्रतीकात्मकता
एकात्मकता	संक्षिप्तता	
तटस्थता	भावात्मकता	
वैयक्तिकता	विश्वसनीयता	

रेखाचित्र की विशेषताएं–

- रेखाचित्र में लेखकीय प्रतिभा और सूक्ष्म निरीक्षण का उपयोग होता है।
- शब्द की रेखाओं से चित्र अंकित किया जाता है।
- इसमें गति की व्यंजना सूक्ष्म रूप में होती है।
- पाठक को अपनी कल्पनानुसार इन शब्द–रेखा चित्रों में रंग भरने का अवसर मिलता है।
- आकार में संक्षिप्त होना चाहिए।
- इसमें व्यक्ति, वस्तु का हू–ब–हू चित्र अंकित किया जाता है। रेखाचित्रकार अपनी कल्पना या अनुभूति का इसमें रंग नहीं भरता।
- संवेदनात्मक अनुभूति की अभिव्यक्ति।

हिंदी साहित्य के रेखाचित्रकार एवं उनकी रचनाएं हैं–

पद्मसिंह शर्मा कृत पद्पराग, श्रीरामशर्मा कृत– बोलती प्रतिमा; महादेवी वर्मा कृत अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएं, कन्हैयालाल मिश्र कृत दीप जले शंख बजे; उपेन्द्रनाथ 'अश्क' कृत रेखाएं और चित्र आदि अनेक रचनाकार हैं।

विवेचित गद्य विधाओं के अतिरिक्त विधाएं है– संस्मरण, आत्मकथा, आलोचना, गद्यकाव्य, डायरी, लघुकथा, यात्रावृत्त, भेंट वार्ता, व्यंग्य, रिपोर्ताज, प्रहसन (कामेडी) पत्र–साहित्य, साक्षात्कार आदि। इन विधाओं में भी अनेक लेखकों ने योगदान दिया है।

6.4.6 आत्मकथा

लेखक जब स्वयं के जीवन का क्रमिक विकास प्रस्तुत करता है, तो उसे आत्म–कथा कहा जाता है। अपने जीवन में घटित तमाम बातों का वह विवरण देता है। अर्थात् आंतरिक एवं बाह्य जगत को लेखक प्रस्तुत करता है। आत्मकथा सत्य पर आधारित होती है। अपने गुण–दोषों को ईमानदारी से लिखता है।

अंग्रेजी में इसे "आटोबायोग्राफी" कहते हैं। तो हिंदी में आत्मवृत्त, आत्मकथा अर्थात् स्वयं का लिखा हुआ कथन कहते हैं। लेखक अपने जीवन की प्रमुख घटनाओं, मानवीय अनुभूतियों, भावों, विचारों तथा कार्यकलापों को निष्पक्षता एवं स्पष्टता के साथ अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को व्यक्त करता है।

आत्मकथा का उद्देश्य लेखक द्वारा स्वयं का आत्मनिर्माण करना, आत्मपरीक्षण करना तथा अतीत की स्मृतियों को पुनर्जीवित करना होता है। आत्मकथा के संदर्भ में विविध विद्वानों का मंतव्य है—

डॉ. साधना अग्रवाल— ईमानदारी से सच के पक्ष में खड़े होना और अपनी सफलताओं और असफलताओं का निर्ममतापूर्वक पोस्टमार्टम करना ही आत्मकथा है।

डॉ. कुसुम अंसल— आत्मकथा लिखना अपने अस्तित्व के प्रति कर्ज चुकाने जैसी प्रक्रिया या संसार चक्र में फंसे अपने अस्तित्व की डोर को उधेड़ लेने का साहित्यिक प्रयास है।

डॉ. हरिवंशराय बच्चन— आत्मकथा लेखन की वह विधि है, जिसमें लेखक ईमानदारी के साथ आत्मनिरीक्षण करता हुआ अपने देश, काल, परिवेश से सामंजस्य या संघर्ष के द्वारा अपने को विकसित एवं प्रस्थापित करता है।

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि आत्मकथा लेखक के निजी जीवन एवं व्यक्तित्व का सर्वांगीण अध्ययन संतुलित दृष्टि से करता है। समसामयिक परिस्थितियां ऐतिहासिक तथ्यों के साथ व्यक्तित्व गढ़ने में कहां तक सहायक बनती हैं इसका पता चलता है। आत्मकथा लेखक साहित्यिक, राजनीतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक कोई भी हो सकता है।

आत्मकथा के तत्व :

सामान्यतः आत्मकथा के वर्ण्य विषय में सच्चाई एवं ईमानदारी होनी चाहिए। वह यथार्थ पर आधारित हो। रोचकता, स्पष्टता, यथार्थता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता के कारण आत्मकथा श्रेष्ठ बन सकती है।

- **चरित्र—चित्रण** : प्रमुख पात्र स्वयं लेखक ही होता है। उसके जीवन पर जिन लोगों का प्रभाव पड़ा है, जिनसे प्रेरणा मिली है उनकी स्वभाव विशेषताओं का वर्णन करता है।
- **देशकाल** : आत्मकथा में सजीवता एवं स्वाभाविकता निर्माण करने के लिए देश—काल वातावरण की आवश्यकता होती है। इसका व्यक्ति के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक क्षेत्र से प्राप्त प्रभाव का पता चलता है।
- **भाषा—शैली** : संप्रेषणीयता के लिए भाषा—शैली का महत्व रहा है। शैली के द्वारा अनुभूत विषयवस्तु को सजाया जाता है जो विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर बनाती है और प्रभावपूर्ण भी। लेखक के जीवन के चढ़ाव—उतार, गुण—दोषों के विवेचन को, अनावश्यक बातों को टालकर रोचक शैली में प्रस्तुत करने से ही आत्मकथा पढ़ने के लिए अन्य लोग उत्सुक हो सकते हैं। वर्णनात्मक, हास्य—प्रधान, ऐतिहासिक भावात्मक, आत्मनिवेदनात्मक शैलियों में आत्मकथा लिखी जाती है।

- **उद्देश्य**— आत्मकथा से आत्मांकन, आत्मपरिष्कार, आत्मोन्नति करना तथा अन्य लोगों को कुछ प्रेरणा देना।

आत्मकथा की विशेषताएं—

- **आत्म विश्लेषण** : बड़े हिम्मत और आत्मविश्वास के साथ गुण—दोषों का विवेचन, कमजोरियों की अभिव्यक्ति करना।
- **आत्मालोचन** : आत्मकथा लेखक अपने जीवन की घटनाओं को काफी निकट से देखता है, प्रभावित होता है, विकास में सहायक घटनाओं को व्यक्त करता है।
- **समाज से परिचय** : समाज का लेखक पर प्रभाव पड़ता है। लेखक का संबंध जिन घटनाओं से आता है उनसे उसे प्रेरणादायी घटनाओं के चयन से मार्गदर्शक स्थितियों का वर्णन करना पड़ता है। समाज के लिए किए गए कार्यों से उन्हें जो सम्मान मिला, उन्हें सफलता कैसे मिली इसका यथार्थ वर्णन आत्मकथा में किया जाता है। आत्मकथाओं से भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन मिल सकता है।

हिंदी साहित्य में कवि, कथाकार, आलोचक आदि ने आत्मकथा लिखी है। राहुल सांकृत्यायन (मेरी जीवन यात्रा), वियोगी हरि (मेरा जीवन प्रवाह), यशपाल (सिंहावलोकन), देवेंद्र सत्यार्थी (नील पक्षिणी), चतुरसेन शास्त्री (यादों की परछाइयाँ, मेरी आत्मकथा), सेठ गोविंददास (आत्म निरीक्षण), वृंदावन लाल वर्मा (अपनी कहानी), पदुमलाल बख्शी (मेरी अपनी कथा); हरिवंशराय बच्चन (क्या भूलूं क्या याद करूँ); रामदरश मिश्र (जहाँ मैं खड़ा हूँ, रोशनी की पगडंडियां, टूटते बनते दिन, उत्तरपथ— चार खंड) प्रसिद्ध आत्मकथाएं हैं।

6.4.7 हिंदी में लिखी गई सर्वप्रथम रचनाएं

विधा	कृति / रचना	रचनाकार
उपन्यास	परीक्षा गुरु	श्रीनिवासदास
नाटक	नहुष	गोपालचंद्र
आत्मकथा	अर्धकथानक	बनारसीदास
जीवनी	दयानंद दिग्विजय	गोपाल शर्मा
रिपोर्ताज	लक्ष्मीपुरा	शिवदाससिंह चौहान
यात्रा—संस्करण	लंदन यात्रा	महादेवी वर्मा
कहानी	इंदुमती	किशोरीलाल गोस्वामी
वैज्ञानिक कहानी	चंद्रलोक की यात्रा	केशव प्रसाद सिंह
गद्य काव्य	साधना	रामकृष्ण दास
एकांकी	एक घूंट	जयशंकर प्रसाद
रेखाचित्र	पद्म पराग	पद्मसिंह शर्मा

आलोचना	हिंदी कालिदास की आलोचना	महावीर प्रसाद द्विवेदी
भेंटवार्ता	रत्नाकर तथा प्रेमचंद	बनारसीदास चतुर्वेदी
डायरी	नरदेवशास्त्री वेदतीर्थ की डायरी	नरदेवशास्त्री बेदतीर्थ
पत्र संग्रह	स्वामी दयानंद से संबंधित पत्र संकलन	महात्मा मुनीराम

उपर्युक्त सभी हिंदी गद्य साहित्य की सर्वप्रथम रचनाएं मानी गई हैं। ये छात्रों के लिए उपयोगी हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

5. अंधायुग, अंधेर नगरी, ध्रुवस्वामिनी किस विधा के उदाहरण हैं?
   (क) एकांकी (ख) नाटक
   (ग) कहानी (घ) उपन्यास
6. उपन्यास मानव के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा हैं। किसका मत है?
   (क) डॉ. श्याम सुंदर दास (ख) क्रिस्टले
   (ग) डॉ. हजारी प्रसाद (घ) अज्ञेय
7. 'स्मृति की रेखाएं' रचना किसकी है?
   (क) डॉ. रामकुमार (ख) कन्हैयालाल मिश्र
   (ग) श्रीराम शर्मा (घ) महादेवी वर्मा

6.5 गद्य–वाचन

गद्य की विविध विधाओं से परिचित होने के बाद, गद्य–वाचन की तत्व–विशेषताओं को समझना आवश्यक है।

वाचन एक कला है। बच्चा अपने प्रयास से सीखता है। शिक्षक का काम है प्रेरणा प्रदान करना। बच्चे में उत्सुकता निर्माण तभी होगा जब उसे परिचित चीजों, वस्तुओं के विषय में पढ़ाया जाए अर्थात् उसकी अभिरुचि को विकसित करना शिक्षक का काम है।

पाश्चात्य विद्वान, कैपरीन ओकानर कहते हैं– वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य, श्रव्य एवं गति ग्राही सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केंद्र से संबंध निहित है।

डोनल मायल के अनुसार– 'लिखने में मौखिक भाषा को स्थायी रूप प्रदान किया जाता है और वाचन में इसका उल्टा किया जाता है।'

डा. गुलाब राय ने वाचन को अधिगम क्रिया स्वीकार किया है।

टिप्पणी

जीवन के हर क्षेत्र में वाचन की आवश्यकता होती है। वाचन एक कला है। इसकी जरूरत हर व्यक्ति को होती है। भले वह अमीर हो या गरीब। वाचन शुद्धता उसकी हर समय मदद करती है। वार्तालाप, संभाषण आदि के कारण व्यक्ति अच्छे नागरिक बन सकते हैं। अशिक्षित वर्ग के लोगों तक इस कला को पहुंचा सकते हैं। वाचन योग्यता से व्यक्तित्व विकसित होता है जिससे समाज, राष्ट्र भी प्रगति की ओर अग्रसर होता है। वाचन से व्यक्ति संसार की महानता में अपने अस्तित्व का आनंद ले सकता है।

6.5.1 गद्य–वाचन के उद्देश्य

- बचपन से ही वाचन का अभ्यास आरंभ करने से वे अभ्यस्त हो जाएंगे।
- शब्द ध्वनियों का उचित ज्ञान कराना, जिससे वे शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
- शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराना।
- स्वर के उचित चढ़ाव–उतार का ज्ञान कराना।
- विराम चिन्हों का ज्ञान कराना।
- वाचन मुद्रा का उचित प्रयोग करना सिखाना।
- शुद्ध उच्चारण के लिए अक्षर बोध प्रणाली का प्रयोग करना।
- अपने वाचन का अनुकरण छात्रों द्वारा करवाया जाए।
- वाचन के लिए वाक्य शिक्षण प्रणाली का उपयोग किया जाए।

6.5.2 सस्वर वाचन का महत्व

- इससे छात्रों के मन से डर की भावना दूर होती है, उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। बच्चे सहज रूप से शुद्ध उच्चारण करना सीख जाते हैं।
- संकोच, डर दूर होने से उनका सर्वांगीण विकास हो सकता है।
- लेखकों की अनुपस्थिति में अपने विचारों को दूसरों तक पहुंचाने के लिए वाचन आवश्यक होता है।
- सस्वर वाचन के विधिवत् अभ्यास से छात्रों को सफल वक्ता बनाया जा सकता है।

सस्वर वाचन से स्वरों के उतार–चढ़ाव तथा विराम चिन्हों पर ध्यान रखा जाना चाहिए। पठित विषय को छात्र दूसरे को भी समझाने की क्षमता प्राप्त कर सकता है। छात्रों में ऐसी योग्यता निर्माण की जाए कि वे पाठ का वाचन करे और सुनने वाले भी बड़ी सहजता से समझ सकें।

6.5.3 सस्वर वाचन के अंग (तत्व)

- विराम चिन्हों का प्रयोग– पढ़ाते समय छात्रों को विराम चिन्हों के प्रयोग की जानकारी दें।
- समुचित बल– छात्रों को वाचन में उचित बल प्रयोग करके शब्दों को बनाना सिखाया जाए।

- शुद्ध उच्चारण– इतना अभ्यास कराया जाए कि छात्र गति, पदों के उतार–चढ़ाव के साथ शब्द का उच्चारण कर सकें।
- ध्वनियों का ज्ञान– ध्वनियों का, शब्द शक्तियों का ज्ञान कराया जाए।
- पढ़ाने की पद्धति– शिक्षक छात्रों के समक्ष खड़े होकर पढ़ाएं। उनका मुख छात्र देख सकें। उनके हाथ में जो पुस्तक होगी वह थोड़ी दूरी पर पकड़ें।
- प्रसंगानुकूल स्वर प्रयोग– प्रसंगों को सजीव बनाने के लिए वाचन के समय स्वरों पर ध्यान दिया जाए।
- प्रेरित करना– छात्रों की सरलता एवं मधुरता को प्रेरित करने के लिए निडरता से पाठ–वाचन किया जाए।
- वाचन मुद्रा– करूण, वीर, शांत रसपूर्ण पाठ–वाचन के साथ मुख–मुद्रा, भावों का अभिव्यक्ति के लिए उपयोग करें।
- अभिरुचि निर्माण– वाचन के प्रति छात्रों में जागृति निर्माण किया जाए।

6.5.4 वाचन शिक्षण की विधियां

- **संगीत विधि**– इसका प्रयोग सर्वप्रथम मैडम मांटेसरी ने किया था। इस विधि में वस्तु, चित्र, खिलौने के आगे उनके नाम एक–एक कार्ड पर लिखे जाते हैं। सभी कार्ड दूर फेंक दिए जाते हैं। छात्रों को कहा जाता है कि कार्ड वस्तुओं के सामने रख दो। छात्र वस्तुओं के अनुसार लिखे हुए कार्ड को समेटकर, वस्तुओं के सामने रख देते हैं।
- **देखो और कहो**– इस विधि में फलक पर शब्द लिखा जाता है। फिर बच्चों को अक्षर पहचान कराई जाती है। इसमें केवल शब्दों की पहचान होती है।
- **अक्षरबोध विधि**– शिक्षक इस विधि द्वारा छात्रों को क्रमानुसार वर्णमाला के अक्षरों की पहचान करा देते हैं। फिर उन्हें शब्द दिया जाता है। जैसे– क्‌म्‌ल्‌ और वे अक्षरों से शब्द बनाना सीख जाते हैं– कमल
- **समवेत पाठ विधि**– शिक्षक छोटे–छोटे पद तथा गीत सिखाते हैं। शिक्षक पाठ को भावपूर्ण रीति से पढ़ाता है, छात्र एक साथ उसकी आवृत्ति करते हैं। यह विधि उपयुक्त मानी जाती है।
- **भाषा शिक्षण की यंत्र विधि**– ग्रामोफोन आदि का प्रयोग करके, एक पाठ को उसमें भर देने से छात्र उसे सुनकर उसका अनुसरण करते हैं। किंतु इसमें धन व्यय अधिक हो सकता है।
- **ध्वनि साम्य विधि**– समान उच्चारित ध्वनियों से बने शब्दों को एक साथ सिखाया जाता है– कर्म, धर्म, सर्प, मर्म अदि

निष्कर्षतः गद्य–वाचन से शुद्ध उच्चारण क्षमता, आत्मविश्वास बढ़ता है। छात्रों में इनसे रूचि–अभिरूचि निर्माण हो सकता है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

8. वाचन को किसने अधिगम क्रिया माना है?
   (क) डोनल मायल (ख) डा. गुलाबराय
   (ग) कैपरीन ओकानर (घ) डा. श्याम सुंदर दास
9. गद्य–वाचन का उद्देश्य पहचानिए।
   (क) शुद्ध–उच्चारण का अभ्यास करना
   (ख) विराम चिन्हों का ज्ञान
   (ग) स्वर के उतार–चढ़ाव का ज्ञान
   (घ) उपर्युक्त सभी
10. गद्य वाचन शिक्षण की विधियों में इनमें से क्या शामिल नहीं है?
   (क) अक्षरबोध विधि (ख) समीक्षा विधि
   (ग) समवेत पाठ विधि (घ) ध्वनि साम्य विधि

6.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (क)
3. (क)
4. (ख)
5. (ख)
6. (क)
7. (घ)
8. (ख)
9. (घ)
10. (ख)

6.7 सारांश

शुद्ध उच्चारण से वाचन में शुद्धता आती है। शब्दों का प्रभावपूर्ण प्रयोग करना गद्य शिक्षण का उद्देश्य है। शब्द कोश देखना, मुहावरे, लोकोक्तियों के सही प्रयोग का ज्ञान गद्य–शिक्षण से ही संभव है।

बौद्धिक, विचार प्रधान रचना गद्य है। व्यवहार में मनुष्य बोलने, लिखने पढ़ने के लिए गद्य का उपयोग बड़ी सुगमता से करता है।

टिप्पणी

गद्य का लेखन साहित्य विविध विषयों के कारण विभिन्न विधाओं द्वारा समृद्ध बन गया है। निबंध, उपन्यास, कहानी, जीवनी, रेखाचित्र आदि विधाओं में अनेक साहित्यकारों ने रचनाओं का निर्माण किया है। रचनाओं को पढ़ने की रुचि बढ़ सकती है। गद्य की कुछ विधाओं के तत्व, उद्देश्य बताने का प्रयास किया गया है।

विविध रचनाओं का पाठ पढ़ाते समय पाठ–वाचन की विविध विधियों के प्रयोग से शिक्षक छात्रों में रुचि निर्माण करने में मदद करते हैं।

6.8 मुख्य शब्दावली

- चेष्टाएं : प्रयत्न, कोशिश
- शैली : ढंग, तरीका, विचार प्रकट करने का ढंग
- सम्बद्धता : जुड़ाव, लगाव, संयुक्त होने का भाव
- सस्वर : स्वर सहित

6.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. गद्य शिक्षण के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।
2. गद्य का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
3. गद्य की विधाओं का उल्लेख करते हुए नाटक के तत्वों का विवेचन कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. उपन्यास की परिभाषा बताकर उसकी विशेषताएं विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
2. गद्य–वाचन के अंग एवं उद्देश्य विस्तारपूर्वक बताइए।
3. वाचन–शिक्षण विधियों की विस्तृत विवेचना कीजिए।

6.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नामदेव उनकर
2. हिंदी साहित्य का इतिहास– आ. रामचंद्र शुक्ल
3. पद्मावत– जायसी
4. ध्रुवस्वामिनी– जयशंकर प्रसाद।

इकाई 7 कथा शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

7.0 परिचय
7.1 उद्देश्य
7.2 कथा शिक्षण
7.3 कथा : स्वरूप एवं परिभाषाएं
7.4 कथा–कहानी के तत्व
7.5 कथा (कहानी) के प्रकार
7.5.1 उद्देश्यों के आधार पर कहानी के भेद
7.5.2 तत्वों के आधार पर कहानी के भेद
7.5.3 विषय वस्तु के आधार पर कहानी के भेद
7.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
7.7 सारांश
7.8 मुख्य शब्दावली
7.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
7.10 सहायक पाठ्य सामग्री

7.0 परिचय

कथा या कहानी गद्य साहित्य की और मनुष्य जीवन की महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। कहना और सुनना एवं सुनाने की प्रवृत्ति के कारण कथाएँ बच्चों से लेकर बूढ़ों तक प्रिय रही हैं। वेद ग्रंथ तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में कहानी के स्रोत मिलते हैं। मनोरंजन के साथ–साथ कहानी के उद्देश्यों, विषयों, शैलियों, भेदों में परिवर्तन होता रहा है।

धार्मिक कथाओं में शुद्ध आचरण, व्यवहार की बातों को बताया जाता था, जैसे– रामायण की कथा, सत्यनारायण की कथा आदि। वृहद् कथा, पंचतंत्र, कथा सरित्सागर में उपदेश, नीति, धर्म, प्रेम आदि से संबंधित कहानियों का खजाना है।

आधुनिक युग तक कहानी में बहुत बदलाव आ गया है। सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक परिवेश, मनोव्यापार–संघर्ष, द्वंद्व, कुंठा, तनाव, आदि विषयों से कहानी प्रकारों का विकास होता गया। भ्रष्टाचार, शोषण, विषमता, जंतर–मंतर के दुष्परिणाम, आर्थिक दृष्टि से व्यक्तिगत, पारिवारिक दशा, आदर्श, यथार्थ से संबंधित कहानियों की निर्मिती से अनेक लेखकों की कहानियां प्रसिद्ध हो गई। कहानी लेखकों में प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' विष्णु प्रभाकर, मोहन राकेश, हरिशंकर परसाई, उषा प्रियंवदा आदि लोकप्रिय कहानीकार हैं।

इस इकाई में कहानी के स्वरूप, उसके तत्व एवं भेदों–प्रकारों पर विचार किया जा रहा है।

टिप्पणी

7.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- कहानी शिक्षण के महत्व को समझ पाएंगे;
- कहानी के स्वरूप एवं विद्वानों के कहानी के संदर्भ में विचारों को जान पाएंगे;
- कहानी के तत्वों को पहचान पाएंगे;
- कथा (कहानी) के विविध भेदों से अवगत हो पाएंगे।

7.2 कथा शिक्षण

साहित्य जीवन से प्रेरणा लेता है और जीवन को प्रतिबिंबित करता है। गद्य–काव्य आदि में उसका विस्तार होता है। गद्य की एक विधा है कथा। जो मानव व्यवहार को उदात्त रूप देती है। कथा में सुनाने वाला और सुनने वाला अर्थात् वक्ता और श्रोता होते हैं। धार्मिक कथा एक प्रकार की कहानी है जो किसी के द्वारा कही जाती है और सुनाने का एक धार्मिक अभिप्राय होता है। जैसे– रामायण की कथा, सत्यवान–सावित्री की कथा, संतोषी–माता की कथा।

प्राचीन परंपरा के समर्थक डॉ. शंकरलाल यादव ने कहा है कि "कहानियों के उद्‌गम की आदिभूमि भारत है।" साहित्यिक कहानियां लिखने का श्रेय भी वे भारत को ही मानते हैं। आरंभ में देवी–देवता, राजा–रानी, ऋषि–मुनि, पशु–पक्षी से संबंधित कथाएं बनाई गई। इनका मनुष्य जीवन से घनिष्ठ संबंध रहा है।

संस्कृत वाङ्मय कथाओं का मूल स्रोत माना जाता है। वेदों की एक–एक ऋचा एक–एक कथा है। जैसे शुनः शेप का आख्यान, च्यवन–सुकन्या की कथा।

ब्राह्मण ग्रंथों में उर्वशी–पुरूरवा कथा, दधीचि–वृत्रासुर कथा, उपनिषदों में गार्गी–याज्ञवल्क्य, यम–यमी की कथा, पुराण ग्रंथों में सती अनुसूया, राजा भोज, हरिश्चंद्र की कथा मिलती है।

धीरे–धीरे कथानकों द्वारा लौकिक साहित्य का निर्माण हुआ। गुणाढ्य कृत–बृहत्कथा; सोमदेवकृत कथा सरित्सागर, सिंहासन बत्तीसी, पंचतंत्र, हितोपदेश, बौद्धों की जातक कथाएं, जैनों की धर्म नीति कथाएं न्याय–धर्म कथाएं; रामायण और महाभारत की नीति कथाएं आदि ने कथा परंपरा को सुरक्षित रखा है। इन कथाओं से उपदेश, प्रेम, शौर्य धर्म, नीति, प्रथा–परंपराओं, रीति, प्रकृति, मनोरंजन, शिक्षा, ज्ञान आदि मिलता रहा है। जीवन के विविध क्षेत्रों से इनका घनिष्ठ संबंध रहा है। इसलिए कथा की जानकारी आवश्यक है।

समय परिवर्तन के साथ–साथ कथाओं के विषयों का विस्तार होता गया। जो कथावस्तु कलात्मक ढंग से साहित्यिक सौंदर्य की प्राप्ति कर लेती है तो कहानी कही जा सकती है। अतः साहित्यिकों ने मनोव्यापार, सामाजिक समस्याओं, व्यक्ति के संबंध आदि से विषयों को स्वीकार करके कहानी लिखकर इस विधा को विकसित किया है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. कथाओं का मूल स्रोत कौन–सा है?
   (क) प्राकृत साहित्य (ख) संस्कृत वाङ्मय
   (ग) जातक कथा (घ) पंचतंत्र

7.3 कथा : स्वरूप एवं परिभाषाएं

आधुनिक गद्य की सबसे लोकप्रिय विधा कहानी है। अतः लेखक, समीक्षक और पाठक भी कहानी के स्वरूप को जानता और समझता है। परंतु कहानी क्या है? उसका लक्षण क्या है? आदि अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं जिनका उत्तर शब्दों में नहीं दिया जा सकता। कहानी के संबंध में, उसके विविध प्रश्नों के संबंध में विद्वानों के मत पढ़ने को मिलते हैं, किंतु कहानी की समन्वित, निर्दोष परिभाषा नहीं मिलती।

कहानी कहना, सुनना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। वह किसी तीव्र संवेदना को अभिव्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। हमारे आस–पास जो कुछ घटित होता है, यदि वह हमारी संवेदना को स्पर्श करता है, तो हम उसे जल्दी से जल्दी दूसरों तक पहुंचाना चाहते हैं। स्कूल से घर लौटकर आने वाला बच्चा, स्कूल में घटित कोई घटना, प्रसंग अपनी मां को बताता है जिसमें किसी दोस्त को सजा मिलने से लेकर, किसी को चोट लग जाने की घटना भी सम्मिलित रहती है। घर में काम करने वाली नौकरानी पास–पड़ोस के घरों की घटनाओं को बड़े चाव से सुनाती है। इससे यह बात स्पष्ट है कि कहानी घटनाजन्य संवेदनाओं की सहज अभिव्यक्ति है।

साहित्यकार जनसामान्य से अधिक संवेदनशील होता है। वह दूसरों के सुख–दुःख को भी मानसिक स्तर पर भोगता है, अनुभव करता है। अन्य लोगों की ये संवेदनाएं उसकी अपनी हो जाती हैं। वह इन संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उचित माध्यम की तलाश करता है। माध्यम की भिन्नता से ही विविध विधाओं का निर्माण होता है। कहानी को शायद इसीलिए संवेदनाओं की संक्षिप्त अभिव्यक्ति कहा गया है।

समय–समय पर जो कुछ बातें कही गई हैं, उनसे काफी हद तक कहानी के स्वरूप को समझ सकते हैं। जैसे–

- कहानी लघु आख्यान है, जिसे एक ही बैठक में पढ़ा जा सके।
- कहानी जीवन का एकांगी चित्र है। वह केवल एक घटना, एक मनोभाव या एक स्थिति का चित्रण करती है। जीवन की व्यापकता इसका विषय नहीं है।
- इसमें शिल्प या कलात्मकता की अपेक्षा संवेदना का महत्व होता है। संवेदना इसका प्रमाण है और शिल्प तो संप्रेषण का माध्यम है।
- कहानी का क्षेत्र स्वतंत्र होता है। उसे किसी दार्शनिक मान्यता या सिद्धान्तों की चौखट में बांधा नहीं जा सकता।
- इसमें चरित्र के पूर्ण विकास की गुंजाइश नहीं होती, केवल झलक मात्र होती है।

टिप्पणी

- कहानी तेज गति से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होती है।
- कहानीकार कल्पना के सहारे कथा–प्रसंगों का सृजन करता है किंतु उसकी कल्पना यथार्थ की श्रृंखला से जीवन–सत्य के साथ जुड़ी रहती है।

उक्त विवेचन के आधार पर कहानी के स्वरूप को समझा जा सकता है कि कहानी का आकार अन्य विधाओं की तुलना में लघु होता है। दस–बीस मिनट या आधे घण्टे में वह पढ़ी जा सकें तभी उसकी रोचकता बनी रहती है और पाठक बरबस कहानी पढ़ने के लिए तत्पर रहता है।

कहानी की परिभाषाएं :

कहा गया है कि "कथा, वे कहानियां होती हैं, जो किसी प्रसिद्ध लेखक ने नहीं लिखी हैं, वे जन–सामान्य द्वारा बनाई गई हैं, उनमें उनके समय की परंपराओं, राजनीतिक, सामाजिक, परिस्थितियों की जानकारी होती है।" इनमें मनुष्य की उस समय की जीवनशैली, उसके विचार, समाज की जानकारी भी मिलती है।

कथा का अर्थ है– वह जो कही जाए, धर्मविषयक, आख्यान, किसी घटना की चर्चा। कथा के लिए कहानी शब्द प्रयोग किया जाता है। किंतु दोनों में अंतर है। कथा सत्य घटनाओं पर आधारित होती है– पौराणिक, धार्मिक दृष्टि से उनका महत्व होता है। कहानी सत्य घटनाओं को कल्पना से जोड़ने पर बनती है और यह मनोरंजन के लिए होती है। कथा और कहानी दोनों की प्रकृति एक ही होती है पर कथा शिक्षाप्रद तो कहानी संदेशप्रद होती है।

'कथा' शब्द संस्कृत के कथ् धातु से बना है। जिसका अर्थ है बताना अंग्रेजी का शब्द स्टोरी (Story) जिसका अर्थ है कथा, कहानी।

कथा–कहानी परंपरा से बात समझ सकते हैं कि समयानुसार कहानी के विषयों में वैविध्य आता गया। धार्मिकता, चमत्कार आदि का स्थान नीति, उपदेश, ज्ञानवर्धन, शिक्षा आदि विषयों ने ले लिया अतः कहानी के स्वरूप में भी बदलाव आता रहा।

आख्यायिका, गल्प, कथा, कहानी मानव जीवन का खण्ड चित्र है जिसकी कोई सीमा रेखा नहीं और जिसमें किसी एक पक्ष की अनिवार्यता नहीं। प्रेमचंद का कथन है कि कहानी ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य होता है। प्रेमचंद कहानी को गल्प कहते हैं।

'कहानी (कथा) बीते हुए जीवन की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन है। कहानी मन से गढ़ा हुआ एवं वास्तविक घटनाओं के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ मौखिक–लिखित विवरण, जिसका मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना होता है।'

पाश्चात्य विद्वान एडगर एलिन पो के अनुसार– कहानी वह छोटी रचना है जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव डालने में समर्थ हो, उसमें उस प्रभाव का निर्माण करने के तत्व हों, जो अपने आप में पूर्ण हो।

विद्वान अपने मतानुसार कहानी को परिभाषित करने का प्रयास करते रहे हैं पर किसी भी साहित्यिक विधा को वैज्ञानिक परिभाषा में नहीं बांध सकते। क्योंकि साहित्य में विज्ञान की निश्चितता नहीं होती।

एच.जी. वेल्स– "कहानी को एक लघु रचना मानते हैं। कहानी गागर में सागर भरने जैसी होती है। इसलिए लेखक अपने उद्देश्य की पूर्णता के लिए संक्षिप्तता का ध्यान रखता है।"

टिप्पणी

प्लेटो– शरीर के लिए भोजन तथा व्यायाम की आवश्यकता होती है तो मस्तिष्क के लिए कहानी और संगीत की।

विलियम हेनरी– "लघु कथा में केवल एक ही मूलभाव होना चाहिए, उस भाव के विकास के लिए केवल एक ही उद्देश्य को ध्यान में रखकर सरल ढंग से तर्कपूर्ण निष्कर्षों के साथ करना चाहिए।"

जान फॉस्टर कहते हैं कि "असाधारण घटनाओं की वह श्रृंखला जो परस्पर संबद्ध होकर एक चरम परिणाम पर पहुंचाने वाली हो, कहानी है।"

पं. रामचंद्र शुक्ल के मतानुसार कहानी, साहित्य का वह रूप है, जिसमें कथा प्रवाह एवं कथोपकथन में अर्थ अपने प्रकृत रूप में अधिक विद्यमान रहता है।

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि–

कहानी मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति कराने में सक्षम होती है। मनोरंजन के साथ–साथ जीवन की समस्याओं का यथार्थ चित्रण करके समाज को सचेत करती है। आज की कहानी प्राचीन रूप से बिल्कुल भिन्न बन गई है। कलात्मकता और प्रतिभा शक्ति के कारण कहानी ने अपना स्वरूप बदल लिया है।

अपनी प्रगति जांचिए

2. जो कही जाए उसे क्या कहते हैं?
   - (क) जीवनी
   - (ख) उपन्यास
   - (ग) निबंध
   - (घ) कहानी
3. 'असाधारण घटनाओं की श्रृंखला' कहानी है– यह किसका मत है?
   - (क) प्लेटो
   - (ख) वेल्स
   - (ग) जॉन फॉस्टर
   - (घ) हेनरी
4. प्लेटो ने मस्तिष्क के लिए किसकी आवश्यकता बताई है?
   - (क) कहानी और संगीत
   - (ख) भाव एवं संवेदना
   - (ग) असाधारण घटना
   - (घ) जीवन और समाज

7.4 कथा–कहानी के तत्व

कहानी संरचना के लिए उसके निम्नांकित तत्वों को निर्धारित किया गया है–

(1) कथावस्तु– संक्षिप्तता कथानक का आवश्यक गुण है। फिर भी कथानक का आरंभ, विकास, कौतुहल, चरम सीमा और अंत इन दशाओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रत्येक कहानी में ये पांचों दशाएं होना अनिवार्य तो नहीं है किंतु इनके कारण कहानी का रूप संवरता है। जब कहानी का कथानक संघर्ष की स्थिति

को पार करता है, विकास करते–करते कौतूहल जगाता हुआ चरम सीमा पर पहुंचता है, इसी के साथ कहानी समाप्त हो जाती है।

प्रसंगों की स्वाभाविकता से कहानी पाठकों की जिज्ञासा को बनाए रखने का काम करती है। फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी– तीसरी कसम– दीर्घ कथा होने के बावजूद रोचकता बनाए रखने में सफल रही है। कभी–कभी कहानीकार कल्पना के सहारे जीवन सत्य को उजागर करके वैचारिक कहानी में रंग भर देता है। कथा वस्तु का चयन जीवन की व्यापकता में अनुभवित, संचित भावों को विषय बनाकर पात्रों के द्वारा उसे विकसित करता है।

(2) **पात्र या चरित्र चित्रण**– आधुनिक कहानी में यथार्थ को मनोविज्ञान के बल पर व्यक्त किया जाने लगा है। पात्र कहानीकार की संवेदना के संवाहक होते हैं। जैसे– प्रेमचंद का जुम्मन (पंच–परमेश्वर), धर्मवीर भारती की गुल की (गुल की बन्नो) मोहन राकेश के गनी मियां (मलबे का मालिक) उषा प्रियंवदा के गजाधर बाबू (वापसी) आदि पात्र अपनी–अपनी चरित्रगत पहचान के कारण ही कहानी के रसिक पाठकों में लोकप्रिय रहे हैं।

अज्ञेय की कहानी 'शत्रु' में एक ही पात्र है, जैनेंद्र कुमार के 'खेल' कहानी में चरित्र–चित्रण का आधार मनोविज्ञान है। इसी कारण कहानी के ये सभी पात्र वास्तविक, सजीव, स्वाभाविक एवं विश्वसनीय लगते हैं। पात्रों के वार्तालाप और क्रियाकलापों द्वारा उनके गुण दोषों का संकेत कराते हैं।

चरित्र–चित्रण में अन्तर्द्वंद्व का असाधारण महत्व है और यह कहानीकार के कौशल का परिचायक होता है।

(3) **संवाद–कथोपकथन**– से कथानक में गति आती है। पात्रों का चरित्र खुलता है और कहानी के प्रभाव में अभिवृद्धि होती है। कहानी के संवाद छोटे, पात्रों के अनुकूल, प्रसंगानुसार, आकर्षक होने से कहानी अधिक आकर्षक बनती है और विषय संप्रेषण में सहायक बनते हैं। संक्षिप्त, रोचक, तर्कपूर्ण संवादों से कथा आगे बढ़ती है, पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डाला जाता है। संवाद स्वाभाविक लगते हैं। विषयानुरूप संवाद योजना कहानी को सार्थक बनाती है। पात्रानुकूल भाषा, संवादों को सहज और स्वाभाविक बनाती है।

(4) **देशकाल वातावरण**– कहानी में भौतिक वातावरण के लिए विशेष स्थान नहीं होता किंतु इनका संक्षिप्त वर्णन पात्रों के जीवन और मनःस्थितियों को समझने में सहायक बनता है। प्रत्येक कहानी किसी विशेष वातावरण में घटित होती है। कहानीकार कथानक को वातावरण के साथ जोड़ने की कला जानता है। जयशंकर प्रसाद की कहानियां इसका उत्तम उदाहरण है। राजप्रसाद से लेकर मजदूर की झोपड़ी तक और महानगर की व्यस्त सड़कों से लेकर गांव की गलियों तक, जब जैसा चाहे वैसा वातावरण तैयार करके कहानीकार अपनी कथा को उभार देता है।

जयशंकर प्रसाद की पुरस्कार कहानी में मधुलिका का चरित्र चित्रण मानसिक और भौतिक वातावरण की सुंदरता की सृष्टि करता है। ऐतिहासिक कहानी में भौतिक और मानसिक वातावरण से अतीत की सच्ची झांकी प्रस्तुत होने से पाठक उस युग की विशेषता से परिचित हो जाता है।

कहानीकार कभी–कभी बिंब, प्रतीकों के द्वारा पात्रों की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देता है। अंधकार, झंझावात, कोलाहल, रेल के इंजिन की चीख, मछली की तड़प आदि के बाह्य वातावरण के चित्र नहीं होते। पात्रों की आंतरिक दशा के मूर्त चित्र होते हैं। जैसे– लाल पान की बेगम (फणीश्वरनाथ रेणु) की बिरजू की मां की हृदय की आनंदानुभूति व्यक्त करने में सफल कहानी मानी जाती है।

(5) भाषा शैली– कहानीकार का भाषा पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। विषय एवं पात्रानुकूल भाषा, संवाद शैली चुस्त अभिव्यक्ति उतनी ही सशक्त होती है। शब्दों, वाक्यों का समुचित चयन किया जाए जिससे भाव–संवेदनाओं की अभिव्यक्ति हो सके। डायरी, नाटकीय, आत्मकथनात्मक आदि शैलियों का विषय संगत प्रयोग करे।

(6) उद्देश्य– कहानी का उद्देश्य केवल मनोरंजन या उपदेश देना नहीं है। आधुनिक जीवन की विविध समस्याओं का अंकन कहानी में किया जा रहा है। जीवन–संबंधी अनुभूतियों से मानव–मन का निकट परिचय कराना भी कहानी का उद्देश्य है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. पंच परमेश्वर, कहानी में सर्जक कौन हैं?
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) लल्लू लाल
   (ग) प्रेमचंद (घ) चतुरसेन शास्त्री
6. कहानी की संवेदना के संवाहक किसे माना गया है?
   (क) पात्र (ख) संवाद
   (ग) भाषा शैली (घ) उद्देश्य
7. जयशंकर प्रसाद की कहानी है–
   (क) मंत्र (ख) मलबे का मालिक
   (ग) पुरस्कार (घ) वापसी

7.5 कथा (कहानी) के प्रकार

कथागत विविधता आदि के आधार पर कहानी के भेदों का विवेचन इस प्रकार किया जा सकता है–

कहानी के भेद

• उद्देश्यों के आधार पर	• तत्वों के आधार पर	• विषय वस्तु के आधार पर
(1) आदर्शवादी कहानी	(1) घटना प्रधान कहानी	(1) ऐतिहासिक कहानी
(2) यथार्थवादी कहानी	(2) चरित्र प्रधान कहानी	(2) सामाजिक कहानी
(3) समन्वयवादी कहानी	(3) वातावरण प्रधान कहानी	(3) राजनीतिक कहानी

(4) भाव प्रधान कहानी

(4) धार्मिक कहानी

(5) मनोवैज्ञानिक कहानी

(6) जासूसी कहानी

टिप्पणी

7.5.1 उद्देश्यों के आधार पर कहानी के भेद

(1) **आदर्शवादी कहानी**— इस प्रकार की कहानी के केंद्र में जीवन के आदर्श मूल्यों को केंद्र में रखा जाता है। समाज सुधार का उद्देश्य सामने रखकर कहानी लिखी जाती है। सामाजिक बुराइयों को रोक कर आदर्श निर्माण का प्रयास किया जाता है। कहानी में प्रेम, राष्ट्र प्रेम, त्याग, न्याय, ईमानदारी आदि गुणों का उत्कर्ष दिखाया जाता है।

प्रेमचंद, प्रसाद, सुदर्शन, चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी', चतुरसेन शास्त्री, विष्णु प्रभाकर आदि की कहानियों में आदर्शवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है।

उदा.— प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर में, न्याय; गुलेरी की उसने कहा था में प्रेम और त्याग भावना; विष्णु प्रभाकर की कहानियों में पारिवारिक आदर्श दिखाई देता है।

(2) **यथार्थवादी कहानी**— प्रेमचंद के समय तक आदर्शवादी कहानियां लिखी जा रही थी। यह परंपरा लुप्त होने लगी थी तब यथार्थवादी कहानी ने जोर पकड़ा। रूढ़ि, अंधविश्वास, पूंजीपतियों के अत्याचार, शोषण, भ्रष्टाचार, सामाजिक विषमताओं का वास्तविक चित्रण कहानी में किया जाने लगा।

राकेश, परसाई, प्रेमचंद, भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवती चरण वर्मा, सियारामशरण गुप्त, प्रभाकर माचवे, अमृतलाल नागर आदि यथार्थवादी कहानीकार हैं। प्रेमचंद की कफन, सद्गति कहानियों में सामाजिक जीवन वास्तविक एवं स्पष्ट दिखाया गया है। मोहन राकेश की परमात्मा का कुत्ता, हरिशंकर परसाई का भोलाराम का जीव यथार्थवादी कहानियां हैं।

(3) **समन्वयवादी कहानी**— इस प्रकार की कहानियों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का समन्वय किया जाता है। प्रेमचंद की कहानियों के बाद गुलेरी, प्रसाद आदि की कहानियों में आदर्श और यथार्थ का चित्रण मिलता है। उद्देश्यों के समन्वित रूप से दोनों की कहानी लिखी हुई हैं। क्रमशः उसने कहा था, आकाश—दीप में, त्याग, समर्पण, प्रेम, राष्ट्रप्रेम के साथ यथार्थ चित्रण किया गया है।

7.5.2 तत्वों के आधार पर कहानी के भेद

तत्वों के आधार पर कहानी के चार भेद माने जाते हैं—

(1) **घटना प्रधान कहानी**— इसमें जीवन का एकांगी चित्र अंकित किया जाता है। केवल एक घटना या स्थिति का ही चित्रण किये जाने से शैली में कसाब आ जाता है। उदा. उसने कहा था (गुलेरी), दिल्ली में एक मौत (कमलेश्वर) में प्रधान घटना तथा अन्य घटना के अंशों को एक सूत्र में बांधा जाता है और धीरे—धीरे कथानक का विकास होता है। कभी दैवी घटना या संयोग पर यह आधारित होती है।

टिप्पणी

(2) चरित्र प्रधान कहानी– इसमें पात्रों के चरित्र चित्रण पर ध्यान दिया जाता है। साथ ही मनोवैज्ञानिक, पृष्ठभूमियों की सूक्ष्म चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन किया जाता है। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद सामाजिक एवं ऐतिहासिक धरातल पर चरित्र प्रधान कहानियों के सर्वश्रेष्ठ लेखक हैं। प्रेमचंद का आत्माराम, प्रसाद की मधुलिका इसके उत्तम उदाहरण हैं।

(3) वातावरण प्रधान कहानी– इसमें विशेष रूप से वातावरण के द्वारा युग विशेष की अभिव्यक्ति की जाती है। ऐतिहासिक कहानियों में इसका महत्व होता है। उदा. अज्ञेय की रोज भगवतीचरण वर्मा की दो बांके कहानी।

(4) भाव प्रधान कहानी– भाव या विचार को केंद्र में रखकर कहानी बनती है। उसके अनुरूप प्रतीकात्मक चरित्रों एवं वातावरण पर कहानी आधारित होती है। प्रेम, करूणा, दया, राष्ट्र प्रेम जैसी भावनाओं का चित्रण इसमें होता है।

उदा. प्रसाद की बिसाती, आकाशदीप, अमरकांत की एक काली लड़की, फणीश्वरनाथ रेणु की ठेस, तीसरी कसम आदि कहानियों में पात्रों के मनोभावों की अभिव्यक्ति मिलती है।

7.5.3 विषय वस्तु के आधार पर कहानी के भेद

विषय वस्तु के आधार पर कहानी के निम्न भेद किए गए हैं–

(1) ऐतिहासिक कहानी– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, तत्कालीन परिस्थितियां, अतीतकालीन उत्थान–पतन, ऐतिहासिक घटनाओं को केंद्र में रखकर कहानी का निर्माण होता है। जयशंकर प्रसाद की अनेक कहानियां इस कोटि में आती हैं– प्रतिध्वनि, छाया।

(2) सामाजिक कहानी– परंपरा, संस्कार, संस्कृति, विविध समस्याएं आदि से संबंधित कहानी सामाजिक कहलाती है। सामाजिक विषमता, मनुष्य या निम्न मध्य वर्ग की अभावग्रस्तता, नीति–व्यवहार आदि तथा लोगों का रहन–सहन, मेले, उत्सवों का इनमें चित्रण किया जाता है। प्रेमचंद की पूस की रात, कफन, सद्‌गति इसके उदाहरण हैं।

(3) राजनीतिक कहानी– इसमें राजनीति, सत्ता, संघर्ष, स्वार्थ, शोषण, अत्याचार आदि विषयों से संबंधित कहानियां लिखी जाती है। शिक्षा व्यवस्था का खोखलापन, दफ्तरों के अधिकारियों की मनमानी, भ्रष्टाचार आदि को व्यंग्यात्मक शैली द्वारा व्यक्त करने वाले व्यंग्य लेखक हरिशंकर परसाई। भोलाराम का जीव प्रसिद्ध कहानी है।

(4) धार्मिक कहानी– अंधविश्वास, बुरी प्रथाएं आदि से संबंधित कहानियां जिनके केंद्र में धर्म से संबंधित कर्मकांड, पाखंड, पंडितों की स्वार्थी प्रवृत्ति का पर्दा खोल दिया जाता है। जातिभेद, सनातनी वर्ग का यथार्थ चित्रण इनमें मिलता है। प्रेमचंद की कहानी सद्‌गति, ठाकुर का कुआं प्रसिद्ध हैं।

(5) मनोवैज्ञानिक कहानी– मानवीय दुर्बलताएं, मानसिक द्वंद्व जीवन मूल्यों में बदलाव, कुंठा, तनाव, घुटन, विवशता आदि मनोवैज्ञानिक कहानी के विषय हैं। जैनेंद्र कुमार, यशपाल, कमलेश्वर, मोहन राकेश, अज्ञेय, भगवती प्रसाद वाजपेयी, इलाचंद्र जोशी आदि प्रसिद्ध कहानीकार हैं।

जैनेंद्र की पाजेब, पत्नी; अज्ञेय की रोज (गैंग्रीन) प्रसिद्ध कहानियां हैं।

(6) **जासूसी–चमत्कारी कहानी**– जंतर–मंतर जादू–टोना, चमत्कारी घटनाएं, अदृश्य पात्रों की शक्ति आदि से संबंधित कहानियां लिखी जाती हैं। सुधांशु राय की रहस्यमयी मिसेज मैकबेथी।

टिप्पणी

हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार एवं उनकी कहानियां तथा कहानी संग्रह–

रचनाकार	रचनाओं के नाम
मुंशी प्रेमचंद	मानसरोवर–कोश (कफन, सद्गति, पंचपरमेश्वर)
चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'	उसने कहा था, बुद्धू का कांटा और सुखमय जीवन (तीन कहानियां)
आचार्य चतुरसेन शास्त्री	रजकण, अक्षत, ककड़ी की कीमत
जैनेंद्र कुमार जैन	वातायन, फांसी, पाजेब, वयःसंधि
वृंदावनलाल वर्मा	कलाकार का दण्ड
भगवती प्रसाद वाजपेयी	हिलोर, पुष्कारिणी
भगवतीचरण वर्मा	खिलते फूल, दो बांके
सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय'	विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात
यशपाल हीरालाल खत्री	चित्र का शीर्षक, पिंजरे की उड़ान, धर्मयुद्ध
राजेंद्र यादव	लहरें और परछाइयां, खेल–खिलौने, टूटना
मोहन राकेश	क्वार्टर तथा अन्य कहानियां, वारिस
कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना	सौतन की बेटी, यह देश, आंधी, मौसम
मार्कण्डेय	पानफूल, हंसा जाई अकेला, सहज और शुभ
श्रीराम लाल अमरनाथ (अमरकांत)	जिंदगी और जोंक, प्रतिनिधि कहानियां, कला–प्रेमी
धर्मवीर भारती	चांद और टूटे हुए लोग
भीष्म साहनी	मेरी प्रिय कहानियां, भाग्यरेखा, माधवी, निशाचर
फणीश्वरनाथ 'रेणु'	मैला आंचल, ठुमरी, परती परीकथा, जुलूस
हरिशंकर परसाई	भोलाराम का जीव, हंसते हैं रोते हैं
वृंदावनलाल वर्मा	कलाकार का दण्ड
मन्नू भंडारी	यही सच है, अकेली, मुक्ति, त्रिशंकु
मृदुला गर्ग	कितनी कैदें, शहर के नाम, चर्चित कहानियां
उषा प्रियंवदा	वनवास, जिंदगी और गुलाब के फूल, एक कोई दूसरा

इनके अतिरिक्त कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृणाल पाण्डे, सुदर्शन, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि ने अनेक कहानियां लिखकर हिंदी गद्य साहित्य का विकास किया है।

अपनी प्रगति जांचिए

8. आदर्शवादी कहानियों का केन्द्र–बिंदु क्या होता है?
   (क) आदर्श जीवन मूल्य (ख) यथार्थपरक अभिव्यंजना
   (ग) मनोविज्ञान (घ) शोषण का विरोध
9. तत्वों के आधार पर कहानी के कितने भेद बनते हैं?
   (क) तीन (ख) दो
   (ग) चार (घ) छह
10. मानसिक द्वंद्व, घुटन, तनाव, कुंठा आदि विषय किस प्रकार की कहानी के अंतर्गत आते हैं?
   (क) सामाजिक (ख) ऐतिहासिक
   (ग) धार्मिक (घ) मनोवैज्ञानिक

7.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)
2. (घ)
3. (ग)
4. (क)
5. (ग)
6. (क)
7. (ग)
8. (क)
9. (ग)
10. (घ)

7.7 सारांश

मानव जीवन में सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है कहानी। प्राचीन संस्कृत साहित्य कथाओं का मूल स्रोत माना जाता है– वेद, पुराण, ब्राह्मण ग्रंथों में अनेक कथा बीज मिलते हैं।

युग परिवर्तन से कहानियों के विषय में परिवर्तन होता रहा। समाज सुधार, मानसिक संघर्ष, घुटन, कुंठा, सामाजिक समस्याएं, संस्कृति, जीवन मूल्य, आदर्श आदि

की अभिव्यक्ति कहानियों के द्वारा की जाने लगी। प्रेमचंद, जैनेंद्र, राजेंद्र यादव, अज्ञेय, मृदुला गर्ग आदि लोकप्रिय कहानीकार हैं।

कथा लेखन, विषयों की जानकारी के लिए कहानी–शिक्षण आवश्यकता रही है।

टिप्पणी

7.8 मुख्य शब्दावली

- **गुंजाइश** : संभावना।
- **सचेत** : चेतन।
- **चरम सीमा** : अंतिम सीमा।
- **चुस्त** : तंग। कसावटयुक्त।

7.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

1. कहानी शिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
2. विविध परिभाषाओं के आधार पर कहानी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
3. कहानी के तत्वों का विवेचन कीजिए।
4. कहानी के प्रकारों का उल्लेख करते हुए किन्हीं दो प्रकारों की जानकारी दीजिए।
5. तत्वों के आधार पर कहानी के भेदों का विश्लेषण कीजिए।

7.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. आधुनिक साहित्य– नंददुलारे वाजपेयी
2. मानव मूल्य और साहित्य– धर्मवीर भारती
3. कहानी के तत्व– भगवतीचरण वर्मा
4. समकालीन हिंदी साहित्य– प्रवीण नायक
5. आधुनिक कथा साहित्य– गंगा प्रसाद पांडेय
6. समकालीन हिंदी कहानी और मूल्य संघर्ष की दिशा डा. सविता जैन

इकाई 8 जीवनी शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

8.0 परिचय
8.1 उद्देश्य
8.2 जीवनी शिक्षण
8.3 जीवनी का अर्थ
8.4 जीवनी की विशेषताएं
8.5 जीवनी के तत्व
8.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
8.7 सारांश
8.8 मुख्य शब्दावली
8.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
8.10 सहायक पाठ्य सामग्री

8.0 परिचय

जीवनी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है। 'जीवनी' का अर्थ है– किसी व्यक्ति विशेष के जीवन की, उसके जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक की विशेषता, घटना या विशेष प्रसंगों की रोचक शैली में की गई प्रस्तुति।

समाज में सामान्य जन के साथ–साथ विशेष व्यक्ति, महापुरुषों का अधिवास रहता है। उनके जीवन काल में किए हुए विशेष कार्यों की प्रस्तुति से समाज को प्रेरणा देने एवं मार्गदर्शन करने का काम लेखक जीवनी लेखन द्वारा करने का प्रयास करता है। विशेष व्यक्ति को जीवनीकार जीवनी का नायक बनाकर, उसके संदर्भ में प्राप्त जानकारी के आधार पर गुण–दोषों का विवरण देता है। आत्मकथा और जीवनी में मुख्य अंतर यह है कि आत्मकथा व्यक्ति स्वयं लिखता है और जीवनी दूसरा (लेखक) व्यक्ति प्राप्त, उपलब्ध सामग्री के आधार पर लिखता है। अतः आत्मकथा की तुलना में जीवनी कम प्रामाणिक हो सकती है।

हिंदी साहित्य में अमृतराय कृत 'कलम का सिपाही', शिवरानी देवी कृत 'प्रेमचंद घर में' विष्णु प्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' आदि प्रसिद्ध जीवनी हैं। विशेष व्यक्ति या महापुरुषों की जीवनी रचनाएं हैं– महात्मा गांधी (रामचंद्र वर्मा), चंद्रशेखर आजाद (मन्मथनाथ गुप्त), जयप्रकाश नारायण (रामवृक्ष बेनी पुरी), मीराबाई जीवन चरित्र और अहिल्याबाई जीवन चरित्र आदि। प्रस्तुत इकाई में जीवनी साहित्य के शिक्षण से छात्रों एवं मनुष्य समाज को प्रेरणा मिल सकेगी।

इस इकाई में जीवनी का अर्थ, उसका स्वरूप, उसकी विशेषताएं, तत्व आदि विषयों का विवेचन किया जा रहा है।

8.1 उद्देश्य

टिप्पणी

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप—

- जीवनी की उपादेयता से परिचित हो पाएंगे;
- 'जीवनी' के अर्थ को समझकर उसके स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;
- जीवन साहित्य की विशेषताओं एवं तत्वों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- जीवनी साहित्य की उपयोगिता समझ पाएंगे।

8.2 जीवनी शिक्षण

साहित्य में प्रत्येक विधा का स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्येक विधा के उद्देश्य होते हैं। जीवनी भी साहित्य की गद्य विधा है। उसके द्वारा समाज के विशिष्ट व्यक्ति या महापुरुषों के जीवन की वैशिष्टपूर्ण घटनाओं एवं प्रसंगों का चित्रण किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में जीवन जीने के साथ—साथ कुछ अभूतपूर्व कार्य करने से अपना नाम कमाता है। खेल—कूद, व्यापार, साहित्य—सृजन, वैज्ञानिक, राजनेता, संत महात्मा, देशभक्त आदि क्षेत्रों में नाम कमाने वालों की जीवनियां प्रचुर मात्रा में लिखी गई हैं।

उदा. महात्मा गांधी— गणेश शंकर विद्यार्थी; महात्मा गांधी — रामचंद्र वर्मा; अहिल्याबाई— जीवन चरित और मीराबाई जीवन परिचय— कार्तिक प्रसाद खत्री; चंद्रशेखर आजाद— मन्मथनाथ गुप्त, शिवाजी— भीमसेन विद्यालंकार; प्रेमचंद की जीवनी कलम का सिपाही— उनके पुत्र अमृतराय द्वारा; तो उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने प्रेमचंद घर में आदि। इन रचनाओं से व्यक्ति विशेष का व्यक्तित्व प्रकट होता है। उनके कार्यकलापों से निश्चित प्रेरणा मिल सकती है।

उपर्युक्त प्रसिद्ध जीवनियां लिखी हुई मिलती हैं। इनसे विशेष व्यक्ति एवं महापुरुषों की छोटी—बड़ी घटनाओं की जानकारी मिलती है। उनके परिवार, मित्र, उन्हें प्रेरणा देने वाले, उनका मार्गदर्शन करने वाले लोगों की भी जानकारी मिलती है। जीवनी भले ही दूसरों द्वारा लिखी जाती है किंतु उसमें व्यक्ति के संपूर्ण जीवन और यथेष्ट जीवन की जानकारी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करनी पड़ती है। जीवनी की परिभाषा यही बताती है कि "किसी व्यक्ति के जीवन का चरित्र चित्रण करना अर्थात् व्यक्ति विशेष के संपूर्ण जीवन वृतांत को बताना उद्देश्य है।"

जीवनी लेखन में प्रामाणिकता होने से पाठक उसे पढ़ने में रुचि लेते हैं। वर्णनात्मक शैली के कारण जीवनी की भाषा में रोचकता आती है। समाज में काम करने वाले अर्थात् अच्छा काम करने वाले व्यक्ति के प्रति सम्मान—आदर भाव निर्माण होता है। अलग—अलग क्षेत्र में काम करने से व्यक्ति का व्यक्तित्व उन्नत होता है। उसके जीवन चरित्र में उसके इन कामों एवं कार्यों का वर्णन किया जाता है। नायक के वर्णन के साथ ही उसके साथी, प्रेरणा देने वालों का भी वर्णन किया जाता है। प्रेरणादायी व्यक्ति से पाठक भी प्रेरित हो सकते हैं।

कहते हैं लुई ब्रेल दृष्टिहीन हो गए थे तब उन्होंने अपनी इच्छा और मनोबल से अन्य दृष्टिहीनों के लिए उपयुक्त 'ब्रेल लिपि' की खोज की। साधारण व्यक्ति भी इस महत्वपूर्ण खोज के कारण प्रसिद्धि पा गया। जिस व्यक्ति की जीवनी लिखी जा रही हो तो ऐसी महत्वपूर्ण घटना–वृतांतों का उसमें समावेश किया जाता है।

महात्मा गांधी का कार्य अपने आप में बड़ी उपलब्धि रही है। वे अपने युग के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता रहे हैं। अतः उनकी जीवनियां सर्वाधिक संख्या में लिखी गई हैं। देशभक्त शहीद भगत सिंह की जीवनी मन्मथनाथ गुप्त ने "क्रांतिदूत भगतसिंह और उनका युग" नाम से लिखी है।

विशेष व्यक्ति की जीवनी से उनके बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है और प्रेरणा मिल सकती है जिनका भविष्य में उपयोग हो सकता है इसलिए जीवनी शिक्षण की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति जांचिए

1. 'कलम का सिपाही' जीवनी के लेखक कौन हैं?
   - (क) अमृतराय
   - (ख) शिवरानी देवी
   - (ग) मन्मथनाथ गुप्त
   - (घ) रामचंद्र वर्मा
2. जीवनी की प्रामाणिकता का पाठकों पर क्या असर होता है?
   - (क) जोरों से पढ़ते हैं।
   - (ख) रुचि लेते हैं।
   - (ग) मार्गदर्शन करते हैं।
   - (घ) उपयोग करते हैं।

8.3 जीवनी का अर्थ

जीवनी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। किसी व्यक्ति के जीवन का चरित्र चित्रण करना अर्थात् किसी व्यक्ति विशेष के संपूर्ण जीवन वृतांत को 'जीवनी' कहते हैं। जीवनी के लिए अंग्रेजी में 'बायोग्राफी' शब्द प्रयोग किया जाता है।

जीवनी में व्यक्ति विशेष के जीवन में घटित घटनाओं का कलात्मक और सौंदर्यात्मकता के साथ चित्रण किया जाता है। जीवनी में इतिहास, साहित्य और नायक (व्यक्ति विशेष) इन तीनों का त्रिवेणी संगम होता है।

जीवनी में किसी व्यक्ति विशेष के संपूर्ण जीवन को प्रामाणिकता से निभाने की जिम्मेदारी लेखक संभालता है। आत्मकथा में भी व्यक्ति जीवन वृतांत लिखता है किंतु उसे वह स्वयं ही लिखता है। जबकि जीवनी में लेखक दूसरों से व्यक्ति विशेष की जीवनी के लिए सामग्री समेट कर वर्णनात्मक शैली में जीवन वृत्त लिखता है। इसलिए जीवनी की भाषा में रोचकता आ जाती है।

जीवनी के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों ने अपने मत व्यक्त किए हैं–

- डॉ. राम प्रकाश के अनुसार– आधुनिक काल में पद्य के साथ–साथ गद्य की बहुलता और उसमें विविध विधाओं की रचना पद्धति की प्रचुरता होने के

कारण पुराने ढंग के चरित्र–काव्य के स्थान पर नए ढंग के गद्य बद्ध चरित्र अथवा जीवन वृत्त लिखने की परंपरा चली, जिसका संक्षिप्त एवं सर्वसम्मत पारिभाषिक नाम जीवनी है।

टिप्पणी

जीवनी में अतीत का चित्रण और सत्य घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। जीवनी में लेखक व्यक्ति के जीवन–संघर्षों के साथ–साथ उसके आंतरिक स्वभाव और व्यक्तित्व का चित्रण करता है।

- रामनाथ सुमन– प्रसिद्ध साहित्यकार लिखते हैं– "जीवनी की घटनाओं के विवरण का नाम जीवनी है।" लेखक यहां नायक के जीवन में छिपे, उसके विकास को, उनके व्यक्तित्व के रहस्य को, उसकी मुख्य जीवनधारा को खोलकर पाठकों के सामने रख देता है, वहां जीवनी लेखन कला सार्थक होती है। केवल ऊपरी दिखाई देने वाले रूप को लिखने से जीवनी लेखन–कला संतुष्ट नहीं होती। वह उस आवरण को भेदकर आंतरिक स्वरूप एवं आंतरिक सत्य का साक्षात्कार कराता है।
- आधुनिक साहित्यकार डॉ. गुलाबराय ने लिखा है कि जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं वरन चित्रण है, वह साहित्य की विधा है और उसमें साहित्य और काव्य के सभी गुण हैं, वह एक मनुष्य के अंदर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण है।
- टामस कार्लाइन के मतानुसार– "एक व्यक्ति का जीवन ही जीवनी है।" विद्वानों के मतानुसार स्पष्ट है कि जीवनी में किसी विशेष व्यक्ति के जीवन के सभी अंतरंग विवरणों को शामिल किया जाता है। उस व्यक्ति का जन्म, शिक्षा, विविध कार्य, संबंधों एवं मृत्यु संबंधी गहन जानकारी दी जाती है। क्योंकि जीवनी का प्रमुख उद्देश्य है– व्यक्ति के व्यक्तित्व की संपूर्ण किंतु महत्वपूर्ण जानकारी देना। तभी वे पाठक को रोचक, रंजक या चिंतनशील लग सकती है। जीवनी जितनी व्यापक होती है उसमें उतने अधिक विवरण समाविष्ट किए जाते हैं। विविध उदाहरणों की प्रस्तुति से जीवनी के अंशों को प्रभावित कर सकते हैं।

यदि जीवनी से आम जनता को संबोधित किया जाता है तो व्यक्ति की व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के संदर्भों को, उनके विवरण को शामिल किया जा सकता है। इसीलिए जीवनी को "जीवन का वृतांत" कहा जाता है। हम यह जानते हैं कि समाज में विशेष, प्रसिद्ध व्यक्तित्व के लोग बड़ी संख्या में नहीं होते। समाज, देश में गिने–चुने कुछ ही लोग विशिष्ट होते हैं। उनकी ये विशेषता, उनके विशेष कार्यों पर निर्भर होती है और ऐसे ही विशेष पुरुषों की जीवनी लिखी जाती है।

अहिल्याबाई, मीराबाई, इंदिरा गांधी आदि महिलाओं के विशेष कार्यों से समाज ही नहीं देश भी प्रभावित हुआ था। अतः इनके कार्यों की जानकारी एवं प्रेरणा के लिए उनकी जीवनी लिखी गई है।

जीवनी की परिभाषाओं से न केवल उसका अर्थ समझाया गया है बल्कि जीवनी के महत्वपूर्ण स्वरूप का साक्षात्कार भी कराया गया है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

3. जीवनी की सफलता किससे संभव है?
   (क) प्रामाणिक लेखन जो व्यक्ति विशेष से संबंधित हो।
   (ख) विशेष व्यक्ति के जीवन की घटनाओं से।
   (ग) घटनाओं, वृतांत का वर्णनात्मक शैली में विवरण से।
   (घ) उपर्युक्त सभी
4. एक व्यक्ति का जीवन ही जीवनी है – किसका मत है?
   (क) डॉ. राम प्रकाश (ख) रामनाथ सुमन
   (ग) टामस कार्लाइन (घ) डॉ. गुलाबराय
5. इतिहास, साहित्य और नायक की त्रिवेणी किसमें दिखाई देती है?
   (क) उपन्यास (ख) जीवनी
   (ग) कहानी (घ) निबंध

8.4 जीवनी की विशेषताएं

जीवनी की प्रमुख विशेषताओं को निम्नांकित बिंदुओं के तहत समझा जा सकता है–

- जीवनी में विशेष व्यक्ति के संदर्भ में जीवन का वृतांत मिलता है। व्यक्ति के चरित्र का अंकन किया जाता है। अतः जीवनी को "जीवन–चरित्र" भी कहा जाता है। "प्रेमचंद विश्वकोश भाग–1" शीर्षक से कालाक्रमानुसार प्रेमचंद का बड़ी प्रामाणिकता से जीवनवृत्त प्रस्तुत किया गया है।
- भारतीय इतिहास में संबद्ध महापुरुषों की जीवनी लिखने की प्रवृत्ति लक्षित होती है। रामवृक्ष बेनीपुरी– जयप्रकाश नारायण। भीमसेन विद्यालंकार की जीवनी "शिवाजी" विशेष उल्लेखनीय है।
- हिंदी में साहित्यिकों की जीवनी– निराला की साहित्य साधना– रामविलास शर्मा, कलम का सिपाही– अमृतराय, नेताजी सुभाषचंद्र बोस– गिरीशचंद्र जोशी; हमारे जवाहरलाल नेहरू– लक्ष्मण प्रसाद भारद्वाज, आवारा मसीहा– विष्णु प्रभाकर आदि जीवनियां उल्लेखनीय हैं।
- जीवनी द्वारा व्यक्ति के महत्वपूर्ण स्वरूप का साक्षात्कार कराया जाता है।
- जीवनी किसी व्यक्ति विशेष की कहानी होती है।
- जीवनी का लेखक कल्पनाशील हो सकता है किंतु उसकी सामग्री कल्पित नहीं होती।
- जीवनी का लेखक जीवनी के यथार्थ तथ्य उजागर करता है और व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य जीवन से संबंधित विविध पक्षों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

टिप्पणी

- इतिहास के जैसी प्रामाणिकता, तथ्यपूर्णता होती है।

उदा.– विष्णु प्रभाकर लिखित जीवनी– आवारा मसीहा– बांग्ला साहित्यकार शरतचंद्र चटर्जी के जीवन के विविध पहलुओं का साक्षात्कार उनके आंतरिक एवं बाह्य पक्ष में उनकी व्यसनाधीनता ओर दूसरों की मदद करने वाली मानवता के दर्शन होते हैं।

- व्यक्ति, उसके कार्य, उसका परिवेश एवं दृष्टिकोण का प्रामाणिक वर्णन।
- तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिवेश एवं वातावरण में व्यक्ति का कार्यवृतांत।
- अन्य व्यक्ति किसी विशेष व्यक्ति के संदर्भ में तटस्थता से लेखन करता है।
- व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक का जीवन वृतांत–लेखन किया जाता है।
- जीवन पट की महत्वपूर्ण घटनाओं एवं प्रसंगों को आधार बनाया जाता है जिनसे नायक के चरित्र को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- विशेष व्यक्ति या महापुरुषों की जीवनी प्रकाशस्तंभ की भांति मार्गदर्शक बनती है।
- जीवनी न इतिहास है न काल्पनिक कथा और ना ही किसी पुरुष के आदर्शों एवं कार्यों की उपन्यास के रूप में प्रस्तुति है। किसी विशेष व्यक्ति को मनुष्य के रूप में देखना और परखना जीवनी का उद्देश्य होता है, उसकी पूर्णता के लिए महत्वपूर्ण सामग्री का संकलन करना होता है।
- व्यक्ति के आदर्श, कार्य एवं उसकी महानता का प्रकाशन नहीं बल्कि जीवनी में तो व्यक्ति को सामान्य व्यक्तित्व के रूप में ही अर्थात सामान्य और विशिष्ट विशेषताएं प्रकट की जाती है। क्योंकि वह न देवता है न दावन, वह है मानव। इसलिए नायक के गुणों को उसी रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
- जीवनी की प्रेरणा से जीवन उन्नत कर सकते हैं।

उदा. लुई ब्रेल– दृष्टिहीनों के जीवन में प्रकाश लाने का कार्य, 'उनकी ब्रेल' लिपि दृष्टिहीन व्यक्तियों की प्रेरणा बन गई। इच्छा और मनोबल के कारण लुई ब्रेल ने अनुसंधान किया, जिससे दूसरों के जीवन का विकास हुआ है।

अतः कहा जा सकता है कि जीवनी आत्मकथा के समान विस्तृत नहीं होती और अति संक्षिप्त कहानी भी नहीं होती।

आत्मकथा और जीवनी में अंतर

- इन दोनों विधाओं में व्यक्ति विशेष के जीवन की विविध घटनाओं एवं प्रसंगों को आधार बनाया जाता है। किंतु उनमें अंतर भी हैं।
- आत्मकथा स्वयं लेखक की अपनी कथा होती है तो जीवनी विशेष व्यक्ति के जीवन पर दूसरा व्यक्ति लिखता है।
- आत्मकथा लेखक निजी गहराइयों तक जुड़ा होता है, जीवनीकार नहीं।
- आत्मकथा विश्वसनीय होती है क्योंकि लेखक स्वयं कहता है, जीवनी दूसरों की जानकारी पर आधारित होती है, इसलिए विश्वसनीयता कम हो सकती है।

- आत्मकथा अपने जीवन काल में लिखी जाती है, जीवनी में यह आवश्यक नहीं होगा, नायक की मृत्यु के बाद भी दूसरा व्यक्ति जीवनी लिखता है।
- आत्मकथा लेखक अपने दिमाग में संचित जानकारी स्वयं लिखता है, इसलिए वह आत्मिक एवं आत्मनिष्ठ होती है तो जीवनीकार अन्य स्त्रोतों से सामग्री संकलित करता है, अतः वह वस्तुनिष्ठ होती है।
- आत्मकथा में आंतरिक जीवन को प्रकट किया जाने से उसमें व्यक्त भाव सत्य एवं स्वानुभवपरक होते हैं। जीवनी में अनुमान पर बातें कही जाती है। नायक के जीवन विषयक कथन में लेखक तटस्थ रहता है फिर भी उसके कथन एवं घटनाओं के चित्रण में प्रामाणिकता की आवश्यकता होती है।

जीवनी गद्य साहित्य–विधा है, इसमें कला, आलोचना की प्रक्रिया का कार्य करती है। अन्य विधाओं के न इसमें तत्व हैं न आलोचना की तरह कसौटियां। इसका अपना प्रारूप है, जिसमें कथा, चरित्र गुण विवेचन सब कुछ होता है। अतः जीवनी लेखक को कुछ अनिवार्यताओं का ध्यान रखना पड़ता है जिसके बिना जीवनी पूर्ण और सफल जीवनी नहीं बन सकती।

अपनी प्रगति जांचिए

6. इनमें से कौन–सी विशेषता जीवनी की नहीं है?
   (क) जीवनी किसी व्यक्ति विशेष की कहानी है।
   (ख) जीवनी कल्पित नहीं होती।
   (ग) चरित्र–नायक स्वयं हमें सीख और उपदेश देता है।
   (घ) व्यक्ति विशेष का आंतरिक एवं बाह्य पक्ष व्यक्त होता है।
7. आत्मकथा और जीवनी परस्परावलंबी विधाएं हैं : यह कथन कितना सत्य है?
   (क) अर्ध सत्य (ख) पूर्ण सत्य
   (ग) पता नहीं (घ) बिल्कुल नहीं
8. विष्णु प्रभाकर लिखित जीवनी कौन–सी है?
   (क) नेताजी सुभाषचंद्र बोस (ख) आवारा मसीहा
   (ग) प्रेमचंद घर में (घ) हमारे जवाहरलाल नेहरू

8.5 जीवनी के तत्व

जीवनी व्यक्ति विशेष का जीवन वृतांत है। इसीलिए जीवनीकार निम्न तत्वों को ध्यान में रखकर अपना लेखन कार्य करता है।

- जिसकी जीवनी लिखने जा रहे हैं, उस व्यक्ति विशेष की जन्म तारीख, जन्म स्थान
- परिवार की जानकारी– नायक का परिवार, उनके सदस्य, बच्चे, मां–पिता, मित्र, पारिवारिक सदस्यों के साथ संबंध आदि

टिप्पणी

- व्यक्तिगत उपलब्धियां– ऐसी कोई घटना या प्रसंग कि जिन पर विशेष ध्यान दिया जाए, कार्य अनुभव, पुरस्कार आदि से सम्मानित।
- जीवनी की प्रमुख घटनाएं– बचपन, किशोरावस्था, वयस्कता, बुढ़ापा आदि के दौरान विविध अनुभव।
- समाज पर प्रभाव– ऐसा कार्य–क्रियाकलाप कि उनका सामाजिक परिवेश पर प्रभाव पड़ा हो।
- ऐतिहासिक महत्व– उस व्यक्ति की भूमिका जैसे– महात्मा गांधी जी का स्वतंत्रता संग्राम–आंदोलन–विशेष घटना बन गई थी।

जीवनी लेखन में इन तत्वों की अनिवार्यता है किंतु प्राप्त सामग्री का लेखन सुसंगत हो, तभी जीवनी पाठकों का ध्यान आकर्षित कर सकती है एवं रोचक बन सकती है। इन तत्वों के आधार पर संक्षिप्त जीवनी लिखी जा सकती है किंतु दीर्घ या लंबी जीवनी के लिए कुछ और तत्वों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। वे तत्व हैं–

- नायक के शौक, रुचि और गतिविधियां– इनके परिणाम भले ही वे अच्छे या बुरे हों, अन्य लोगों से उसके संबंध कैसे हैं? उसका महत्व बताया जाए।
- विकास और कार्यक्षेत्र– विविध स्तरों या क्षेत्र की गतिविधियों से नायक के व्यक्तित्व का विकास, उसकी प्रसिद्धि, सफलता का विवरण।
- जीवन और बुढ़ापा– अपने जीवन में किए हुए महत्वपूर्ण कार्य, सामाजिक योगदान, फुरसत के समय का विनियोग आदि से संबंधित बातें।
- मौत– मृत्यु का स्थान, समय, कारण और परिस्थितियों से संबंधित जानकारी।
- तस्वीरें एवं चित्र– व्यक्ति की तस्वीरें, कलात्मक चित्र आदि के द्वारा नायक का प्रतिनिधित्व, कलात्मकता की जानकारी मिल सकती है।
- रोचक तथ्य– प्राथमिक, बचपन की मधुर स्मृतियां, पत्र, समाचार पत्र संदर्भ पुस्तकें, परिवार तथा परिचितों को बताई गई घटनाएं एवं प्रसंग अर्थात् अन्य स्त्रोतों से प्राप्त सामग्री से जीवनी को रोचक, आकर्षक बनाया जा सकता है।

जीवनीकार नायक के जीवन से संबंधित सामग्री को संकलित करके क्रमबद्ध रूप से जीवनी में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार जीवनी लेखक नायक के जीवन की महत्वपूर्ण घटना एवं प्रसंगों को रोचक बनाने में सफल हो सकता है।

जीवनी में किसी व्यक्ति के जीवन का लिखित, वर्णित वृतांत होता है। इतिहास लेखन के समान जीवनीकार अपने चरित्र नायक के जीवन का वर्णन सत्य घटनाओं के आधार पर करता है। इसमें वह घटनाओं का विवरण देता है और विश्लेषण भी करता है। अर्थात् जीवनीकार घटनाओं से आगे बढ़कर अपने नायक के जीवन का चित्रण करता है। उसके संबंध में बिखरी सामग्री समेट कर सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है। वास्तव में लेखक की कला का रहस्य चरित्र–नायक के जीवन की घटनाओं की सत्यता की रक्षा करना है। इनके आधार पर चरित्र नायक के व्यक्तित्व की वह पुनः सृष्टि करता है।

चरित्र नायक की विविध घटनाओं से महत्वपूर्ण एवं आवश्यक घटनाओं को चुनकर जीवनी ऐसी शैली में लिखता है कि पाठक उस जीवनी से प्रभावित हो उठे, और

पढ़ने का लाभ उठा सके। यह बात सच है कि जीवन में विशेष व्यक्ति के अंतर–बाह्य विविध पक्षों का वर्णन करता है। प्रामाणिकता, तथ्यपूर्णता, रोचकता आदि जीवनी के विशेष गुण हैं।

टिप्पणी

हिंदी साहित्य में जैनेंद्र कुमार, रामवृक्ष बेनीपुरी, रामबिलास शर्मा, विष्णु प्रभाकर, राहुल सांस्कृत्यायन, अमृतराय, हरिवंशराय आदि प्रसिद्ध जीवनी लेखक हैं। साहित्यिक, खेल क्षेत्र से संबंधित जीवनियां लिखी गई हैं– जैसे– जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय, मिर्जा गालिब का जीवन परिचय, हार्दिक पंडया का जीवन परिचय, रोहित शर्मा की पूरी जीवनी, कल्पना चावला की जीवनी, डॉ. मोहन अवस्थी का जीवन परिचय आदि।

जीवनी आज के युग की लोकप्रिय विधा हैं इसका लेखन वैज्ञानिक दृष्टि से और कलात्मक होने पर यह विधा प्रामाणिकता की कसौटी पर खरी उतर सकेगी।

अपनी प्रगति जांचिए

9. परिवार की जानकारी, स्वयं की व्यक्तिगत उपलब्धि का उल्लेख किसके तत्व हैं?

   (क) कहानी (ख) आत्मकथा

   (ग) जीवनी (घ) उपन्यास

10. खेल के क्षेत्र की जीवनी है–

   (क) रोहित शर्मा की जीवनी (ख) आवारा मसीहा

   (ग) कल्पना चावला की जीवनी (घ) प्रसाद का जीवन परिचय

8.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ख)
3. (घ)
4. (ग)
5. (ख)
6. (ग)
7. (घ)
8. (ख)
9. (ख)
10. (क)

8.7 सारांश

टिप्पणी

समाज में सामान्य लोगों के साथ ही विशेष व्यक्ति भी रहते हैं उनकी विशिष्टता के कारण उनके जीवन का वृतांत लिखा जाता है, वही जीवनी कहलाती है। महापुरुष, साहित्यिक, खेल–खिलाड़ी, क्रांतिकारी, देशभक्त आदि की जीवनियां हिंदी साहित्य में मिलती हैं। जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, महात्मा गांधी, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह आदि अनेकों की जीवनियां लिखी गई हैं।

जीवनी से विशेष व्यक्ति की जन्म से उसकी मृत्यु तक की घटनाओं का पता चलता है इनसे प्रेरणा और मार्गदर्शन भी मिलता है। आत्मकथा से जीवनी विधा भिन्न है क्योंकि आत्मकथा लेखक स्वयं लिखता है तो जीवनी अन्य व्यक्ति विभिन्न स्रोतों की सहायता से लिखता है।

जीवनी की तत्व, विशेषताएं एवं परिभाषाओं से उक्त बातों का पता चलता है। आधुनिक युग में जीवनी लेखन का कार्य चल रहा है।

8.8 मुख्य शब्दावली

- **अभूतपूर्व** : जो पहले न हुआ हो, अनोखा।
- **यथेष्ट** : जितना उचित हो, उतना।
- **वृतांत** : किसी बीती हुई घटना का विवरण।
- **समेटना** : संकलित करना, इकट्ठा करना।

8.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. जीवनी शिक्षण के लाभ रेखांकित कीजिए।
2. जीवनी की अर्थवत्ता पर प्रकाश डालिए।
3. विविध परिभाषाओं द्वारा जीवनी का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. जीवनी की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक उल्लेख लिखिए।
2. जीवनी के तत्वों का विस्तृत विवेचन कीजिए।

8.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. प्रेमचंद घर में– शिवरानी देवी
2. कलम का सिपाही– अमृतराय
3. क्रांतिदूत भगतसिंह और उनका युग– मन्मथनाथ गुप्त
4. आवारा मसीहा– विष्णु प्रभाकर

खण्ड – 3

व्याकरण

टिप्पणी

इकाई 9 व्याकरण शिक्षण

संरचना

9.0 परिचय
9.1 उद्देश्य
9.2 व्याकरण शिक्षण
9.3 व्याकरण का अर्थ
9.4 व्याकरण की परिभाषा
9.5 व्याकरण शिक्षण की विधियां
9.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
9.7 सारांश
9.8 मुख्य शब्दावली
9.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
9.10 सहायक पाठ्य सामग्री

9.0 परिचय

भाषा मनुष्य के विचारों के आदान–प्रदान का साधन है। शुद्ध भाषा ज्ञान के लिए भाषा के व्याकरण से परिचित होना आवश्यक होता है, क्योंकि भाषा के स्वरूप की सार्थक व्यवस्था व्याकरण करता है।

भाषा, सार्थक ध्वनि–समूह से बने, शब्दों या शब्द–समूह के द्वारा निर्मित हुई है। मनुष्य समाज में आवश्यकतानुसार भाषा का प्रयोग करता आ रहा है। समयानुसार उसमें जो बदलाव होता है उसको वह स्वीकार करता है। व्याकरण के द्वारा भाषा के मानक रूप का उसे लेखन में उपयोग करना पड़ता है। भाषा की विशेषता है कि उसका लिखित रूप मौखिक रूप पर आधारित होता है। प्रश्न निर्मित होता है कि व्याकरण की आवश्यकता क्यों होती है? व्याकरण वह शास्त्र है, जिसमें भाषा को शुद्ध करने वाले नियम बताए जाते हैं। व्याकरण वह विधा है जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोला, पढ़ा और लिखा जाता है। भाषा के बोलने, लिखने, पढ़ने के भी निश्चित नियम होते हैं। उनकी जानकारी देने, भाषा के रूप को शुद्ध और सुंदर बनाए रखने के लिए इन नियमों का पालन करना व्याकरण ही सिखाता है।

इस इकाई में व्याकरण का अर्थ, स्वरूप एवं उसकी विशेषताएं स्पष्ट करते हुए व्याकरण शिक्षण पद्धति की जानकारी दी जाएगी।

9.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता को समझ पाएंगे;

टिप्पणी

- व्याकरण की परिभाषाओं से उसके स्वरूप को समझ पाएंगे;
- व्याकरण की विशेषताओं से परिचित हो पाएंगे;
- व्याकरण शिक्षण की विधियों की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- व्याकरण के नियमों के ज्ञान से शुद्ध भाषा–प्रयोग एवं लेखन सीख पाएंगे।

9.2 व्याकरण शिक्षण

संस्कृत में अष्टाध्यायी और महाभाष्य व्याकरण का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी और महभाष्य की रचना महर्षि पतंजलि ने की है। अष्टाध्यायी में लगभग 3780 सूत्र हैं। संक्षिप्त नियमों को सूत्र कहते हैं। इन सूत्रों के द्वारा शब्द विज्ञान का बोध होता है जो भाषा बोलने और अर्थ व्यक्त करने में सहायक बने हैं। संस्कृत भाषा के लिए बने ये नियम अन्य भाषा के लिए भी उपयुक्त हैं।

व्याकरण के ज्ञान से मनुष्य अपने शब्द कोश को बढ़ा सकता है। अनगिनत शब्द वह बनाते रहता है। व्याकरण के कारण मनुष्य शुद्ध पठन कर सकता है। हिंदी भाषा की आधारशिला व्याकरण पर आधारित है जो संस्कृत की देन है। हिंदी भाषा विश्लेषणात्मक है। अतः संस्कृत व्याकरण के नियमों में वैयाकरणकारों ने परिवर्तन किया है। प्रत्येक भाषा का व्याकरण अलग–अलग होता है, संरचना में इसका अधिक ध्यान रखा जाता है।

व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता केवल छोटी कक्षाओं तक नहीं है, माध्यमिक, उच्च स्तर पर भी होती है। दैनिक व्यवहार, भावों एवं विचारों का आदान–प्रदान, व्यापार, उद्योग, शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग किया जाता है। समुचित, शुद्ध प्रयोग, लेखन की शुद्धता हेतु व्याकरण का ज्ञान अत्यावश्यक है। हम जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उसके अंगों का ज्ञान व्याकरण कराता है। भाषा के– वर्ण–अक्षर, शब्द, पद और वाक्य– अंगों का परिचय व्याकरण से होता है।

भाषा की लघुत्तम इकाई वर्ण है और बड़ी इकाई वाक्य है। ध्वनि उच्चारण से वर्णों एवं अक्षरों का निर्माण किया गया है। वर्णों के समूह से ही शब्द बनाए जाते हैं (जैसे– व्+इ+ह्+आ = विहा; ख्+ए+ल+अ = खेल)। शब्द के उच्चारण से उसका अर्थ समझ सकते हैं। अर्थात् शब्द सार्थक होते हैं, किंतु कुछ अर्थ व्यक्त न करने वाले शब्द भी होते हैं। स्वतंत्र रूप से उनके उच्चारण से अर्थ व्यक्त नहीं होता। (जैसे– अविकारी शब्द या, अथवा, किंतु आदि) वाक्य में प्रयोग करने पर ही वे अर्थपूर्ण बनते हैं।

अरे, और, या, अथवा, किंतु शब्दों के उच्चारण से अर्थ नहीं स्पष्ट होता।

आप क्या खाएंगे रोटी या पराठा।

मैं तुम्हारे साथ आऊंगा और काम भी करूंगा।

वह किताब तो पढ़ रहा है किंतु समझ में कुछ नहीं आता है।

अरे वाह! क्या सुंदर दृश्य है।

अव्यय या अविकारी शब्दों का वाक्य में ही सार्थक अर्थ समझा जा सकता है।

टिप्पणी

ध्वनियों से बनाए शब्द स्वतंत्र रूप में भी अर्थ बताने में सक्षम होते हैं। (जैसे– कमल, पानी, खिलना– अपने आप में इनके उच्चारण से अर्थ समझ सकते हैं। उक्त तीनों शब्दों को वाक्य में प्रयुक्त करने के लिए उन्हें विभक्ति–कारक चिह्न लगाए जाने से जो नया रूप बनता है, उसे पद कहा जाता है।)

जैसे– कमल, पानी में, खिलता है– इन पदों में क्रमशः शून्य प्रत्यय, में, खिलना क्रिया रूप परिवर्तन दिखाई देते हैं। इन पदों से अर्थपूर्ण वाक्य बनेगा– कमल पानी में खिलता है। पदों का अर्थ निश्चित और परस्पर संबंध से उनके स्थान बदलने पर अर्थ पूर्ववत ही मिलता है। व्याकरण शिक्षण से संबंध तत्व, शब्दों के पदक्रम की जानकारी मिलती है। इस उदाहरण के पदों का स्थान बदलकर निम्न प्रकार के वाक्य बनाए जा सकते हैं–

पानी में कमल खिलता है।

खिलता है पानी में कमल

कमल खिलता है पानी में

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन, काल, शब्दनिर्माण की प्रक्रिया उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आदि के नियमों की जानकारी से शुद्ध वाक्य रचना, शुद्ध वाक्य लेखन किया जा सकता है। व्याकरणिक ज्ञान की छात्र, शिक्षण, लेखक को एवं व्यावहारिक जीवन में इसकी आवश्यकता है।

अपनी प्रगति जांचिए

1. वर्ण, शब्द, पद वाक्य किसके अंग हैं?

   (क) व्याकरण (ख) भाषा

   (ग) ज्ञान (घ) शुद्धता

2. अरे, वाह! क्या सुंदर दृश्य है– वाक्य में अव्यय क्या है?

   (क) दृश्य (ख) सुंदर

   (ग) अरे वाह! (घ) है

9.3 व्याकरण का अर्थ

व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं, जिसमें भाषा को शुद्ध करने वाले नियम बताए जाते हैं। किसी भी भाषा के अंगों का विश्लेषण एवं विवेचन व्याकरण के द्वारा किया जाता है। व्याकरण वह विधा है जिसके द्वारा भाषा को शुद्ध बोला, पढ़ा और लिखा जाता है।

किसी भी भाषा की शुद्धता और सुंदरता बनाए रखने के लिए व्याकरण की सहायता ली जाती है। अतः भाषा को पढ़ने, लिखने और बोलने के नियम व्याकरण द्वारा निश्चित किए जाते हैं। भाषा के अध्ययन के लिए व्याकरण एक महत्वपूर्ण अंग है। शरीर के अंग–प्रत्यंग का विश्लेषण विवेचन शरीर शास्त्र करता है, किसी देश, प्रदेश आदि का वर्णन भूगोल करता है। उसी प्रकार व्याकरण भाषा स्थिति एवं प्रवृत्ति बतलाता है।

टिप्पणी

उदा. खेलता है, दौड़ता है, भागता है जैसी क्रियाओं का प्रयोग व्याकरण पढ़े बिना भी अनेक लोग करते हैं, उनका अर्थ भी समझ लेते हैं। किंतु व्याकरण यह बताता है कि "खेलता है।" में दो अवयव हैं– खेलता और है। इतना ही नहीं वह यह भी बताता है कि (ख्+ए+ल्+अ+त्+आ) खेलता और (ह्+अ+इ+उ) है के अवयव हैं।

'खेल' शब्द में दो वर्ण हैं किंतु व्याकरण स्पष्ट करता है कि 'खे' में दो वर्ण–अक्षर है (ख+ए = खे) और ल में भी दो वर्ण–अक्षर हैं (ल्+अ = ल), अब इन वर्ण–अक्षरों के टुकड़े नहीं किए जा सकते। फिर भी व्याकरण इन अक्षरों की श्रेणी बनाकर बताता है कि ख, ल व्यंजन हैं और ए, अ स्वर हैं। भाषा के शब्दों का विश्लेषण व्याकरण ही करता है।

व्याकरण का दूसरा नाम है 'शब्दानुशासन'। वह शब्दों के संदर्भ में अनुशासन करता है कि शब्द का प्रयोग कैसे करना चाहिए। भाषा में शब्दों की अपनी प्रवृत्ति होती है किंतु भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार व्याकरण शब्द प्रयोग का निर्देश करता है।

व्याकरण के विषय–

व्याकरण में वर्ण विचार, शब्द या पद विचार, वाक्य विचार, स्वर–व्यंजन, विसर्ग, विकारी (संज्ञा, सर्वनाम आदि) अविकारी शब्द या अव्यय, संयुक्त, सरल, मिश्रित वाक्य, लिंग, वचन, कारक, विभक्ति, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आदि का विवेचन, नियम, प्रयोग, उच्चारण, शुद्ध–अशुद्ध संरचना, कर्ता, कर्म काल का ज्ञान करवाया जाता है।

व्याकरण के द्वारा भाषा को शुद्ध करने के नियम बनते हैं। उनके पालन से उस भाषा को शुद्ध लिखना एवं बोलना सीखा जा सकता है। अर्थात् भाषा की शुद्धता का ज्ञान व्याकरण से संभव होता है।

व्याकरण के द्वारा भाषा का शुद्ध बोलना, लिखना एवं समझना और भाषा की संरचना का ज्ञान होता है। भाषा की संरचना के ये नियम सीमित होते हैं और उसकी अभिव्यक्तियां असीमित। एक–एक नियम असंख्य अभिव्यक्तियों को नियंत्रित करता है। भाषा के इन नियमों को एक साथ समेटने का काम व्याकरण के द्वारा किया जाता है।

भाषा व्यक्ति के जीवन की अमूल्य निधि है, अतः व्यक्ति अपनी सुविधानुसार उसका प्रयोग करते हैं। नित्य प्रयोग न करने के कारण भाषा में परिवर्तन होता है और परिवर्तनशीलता भाषा की विशेषता है। परिवर्तन कभी वृद्धि के रूप में तो कभी कमी के रूप में होता है। भाषा के इस बनते–बिगड़ते रूप को शुद्ध बनाए रखने के लिए कुछ नियम बनाए गए, इन्हीं नियमों को व्याकरण कहा गया है।

व्याकरण शब्द का शाब्दिक अर्थ है– विश्लेषण करना। व्याकरण भाषा का विश्लेषण करके उसकी रचना को प्रस्तुत करता है। व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान देता है, इससे ही वर्ण, शब्द, पद एवं वाक्य का शुद्ध उच्चारण करना और लिखना आ सकता है। व्याकरण एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा किसी भाषा को शुद्ध बोला जा सकता है, पढ़ा जा सकता है और लिखा जा सकता है।

उदा. नीता बाजार गया। (अशुद्ध वाक्य)

नीता बाजार गयी। (शुद्ध रूप)

लिंग, वचन, क्रिया, काल आदि के समुचित प्रयोग का ज्ञान व्याकरण कराता है।

घर–परिवार, व्यवहार में तेरे को, मेरे को क्यू आदि शब्दों का प्रयोग सहज रूप में करते हैं। मौखिक रूप में भले इन प्रयोगों को स्वीकार किया जाता हो किंतु व्याकरण के नियमों के अनुसार अशुद्ध माने जाते हैं। भाषा का लिखित रूप मौखिक रूप पर आधारित है, लिखने, पढ़ने के कुछ नियम होते हैं। भाषा संरचना के भी नियम होते हैं। भाषा भावों और विचारों की अभिव्यक्ति करती हैं और उनका संप्रेषण भी करती है। सभ्यतापूर्ण व्यवहार में भाषा की शुद्धता पर ध्यान देना आवश्यक है। तेरे को (तुझे, तुम्हें) मेरे को (मुझे) शब्दों को टाल कर बोलने में भाषा की शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए। भावाभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त भाषा के नियमों का एकसाथ अध्ययन व्याकरण शास्त्र ही करता है।

अपनी प्रगति जांचिए

3. व्याकरण का दूसरा नाम है–

(क) विश्लेषण	(ख) भाषा संहिता
(ग) अनुकरण	(घ) शब्दानुशासन

4. इनमें से शुद्ध वाक्य कौन–सा है?

(क) वीणा स्कूल गया	(ख) वीणा किताब पिया
(ग) पेड़ से खाना लाया	(घ) मीना बाजार गई

9.4 व्याकरण की परिभाषा

व्याकरण भाषा के नियमों का संकलन और विश्लेषण करता है और इन नियमों को स्थिर करता है। व्याकरण के ये नियम भाषा को मानक एवं परिनिष्ठित बनाते हैं। व्याकरण स्वयं भाषा के नियम नहीं करता। एक भाषा–भाषी समाज के लोग भाषा के जिस रूप का प्रयोग करते हैं, उसी को आधार बनाकर वैयाकरण–व्याकरणकार व्याकरण के नियमों को निर्धारित करता है। सारतः "व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा का शुद्ध मानक रूप निर्धारित किया जाता है।"

व्याकरण शब्द की व्युत्पत्ति वि+आङ् पूर्वक 'कृ' धातु से ल्युट् प्रत्यय लगाकर हुई है। इसलिए व्याकरण का अर्थ है– "जिस शास्त्र में किसी भाषा के शब्दों के शब्द रूप तथा वाक्य के शुद्ध व्यवहारादि के नियमों का वर्णन रहता है।"

उदा. कल्पना बाजार को जाती है। (अशुद्ध वाक्य)

कल्पना बाजार जाती है। (शुद्ध वाक्य)

मनोहर काम करती है। (अशुद्ध वाक्य)

वर्ण, शब्द, पद आदि का व्याकरण के कारण ही ज्ञान प्राप्त होता है। ये सभी व्याकरण के अंग हैं। इसके महत्व को जानकर वेदांगों में व्याकरण को 'मुख' माना गया है। सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि "व्याकरण वह शास्त्र है, जो किसी भाषा के शुद्ध रूप को लिखने और बोलने के नियमों का ज्ञान कराता है।"

टिप्पणी

व्याकरणकारों के मत : व्याकरण के संदर्भ में अनेक वैयाकरणों ने अपना मत व्यक्त करते हुए इसकी आवश्यकता बताई है।

- मुनि पतंजलि : महाभाष्य में पतंजलि ने लिखा हैं– व्याकरण भाषा का शब्दानुशासन है।
- वैयाकरण पाणिनि के अष्टाध्यायी की टीका का नाम ही महाभाष्य है। पाणिनि संस्कृत के व्याकरणकार हैं, इन्होंने भी व्याकरण को शब्दानुशासन ही माना है।

संस्कृत के आ. मम्मट (काव्य प्रकाश) आ. हेमचंद्र कृत काव्यानुशासन, आ. रूय्यक कृत अलंकार सर्वस्व, आ. जयदेव कृत चंद्रालोक आदि संस्कृत व्याकरण विषय ग्रंथ हैं। इनमें व्याकरण के अंगों का विश्लेषण एवं विवेचन मिलता है।

- डॉ. ह्यू गील्ड– पाश्चात्य विद्वान गील्ड के मतानुसार "भाषा के रूप में सार्थक एवं शुद्ध व्यवस्था ही व्याकरण है।"

  अर्थात् व्याकरण वह साधन है जिसके माध्यम से किसी भी भाषा को शुद्ध पढ़ने, लिखने और समझने का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

  स्वीट– और जैगर :

"व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण अथवा उसका शरीर विज्ञान है।" जैगर–प्रचलित भाषा संबंधी नियमों की व्याख्या को व्याकरण कहते हैं।

- आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी– उर्दू मिश्रित हिंदी और संस्कृत युक्त हिंदी भाषा के संबंध में दो गुट थे। आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने संस्कृत युक्त हिंदी को व्याकरण योग्य बनाया और उसका परिष्कार किया। स्वतंत्र व्याकरण ग्रंथ नहीं किंतु संस्कृत की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद किया है (कालिदास– रघुवंश) मेघदूत, कुमारसंभव आदि प्रमुख रचनाएं हैं।
- आ. कामताप्रसाद गुरू : हिंदी व्याकरण के रचयिता पं. कामता प्रसाद गुरु हैं। यह प्रामाणिक व्याकरण रचना मानी गई है।
- इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि "व्याकरण भाषा के स्वरूप की सार्थक व्यवस्था करता है।"

व्याकरण की विशेषताएँ

- व्याकरण भाषा का शरीर विज्ञान है तथा व्याकरण विश्लेषण करता है।
- गद्य साहित्य का आधार व्याकरण है।
- भाषा की पूर्णता के लिए पढ़ना, लिखना तथा सुनना तथा सुनाना– इन कौशलों की शुद्धता व्याकरण के नियमों से आती है।
- व्याकरण भाषा का अंगरक्षक तथा अनुशासक है।
- व्याकरण भाषा की शुद्धता का साधन है, साध्य नहीं।
- व्याकरण से भाषा की मितव्ययता होती है।
- वाक्य की संरचना, शुद्धता उस भाषा के व्याकरण से होती है।
- व्याकरण से नवीन भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता होती है।

- ध्वनि, अक्षर, वर्णमाला, विरामचिन्हों का प्रयोग, शब्द, पद वाक्य रचना के नियमों की जानकारी व्याकरण ही कराता है।
- वाक्यों में शब्दों का क्रम, कर्ता, कर्म, क्रिया, विकारी, अविकारी शब्दों की जानकारी व्याकरण कराता है। जानकारी से शुद्ध भाषा बोलना–लिखना संभव होता है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण है। किसकी परिभाषा है।

(क) गोल्ड (ख) मम्मट

(ग) जैगर (घ) स्वीट और जैगर

6. 'हिंदी व्याकरण' किसकी रचना है?

(क) मुनि पतंजलि (ख) पं. कामता प्रसाद

(ग) पाणिनि (घ) जयदेव

7. व्याकरण से किस बात का ज्ञान होता है?

(क) सामान्य नियम का (ख) भाषा के शुद्ध रूप का

(ग) पठन के नियम का (घ) विधियों का ज्ञान का

9.5 व्याकरण शिक्षण की विधियां

सामान्य परिचय व्याकरण विषयक शुद्ध भाषा लेखन, उच्चारण, पठन के लिए जरूरी है। व्याकरण के नियमों को पढ़ाना अपने आप में कठिन काम है। कौशलपूर्ण ढंग से पढ़ाने से ही छात्रों में रुचि निर्माण हो सकता है। कहा जा सकता है कि "जिस ढंग से शिक्षक छात्रों को ज्ञान प्रदान करता है, वह शिक्षण विधि है।" विविध विषयों को शिक्षक पढ़ाते हैं किंतु व्याकरण शिक्षण को रोचक आकर्षक, सुग्राह्य करने के लिए विविध विधियों का प्रयोग प्राचीन काल से ही करते आ रहे हैं।

वैयाकरणों ने व्याकरण शिक्षण की विधियों का विवेचन किया है–

(1) **आगमन विधि** : विषय सामग्री को छात्रों तक पहुंचाने का माध्यम है शिक्षा। अपने उद्देश्य प्राप्ति में शिक्षा के आधार पर कठिन से कठिन पाठ्यक्रम को शिक्षक सरस एवं बोधगम्य बनाने के लिए अपनी विशेष पद्धति या शिक्षा विधियों का उपयोग करता है।

आगमन विधि में उदाहरण प्रदर्शन से नियम की ओर शिक्षण सूत्र का प्रयोग किया जाता है। आ. पाणिनि ने इस विधि को आधार मानकर सूत्रों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया है।

आगमन विधि के चार पदों का अनुसरण करके छात्र व्याकरण के नियम समझ लेता है।

छात्र शिक्षक के उच्चारण का अनुकरण करते हैं, बिना व्याकरण वे भाषा सीख लेते हैं। कम समय में अधिकाधिक पढ़ाने में लगे रहने के कारण छात्रों का ध्यान

टिप्पणी

शिक्षक की ओर नहीं रहता। नियमों को केवल रटने के कारण भूल जाने की संभावना इस विधि में अधिक रहती है।

- **भाषा संसर्ग विधि** : भाषा–संसर्ग विधि को प्रासंगिक विधि, अव्याकृत विधि भी कहते हैं। यह विधि उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए उपयोगी है। इसमें भाषा पर अधिकार रखने वाले कुछ लेखकों की कृतियां पढ़ाई जाती हैं, जिससे छात्र भाषा के सही रूप का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। किंतु यह विधि अपने आपमें पूर्ण नहीं है। इसमें भी बिना व्याकरण के सीखा जाता है।

  भाषा संसर्ग विधि केवल व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा दे सकती है। नियमित व्याकरण पढ़ाने के लिए आगमन विधि की मदद लेनी पड़ती है।

  इस विधि से भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान देने में अधिक समय लगेगा।

  इस विधि में शुद्ध एवं अशुद्ध विवेचन करने का कोई आधार न होने के कारण शुद्धता में स्वाभाविक कमी रहेगी।

- **प्रयोग विधि** : प्रयोग विधि में उदाहरण प्रस्तुत करके समान लक्षण वाले अंशों के कार्य एवं गुण निकलवाए जाते हैं। प्रयोग विधि में विविध सोपानों का उपयोग किया जाता है। उदाहरणों की तुलना एवं विश्लेषण, नियमीकरण और निष्कर्ष, प्रयोग और निष्कर्ष इसमें महत्वपूर्ण है।

उपयुक्त वातावरण में छात्र स्वयं को तथ्य ढूंढने के लिए प्रेरित करता है। अध्यापक पथप्रदर्शन करता है। उनका लक्ष्य यह है कि जो ज्ञान छात्र अपने निरीक्षण या प्रयोग द्वारा प्राप्त करता है, उसे शिक्षक को बताया जाए। इस विधि का प्रयोग विज्ञान के क्षेत्र में किया जाता था। अब धीरे–धीरे गणित, भूगोल और अन्य विषयों में किया जा रहा है। प्रयोग विधि में व्याकरण के नियम एवं उपनियम छात्र खुद निकालते हैं। वे हैं उदाहरण, निरीक्षण, सामान्यकरण और परीक्षण।

(1) उदाहरण– सर्वप्रथम छात्रों के सामने एक ही प्रकार के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

(2) निरीक्षण– छात्र इन उदाहरणों को देखते हैं। उनका विश्लेषण करते हैं। उदाहरणों में जो समानता है, उसका पता लगाते हैं।

(3) सामान्यीकरण– उस समानता को वे नियम का रूप देते हैं।

(4) परीक्षण– निकाले हुए नियमों की सत्यता हेतु उनका परीक्षण करते हैं।

आगमन विधि सरस, रूचिकर एवं ग्राह्य है क्योंकि इसमें छात्रों को स्वयं सीखने का अवसर मिलता है और उनका मानसिक विकास होता है। इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होती है।

अतः इस प्रणाली में कुछ शिक्षण सूत्रों– ज्ञात और अज्ञात, मूर्त से अमूर्त, सरल से कठिन आदि का पालन किया जाता है। व्याकरण की शिक्षा के लिए आगमन विधि सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

उदा. शिक्षक छात्रों के सामने अलग–अलग कविताएं या कथाओं के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। छात्र उन्हें पढ़कर सुनकर एक समान विषय की कविता या कथाओं

को, उनमें प्राप्त शब्दों आदि से नियम का रूप देते हैं। और उनकी सत्यता को नियमों के आधार पर परखते हैं।

(2) **निगमन विधि** : निगमन विधि आगमन विधि से बिल्कुल विपरीत होती है। इसे सूत्र विधि भी कहा जाता है। इस विधि में दो बातों पर ध्यान दिया जाता है– एक हैं सूत्र। शिक्षक छात्रों को पहले नियम–सूत्र बता देते हैं। सूत्रों को समझे बिना उन्हें कंठस्थ कर लेते हैं।

दूसरा सूत्र है पुस्तक विधि। सूत्र विधि से प्राप्त नियमों का ज्ञान कराने के लिए छात्रों को व्याकरण की पुस्तक दी जाती है। छात्र उस पुस्तक से नियमों को रट लेते हैं। उदाहरण की सहायता से एक–एक नियम या सूत्र बताते हैं और छात्र उनसे सामान्य सिद्धान्त निकालते हैं।

मुनि पतंजलि ने व्याकरण शिक्षण के लिए निगमन विधि को सर्वाधिक उपयुक्त माना है। इसमें पहले नियम प्रस्तुत करके उदाहरण प्रति उदाहरण द्वारा बताया जाता है। पुस्तक विधि के प्रवर्तक डॉ. वेस्ट माने जाते हैं।

शिक्षक प्रति उदाहरण से नियम द्वारा बताता है कि ये शब्द पर्यायवाची हैं, ये विलोम शब्द हैं, ये अनेकार्थी शब्द हैं। छात्र शब्द निर्माण हेतु इसे लाभदायक पाते हैं।

- **समवाय विधि** : समवाय विधि को संयोग विधि भी कहा जाता है। इस विधि के समर्थकों का मत है कि व्याकरण की शिक्षा स्वतंत्र रूप से न देकर साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों की रचनाएं पढ़ाकर दी जाए।

समवाय विधि के अंतर्गत मौखिक और लिखित कार्य कराते समय, गद्य की पुस्तक के पाठ पढ़ाते समय, रचना कार्य करते समय, रचना कार्य कराते समय प्रासंगिक रूप से व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराया जाता है। शिक्षक पाठ पढ़ाते समय शब्दों का ज्ञान कराता है।

समवाय विधि मनोवैज्ञानिक विधि है। लॉर्ड मैकाले के अनुसार, "बालक उस भाषा को शीघ्र सीखता है जिसका व्याकरण वह नहीं जानता।" समवाय विधि केवल उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयुक्त है। क्योंकि व्याकरण का व्यवस्थित ज्ञान इससे नहीं होता। क्रमबद्ध व्याकरण से परिचित नहीं होता, अर्थात् व्याकरण का पूरा ज्ञान नहीं होता। अतः पाठों से मिलने वाले व्याकरण से वह दूर रहता है।

- **प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि** : प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराए बिना भाषा के शुद्ध रूप का अनुकरण करने के अवसर प्रदान करती है। जिन लेखकों या साहित्यिकों का भाषा पर पूर्ण अधिकार है उनसे छात्रों को वार्तालाप के अवसर प्रदान किए जाते हैं। प्राथमिक स्तर पर यह विधि उपयोग में लाई जाती है।

  अवसर मिलने पर भी कई छात्र लेखक के साथ वार्तालाप करने में झिझकते हैं। केवल वार्तालाप के द्वारा उनका उच्चारण, वाक्यों आरोह–अवरोह ही समझ सकते हैं।

- **सहसंबंध विधि** : सह संबंध विधि का उपयोग शब्द–शिक्षण, वर्तनी शिक्षण, उच्चारण शिक्षण आदि के समय किया जाता है। यह व्याकरण शिक्षण की

टिप्पणी

कोई स्वतंत्र विधि नहीं अपितु गद्य–रचना के अभ्यास के दौरान आए हुए व्याकरण के नियमों की जानकारी प्रदान करती है।

- **व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण विधि** : इस विधि में भाषा शिक्षक द्वारा रोचक और आकर्षक विषयों द्वारा ज्ञान कराते समय ध्वनि, वर्तनी, वचन, शब्द, लिंग, क्रिया, काल आदि की अशुद्धियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरण, प्रश्नोत्तर, नियमीकरण इसके सोपान हैं।

प्रश्न करते–करते उत्तर निकल आते हैं। इनसे छात्र के पूर्व ज्ञान का पता लगने उसके प्राप्त ज्ञान से संबंध जोड़ा जाता है। बच्चों ने पढ़े हुए पाठ से कितना ज्ञान अर्जित किया है? यह जानने के लिए इस विधि की उपयोगिता है।

खेल विधि

खेल विधि से खेल–खेल में व्याकरण सिखाने से व्याकरण की नीरसता छात्रों के मार्ग में बाधा नहीं बनेगी। व्यक्तिगत एवं सामूहिक खेलों में छात्र इस विधि से सिद्धांतों को आत्मसात कर सकेंगे। खेल खेल में वे शब्द भेद, लिंग भेद, वचन आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

- **व्याकरण अनुवाद विधि** :

डा. रामकृष्ण भंडारकर ने सर्वप्रथम इस विधि को अपनाया इसलिए इसे 'भंडारकर विधि' भी कहा जाता है। यह सबसे प्राचीन एवं परंपरागत विधि मानी जाती है। मातृभाषा से अधिक लक्ष्यभाषा या द्वितीय भाषा की शुद्धता पर ध्यान दिया जाता है। अर्थात् अनुवाद कर्ता को दोनों भाषाओं का परिपूर्ण ज्ञान हो, नहीं तो अनुवाद केवल शब्दशः अनुवाद बन जाएगा।

व्याकरण अनुवाद विधि में बोलने की अपेक्षा पढ़ने और लिखने तथा भाषा की अपेक्षा भाषा के तत्वों के ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है।

द्वितीय भाषा के ढांचे (ध्वनि, शब्द, पद आदि) का ज्ञान कराना, भाषा कौशल की सतर्कता तथा छात्रों को इस ढांचे का प्रयोग करना आना चाहिए, भले उन्हें व्याकरण के नियमों की जानकारी न हो।

इस विधि का उपयोग उच्च कक्षा के लिए ही है। भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण का अध्ययन अपेक्षित है किंतु इस विधि में मौखिक कार्य, उच्चारण अभ्यास, रसानुभूति की उपेक्षा की गई है। मातृभाषा के साथ अन्य भाषा के व्याकरण की तुलना की जाती है। पहले भाषा फिर व्याकरण पर लक्ष्य किया जाता है। महत्व की बात यह है कि इसमें द्वितीय भाषा के शब्दों एवं वाक्य रचनाओं का विशेष ध्यान रखा जाता है।

व्याकरण के शिक्षण की विधियां अनेक हैं। किसी न किसी परिस्थिति में इनका निर्माण और उपयोग किया गया है। निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि छात्र की रुचि और योग्यतानुसार शिक्षक अपनी विशिष्ट विधि से ज्ञान प्रदान करता है। जो विधि उसके लिए अधिक उपयोगी हो, वही उसके लिए सर्वश्रेष्ठ विधि बन जाती है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

8. व्याकरण शिक्षण के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि कौन–सी है?
   (क) आगमन विधि (ख) समवाय विधि
   (ग) प्रत्यक्ष भाषा शिक्षण विधि (घ) निमगन विधि
9. तुलना एवं विश्लेषण, नियमीकरण और निष्कर्ष, प्रयोग और अभ्यास किस विधि के सोपान माने गए हैं?
   (क) प्रयोग (ख) सह–संबंध
   (ग) भाषा–संसर्ग (घ) निगमन
10. निगमन विधि के दो तत्व कौन–से हैं?
   (क) प्रयोग, अभ्यास (ख) आगमन, निगमन
   (ग) वस्तु–सूत्र, पुस्तक विधि (घ) निरीक्षण, परीक्षण

9.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ख)
2. (ग)
3. (घ)
4. (घ)
5. (घ)
6. (ख)
7. (ख)
8. (क)
9. (क)
10. (ग)

9.7 सारांश

भाषा की शुद्धता का साधन है व्याकरण। भाषा के स्वरूप को अच्छी तरह से जानने एवं भाषा को शुद्ध रूप से सीखने एवं लिखने के लिए व्याकरण एक व्यवस्था है। क्योंकि व्याकरण भाषा के लिए नियम बनाता है जिससे भाषा का मानक एवं परिनिष्ठित रूप स्थिर हो सके। इससे भाषा में एकरूपता लाई जा सकती है।

'व्याकरण' एक शास्त्र है, इसलिए कहा जाता है कि जिस शास्त्र में किसी भाषा के शब्दों के शब्द रूपों तथा वाक्यों के शुद्ध व्यवहार आदि के नियमों का वर्णन व्याकरण कहलाता है।

टिप्पणी

अनेक विद्वानों ने भाषा के व्याकरण के संदर्भ अपने विचार व्यक्त किए हैं। व्याकरण शब्दानुशासन है। भाषा के स्वरूप की वह सार्थक व्यवस्था करता है। भाषा में प्रयुक्त शब्द, शब्दांश एवं वाक्यों का विश्लेषण एवं विवेचन करके भाषा की अशुद्धियों को दूर करने वाला मार्गदर्शक भी है। लिंग, वचन, काल, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, कर्ता, कर्म, वाक्य–प्रयोग, वाक्यभेद शब्द, शब्दांश–पद, वाक्य में शब्दों का क्रम आदि की जानकारी व्याकरण से संभव है। भारतीय एवं पाश्चात्य वैयाकरण एवं लेखकों ने व्याकरण ग्रंथ लिखे हैं। जो अध्ययनकर्ताओं के लिए पथ प्रदर्शन का काम करते हैं।

व्याकरण के नियम पढ़ाना शिक्षकों की जिम्मेदारी है, नीरस विषय को सरस बनाने का कौशल शिक्षक के पास हो, तभी वे छात्रों की रुचि में वृद्धि कर सकेंगे। व्याकरण शिक्षण की आगमन, निगमन, भाषा–संसर्ग, समवाय विधियों का विवेचन छात्रों के लिए लाभदायक हो सकेगा।

9.8 मुख्य शब्दावली

- **शब्दानुशासन** : नियम के अधीन रहना, नियमों के अनुशासन में रहना।
- **सभ्यतापूर्ण** : अच्छे आचरण से युक्त।
- **सुग्राह्य** : ग्रहण किए जाने योग्य।
- **विलोम शब्द** : विपरीत अर्थ वाले शब्द।
- **अर्जित** : प्राप्त करना।
- **वर्धित** : विकसित।

9.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. भाषा के क्षेत्र में व्याकरण का महत्व रेखांकित कीजिए।
2. 'व्याकरण' की अर्थवत्ता सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर व्याकरण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. व्याकरण शिक्षण की आगमन–निगमन विधि को विस्तारपूर्वक समझाइए।
2. व्याकरण की विविध विधियों का उल्लेख करते हुए, सर्वश्रेष्ठ विधि का परिचय विस्तृत रूप में दीजिए।

9.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. हिंदी व्याकरण – तुलसी ठाकुर
2. हिंदी व्याकरण – पं. कामता प्रसाद गुरु
3. हिंदी बृहद् व्याकरण – डा. के.आई. शर्मा
4. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना – डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद।

इकाई 10 हिंदी व्याकरण

टिप्पणी

संरचना

10.0 परिचय
10.1 उद्देश्य
10.2 हिंदी व्याकरण
10.3 संज्ञा
10.4 सर्वनाम
10.5 क्रिया
10.6 विशेषण
10.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
10.8 सारांश
10.9 मुख्य शब्दावली
10.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
10.11 सहायक पाठ्य सामग्री

10.0 परिचय

सीखना, सिखाने की क्रिया, शिक्षा या शिक्षण से संभव होता है। इसके लिए भाषा ही प्रबल साधन है। अच्छी शिक्षा के लिए भाषा शुद्ध एवं सरल होनी चाहिए। भाषा की शुद्धता के लिए व्याकरण की आवश्यक होती है। व्याकरण भाषा उच्चारण, लेखन के संदर्भ में कुछ नियम बताता है। अतः व्याकरण के द्वारा भाषा का परिष्कार होता है। स्पष्ट है कि भाषा के शुद्ध रूप को पहचानने की क्षमता व्याकरण के द्वारा ही विकसित हो सकती है।

भले ही संस्कृत के आधार पर हिंदी व्याकरण का निर्माण किया गया है किंतु हिंदी व्याकरण ने इसमें अपनी विशेषता बनाए रखी है। वर्ण, शब्द, पद, वाक्यों के निर्माण की जानकारी व्याकरण से संभव है। वाक्यों से बनी भाषा भाव, विचार की अभिव्यक्ति करती है। प्रयोग के लिए लिंग, वचन, कारक आदि का ज्ञान व्याकरण कराता है।

हिंदी भाषा का प्रचुर शब्द भंडार है। अनेक प्रकार के शब्दों का उपयोग, उनका वाक्यगत, शब्दगत परस्पर संबंध, शब्दों का स्वरूप उसकी विशेषता, वाक्य का अर्थ पूर्ण रूप से समझने और समझाने के लिए शब्द के भेदों को जानना चाहिए। प्रयोग किए जाने वाले शब्दों में परिवर्तन होकर उनका अर्थ बदल जाता है तो कुछ शब्दों में परिवर्तन नहीं होता है।

इस इकाई में परिवर्तित होने वाले शब्द भेद (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण) विकारी शब्द और अविकारी (अव्ययों) का विवेचन किया जा रहा है।

10.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- हिंदी व्याकरण में शब्द–भेदों का ज्ञान प्राप्त कर पाएंगे;

- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण के नियमों को समझ पाएंगे;
- शुद्ध–अशुद्ध वाक्यों को पहचान पाएंगे;
- भाषा की संरचना में संज्ञा, क्रिया आदि के महत्व को समझ पाएंगे।

टिप्पणी

10.2 हिंदी व्याकरण

भाषा का विश्लेषण करके उसकी रचना को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने का कार्य व्याकरण करता है। हिंदी भाषा अध्ययन, लेखन एवं प्रयोग के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। हिंदी विद्वानों के अनुसार हिंदी भाषा सरल है। इसलिए लोग इसका बड़ी आसानी से प्रयोग करते हैं। हिंदी बोलने वाले, सुनने वाले, लिखने वाले, पढ़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है। मौखिक और लिखित भाषा में कुछ अंतर आ जाता है। भले ही लिखित रूप मौखिक भाषा पर आधारित होता है।

भाषा के सभी अंगों का हिंदी व्याकरण में विचार किया गया है। व्याकरण के अर्थ में वर्ण या अक्षर, शब्द, पद, वाक्य, वाक्य के अंग, पदबंध, विराम चिह्न आदि बातों के अध्ययन पर प्रकाश डाला जाता है।

- **वर्ण या अक्षर**– भाषा की लघुत्तम इकाई है ध्वनि। ध्वनियों से स्वर–व्यंजन वर्णों का निर्माण हुआ है। अ, आ, इ, ई, क्, ख्, च् छ् आदि।
- **शब्द**– वर्णों के समूह से शब्दों का निर्माण किया जाता है। मीना, फूल, आगरा आदि शब्दों के वर्ण समूह हैं– मीना (म्+ई+न+आ); फूल (फ्+ऊ+ल+अ); आगरा– (आ+ग्+अ+र्+आ) शब्द रचना, उसके भेद, उनके प्रयोग आदि पर विचार किया जाता है।
- **पद**– पद निर्माण और उनके प्रयोग की चर्चा की जाती है।
- **वाक्य**– अनेक शब्द, शब्दांश, वाक्य के अंग, भेदों का विवेचन किया जाता है। इनका हिंदी व्याकरण में सोदाहरण विवेचन किया गया है।

हिंदी व्याकरण की विशेषताएं

हिंदी व्याकरण संस्कृत व्याकरण पर आधारित है किंतु इसकी अपनी कुछ विशेषता रही है।

ध्वनि और लिपि का उपयोग किया गया है। मनुष्य, पशु–पंछी, निर्जीव वस्तुओं द्वारा उत्पन्न होने वाली विविध ध्वनियों पर विचार भाषा अध्ययन का विषय नहीं। व्याकरण में तो केवल मनुष्य के मुंह से निकली ध्वनियों और उसे लिखने के लिए ध्वनि चिन्हों का निर्माण किया गया, उन पर ही विचार किया गया है। फिर लिपि का निर्माण हुआ। हिंदी की वर्तमान लिपि देवनागरी मानी गई जो अधिक वैज्ञानिक है।

- **लिपिभेद**– विचारों को जिन विशेष चिन्हों से लिखा जाता है, वह लिपि है। मराठी, संस्कृत और हिंदी की लिपि देवनागरी है। अंग्रेजी की रोमन, पंजाबी की गुरुमुखी, उर्दू की फारसी लिपि है।

  हिंदी की देवनागरी लिपि में 11 स्वर और 41 व्यंजन हैं।

टिप्पणी

व्यंजन के साथ स्वर का संयोग होने पर स्वर का जो रूप बनता है, उसे मात्रा कहते हैं–

- **वर्तनी**– लिपि का दूसरा पक्ष है वर्तनी। एक ही वर्ण–ध्वनि हेतु विभिन्न वर्णों के प्रयोग से वर्तनी जटिल बन जाती है। जैसे अंग्रेजी में क् ध्वनि के लिए भिन्न वर्णों का प्रयोग होता है– Car, Chemestry, King Queen आदि। हिंदी में देवनागरी लिपि के कारण इस समस्या को दूर करने का प्रयत्न किया गया है। हिंदी की देवनागरी लिपि में एक ध्वनि के लिए एक वर्ण का प्रयोग किया गया है।

भारत सरकार द्वारा वर्तनी की एकरूपता के लिए 'हिंदी की वर्तनी का मानकीकरण' पुस्तिका में नियम प्रकाशित किए हैं। शब्दों का क्रम, लिंग, वचन, काल, भाषा के अंगों का विवेचन, विश्लेषण व्याकरण के विषय हैं। हिंदी व्याकरण पर अनेक विद्वानों ने लेखन किया है। बनारस के दामोदर पंडित का द्विभाषिक ग्रंथ "उक्ति–व्यक्ति–प्रकरण" अद्यतन हिंदी व्याकरण का पुराना ग्रंथ है। मिर्जा खान इब्न फखरुद्दीन मुहम्मद के "तुहफतुल्न हिंद" संक्षिप्त ग्रंथ में हिंदी व्याकरण, छंद, तुक, अलंकार, श्रृंगारादि रस, संगीत आदि का विवेचन है। रेवरेंड एम.टी. ऐडम का हिंदी भाषा का व्याकरण, जॉन शेक्सपियर "हिंदुस्तानी भाषा का व्याकरण, रूसी भाषा में हिंदी व्याकरण– डॉ. जालमन दियशित्स, मिशनरी बेंजामिन शुल्टस ने "हिंदुस्तानी व्याकरण" की रचना की। पं. किशोरीदास वाजपेयी का राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण" सन् 1947 प्रकाशित, डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद ने "आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना सन् 1958 में, हिंदी का संक्षिप्त व्याकरण श्री नारायण प्रसाद की रचना प्रकाशित हुई। महामहोपाध्याय गौरीशंकर ओझा, डा. उदयनारायण तिवारी, डा. देवी प्रसाद आदि ने व्याकरण ग्रंथ लिखा है। सन् 1920 में पं. कामता प्रसाद गुरु ने आधुनिक हिंदी व्याकरण की रचना की है जिन्हें आधुनिक हिंदी व्याकरण का "पाणिनि" कहा जाता है।

हिंदी व्याकरण लेखन की परंपरा बहुत पुरानी है। भाषा की शुद्धता अशुद्धता की जानकारी व्याकरण शिक्षण से होती है। भाषा के शुद्ध अशुद्ध रूप का ज्ञान व्याकरण ही करता है। इससे ही वर्णों, शब्दों, पदों का शुद्ध उच्चारण तथा लेखन करने के नियमों को सिखाया जाता है।

उदा. सुनील बाजार गई। (अशुद्ध–कर्ता पुल्लिंग)

सुनील बाजार गया। (शुद्ध कर्ता के अनुसार क्रिया)

मोहन सितार बजा रही। (अशुद्ध)

मोहन सितार बजा रहा। (शुद्ध)

उक्त वाक्य में कर्ता और क्रिया रूप गलत या अशुद्ध लिखे गए। भाषा की शुद्धता एवं एकरूपता बनाए रखने के लिए व्याकरण शिक्षण आवश्यक है। व्याकरण से भाषा के स्वरूप को जान सकते हैं, भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के उचित प्रयोग का ज्ञान व्याकरण से ही प्राप्त किया जा सकता है। व्याकरण का शिक्षण भाषा शिक्षण का एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य अंग है। व्याकरण भाषा का पथप्रदर्शक है। भाषा के शुद्ध रूप को पहचानने की योग्यता, क्षमता निर्माण करने का कार्य व्याकरण करता है। अर्थात् व्याकरण में किसी भी भाषा का कार्यात्मक अध्ययन किया जाता है।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

1. भाषा का विश्लेषण करके उसकी रचना को स्पष्ट करने का कार्य कौन करता है?

   (क) भाषाविज्ञान (ख) लिपि

   (ग) व्याकरण (घ) वर्णमाला

2. व्याकरणकार पं. कामता प्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण की रचना के कारण उन्हें क्या कहा जाता है?

   (क) पंडित (ख) पाणिनि

   (ग) महामहोपाध्याय (घ) आचार्य

10.3 संज्ञा

ध्वनियों के मेल से शब्द बनता है। एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि–समूह को 'शब्द' कहते हैं। शब्द का भाषा में महत्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द परस्पर संबद्ध रहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त इन शब्दों को 'पद' कहते हैं। पदों के कारण ही वाक्य अर्थपूर्ण बनता है। हिंदी में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, उनका व्याकरणिक दृष्टि से अध्ययन करने पर निम्न भेद बनते हैं।

हिंदी शब्द–भेद

विकारी				अविकारी (अव्यय)			
संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया	क्रिया विशेषण	संबंध बोधक	समुच्चय बोधक	विस्मयादि बोधक

- **विकारी–शब्द** : विकारी शब्द वह शब्द होते हैं, जिनका रूप–परिवर्तन होता रहता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं। उदा. लड़का, लड़की, मैं, मुझे, अच्छा, अच्छे, खाता है, खाती है आदि।
- **अविकारी–शब्द** : वे शब्द जिन्हें लिंग, वचन, काल और कारक के आधार पर बदला न जा सके, उन्हें अविकारी शब्द (अव्यय) कहते हैं। उदा. जब, तब, यहां, वहां, आह, वाह, लेकिन, बल्कि तथा आगे, पीछे आदि। इस इकाई में केवल विकारी शब्दों की जानकारी प्राप्त करनी है। विकारी या परिवर्तन होने वाले शब्द हैं : संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण।

संज्ञा की परिभाषा एवं भेद

जिन शब्दों से किसी वस्तु, भाव, जाति, द्रव्य, व्यक्ति का बोध होता है, उसे संज्ञा कहते हैं।

उदा. नदी, पर्वत, बचपन, मिठास, दल, मंडल, सोना, चांदी, राम–सीता आदि।

- **व्यक्तिवाचक संज्ञा**– जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा. दिल्ली, आगरा, हिमालय, विंध्य, गंगा, जमुना आदि।

- **जातिवाचक संज्ञा**– जिन शब्दों से व्यक्ति या वस्तु की जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

टिप्पणी

उदा. सागर, नदी, पहाड़, सभा, मनुष्य

- **भाववाचक संज्ञा**– जिन शब्दों से पदार्थों की अवस्था, गुण, दोष, धर्म, दशा आदि का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

उदा. हर्ष, क्रोध, यौवन, बुढ़ापा, बचपन, शैशव आदि।

- **समूहवाचक संज्ञा**– जिन संज्ञा शब्दों से किसी व्यक्ति का बोध न होकर संपूर्ण समूह या समाज का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। उदा. सेना, पुलिस, पुस्तकालय, दल, परिवार मंडल, गुच्छ आदि।

- **द्रव्यवाचक संज्ञा**– जिन संज्ञा शब्दों से नाप–तौल वाली वस्तु का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहा जाता है।

उदा. लोहा, सोना, चांदी, तेल, घी, दूध, पानी पेट्रोल आदि। निम्न उदाहरणों द्वारा संज्ञा के भेदों को जानिए–

- राम और श्याम स्कूल गए। (राम, श्याम– जातिवाचक संज्ञा)
- गंगा हिमालय से निकलती है। (गंगा, हिमालय– व्यक्तिवाचक संज्ञा)
- आगरे का पेठा प्रसिद्ध है। (आगरा, पेठा– व्यक्तिवाचक संज्ञा)

• मनुष्य सामाजिक प्राणी है।	मनुष्य	जातिवाचक संज्ञा
• सागर का पानी खारा है।	सागर	
• सभा शांति से चल रही।	सभा	
• पिताजी गुस्सा हो गए।	गुस्सा	भाववाचक संज्ञा
• बुढ़ापा किसी को अच्छा नहीं लगता।	बुढ़ापा	
• यौवन के दिन अच्छे होते हैं।	यौवन	
परिवार में सभी स्वस्थ हैं।	परिवार	समूहवाचक संज्ञा
फूलों का गुच्छा ताजा है।	गुच्छा	
सेना भारत की शान है।	सेना	
• आज कल सोना महंगा हो रहा है।	सोना	द्रव्यवाचक संज्ञा
चांदी के दाम भी कुछ कम नहीं हैं।	चांदी	
पानी मनुष्य का जीवन है।	पानी	

उक्त उदाहरणों से संज्ञा के विभिन्न भेदों की एवं शुद्ध प्रयोग करने की जानकारी मिलती है। दैनिक व्यवहार में विद्यार्थी इन संज्ञाओं के ज्ञान से समुचित प्रयोग करना सीख जाएंगे।

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

3. निम्नलिखित में संज्ञा पहचानिए।
   (क) गंगा, गाय, पर्वत (ख) लाल, पीला, काला
   (ग) मुझे, मैं, वह (घ) किया—करूंगा, करो
4. लोहा, सोना, दूध, पानी संज्ञा के किस भेद के उदाहरण हैं?
   (क) समूहवाचक (ख) भाववाचक
   (ग) द्रव्यवाचक (घ) जातिवाचक

10.4 सर्वनाम

भाषा के व्यवहार में संज्ञा के बदले जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। संज्ञा की आवृत्ति सर्वनाम के कारण टाल दी जाती है।

मैं, तू, तुम, आप, वह, वे, उन्हें, उनसे, उसको आदि सर्वनाम हैं। सर्वनाम के भेद— प्रयोग के आधार पर सर्वनाम के छह भेद माने जाते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम**— जो सर्वनाम, वक्ता, श्रोता तथा किसी अन्य के लिए प्रयुक्त होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं—
   - **उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम**— वक्ता जिन शब्दों का प्रयोग स्वयं के लिए करता है— उदा. मैं, हमें, मुझे, मेरा, मुझको आदि उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम है।
   - **मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम**— बातचीत या संवाद करते समय वक्ता श्रोता को संबोधित करने हेतु जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदा. तू, तुम, तुमको, तुझे, आप, आपको, आपके आदि।
   - **अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम**— जिन सर्वनामों के प्रयोग में श्रोता या वक्ता संबंध न होकर किसी अन्य का संबोधन प्रतीत होता है उसे अन्यपुरुष कहते हैं। उदा.— वह, यह उन उनको उनसे इन्हें उन्हें उसके उसने आदि।

2. **निश्चयवाचक (संकेतवाचक) सर्वनाम**– जिस सर्वनाम से निकट या दूर की वस्तु की ओर संकेत किया जाता है वह निश्चयवाचक है। उदा. – यह, वह

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**– जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति या पदार्थ का अनिश्चित रूप से बोध होता है, उसे अनिश्चितवाचक कहते हैं।

   उदा. कोई, कुछ।

टिप्पणी

4. **संबंध वाचक सर्वनाम**– जो सर्वनाम किसी दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से संबंध दिखाने के लिए प्रयुक्त हो, उसे संबंधवाचक कहते हैं।

   उदा. जे, सो, जैसा, वैसा, जिसकी उसकी आदि।

5. **प्रश्नवाचनक सर्वनाम**– जिस सर्वनाम से किसी प्रश्न का बोध होता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   उदा. क्या, कौन, कैसे।

6. **निजवाचक सर्वनाम**– जो सर्वनाम तीनों पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य पुरुष) में निजत्व का बोध कराता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   उदा. अपना, अपनी, आप।

   निम्न उदाहरणों से सर्वनामों पर ध्यान दें–

   मैं हमेशा सच बोलता हूं। (उत्तम पुरुष वाचक)

   आपका शुभ नाम लिखिए। (मध्यम पुरुष वाचक)

   उसने मुझे पुस्तक दी। (अन्य पुरुष वाचक)

   वह मनीष की किताब है। (निश्चयवाचक)

   दरवाजे पर कोई दस्तक दे रहा है। (अनिश्चयवाचक)

   जैसा बोएगा वैसा पाएगा (संबंधवाचक)

   इतना सारा काम कौन करेगा (प्रश्नवाचक)

   मैं अपनी गाड़ी से जाऊंगा (निजवाचक)

अपनी प्रगति जांचिए

5. संज्ञा के बदले आने वाले शब्द को क्या कहा जाता है?

   (क) क्रिया　　　(ख) अव्यय

   (ग) सर्वनाम　　　(घ) विशेषण

6. निम्न उदाहरणों में आए सर्वनाम शब्द हैं–

   - मैं प्रतिदिन कसरत करता हूं।
   - मुझसे कोई अपेक्षा नहीं रखें।

   (क) कोई, करता　　　(ख) मैं, मुझसे

   (ग) प्रतिदिन, रखें　　　(घ) कसरत करता

10.5 क्रिया

टिप्पणी

जिन शब्दों के प्रयोग से किसी काम के करने या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

मैंने खाना खा लिया।

मीना पानी पी रही है।

दौड़ना सेहत के लिए अच्छा होता है।

बेसमय किसी के घर जाना अच्छा नहीं होता।

इन वाक्यों में खाना, पीना, दौड़ना, जाना आदि क्रियाओं के बोध से वाक्यगत अर्थ और काल (वर्तमानकाल भूतकाल और भविष्यकाल) का बोध होता है।

क्रिया से काल का बोध होता है। क्रिया का निर्माण धातु से होता है।

क्रिया के भेद

- क्रियात्मकता के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं–

(1) अकर्मक क्रिया

(2) सकर्मक क्रिया

(1) अकर्मक क्रिया– जिस क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़ता है, वह अकर्मक क्रिया कहलाती है। इसमें कर्म का अभाव रहता है–

उदा. विहा पढ़ती है। वाक्य में पढ़ने का फल विहा पर पड़ा है, अतः पढ़ती है– अकर्मक क्रिया है।

(2) सकर्मक क्रिया– जिस क्रिया में कर्म का होना आवश्यक होता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती है। इसका असर कर्म पर पड़ता है।

उदा. विहा खाना खाती है। इस वाक्य में खाती है (क्रिया) का फल कर्म (खाना) पर पड़ता है।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं– एककर्मक क्रिया और द्विकर्मक क्रिया।

- एककर्मक क्रिया– जिस क्रिया में एक ही कर्म हो वह एककर्मक है– उदा. मोहन गाड़ी चलाता है।

  चलाता (क्रिया) का गाड़ी (कर्म) एक ही है।

- द्विकर्मक क्रिया– जिस क्रिया में दो कर्म होते हैं, वह द्विकर्मक क्रिया है– उदा. वीणा ने विहा को पुस्तक दी।

  इसमें देना क्रिया के दो कर्म हैं– वीणा और पुस्तक

  संरचना के आधार पर क्रिया के भेद :

संरचना के आधार पर क्रिया के भेद

(1) प्रेरणार्थक क्रिया

(2) नामधातु क्रिया

(3) संयुक्त क्रिया

(4) कृदंत क्रिया

टिप्पणी

(1) प्रेरणार्थक– इसमें कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे से करवा लेता है– उदा. भैया भाभी अपने बच्चों से काम कराते हैं। शिक्षक बच्चों से पाठ पढ़वाता है।

(2) नामधातु– ऐसी धातु जो क्रिया को छोड़कर अन्य शब्दों से (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से) बनती है वह नामधातु क्रिया है–उदा. अपनाना, गर्माना

(3) संयुक्त क्रिया– किन्हीं दो क्रियाओं के योग से बनने वाली संयुक्त क्रिया– मैंने खाना खा लिया।

वह पानी पीकर गया।

(4) कृदंत क्रिया– किसी क्रिया में प्रत्यय जोड़कर उसका नया क्रिया रूप बनाया जाता है, तब उसे कृदंत क्रिया कहते हैं–

दौड़–दौड़ना, भाग–भागना, जा–जाना

अपनी प्रगति जांचिए

7. इनमें से क्या संरचना के आधार पर क्रिया का भेद है?

(क) प्रेरणार्थक, नामधातु (ख) सकर्मक, अकर्मक

(ग) एककर्मक, द्विकर्मक (घ) भूतकालीन, भविष्यकालीन

8. दौड़–दौड़ना, जा–जाना किस प्रकार की क्रिया रूप के उदाहरण हैं?

(क) संयुक्त (ख) तद्धित

(ग) कृदंत क्रिया (घ) प्रेरणार्थक

10.6 विशेषण

जो शब्द संज्ञा और विशेषण की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं। वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। उदा. मीना बहुत संदर लड़की है।

इसमें– मीना संज्ञा है और सुंदर विशेषण है, जो संज्ञा की विशेषता बता रहा है।

विशेषण के भेद

इसके चार भेद माने गए हैं–

- **गुणवाचक विशेषण**– जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रूप, रंग आदि का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं–

  उदा. चंडीगढ़ स्वच्छ शहर है। सकीना की लाल ओढ़नी है।

  गुणवाचक विशेषण– समय (नया, पुराना, भूत, वर्तमान) स्थान (ऊँचा, नीचा) आकार (गोल, चौकोर, सुडौल) दशा (दुबला, मोटा, गीला, गरीब) वर्ण (हरा, नीला) गुण (भला, बुरा पाप) संज्ञा (बनारसी, मुंबई या) संबंधी शब्द मिलते हैं।

टिप्पणी

- **संख्यावाचक विशेषण** : जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उस संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

  उदा. शादी में पच्चीस लोग उपस्थित थे।

  उन दोनों का प्रेम विवाह हुआ है।

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैं–

(1) **निश्चित संख्यावाचक**– जिस विशेषण से निश्चित संख्या का बोध होता है, अर्थात् उसमें निश्चित संख्या बताई जाती है–

उदा. वह बारह बजे आना वाला है।

उसने पांच सेर गेहूं भेजे हैं।

इसके पूर्णांक (चार, पांच, सौ) अपूर्णांक (ढाई, सवा) क्रम (पहला, दूसरा) आवृत्ति (दुगुना, चौगुना) समूह (तीनों, चारों) प्रत्येक (प्रति, हरेक, एक–एक) वाचक भेद हैं।

(2) **अनिश्चित संख्यावाचक** : जिस विशेषण से अनिश्चित या असंख्य का बोध होता है, उन्हें अनिश्चितवाचक विशेषण कहते हैं– सारे, अनेक, लगभग, करीब, सैंकड़ों शब्द से इनका बोध होता है।

उदा. बाढ़ में अनेक लोग बिछड़ गए।

सभा में लगभग बीस लोग आएंगे।

- **परिमाणवाचक विशेषण** : जिस विशेषण से किसी वस्तु की नाप–तौल का बोध होता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं–

  उदा. बाजार से दो किलो आलू लाना।

  कमीज–सलवार के लिए चार मीटर का कपड़ा चाहिए। परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं–

(1) निश्चित परिमाण बोधक– उदा. एक लीटर पेट्रोल, एक सेर चावल

(2) अनिश्चित परिमाण बोधक– उदा. थोड़ा पानी कम काम आदि।

- **सार्वनामिक विशेषण** : जब कोई सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले आए और वह विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताए तब उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

  उदा. वह लड़की गांव जा रही है। कौन लड़का उसकी मदद करेगा?

  पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर शेष सभी सर्वनाम संज्ञा के साथ प्रयुक्त होकर सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं।

सार्वनामिक विशेषण के चार भेद हैं–

- निश्चयवाचक– (यह, ये वह, वे), अनिश्चयावाचक (कोई कुछ),
- प्रश्नवाचक (कौन, क्या) और संबंधवाचक (जो) आदि से पहचाने जाते हैं।

निम्न उदाहरणों में विशेषण पर ध्यान दें–

मीना ने बैंगनी साड़ी पहनी है। (गुणवाचक विशेषण)

इमारत पुरानी हो गई। (गुणवाचक विशेषण)

दोनों मिलकर काम करो। (निश्चित संख्यावाचक)

स्कूल में सारे शिक्षक आए। (अनिश्चित संख्यावाचक)

पांच किलो चीनी चाहिए। (निश्चित संख्यावाचक)

पतीले में थोड़ा पानी है। (अनिश्चित संख्यावाचक)

वह लड़की व्यवहार कुशल है। (सार्वनामिक विशेषण)

कौन लड़का आया था। (अनिश्चियवाचक विशेषण)

अपनी प्रगति जांचिए

9. शादी में पच्चीस लोग उपस्थित थे— इस वाक्य में किस प्रकार का विशेषण है?
   (क) परिमाणवाचक (ख) सार्वनामिक
   (ग) संख्यावाचक (घ) गुणवाचक
10. निश्चित परिमाण वाचक विशेषण है—
   (क) चार सेर, दो मीटर (ख) कौन लड़का, वह लड़की
   (ग) अच्छे आलू सफेद चावल (घ) पुरानी, बैंगनी

10.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (ग)
2. (ख)
3. (क)
4. (ग)
5. (ग)
6. (ख)
7. (क)
8. (ग)
9. (ग)
10. (क)

10.8 सारांश

भाषा मानव जीवन से जुड़ी हुई है और मानव समाज में रहकर जीवानुभवों को प्राप्त करता है। समाज के निर्माण, विकास में हाथ बंटाता है। अपने भावों विचारों तक उसका जीवन सीमित नहीं है, अपना सुख—दुख दूसरों तक संप्रेषित करने के लिए वह भाषा

टिप्पणी

का प्रयोग करता है। सुनकर, वाचन पठन, लेखन कौशल के द्वारा दूसरों के विचारों एवं भावों को समझता है। भाषा वह निरंतर प्रवाहित होने वाली प्रक्रिया है जिसमें परिवर्तन होते रहता है। फिर भी भाषिक शुद्धता के लिए उसमें प्रयुक्त शब्दों– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि की जानकारी, प्रयोग की सतर्कता के लिए भाषा के व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

भाषा में जिन वाक्यों, वाक्य समूहों का प्रयोग किया जाता है, उनमें संज्ञा, सर्वनाम आदि होते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, उनके भेद, उनके प्रयोग के तरीके, भाषा की शुद्धता, उच्चारण पर ध्यान देना जरूरी है। नए–नए शब्दों के द्वारा भाषा का सौंदर्य बढ़ता है। इसलिए हिंदी भाषा के विकारी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण) के भेदों का स्वरूप स्पष्ट करते हुए अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है। शब्दों का शुद्ध रूप, उनका वाक्य में प्रयोग करने से शुद्धता–अशुद्धता की पहचान हो इसलिए संज्ञादि के विवेचन से स्पष्ट किया गया कि शब्द शस्त्र है। उनके समुचित ज्ञान से भाषा और व्यक्तित्व विकसित होगा।

10.9 मुख्य शब्दावली

- **धातु** : क्रिया का मूल रूप।
- **प्रेरणार्थक** : प्रेरित करने से संबंधित प्रोत्साहन देना।
- **सतर्क** : सजग, सावधान।

10.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. संज्ञा की परिभाषा देते हुए उसके जातिवाचक और व्यक्तिवाचक भेद सोदाहरण समझाइए।
2. पुरुषवाचक सर्वनाम पर प्रकाश डालिए।
3. संरचना के आधार पर क्रिया के भेदों का विवेचन कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. परिमाणवाचक और गुणवाचक विशेषण को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।
2. "हिंदी व्याकरण में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण का महत्व विस्तार से रेखांकित कीजिए।

10.11 सहायक पाठ्य सामग्री

1. हिंदी व्याकरण और रचना– डॉ. वासुदेवनंदन प्रसाद
2. हिंदी व्याकरण – पं. कामता प्रसाद गुरु
3. प्रयोजनमूल हिंदी भाग–1 – डॉ. उर्मिला पाटील

इकाई 11 शब्द शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

11.0 परिचय
11.1 उद्देश्य
11.2 शब्द शिक्षण
11.3 उपसर्ग
11.3.1 संस्कृत के उपसर्ग
11.3.2 उर्दू के उपसर्ग
11.3.3 हिंदी के उपसर्ग
11.4 प्रत्यय
11.4.1 हिंदी प्रत्यय भेद
11.4.2 संस्कृत से आगत कृत प्रत्यय
11.4.3 उर्दू से हिंदी में आगत कृत प्रत्यय
11.4.4 हिंदी के कृत प्रत्यय
11.4.5 हिंदी कृत प्रत्ययों के भेद
11.4.6 तद्धित प्रत्यय
11.4.7 उर्दू से आगत तद्धित प्रत्यय
11.4.8 अंग्रेजी से आगत तद्धित प्रत्यय
11.4.9 हिंदी के तद्धित प्रत्यय
11.4.10 हिंदी तद्धित प्रत्ययों के भेद
11.5 संधि
11.5.1 संधि के भेद
11.5.2 व्यंजन–संधि
11.5.3 विसर्ग–संधि
11.6 समास
11.6.1 तत्पुरुष समास
11.6.2 द्वंद्व समास
11.6.3 बहुव्रीहि समास
11.6.4 द्विगु समास
11.6.5 अव्ययीभाव समास
11.6.6 कर्मधारय समास
11.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
11.8 सारांश
11.9 मुख्य शब्दावली
11.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
11.11 सहायक पाठ्य सामग्री

11.0 परिचय

भाषा की विशेषता है कि उसमें निरंतर परिवर्तन होता है। परिवर्तन ही भाषा का विकास है। भाषा ज्ञान के लिए अनेक स्रोतों से आए हुए शब्द, उनके प्रयोग एवं अर्थ को समझना आवश्यक होता है। शब्दों का प्रयोग करने से उसका स्वरूप बदलना स्वाभाविक है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह हमेशा नया–नया ज्ञान प्राप्त करके उसका लाभ उठाकर आनंद निर्माण करना चाहता है।

शब्दों के प्रयोग में कभी–कभी मूल–अर्थपूर्ण शब्द के आगे प्रत्यय (उपसर्ग) जोड़कर, तो कभी शब्द के अंत में प्रत्यय जोड़कर नए–नए शब्दों से भाषा का भंडार भरा जाता है। उपसर्ग, प्रत्यय संस्कृत, उर्दू से लेकर हिंदी उपसर्ग–प्रत्ययों के साथ शब्दों का नवनिर्माण किया जाता है।

संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में न केवल प्रत्यय आए हैं, अपितु इसमें संस्कृत की सामासिक शब्दावली की भी भरमार है। सामासिक शब्दों का, संधि के विग्रहों का ज्ञान इसलिए आवश्यक है क्योंकि हिंदी भाषा विश्लेषणात्मक है। संधि, समासों एवं उनके भेदों–उपभेदों के द्वारा शब्द निर्माण की प्रक्रिया पर इस इकाई में प्रकाश डाला गया है।

11.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- शब्द निर्माण में उपसर्ग, प्रत्ययों के महत्व को समझ पाएंगे;
- नवनिर्मित शब्दों का अर्थ समझकर प्रयोग करना सीख पाएंगे;
- संधि और समास द्वारा शब्दों के मेल को जान पाएंगे;
- उपसर्ग, समास आदि द्वारा प्राप्त ज्ञान से स्वयं शब्द बनाने का प्रयास कर पाएंगे;
- भाषा को संपन्न बनाने एवं लेखन में इन शब्दों का प्रयोग कर पाएंगे।

11.2 शब्द शिक्षण

भाषा में केवल शब्दों का प्रयोग नहीं होता। अनेक शब्दों के समूह से सार्थक वाक्य रचना के द्वारा भावाभिव्यक्ति की जाती है। वाक्यगत प्रयोग में शब्दों का उचित उच्चारण–लेखन अर्थात् शुद्धता का ध्यान रखा जाता है। भाषा को सुदृढ़, संपन्न, समृद्ध बनाने के लिए भिन्न–भिन्न शब्दों की आवश्यकता होती है। इसीलिए मनुष्य की नवनिर्माण की भावना भाषा के क्षेत्र में प्रवृत्त करती है और शब्दों का निर्माण होने लगता है। किंतु नवनिर्मित शब्द कैसे बनते हैं? कैसे बनाए जाते हैं? उनका अर्थ क्या है? प्रयोग कैसे और कहाँ–कहाँ किया जाए? इसका शिक्षण आवश्यक होता है।

व्याकरण के आधार पर इन सारे सवालों के जवाब सहज मिल जाते हैं। मूल शब्द के आरंभ में जो प्रत्यय लगते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। तो शब्द के अंत में जो लगते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। हिंदी के अपने उपसर्ग, प्रत्यय होते हुए भी संस्कृत, उर्दू भाषा के उपसर्ग प्रत्ययों के आदान से बहुत मात्रा में शब्द निर्माण किए गए हैं–

उदा. अति– अतिशय, अतिशयोक्ति, अत्यंत, अतिरिक्त, (संस्कृत उपसर्ग)

बद– बदमाश बदनाम, बदनसीब आदि (उर्दू उपसर्ग)

अन– अनपढ़ अनमोल, अनजान आदि (हिंदी उपसर्ग)

रमणीय (अनीय) दयालु (आलु); कारीगर बाजीगर (गर) प्रत्ययों से बने शब्द बहुत हैं।

(मही+इन्द्र = महीन्द्र; गंगा + उदक = गंगोदक; एक+एक = एकैक; दिक् + गज = दिग्गज; पम् + चम = पंचम; निः+तार = निस्तार) स्वर, व्यंजन और विग्रह संधि के उदाहरण हैं।

न लायक = नालायक, सेना का पति = सेनापति; पाप या पुण्य = पाप–पुण्य, भाई और बहन = भाई–बहन; सात दिनों का समूह = सप्ताह; महान है वीर = महावीर; स्त्री रत्न = स्त्रीरत्न आदि सामासिक शब्दों द्वारा समासों का ज्ञान मिलता है।

व्यवहार में कम शब्दों से अधिक अर्थोत्पत्ति करने के लिए इन शब्दों का समुचित प्रयोग का ज्ञान उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास अध्ययन से करवाया जाता है। शब्द निर्माण की क्षमता, उनके अर्थबोध की क्षमता प्राप्त करने के लिए प्रत्ययादि का ज्ञान अर्थात शब्दों का ज्ञान शिक्षा से ही होता है। इसलिए उपसर्ग आदि का व्याकरण की दृष्टि से अध्ययन और प्रयोग भाषा विकास के साधन हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

1. नव शब्द निर्माण में किस की सहायता ली जाती है?

   (क) ध्वनि–अक्षर (ख) वर्ण–शब्द

   (ग) शब्द–पद (घ) उपसर्ग, प्रत्यय

2. बदमाश, बदनसीब, बदनाम में कौन–सा उपसर्ग है?

   (क) माश (ख) नसीब

   (ग) बद (घ) नाम

11.3 उपसर्ग

उपसर्ग का अर्थ है वे शब्द या शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व में लगकर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं या उनमें कुछ वैशिष्ट्य आ जाता है। 'उपसर्ग' शब्द का शाब्दिक अर्थ है "निकट बैठकर नया अर्थ बना देने वाला।" दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि– "उपसर्ग वह अव्यय है जो शब्द के पहले लगकर शब्दार्थ बदल देता है।"

उदा. 'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। इस शब्द के पहले प्र, आ, सं, वि आदि लगाने से शब्द बनता है, उनके अर्थ भिन्न–भिन्न होते हैं–

प्रहार – चोट करना

आहार – भोजन

संहार – विनाश

विहार – घूमना

हिंदी भाषा में अपने उपसर्ग होने पर भी संस्कृत, उर्दू से उपसर्गों को स्वीकार करके नए–नए शब्दों की रचना की गई है।

टिप्पणी

11.3.1 संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत भाषा से हिंदी में आए हुए उपसर्ग जिनका प्रयोग संस्कृत से आए हुए संस्कृत शब्दों के साथ किया जाता है।

संस्कृत के उपसर्ग– अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, दुर–दुस, नि, परा, परि, निस–निर, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, उप, उत–उद्, कु–क्, अपि आदि।

नीचे उपसर्ग और उनसे बनाए गए शब्द दिए गए हैं–

उपसर्ग शब्द रूप

अति– अतिरिक्त, अतिशय, अतिकाल, अतिक्रमण, अतिव्याप्ति, अत्यंत, अत्याचार, अत्यावश्यक

अधि– अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अधिनियम, अधिष्ठाता, अधिपति, अधिसंख्यक, अध्यात्मक, अध्यक्ष

अनु– अनुकरण, अनुक्रम, अनुकूल, अनुज, अनुशासन, अनुवाद, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुशीलन, अनुचर, अनुगमन, अनुबंध, अनुग्रह, अनुहार, अनुष्ठान

अप– अपमान, अपकार, अपवाद, अपयश, अपकीर्ति, अपव्यय, अपहरण, अपराध, अपभ्रंश, अपभ्रष्ट, अपशब्द, अपशकुन।

अभि– अभिप्राय, अभिज्ञान, अभिज्ञ, अभिलाषा, अभिरूप, अभिमान, अभिनव, अभिसार, अभियान, अभिशाप, अभियोग, अभिमुख, अभिभावक

अव– अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवतार, अवरोहण, अवनति, अवशेष, अवदान, अवधारणा

आ– आरक्त, आगमन, आकाश, आजन्म, आकर्षण, आरंभ, आदान, आचरण, आजीवन, आरोहण, आमुख, आमरण आक्रमण, आक्रोश

दुर–दुस्– दुर्दशा, दुर्जन, दुर्लभ, दुराचार, दुर्दमनीय, दुर्गुण, दुर्बल, दुर्लक्ष्य, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुस्प्राप्य, दुःसह, दुःखद

नि– निवास, निष्कर्ष, नियुक्त, निरोध, निदान, निमग्न, निगमन, निगम, निपात, निबंध, नियोग, निपट, निलय, निश्चल, निलय, निदर्शन, निरूपण, निम्न, निकृष्ट

परा– पराजय, पराभूत, पराक्रम, परामर्श, पराश्रय, पराभव

परि– परिजन, परिणाम, परिपूर्ण, परिवर्तन, परिणय, परिशीलन, परिदोष, परिचय, परिधि, परिक्रमा, परियोजना, परिकल्पना

निस्–निर– निस्सार, निश्चल, निरपराध, निर्भय, निर्वाह, निर्वास, निर्गुण, निर्मम, निर्मल

प्र– प्रारंभ, प्रभु, प्रदान, प्रकार, प्रसिद्ध, प्रमेय, प्रयास, प्रसार, प्रसन्न, प्रणाम प्रलाप, प्रताप, प्रयोग, प्रपंच, प्रबल, प्रस्थान प्रलंब, प्रचार

प्रति– प्रतिकार, प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिनिधि, प्रतिव्यक्ति प्रतिवादी

टिप्पणी

वि– विवाद, विधवा, विनय, वियोग, विकार, विमुख, विकास, विज्ञान, विनम्र, विनाश विकल

सम्– संगम, संकल्प, संतोष, संयोग, संहार, संग्राम, संन्यास, संस्कृत, संसर्ग, संस्कार

सु– सुकर्म, सुगम, सुपुत्र, सुकृत, सुयश, सुकवि, सुलभ, सुवास, सुभाषीश, सुगंध, सुवार्ता, सुजन

उप– उपदेश, उपकार, उपकूल, उपनाम, उपासना, उपनिवेश, उपस्थित, उपस्थिति, उपमंत्री, उपवन, उपवेद

उत्–उद्– उत्तम, उत्कर्ष, उत्साह, उन्नति, उत्थान, उद्देश्य, उद्गार, उद्यम, उद्भव, उद्गम

कु–क– कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र, कुढंग, कुशिक्षा, कपूत

अपि– इसका प्रयोग 'अपिधानम्' शब्द में ही उपलब्ध होता है।

- अरबी–फारसी (उर्दू) से हिंदी में आए हुए उपसर्ग–

हिंदी में उर्दू के अल, कम, खुश, गैर, दर, ना, बद, ब, बा, बिल, बर, बिला, बे, फिल, ला, सर, हम, हर आदि उपसर्गों से बने शब्दों को स्वीकार किया है।

11.3.2 उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग शब्द रूप

अल– अलबत्ता, अलगरज

कम– कमसिन, कमजोर, कमबख्त, कमउम्र, कमकीमत, कमख्याल

खुश– खुशबू, खुशदिल, खुशहाल, खुशखबरी, खुशनसीब, खुशकिस्मत, खुशमिजाज, खुशगवारी

गैर– गैर हाजिर, गैर वाजिब, गैरकानूनी, गैरजात, गैरमुमकिन, गैरसरकारी

दर– दरअसल, दरकार, दरमियान, दरहकीकत

ना– नाराज, नापसंद, नाउम्मीद, नालायक, नादान, नाजायज, नाचीज

बद– बदमाश, बदनाम, बददुआ, बदहजमी बदनसीब

ब– बनाम, बदौलत

बा– बाइज्जत, बाकायदा, बाकसम, बाइन्साफ

बिल– बिलकुल

बर– बरदाश्त, बरखास्त, बरखुरदार

बिला– बिलावजह, बिलालिहाज, बिलाशक, बिलाख्याल

बे– बेचारा बेरहम, बेकसूर, बेअक्ल, बेवफा, बेईमान

फिल– फिलहाल

ला– लाचार, लाजवाब लावारिस, लापता, लापरवाह

सर– सरदार, सरकार, सरपंच, सरहद, सरताज

हम– हमराह, हमउम्र, हमवतन, हमदर्द, हमदर्दी, हमदम

हर– हररोज, हरमाह, दरचीज, हरएक, हरसाल

टिप्पणी

11.3.3 हिंदी के उपसर्ग

संस्कृत उर्दू के उपसर्गों के साथ ही हिंदी भाषा के अपने उपसर्ग हैं–

अ, अन, अध, उन, औ (अव), दु, नि, बिन, भर, कु–क, सु–स

नीचे दिए गए हिंदी के उपसर्ग और उनसे बने शब्दों को पढ़िए–

उपसर्ग	शब्द रूप

अ– अजान, अज्ञान, अलग, अमूल्य, अनाथ, अहित, अप्राप्य, अस्थायी, अस्वीकार, अथाह

अन– अनपढ़, अनमोल, अनगिनत, अनहित, अनजान

अध– अधपका, अधजला, अधखिला, अधमरा, अधसेरा

उन– उनतीस, उनसठ, उन्नीस, उनचास, उनहत्तर

औ (अव)– औगुन (अवगुन), औसर (अवसर), औघट (अवघट), औदसा (अवदसा)

दु– दुकाल, दुबला, दुधार, दुहरी

नि– निकम्मा, निडर, निखरा, निगोड़ा, निहत्था, निरोगी

बिन– बिनजाना, बिनकाम, बिनबोया, बिनदेखा, बिनब्याहा

भर– भरसक, भरपेट, भरपूर, भररात, भरमन

कु–क– कुपात्र, कुघड़ी, कुपात्र, कुपुत्र, कपूत, कुढंग

सु–स– सुडौल, सुजान, सुपात्र, सुघड़, सजग, सरस, सपूत, सगोत्र

अपनी प्रगति जांचिए

3. वे शब्दांश जो मूल शब्द के पूर्व में लगकर उसका अर्थ बदल देते हैं उसे क्या कहते हैं?

   (क) वाक्य (ख) उपसर्ग

   (ग) प्रत्यय (घ) पद

4. अनपढ़, उनतीस, भरपूर में कौन–से उपसर्ग शब्द हैं?

   (क) पढ़, तीस, पूर (ख) अन, पढ़ तीस

   (ग) भर, तीस, पढ़ (घ) अन, उन, भर

11.4 प्रत्यय

टिप्पणी

वे शब्द या शब्दांश जो शब्द के अंत में लगकर अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहा जाता है।

प्रत्यय शब्द (प्रति+अय) दो शब्दों से बना है, 'प्रति' शब्द का अर्थ है साथ में पर बाद में (पीछे) और 'अय' का अर्थ है– चलने वाला। इसलिए प्रत्यय शब्द का अर्थ होता है– साथ में किंतु बाद में चलने वाला या लगने वाला शब्दांश।

उदा. भला + आई = भलाई

समाज + इक = सामाजिक

गाड़ी + वान = गाड़ीवान

समझ + औता = समझौता

11.4.1 हिंदी प्रत्यय भेद

हिंदी प्रत्ययों के मुख्य दो भेद हैं–

(1) कृत प्रत्यय (कृदंत)

(2) तद्धित

(1) कृत प्रत्यय (कृदंत)– जो धातुओं के साथ लगकर उन्हें संज्ञा या विशेषण बनाते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय या कृदंत कहते हैं।

उदा. चल् + ना = चलना, उड् + ना = उड़ना

कह् + ना = कहना रच् + ना = रचना

(2) तद्धित प्रत्यय– वे प्रत्यय जो संज्ञा और विशेषण के अंत में लगते हैं, उन्हें तद्धित कहते हैं और तद्धित के मेल से बने शब्द को तद्धितांत कहते हैं।

उदा. ससुर + आल = ससुराल, रंग + ईला = रंगीला

चतुर + आई = चतुराई, रस + इया = रसिया

हिंदी भाषा में उपसर्गों के समान ही संस्कृत, उर्दू से प्रत्यय लिए गए हैं। ऐतिहासिक एवं विकासात्मक दृष्टि से इनका विभाजन किया गया है। अतः कृत प्रत्यय और तद्धितों का स्वतंत्र अध्ययन–विवेचन आवश्यक है।

11.4.2 संस्कृत से आगत कृत प्रत्यय

कृत प्रत्यय	क्रिया या धातु	संज्ञा और विशेषण
अ	कम्	काम
आ	पूज्	पूजा
अना	वन्द्	वन्दना
ति	शक्	शक्ति
या	विद्	विद्या

टिप्पणी

उ	तन्	तनु
तृ	भुज्	भोक्तु (भोक्ता)
उक	भिक्ष्	भिक्षुक
ई	त्यज्	त्यागी
य	कृ	कृत्य
म	धा	धाम
मान	यज्	यजमान
ना	घट्	घटना
[illegible]	यज्	यज्ञ
अनीय	रम्	रमणीय
आलु	दय्	दयालु
मान	सेव्	सेव्यमान
य	दा	देय
न	खिद्	खिन्न
क्त	भद्	भत्त
ण	जृ	जीर्ण

11.4.3 उर्दू से हिंदी में आगत कृत प्रत्यय

गी– ताजगी, बानगी, सादगी

गर– कारीगर, बाजीगर, सौदागर

ची– नकलची, तोपची, अफीमची

दार– जमींदार, जमादार, हवलदार

खोर– आदमखोर, चुगलखोर, रिश्वतखोर

गार– मददगार, गुनहगार, कामगार

नामा– बाबरनामा, सुहलनामा, जहाँगीरनामा

बाज– नशेबाज, धोखेबाज, चालबाज

मन्द– अकलमन्द, जरूरतमन्द, अहसानमन्द

आबाद– औरंगाबाद, सिकंदराबाद

इश– साज़िश, फरमाइश

माह– इदगाह, दरगाह

गीर– राहगीर, आलमगीर

आना– नजराना, दोस्ताना, सालाना

इयत– खैरियत, इन्सानियत

टिप्पणी

न्दा– बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा

इन– शौकीन, रंगीन, नमकीन

दान– खानदान, पीकदान, कूड़ादान

बन्द– नजरबंद, कमरबंद

11.4.4 हिंदी के कृत प्रत्यय

हिंदी के कृत प्रत्यय हैं– अ, अक, अंत, आई, अन, आऊ, आकू, आन, आप, आव, आवना, आवट, आवा, आहट, औता, औती, आड़ी, अक्कड, ई इश, इयल, इया, एरा, ऊ, हारा, हार, वैया, ती

कृत प्रत्यय	धातु	संज्ञा/विशेषण
अ	चर्	चोर
अक	पठ्	पाठक
अंत	भिड्	भिड़ंत

अधिक जानकारी के लिए हिंदी कृत प्रत्ययों के उदाहरण हैं–

आई– कमाई, लड़ाई, चढ़ाई, भलाई, सिलाई

अन– मदन, चलन, सहन नंदन, कंचन

आकू– लड़ाकू, पढ़ाकू

आन– मिलान, प्रस्थान, उड़ान, चालान

आप– मिलाप

आव– चढ़ाव, जमाव, पड़ाव, बचाव, लगाव

आवना– डरावना, लुभावना, सुहावना

आवट– बनावट, मिलावट, दिखावट, रूकावट

आहट– घबराहट, चिल्लाहट, जगमगाहट

औता– समझौता

औती– मनौती, फिरौती

आड़ी– खिलाड़ी

अक्कड– घुमक्कड, पियक्कड, भुलक्कड

ई– आमदनी, आगजनी, राहजनी

इश– परवरिश, कोशिश, बारिश

इयल– अड़ियल, मरियल, सड़ियल

इया– बढ़िया, धुनिया, गुनिया

एरा– लुटेरा, बसेरा

ऊ– चालू, बिगाड़ू, ढालू

हारा–हार– राखनहारा, होनहार, देनहार

वैया– गवैया, रखैया

ती– बढ़ती, चलती, फिरती, घटती

टिप्पणी

11.4.5 हिंदी कृत प्रत्ययों के भेद

हिंदी प्रत्ययों की संख्या अधिक है। अध्ययन की सुविधा के लिए यहां उसके छह भेद किए गए हैं–

(1) कर्तृवाचक कृत प्रत्यय–

उदा. आक – तैरना – तैराक

आलू – झगड़ना – झगडालू

(2) कर्मवाचक कृत प्रत्यय–

उदा. औना – खेलना – खिलौना

नी – चाटना – चटनी

(3) करणवाचक कृत प्रत्यय–

उदा. आ – झुलना – झुला

ऊ – झाड़ना – झाडू

(4) भाववाचक कृत प्रत्यय–

उदा. वट – मिलना – मिलावट

आप – मिलना – मिलाप

(5) गुणवाचक कृत प्रत्यय–

उदा. आऊ – टिकना – टिकाऊ

हरा – सोना – सुनहरा

(6) क्रियाद्योतक कृत प्रत्यय–

उदा. ता – भरना – भरता

दौड़ना – ता हुआ – दौड़ता हुआ

11.4.6 तद्धित प्रत्यय

हिंदी में संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी से तद्धित प्रत्यय स्वीकार किए गए हैं–

संस्कृत से आगत तद्धित प्रत्यय–

अ, अक, आयन, इक, इत, इन, इमा, त्व, एय, ता, सात्, ईन, वत्, माय, क, इम, इय, इल, इष्ठ, ई, उल, ठ, तन था, दा, धा, मान, भी, श, शः, निष्ठ आदि संस्कृत के तद्धित हैं। इनकी संख्या अधिक है, इसलिए कुछ उदाहरण दिए हैं–

तद्धित प्रत्यय	संज्ञा	शब्द रूप–विशेषण
अ	कुरू, शिव	कौरव, शैव

अक	शिक्षा	शिक्षक
आयन	राम, बदर	रामायण, बादरायण
इक	वर्ष, पुष्प	वार्षिक, पुष्पित
इत	फल शंक	फलित, शंकित
इन्	धन, गुण	धनी, गुणी
ईन	ग्राम कुल	ग्रामीण, कुलीन
क	बाल, दर्श	बालक, दर्शक
मय	काष्ठ, जल	काष्ठमय, जलमय
ता	गुरु, कवि	गुरूता, कविता
इमा	रक्त, लाल	रक्तिमा, लालिमा आदि।

टिप्पणी

11.4.7 उर्दू से आगत तद्धित प्रत्यय

अंदाज, कार, आना, आवेज, खोर, गीर, नुमा, नशीन, बार, बाज इंदा, बान, दान उदा.

अंदाज– तीरंदाज	आ– सफेद– सफेदा
कार– पेशकार, काश्तकार	ई– खुश– खुशी
आना– जनाना	गार– मदद– मददगार
आवेज– दस्तावेज	ईचा– बाग– बगीचा
खोर– गोताखोर	खाना– दौलत– दौलतखाना
गीर– आलमगीर	आबाद– हैदर– हैदराबाद
गर– कलईगर	मंद– अकल– अकलमंद
नशीन– परदानशीन	वार– उम्मीद– उम्मीदवार
बाज– नशेबाज	चा– संदूक– संदूकचा
बार– दरबार	कार– पेश– पेशकार
इंदा– शर्मिंदा	क– फल– फलक
बान– दरबान	गाह– ईद– ईदगाह
दान– कलमदान, आबदान	नुमा– कुतुब– कुतुबनुमा

11.4.8 अंग्रेजी से आगत तद्धित प्रत्यय

आइट – नकसल – नक्सलाइट

इयन – द्रविड़ – द्रविड़ियन

इज्म – कम्यून – कम्युनिज्म

टिप्पणी

11.4.9 हिंदी के तद्धित प्रत्यय

हिंदी में तद्धित प्रत्ययों की संख्या बहुत है– आई, आऊ, आवट, आर, आल, इया, ईला, ऐल, ई, ऐत, पन, हारा, आना, हर, आलु, आ, ऊ, एरा, एड़ी, ओला, औती, वाँ, स, सरा, बत, ओट, टा, टी, ती, नी, पन, पना, ल, ले आदि।

कुछ उदाहरण देखिए–

आई– चतुराई, बुराई, चिकनाई

आऊ– बटाऊ, अगाऊ

आवट– अमावट, रूकावट

आर– कुम्हार, लुहार, सुनार

आल– ससुराल, ननिहाल

इया– छलिया, मुखिया

ईला– रंगीला, जहरीला

ऐल– खपरैल, छपरैल

ई– देहाती, बंगाली

ऐत– लठैत, डकैत

पन– छुटपन, बचपन

हारा– लकड़हारा, पनिहारा आदि।

11.4.10 हिंदी तद्धित प्रत्ययों के भेद

(1) **कर्तृवाचक तद्धित**– संज्ञा के अंत में प्रत्यय लगते हैं–

उदा. आर. सोना – आर – सुनार

वाला– सब्जी– सब्जीवाला

(2) **भाववाचक तद्धित**– संज्ञा और विशेषण में लगाते हैं–

उदा. त्व– देवता– देवत्व

आस– मीठा– मिठास

(3) **ऊनवाचक तद्धित**– वस्तु या प्राणी की लघुता का बोध होता है–

इया– बूढ़ी– बुढ़िया

क– ढोल– ढोलक

(4) **संबंध–बोधक तद्धित**– इनसे रिश्ते–संबंध का बोध होता है–

एरा– फूफा– फुफेरा

हाल–नाना – ननिहाल

(5) **अ–पत्यवाचक (संतानबोधक) तद्धित**–

अ– वसुदेव– वासुदेव

टिप्पणी

(6) गुणवाचक तद्धित– संज्ञा के गुणों का बोध कराते हैं–

इत– शाप– शापित

आ– भूख– भूखा

(7) स्थानवाचक तद्धित– विशेषण का बोध होता है–

ई– गुजरात– गुजराती

गाह– चारा– चारागाह

(8) अव्ययवाचक तद्धित– क्रिया विशेषण की तरह इनका उपयोग होता है–

भर– दिन– दिनभर

ए– धीर– धीरे

अपनी प्रगति जांचिए

5. जो धातुओं के साथ जुड़कर उन्हें संज्ञा या विशेषण बनाते हैं, उन्हें क्या कहते हैं?

   (क) तद्धित (ख) कृदंत

   (ग) तद्धितांत (घ) उपसर्ग

6. संस्कृत, उर्दू और हिंदी के प्रत्यय कौन से हैं?

   (क) मान, नामा, आहट (ख) बाज, बन्द, गीर

   (ग) उक, अनीय, आ (घ) इक, आयन, अक

11.5 संधि

संधि (सम्+धि) का अर्थ है मेल या जोड़। दो निकटवर्ती वर्णों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं। और मिलावट के वर्णों को अलग करते हुए पदों को अलग–अलग कर देना 'संधि–विच्छेद' कहा जाता है।

उदा. भानु + उदय = भानूदय; नीति + इक = नैतिक।

संस्कृत भाषा में संधि द्वारा संयुक्त शब्दों का प्रयोग होता है। संस्कृत के अनेक तत्सम शब्द हिंदी में स्वीकार किए गए हैं। संस्कृत भाषा की जानकारी के लिए संधि युक्त शब्दों का अध्ययन आवश्यक है। हिंदी व्याकरण में संस्कृत की संधियों और उसके नियमों को समझना, उनकी जानकारी हासिल करना जरूरी है।

हिंदी वर्णमाला के आधार पर संधि के भेद किए गए हैं।

11.5.1 संधि के भेद

संधि के प्रमुख तीन भेद माने जाते हैं–

स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि

स्वर संधि– दो स्वरों के मेल से (स्वर + स्वर) उत्पन्न विकार या रूप परिवर्तन को 'स्वर–संधि' कहते हैं।

टिप्पणी

अथवा दो स्वर के मिलने से तीसरा स्वर बनता है वही स्वर–संधि है।

उदा.

विद्या + आलय – (आ + आ = आ) = विद्यालय

गिरि + ईश – (इ + ई = ई) = गिरीश

हिम + आलय – (अ + आ = आ) = हिमालय

भानु + उदय – (उ + उ = ऊ) = भानूदय

स्वर–संधि के भेद

दीर्घस्वर संधि	गुण स्वर संधि	वृद्धि स्वर संधि	यण स्वर संधि	अयादि स्वर संधि

(1) **दीर्घ स्वर संधि**– दो स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ आदि वर्णों के बाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनों मिलकर दीर्घ स्वर हो जाते हैं–

उदा.

अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
अ + आ = आ	हिम + आलय = हिमालय
आ + अ = आ	विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
आ + आ = आ	महा + आकाश = महाकाश
इ + इ = ई	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
ई + ई = ई	गिरि + ईश = गिरीश
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र
ई + ई = ई	पृथ्वी + ईश = पृथ्वीश
ऊ + उ = ऊ	वधू + उत्सव = वधूत्सव
ऊ + ऊ = ऊ	भू + उर्ध्व = भूर्ध्व आदि।

(2) **गुण स्वर–संधि**–

यदि अ, आ, स्वरों के बाद, ई ई उ, ऊ, ऋ स्वर आने से दोनों के मेल से क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाते हैं–

उदा.

अ + इ = ए	देव + इन्द्र = देवेन्द्र
अ + ई = ए	गण + ईश = गणेश
आ + ई = ए	महा + इन्द्र = महेन्द्र
आ + ई = ए	रमा + ईश = रमेश
अ + उ = ओ	नील + उत्पल = नीलोत्पल
अ + ऊ = ओ	समुद्र + उर्मि = समुद्रोर्मि

आ + ऊ = ओ	गंगा + उर्मि = गंगोर्मि
आ + उ = ओ	गंगा + उदक = गंगोदक
अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि
आ + ऋ = अर्	महा + ऋर्षि = महर्षि

(3) वृद्धि स्वर संधि :

अ, आ स्वर के बाद ए, ऐ आने से ऐ होता है और ओ, औ से औ होता है।

अ + ए = ऐ	एक + एक = एकैक
आ + ए = ऐ	सदा + एव = सदैव
अ + ऐ = ऐ	नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य
आ + ऐ = ऐ	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
अ + ओ = औ	परम + ओजस्वी = परमौजस्वी
आ + ओ = औ	परम + औषध = परमौषध
आ + औ = औ	महा + औषध = महौषध

(4) यण् स्वर–संधि :

इ ई, उ, ऊ, ऋ के बाद भिन्न स्वर आने से इ, ई < य्; उ, ऊ < व और ऋ का उ हो जाता है।

उदा.

इ + अ	यदि + अपि = यद्यपि
इ + उ	अति + उत्तम = अत्युतम
इ + आ	अति + आवश्यक = अत्यावश्यक
इ + ऊ	अति + ऊष्म = अत्यूष्म
उ + अ	अनु + वय = अन्वय
उ + आ	मधु + आलय = मध्वालय
उ + ओ	गुरू + ओदन = गुर्वोदन
उ + औ	गुरू + औदार्य = गुर्वोदार्य
ऋ + आ	पितृ + आदेश = पित्रादेश

(5) अयादि स्वर–संधि :

ए, ऐ, ओ, औ के बाद भिन्न स्वर आने से क्रमशः अय, आय, अव, आव हो जाते हैं–

उदा.

ए + अ = अय	ने + यन = नयन
ऐ + अ = आय	नै + अक = नायक

ओ + अ = अव पो + अन = पवन

औ + अ = आव पौ + अन = पावन

टिप्पणी

11.5.2 व्यंजन–संधि

जब व्यंजन से स्वर या व्यंजन मिलकर विकार होता है, वह व्यंजनसंधि है। व्यंजन संधि के कुछ नियम हैं– उनका ज्ञान आवश्यक है।

(1) नियम–1– यदि क् च् ट् त् प के बाद उसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य् र् ल् व् या स्वर आए तो क् च् ट् त् प के स्थान पर वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।

उदा.

दिक् + गज = दिग्गज षट् + दर्शन = षड्दर्शन

वाक् + जाल = वाग्जाल सत् + वाणी = सद्वाणी

जगत् + आनंद = जगदानंद महत् + आनंद = महानंद

(2) नियम–2

यदि क् च् ट् त् प् के बाद न अथवा म आए तो क, च, ट, त, प अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं–

उदा.

वाक् + मय = वाङ्मय, उत् + नति = उन्नति

षट् + मास = षण्मास; जगत् + नाथ = जगन्नाथ

(3) नियम–3

यदि म के बाद स्पर्श व्यंजन (प फ, ट, ठ) आ जाए तो उसका अनुस्वार, या बाद में आने वाले वर्ण के वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है।

उदा. अहम् + कार = अहङ्कार (अहंकार)

सम् + गम = सङ्गम (संगम)

पम् + चम = प×चम (पंचम)

(4) नियम–4

यदि त् द् के बाद ल आने से दोनों ल में तो ल के बाद न आने से न का अनुनासिक ल हो जाता है–

उत् + लास = उल्लास; महान + लाभ = महाल्लाभ

उत् + लंघन = उल्लंघन उत् + लेख = उल्लेख

(5) नियम–5

यदि वर्गों के अंतिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद ह आए तो उसके पूर्व के वर्ग का चौथा वर्ण हो जाता है।

उत् + हत = उद्धत उत् + हार = उद्धार

टिप्पणी

(6) नियम–6

यदि ह्रस्व के बाद छ हो तो च् जुड़ता है और दीर्घ स्वर के बाद 'छ' हो तो यह विकल्प से होता है– स्व+छंद = स्वच्छंद, आ + छादन = आच्छादन

(7) नियम–7

यदि त वर्ग के साथ ष, च आने से ष् ट हो जाते हैं–

सत् + चित = सच्चित   द्रष् + ता = द्रष्टा

बृहत् + टिट्टिम = बृहट्टिटट्टिम

11.5.3 विसर्ग–संधि

स्वर और व्यंजन में मेल होने से जो परिवर्तन होता है उसे विसर्ग संधि कहते हैं–

उदा. मनः + अनुकूल = मनोनुकूल, निः + पाप = निष्पाप

निः + सर = निर्झर, तेजः + मय = तेजोमय

विसर्ग–संधि के कुछ नियम हैं, उनकी जानकारी आवश्यक है–

नियम–1

यदि विसर्ग के बाद च, छ हो तो विसर्ग का श; ट ठ का ष; त, थ का स होता है।

उदा.

: + च = श	निः + चय = निश्चय
: + छ = श	निः + छत्र = निश्छत्र
: + ट = ष	धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
: + ठ = ष	ततः + ठकार = ततष्ठकार
: + त = स	निः + तार = निस्तार
: + थ = स	दुः + थकार = दुस्थकार

नियम–2

यदि विसर्ग के पहले इकार या उकार आए और विसर्ग के बाद क्, ख् प् फ् वर्ण हो तो विसर्ग का ष होता है

उदा.

निः + कपट = निष्कपट, निः + फल = निष्फल

निः + कारण = निष्कारण, निः + पाप = निष्पाप

नियम–3

यदि विसर्ग के पहले अ हो और बाद में क, ख, प, फ में से कोई वर्ण होने से विसर्ग ज्यों का त्यों रहता है–

उदा.

प्रातः+काल = प्रातःकाल, पयः + पान = पयःपान

अपवाद हैं– नमः+कार = नमस्कार, भाः+कर = भास्कर

नियम–4

यदि इ, उ के बाद विसर्ग हो तो और इसके बाद र आने से ई, ऊ होकर विसर्ग लुप्त हो जाता है–

टिप्पणी

उदा.

निः + रव = नीरव, निः+रस = नीरस

नियम–5

यदि विसर्ग के पहले अ, आ स्वर छोड़कर कोई अन्य स्वर आए और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो अथवा किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवां वर्ण हो या य र ल व हो तो विसर्ग र में बदल जाता है–

निः + उपाय = निरूपाय, निः + झर = निर्झर

निः + गुण = निर्गुण निः + जल = निर्जल

निः + मल = निर्मल निः + धन = निर्धन

निः + विकार = निर्विकार दुः + नीति = दुर्नीति

दुः + आत्मा = दुरात्मा दुः + गंध = दुर्गंध

नियम–6

यदि विसर्ग के पहले अ आए और बाद में किसी भी वर्ग का तीसरा चौथा पांचवां वर्ण या य र ल व ह आए तो विसर्ग उ हो जाता है यह पूर्ववर्ती गुण संधि द्वारा ओ हो जाता है–

उदा.

पुरः + हित = पुरोहित, मनः + विकार = मनोविकार,

यशः + वर्धन = यशोवर्धन, मनः + हर = मनोहर,

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध, यशः + धरा = यशोधरा,

पयः + द = पयोद, तेजः + मय = तेजोमय,

मनः + भाव = मनोभाव, सरः + वर = सरोवर,

मनः + योग = मनोयोग, यशः + दा = यशोदा

नियम–7

यदि विसर्ग के आगे–पीछे अ हो तो पहला अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है तो बाद वाले अ का लोप होता है किंतु उसके स्थान पर अवग्रह का (ऽ) चिह्न लग जाता है–

उदा.

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय

मनः + अभिलाषा = मनोऽभिलाषा

किंतु हिंदी में अवग्रह चिह्न नहीं लगाया जाता है।

विसर्ग के बाद अ के बदले दूसरा स्वर आने से विसर्ग का लोप हो जाता है–

उदा. अतः + एव = अतएव

टिप्पणी

अपनी प्रगति जांचिए

7. स्वर संधि के कितने भेद हैं?

(क) सात	(ख) दो
(ग) पाँच	(घ) तीन

8. व्यंजन संधि के उदाहरण पहचानिए?

(क) उन्नति, पंचम	(ख) यशोदा, तेजोमय
(ग) प्रातःकाल पयःपान	(घ) गणेश, विद्यार्थी

11.6 समास

संस्कृत भाषा सामासिक है, जिसके थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहा जाता है। हिंदी की प्रकृति विश्लेषणात्मक है। संस्कृत के सामासिक शब्दों का हिंदी में प्रयोग किया जाता है। इसलिए 'समास' का अध्ययन आवश्यक है।

"अनेक शब्द मिलकर जब एक पद बनता है तो उसे समास कहते हैं।"

समास–भेद :

संस्कृत की विरासत से हिंदी व्याकरण समृद्ध बना है। शब्द निर्माण में समास का योगदान अमूल्य है। हिंदी में समास के छह भेद हैं–

(1) तत्पुरुष समास

(2) द्वन्द्व

(3) बहुब्रीहि

(4) द्विगु

(5) अव्ययीभाव

(6) कर्मधारय

समास भेदों के अध्ययन के पहले निम्न बातों का ध्यान रखा जाए–

- सामासिक शब्द (समस्तपद)– समास के होने के बाद विभक्ति चिह्न लुप्त होकर बनने वाला शब्द "सामासिक शब्द" है– राजपुत्र
- समास विग्रह– सामासिक शब्दों के बीच के संबंध स्पष्ट करना विग्रह है–जैसे– राज+पुत्र (विग्रह है– राजा का पुत्र)
- पूर्व पद और उत्तर पद– समास रचना में दो पद होते हैं, पहले को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तर पद कहा जाता है। जैसे– राजपुत्र– राज पूर्वपद है तो पुत्र उत्तरपद है।

टिप्पणी

11.6.1 तत्पुरुष समास

जिस सामासिक पद में उत्तरपद प्रधान और पूर्व पद गौण होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमें विभक्ति का लोप होता है। पहला पद विशेषण तो दूसरा पद विशेष्य होता है–

उदा. मुँहमांगा– मुँह से मांगा, धनहीन–धन से हीन

तत्पुरुष समास के छह भेद हैं–

कर्मतत्पुरुष	करण कारक	संप्रदान तत्पुरुष	अपादान तत्पुरुष	संबंध तत्पुरुष	अधिकरण तत्पुरुष

तत्पुरुष

इस समास भेदों के उदाहरणों में विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है–

(1) **कर्मतत्पुरुष** : को विभक्ति का लोप होता है

उदा. पाकेटमार – पाकेट को मारने वाला

स्वर्गप्राप्त – स्वर्ग को प्राप्त

ग्रामगत – ग्राम को गया हुआ।

यशप्राप्त – यश को प्राप्त

(2) **करणकारक तत्पुरुष** : से, के द्वारा करणकारक चिह्न का लोप–

उदा.

मदमाता– मद से माता, मुँहमांगा– मुँह से माँगा

अकाल पीड़ित– अकाल से पीड़ित, शराहत– शर से आहत

रेखांकित– रेखा से अंकित, भयाकुल– भय से आकुल

वाल्मीकिरचित– वाल्मीकि द्वारा रचित

- संप्रदाय तत्पुरुष – के लिए

  उदा.

राहखर्च– राह के लिए खर्च, डाकगाड़ी– डाक के लिए गाड़ी

प्रयोगशाला– प्रयोग के लिए शाला, सभाभवन– सभा के लिए भवन

देशभक्ति– देश के लिए भक्ति, हथकड़ी– हाथ के लिए कड़ी

- अपादान तत्पुरुष – से (अलग होना) अपादान कारक विभक्ति चिह्न का लोप

  उदा. – कामचोर– काम से जी चुराना, धर्मभ्रष्ट– धर्म से भ्रष्ट

गुणहीन– गुण से हीन रणविमुख– रण से विमुख

धनहीन– धन से हीन बुद्धिहीन– बुद्धि से हीन

- संबंध–तत्पुरुष– का, की, के

  उदा.

सेनापति– सेना का पति गंगाजल– गंगा का जल

टिप्पणी

उद्योगपति– उद्योग का पति,	यमुनातट– यमुना का तट
देवमूर्ति– देव की मूर्ति	जलधारा– जल की धारा
पराधीन– पर के अधीन	प्रश्नानुसार– प्रश्न के अनुसार

- अधिकरण तत्पुरुष – में, पर

  उदा.

गृह प्रवेश– गृह में प्रवेश,	ग्रामवास– ग्राम में वास
वनवास– वन में वास	लोकप्रिय– लोक में प्रिय
आपबीती– आप पर बीती	आत्मविश्वास– आत्म पर विश्वास

कुछ व्याकरणकारों ने निम्न भेद माना है–

- न×k तत्पुरुष– इसमें पहला पद नकारात्मक होता है, न, ना का लोप होता है–

  उदा.

नालायक– न लायक	अनिष्ट– न इष्ट
अयोग्य– न योग्य	अनाचार– न आचार
असभ्य– न सभ्य	अनंत– न अंत

11.6.2 द्वंद्व समास

इसके सभी पद प्रधान होते हैं, प्रत्येक पदों के बीच और, एवं, या आदि का लोप होता है–

उदा. राम–कृष्ण– राम और कृष्ण   लव–कुश– लव और कुश

द्वंद्व समास के तीन भेद हैं–

इतरेतर द्वंद्व   समाहार द्वंद्व   वैकल्पिक द्वंद्व

(1) इतरेतर द्वंद्व– इसके दोनों पद और समुच्चय बोधक शब्द से जुड़े होते हैं–

उदा. भाई–बहन = भाई और बहन	दाल–रोटी = दाल और रोटी
बेटा–बेटी = बेटा और बेटी	माता–पिता = माता और पिता

(2) समाहार द्वंद्व– सामासिक शब्द का शब्दार्थ से अलग भिन्न अर्थ प्रकट होता है–

उदा. हाथ–पाँव – हाथ, पाँव (शरीर के सभी अंग)

दाल–रोटी – दाल, रोटी (भोजन के सभी पदार्थ)

(3) वैकल्पिक द्वंद्व– दो पदों के बीच या, अथवा विकल्पसूचक अव्यय आता है–

उदा. छोटा–बड़ा = छोटा या बड़ा	थोड़ा–बहुत = थोड़ा या बहुत
पाप–पुण्य = पाप या पुण्य	दो–चार = दो या चार

11.6.3 बहुव्रीहि समास

टिप्पणी

इसमें दोनों पद किसी अन्य अर्थ को व्यक्त करते हैं और वे किसी संज्ञा या विशेषण का बोध कराते हैं।

उदा. – चतुर्भुज– चार भुजाएं जिसकी (विष्णु)

त्रिलोचन– तीन आंखों वाला (शिव)

दशानन– दश हैं आनन जिसके (रावण)

मुरलीधर– मुरली को बजाने वाला (कृष्ण)

बहुव्रीहि समास के तीन भेद हैं–

समानाधिकरण   व्यधिकरण   सहार्थक

(1) **समानाधिकरण** – दोनों पदों की विभक्ति समान होती है–

उदा. कलहप्रिय– कलह है प्रिय जिसको

कृतकार्य– कर लिया है कार्य जिसने

(2) **व्यधिकरण**– दोनों पदों का कारक चिह्न भिन्न होता है–

उदा. मकरध्वज – वह जिसके मकर का ध्वज है (कामदेव)

सूर्यपुत्र – वह जो सूर्य का पुत्र है (कर्ण)

(3) **सहार्थक**– साथ अर्थ के योग से यह समास बनता है–

उदा. संदेह– देह के साथ है जो।   सप्रेम–प्रेम के साथ है जो।

सबल– शक्ति के साथ है जो।   सानंद–आनंद के साथ है जो।

11.6.4 द्विगु समास

जिसमें पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा समस्त पद समूह का बोध कराता है वह द्विगु समास है।

उदा. दोपहर– दो पहरों का समाहार

त्रिलोक– तीन लोकों का समूह

पंचवटी– पाँच वट वृक्षों का समूह,   चौराहा– चार रास्तों का समाहार

सप्ताह– सात दिनों का समूह,   सप्तशती– सात सैंकड़ों का समाहार

त्रिफला– तीन फलों का समाहार   अष्टाध्यायी– आठ अध्यायों का समाहार

11.6.5 अव्ययीभाव समास

इसमें पूर्व पद प्रधान होता है, सामासिक पद अव्यय होता है–

उदा. आमरण–मरण तक,   यथाविधि–विधि के अनुसार

हर दिन– हर दिन,

कानोंकान– कान ही कान   यथागति– गति के अनुसार

टिप्पणी

अव्ययीभाव समास के दो भेद हैं–

नामपद पूर्व अव्ययीभाव   अव्ययपूर्व अव्ययीभाव

(1) नामपद पूर्व– जिसके समस्त पद में पहला पद संज्ञा और दूसरा पद अव्यय हो वह नामपद पूर्व अव्ययीभाव समास है–

उदा.– नियमानुसार– नियम के अनुसार, सेवार्थ–सेवा के लिए

विश्वासपूर्वक– विश्वास के साथ, क्रमानुसार– क्रम के अनुसार

(2) **अव्ययपद पूर्व**– जिसके समस्त पद में पहला पद अव्यय या उपसर्ग और दूसरा पद संज्ञा हो तो वह अव्ययपद पूर्व कहलाता है–

उदा. समक्ष– आँखों के सामने,   हरेक–एक एक

अनुगमन– गमन के पीछे गमन,   दरहकीकत–हकीकत में

11.6.6 कर्मधारय समास

जिसका पहला पद विशेषण और दूसरा विशेष्य (उपमान/उपमेय) होता है वही कर्मधारय समास कहलाता है–

उदा.

चंद्रमुख– चंद्र जैसा मुख   चरणकमल– कमल के समान चरण

महावीर– महान है वीर   अधपका– आधा है जो पका

परमेश्वर– परम जो ईश्वर   नीलगाय– नीली है जो गाय

प्राणप्रिय– प्राणों के समान प्रिय   स्त्रीरत्न– स्त्री रूपी रत्न

पुत्ररत्न– पुत्र के समान रत्न   पर्णकुटी– पत्तों से बनी कुटी

क्रोधाग्नि– क्रोध रूपी अग्नि   विद्यारत्न– विद्या ही रत्न है

महात्मा– महान है जो आत्मा   नरसिंह– नर में सिंह के समान

प्रधान अध्यापक– प्रधान है जो अध्यापक   पीतांबर– पीत है जो अंबर

महादेव– महान है जो देव   नवयुवक– नव है जो युवक

अपनी प्रगति जांचिए

9. समस्त पद, विग्रह, पूर्व पद और उत्तर पद की आवश्यकता किसके लिए होती है?

   (क) संधि   (ख) समास

   (ग) विभक्ति   (घ) कारक

10. पंचवटी, त्रिफला, सप्ताह किस प्रकार के समास के उदाहरण है?

   (क) बहुव्रीहि   (ख) तत्पुरुष

   (ग) द्विगु   (घ) द्वंद्व

11.7 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

टिप्पणी

1. (घ)
2. (ग)
3. (ख)
4. (घ)
5. (ख)
6. (क)
7. (ग)
8. (क)
9. (ख)
10. (ग)

11.8 सारांश

संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा का व्याकरण संपन्न हुआ है। संस्कृत के अनेक सामासिक शब्दों का प्रयोग हिंदी में किया जाता है। संस्कृत सामासिक तो हिंदी विश्लेषणात्मक भाषा है। इसलिए संस्कृत से आए हुए शब्दों का अर्थ, शुद्ध रूप जानना आवश्यक होता है।

हिंदी का शब्द भंडार समृद्ध होता रहा है। शब्द निर्माण की सहायता करने में उपसर्ग (शब्द के आरंभ में जुड़कर भिन्न अर्थ बताने वाले), प्रत्यय (शब्द के अंत में जुड़कर आने वाले) संस्कृत, उर्दू से लिए गए हैं। जैसे– अति, अधि (अतिशय, अधिकार) संस्कृत से लिए गए उपसर्ग हैं। गैर, खुश आदि (गैरजात, खुशबू) उर्दू से लिए गए हैं।

शब्द के अंत में जुड़ने वाले प्रत्यय– कृत प्रत्यय और तद्धित दो भेदों के साथ संस्कृत, उर्दू भाषाओं से लिए गए हैं। जैसे– वन्द < वन्दना, घट् < घटना; ताज < ताजगी, मदद < मददगार आदि कृत प्रत्यय हैं। इनके जुड़ने से नया शब्द रूप, नया अर्थ देता है।

तद्धित प्रत्यय– राम–रामायण, शिक्षा–शिक्षक; पेश–पेशकार, बगीचा–बाग; पेंट–पेंटर, द्रविड़–द्रविड़ियन– क्रमशः संस्कृत के आयन, अक; उर्दू के कार, ईचा और अंग्रेजी के अर, इयन तद्धित प्रत्ययों से शब्दों निर्माण हुआ है।

संस्कृत भाषा के अनेक तत्सम शब्द हिंदी में आए हैं। दो निकटवर्ती शब्दों के मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे 'संधि' कहते हैं। विद्या + आलय (आ + आ = आ) = विद्यालय–स्वरसंधि; जगत् + आनंद = (जगदानंद)–व्यंजन संधि; धनुः + टंकार (:+ट= ष) धनुष्टंकार–विसर्ग संधि आदि भेदों को तथा उदाहरणों से शब्द निर्माण की जानकारी मिलती है। उसी प्रकार सामासिक शब्दों के विग्रह से हिंदी के समास भेदों का परिचय होता है। तत्पुरुष, द्विगु, द्वंद्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय और अव्ययीभाव समास भेदों के

उदाहरणों द्वारा विविध शब्द, उनके विग्रह का ज्ञान संभव हुआ है। उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास की जानकारी से हिंदी भाषा के शब्दों और उनके अर्थ की प्राप्ति होती है।

टिप्पणी

11.9 मुख्य शब्दावली

- **आगत**– आए हुए।
- **निकटवर्ती**– समीपस्थ, नजदीक का।
- **अवग्रह (चिह्न)**– देवनागरी लिपि का चिह्न जो विलुप्त 'अ' को प्रदर्शित करता है।
- **विश्लेषणात्मक**– विच्छेदपरक।
- **अमूल्य**– जिसे मूल्यबद्ध न किया जा सके।
- **विरासत**– उत्तराधिकार में मिला हुआ (धन)।
- **विच्छेद**– अलग करना।

11.10 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. कृत प्रत्ययों के आधार पर शब्द निर्माण प्रक्रिया समझाइए।
2. उपसर्ग किसे कहते हैं, उपसर्गों के उदाहरण लिखिए।
3. 'तद्धित' प्रत्ययों का रेखांकन कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. संधि का अर्थ बताकर उसके भेदों का विस्तृत विवेचन कीजिए।
2. विसर्ग संधि का विस्तारपूर्वक विश्लेषण कीजिए।
3. समास की परिभाषा स्पष्ट करते हुए उसके विविध भेदों का विस्तार से उल्लेख कीजिए।

11.11 सहायक पाठ्य सामग्री

1. हिंदी व्याकरण एवं रचना– डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद।
2. मानक हिंदी वर्तनी– केंद्रीय हिंदी निदेशालय।
3. हिंदी व्याकरण– पं. कामता प्रसाद गुरू।

इकाई 12 वाक्य शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

12.0 परिचय
12.1 उद्देश्य
12.2 वाक्य शिक्षण
12.2.1 वाक्य शिक्षण की आवश्यकता
12.2.2 वाक्य का स्वरूप
12.3 वाक्य के भेद
12.3.1 साधारण या सरल वाक्य
12.3.2 संयुक्त वाक्य
12.3.3 मिश्र या मिश्रित वाक्य
12.3.4 वाक्य और पद
12.4 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
12.5 सारांश
12.6 मुख्य शब्दावली
12.7 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
12.8 सहायक पाठ्य सामग्री

12.0 परिचय

किसी भी भाषा की महत्तम इकाई वाक्य है। भाषा निर्माण में ध्वनि, शब्द, पदों के संयोग से बने वाक्यों से सार्थक अभिव्यक्ति होती है। ध्वनियों के समूह से शब्द बनते हैं, शब्दों में विभक्ति, प्रत्यय, कारक लगाने से पद बनते हैं। जो शब्द वाक्य में प्रयुक्त होने के योग्य होते हैं उन्हें पद या रूप कहते हैं। रूपों या पदों का समूह वाक्य कहलाता है।

भाषा भावों और विचारों की संवाहक है तो इनके संवाहक वाक्य हैं। भाषा का नियामक व्याकरण है और व्याकरण वाक्यों का ही विश्लेषण करता है। वाक्यों के बिना भावों और विचारों का संप्रेषण पूर्ण नहीं हो सकता।

अनेक भाषाशास्त्रियों और व्याकरणकारों ने वाक्यों (परिभाषा, आवश्यकता उसके भेद आदि) के द्वारा वाक्य के महत्व को स्पष्ट किया है। इस इकाई में इन्हीं बातों का विवेचन किया गया है।

12.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- भाषा में वाक्य के महत्त्व को जान पाएंगे;
- वाक्य के स्वरूप और भेदों से परिचित हो पाएंगे;
- वाक्य के समुचित प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर पाएंगे;
- वाक्य और पद के महत्व को समझ पाएंगे।

12.2 वाक्य शिक्षण

टिप्पणी

भाषा में वर्ण, अक्षर, शब्द, शब्दांश, पद आदि से बने अर्थपूर्ण समूह से बने वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। मनुष्य अपने व्यवहार में आदान–प्रदान के लिए भाषा का सहारा लेता है। वाक्यों के बिना भाषा अपूर्ण रहती है।

भाषा अधिगम प्रक्रिया वाक्य से शुरू होती है। इसलिए भाषा में वाक्यों का अध्ययन किया जाता है।

12.2.1 वाक्य शिक्षण की आवश्यकता

मनुष्य और बच्चों की आतंरिक शक्तियों को बाहर लाना और विकसित करने की प्रक्रिया शिक्षण है। महात्मा गाँधी ने भी कहा है कि "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर मस्तिष्क या आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम गुणों से है।"

शिक्षण का आरंभ घर से ही होता है और आजीवन यह प्रक्रिया चलती रहती है। जीवन में नई चीजों को सीखने में वह मदद करती है, जीवन की सफलता, संपन्नता, समृद्धि की कुँजी है। शिक्षण का साधन है भाषा और भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है वाक्य।

भाषा शिक्षण के पहले पाठ का आरंभ बालक अपने परिवार में करता है, माता–पिता मातृभाषा सिखाने वाले शिक्षक है। अनुकरण, उच्चारण के द्वारा बालक धीरे–धीरे मॉड, पाड जैसी ध्वनियाँ निकालता है, फिर दो–तीन शब्दों के द्वारा अपने भाव दर्शाता है। माँ बालक के उन शब्द–संकेतों से बालक के भाव समझ लेती है। बाद में बालक छोटे वाक्य बोलने लगता है। जब बालक घर के आस–पास के वातावरण में आने–जाने लगता है तब वह बड़े–बड़े वाक्यों से भावाभिव्यक्ति ही नहीं विचारों की अभिव्यक्ति करने लगता है। बालक हो या बड़े–बूढ़े हों भावों के संप्रेषण के लिए वाक्यों का प्रयोग करते हैं।

मनुष्य समाज में भाषा का प्रयोग वाक्य द्वारा होता है। भाषा का प्रयोग करने वाला वस्तुतः वाक्य ही बोलता है। अतः भाषा प्रयोग का आधार वाक्य ही है। वाक्य को सार्थक शब्द या शब्दों का समूह माना जाता है, जो भाव व्यक्त करने में, अपने आप में पूर्ण होता है। वाक्य की योग्यता, आकांक्षा, समीपता आदि तत्वों की जानकारी, उनका उचित प्रयोग, पदक्रम, विविध भेदों को समझना और समझाना वाक्य शिक्षण से संभव है।

12.2.2 वाक्य का स्वरूप

दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जो पूरा अर्थ देता है वह वाक्य है। सामान्यतः वाक्य के स्वरूप को विद्वानों ने अपने मतों द्वारा व्यक्त किया है–

- भर्तृहरि :

  वाक्यपदीय में भर्तृहरि ने वाक्य की भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी हैं। "उन्होंने एक वाक्य के लिए सभी साकांक्ष पदों से संयुक्तता का उल्लेख किया है।"

- ए.एच. गार्डिनर :

"वाक्य एक या अनेक पदों का समूह होता है, जो अभीष्ट अर्थ व्यक्त करता है।"

टिप्पणी

- जॉर्ज क्योंम :

"वाक्य में एक या अनेक शब्द इस प्रकार से प्रयुक्त होते हैं कि उनसे अभीष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति हो।"

- लियोनार्ड ब्लूमफील्ड :

"प्रत्येक वाक्य एक स्वतंत्र भाषिक रूप है और वह किसी व्याकरणिक रचना द्वारा अपने से महत्तर रूप में अंतर्विष्ट नहीं है।"

- डॉ. जाल्मन दीमाशीत्स :

हिन्दी व्याकरण ग्रंथ में वे कहते हैं– "वाक्य वाक्–क्रिया की एक समग्र इकाई है। इकाई के नाते वाक्य के लिए लाक्षणिक है। विधेयता, प्रकारता तथा अनुतान में पूर्णता है।"

- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी :

भाषा की लघुत्तम पूर्ण सार्थक इकाई को वाक्य कहते हैं अर्थात् पूर्ण अर्थ की बोधक सार्थक, लघुत्तम इकाई वाक्य है। वाक्य भाषण और विचारों का अंग है।

- डॉ. भोलानाथ तिवारी :

"वाक्य भाषा की सहज इकाई है, जिसमें एक या अधिक शब्द हों, जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्यावहारिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होता है, साथ ही परोक्ष रूप से कम से कम एक क्रिया का भाव अवश्य होता है।"

- पं. कामता प्रसाद गुरु :

"प्रत्येक पूर्ण विचार वाक्य है और प्रत्येक भावना शब्द है।"

- आ. देवेन्द्र नाथ :

ध्वनि, पद और वाक्य के आपसी संबंधों को रेखांकित करते हुए कहा है– "वाक्य पूर्णतः मानसिक तत्व है, उसमें पदों का प्रयोग भाव और विचारों के अनुसार होता है। पद, ध्वनि और वाक्य के बीच की संयोजन कड़ी है क्योंकि उसमें उच्चारण और सार्थकता दोनों का योग रहता है।"

- मुनि पतंजलि :

भारत में सर्वप्रथम व्याकरण के अंग वाक्य के संदर्भ में भिन्न–भिन्न परिभाषाएं दी गई हैं। एक ओर कारक, अव्यय, विशेषण और क्रिया विशेषण आदि से युक्त क्रियापद को तो दूसरी ओर केवल एक पद युक्त क्रिया को वाक्य कहा है।

निष्कर्ष : विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि वाक्य सार्थक ध्वनियों के शब्द/शब्दों से बनता है।

- वाक्य में प्रयुक्त शब्द, पद सार्थक होते हैं।

टिप्पणी

- प्रत्येक वाक्य में क्रिया होती है किंतु क्रिया के बिना भी वाक्य बनता है।
- प्रत्येक वाक्य एक भाव की अभिव्यक्ति करता है।
- वाक्य में प्रयुक्त एक भाव की अभिव्यक्ति करता है।
- प्रत्येक भाषा के वाक्यों में कर्ता, कर्म क्रिया का स्थान निश्चित नहीं होता, हिन्दी भाषा के वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया का स्थान लगभग निश्चित होता है। वाक्य के आरंभ में कर्ता और अंत में क्रिया के प्रयोग से वाक्य बनता है। अपवाद रूप में क्रियाहीन वाक्य जो पूर्ण अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं–जैसे– समाचार पत्रों के शीर्षक, विज्ञापनों में क्रिया का प्रयोग नहीं किया जाता–

दुर्घटना में पच्चीस लोगों की मौत, (समाचार पत्र का शीर्षक)

ठण्डा–ठण्डा कूल–कूल, (पंखे, कूलर का विज्ञापन)

इसी तरह कुछ मुहावरे तथा लोकोक्तियों में भी क्रिया का प्रयोग नहीं होता है–

उदा. – दीपक तले अँधेरा, खून का प्यासा, खोटा पैसा– (मुहावरे)

अंत भले का भला, अँधों में काना राजा, अपना हाथ जगन्नाथ– (लोकोक्तियाँ)

मनुष्य दैनिक व्यवहार में कर्ता, कर्म, क्रिया से बने वाक्यों के प्रयोग से भाव अभिव्यक्त करता है–

उदा. – मीनाक्षी कपड़े धोती है।

राजेश ने रामायण पढ़ी।

इन वाक्यों में क्रमशः मीनाक्षी, राजेश; कपड़े, रामायण; धोती है, पढ़ी कर्ता, कर्म, क्रिया रूप है। दोनों वाक्यों के शब्द समूह से वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है।

मीनाक्षी ने रामायण खाई, राजेश ने रामायण धोई। वाक्यों में कर्ता, कर्म, क्रिया का प्रयोग होने पर भी वाक्यों से समुचित अर्थ नहीं स्पष्ट होता।

मीनाक्षी ने, राजेश ने, रामायण, खाई, धोई शब्द अपना अर्थ बताने में योग्य हैं किन्तु इनके समूह से बने वाक्य का अर्थ गलत है। वाक्य में कर्ता के साथ जुड़ी हुई क्रिया योग्य नहीं है। रामायण (पुस्तक) को न खाया जाता है और न धोया जा सकता है।

वाक्य के प्रयोग में एक शब्द या शब्दांश का प्रयोग करने से भी संदर्भ विशेष में वह पूर्ण वाक्य की अभिव्यक्ति करता है–

उदा.– संवाद या बातचीत करते समय बोले जाने वाले वाक्य प्रयोग एक शब्द से भी भाव व्यक्त करते हैं–

रचना मुंबई कब जाने वाली है? (प्रश्न)

'कल' (उत्तर)

वह मुंबई से वापस कब आएगी?

'परसों' (उत्तर)

उक्त उदाहरण में जो प्रश्न है उनमें कर्ता, कर्म, क्रिया का योग मिलता है, अथवा शब्दों का समूह जिससे वाक्य बना है।

यहाँ 'कल' और 'परसों' शब्द संपूर्ण वाक्य का अर्थ बताते हैं।

रचना मुंबई में परसों वापस आएगी।

विवेचन से स्पष्ट होता है कि वाक्य शब्दांश से शब्दों के समूह से अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं किंतु वे शब्द या शब्दांश समूह सार्थक होने चाहिए।

अपनी प्रगति जांचिए

1. वाक्य एक या अनेक पदों का समूह होता है, जो अभीष्ट अर्थ व्यक्त करता है– किसकी परिभाषा है?
   (क) लियोनार्ड ब्लूमफील्ड (ख) डा. कपिलदेव द्विवेदी
   (ग) भर्तृहरि (घ) ए.एच. गार्डिनर
2. ठण्डा, ठण्डा, कूल–कूल शब्दों का प्रयोग किसमें किया गया है?
   (क) उच्चारण (ख) मुहावरा
   (ग) विज्ञापन (घ) कर्ता
3. निम्न वाक्य रचना में शुद्ध वाक्य पहचानिए–
   (क) मीनाक्षी कपड़े धोती है। (ख) मीनाक्षी ने कपड़े खाए।
   (ग) मीनाक्षी ने कपड़े तोड़े। (घ) मीनाक्षी ने कपड़े उड़ाए।
4. वाक्य भाषण और विचारों का अंग है– किसका मत है?
   (क) गार्डिनर (ख) भर्तृहरि
   (ग) डॉ. कपिलदेव (घ) पं. कामता प्रसाद

12.3 वाक्य के भेद

वाक्य की संरचना समझने के लिए वाक्य के अंग को समझना आवश्यक है। वाक्य रचना में कर्ता, क्रिया आदि का होना और सार्थक भाव अभिव्यक्ति होने से ही वह वाक्य अर्थपूर्ण माना जाता है।

दरवाजे पर, मोहन, लगा रहा, चित्र आदि ध्वनि समूह से बने शब्द हैं। स्वतंत्र रूप से इनका अर्थ निकलता है, पूर्ण अर्थ न निकलने के कारण इन्हें वाक्यांश, शब्दांश कहा जाता है।

इन वाक्यांशों की योग्य रचना किए जाने से स्पष्ट अर्थबोध होता है–

जैसे– "मोहन दरवाजे पर चित्र लगा रहा।"

वाक्य के अंग :

अर्थपूर्ण वाक्य के लिए कर्ता, कर्म, क्रिया की आवश्यकता होती है, इसी आधार पर वाक्य के दो प्रमुख अंग माने गए हैं–1. उद्देश्य, 2. विधेय।

1. **उद्देश्य**– जिसके बारे में बात की जाती है या कही जाती है, वाक्य के उस खंड को उद्देश्य कहते हैं। प्रायः कर्ता उद्देश्य होता है।

उदा. – यामिनी बुद्धिमान है। 'यामिनी' कर्ता अर्थात् उद्देश्य है।

वाक्य के उद्देश्य के रूप में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रियार्थक संज्ञा और वाक्यांश प्रयोग में लाए जाते हैं–

टिप्पणी

उदा. –

संज्ञा– गाय एक पशु है।

सर्वनाम– मैं बड़ों की इज्जत करता हूँ।

विशेषण– विद्वान सदा पूजा जाता है।

क्रियाविशेषण– घोड़ा तेज दौड़ता है।

क्रियार्थक संज्ञान– पढ़ना ज्ञान का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

वाक्यांश– जैसा करोगे वैसा पाओगे।

2. **विधेय**– में क्रिया तथा क्रिया का विस्तार कर्म से होता है। वाक्य का वह अंश विधेय है जो उद्देश्य के बारे में सूचना देता है–

उदा. सुमन ने प्रेमचंद की कफन कहानी पढ़ी।

इसमें सुमन उद्देश्य है तो प्रेमचंद की कफन कहानी पढ़ी विधेय है।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

1. सरल या साधारण वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र या मिश्रित वाक्य

रचना के आधार पर वाक्य के तीन प्रमुख भेद हैं। उनका विवेचन आगे किया जा रहा है।

12.3.1 साधारण या सरल वाक्य

जिस वाक्य में एक ही उद्देश्य (कर्ता) और एक ही क्रिया हो, उसे साधारण या सरल वाक्य कहा जाता है।

उदा. – लड़का खेलता है।

इस उदाहरण में लड़का उद्देश्य (कर्ता) है और खेलता है विधेय है।

अन्य उदाहरण–

मीना नाच रही है।	बच्चा सो गया है।
उसने अपने भाई का खाना खाया।	माही स्कूल गया।
भारतीय लोग संस्कारी होते हैं।	गोपी घर चली गई।
अभिजीत खेल रहा है।	ईमानदार आदमी का सम्मान हुआ।
मनीष अधिकारी बन गया।	गोपाल बी.ए. पास हो चुका है।
संध्या हँसकर बोली।	गौरी बाजार गई।

12.3.2 संयुक्त वाक्य

दो या दो से अधिक साधारण वाक्य जब समानाधिकरण समुच्चय बोधकों (जैसे– पर किंतु या अथवा) से जुड़ते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

संयुक्त वाक्य को– और, तथा एवं फिर, इसलिए, परंतु, पर लेकिन, अतः नहीं तो आदि– के जोड़ने से अर्थात् इन शब्दों से दो सरल वाक्यों को जोड़कर बनाया जाता है।

उदा. सूर्योदय हुआ और पंछी आसमान में उड़ गए।

इस वाक्य में सूर्योदय हुआ, पंछी आसमान में उड़ गए दो सरल वाक्य 'और' योजक शब्द से जुड़कर संयुक्त वाक्य बना है।

- सीता गई **और** नीता आई।
- उसने पढ़ाई की **फिर भी** वह फेल हुआ।
- सलमान ने परिश्रम किया **इसलिए** सफल हो गया।
- उसे बहुत मनाया **पर** वह मानता ही नहीं।
- राज बीमार था **अतः** स्कूल नहीं जा सका।
- डिब्बे में रखे चावल हैं **या** गेहूँ हैं।
- मुझे दवा चाहिए **इसलिए** मैं यहाँ तक आया हूँ।
- पहले सवाल का जवाब दो **नहीं तो** मैं पुस्तक नहीं दूँगा।
- मैं कल तुम्हारे घर आने वाला था **लेकिन** बारिश होने लगी।
- गद्य पर टिप्पणी लिखो **अथवा** गद्य का अवतरण स्पष्ट करो।

12.3.3 मिश्र या मिश्रित वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें सरल वाक्य के साथ–साथ कोई दूसरा उपवाक्य भी हो, वे वाक्य मिश्र वाक्य कहलाते हैं। मिश्र वाक्यों की रचना एक से अधिक ऐसे साधारण वाक्यों से होती है, जिनमें एक प्रधान वाक्य होता है, एवं दूसरा वाक्य आश्रित होता है। इस वाक्य में मुख्य उद्देश्य और विधेय के अलावा एक या अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं।

जैसा–वैसा, क्योंकि, यद्यपि–तथापि कि आदि समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़ते हैं। मिश्रित वाक्य में एक मुख्य या प्रधान उपवाक्य और एक से अधिक आश्रित वाक्य होते हैं जो समुच्चयबोधक अव्ययों से जुड़ते हैं।

उदा. जैसा कार्य करोगे वैसा ही फल पाओगे

यदि परिश्रम करोगे तो उत्तीर्ण हो जाओगे

- **उपवाक्य** – यदि कोई वाक्य, एक से अधिक वाक्यों से मिलकर बना हो, तो वे वाक्य के उपवाक्य हैं।

  वाक्यों का ऐसा पदसमूह जिसका अपना स्वतंत्र अर्थ हो और जिसमें उद्देश्य और विधेय हो, उपवाक्य कहा जाता है। ये उपवाक्य निम्नांकित शब्दों से जुड़े होते हैं जैसे– कि, जिससे, जिसे, जिसको, जिसमें, ताकि, जो, जितना, ज्यों–त्यों, क्योंकि, यदि, यद्यपि, जब, जहाँ।

उदाहरण– "राम ने कहा कि मैं पढ़ूंगा", यहां राम ने कहा तथा "मैं पढ़ूंगा" उपवाक्य हैं।

टिप्पणी

- **उपवाक्य के भेद :**

1. **प्रधान उपवाक्य**– संज्ञान या कारक रूप में सहायता करता है। जो गौण उपवाक्य प्रधान उपवाक्य का उद्देश्य (कर्ता) कर्म बनकर संज्ञा या सर्वनाम के स्थान पर प्रयुक्त हो, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।

   उदा. मैं नहीं जानता कि वह कहां है।

2. **विशेषण उपवाक्य**– जो उपवाक्य किसी दूसरे उपवाक्य में आए संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करता है, वह विशेषण उपवाक्य है। जैसे– जो, जैसा, जितना आदि शब्द प्रयोग इसमें किए जाते हैं।

   उदा. वह आदमी जो कल आया था, आज भी आया है।

3. **क्रिया–विशेषण उपवाक्य**– क्रिया विशेषण की तरह व्यवहृत होता है। काल, स्थान से इसका संबंध होता है, जैसे– जहाँ, जिधर, ज्यों, जब आदि।

   उदा. जब पानी बरसता है तब मेंढक बोलते हैं।

आश्रित उपवाक्यों के तीन भेद :

1. **संज्ञा आश्रित**– जब आश्रित उपवाक्य किसी संज्ञा या सर्वनाम के स्थान पर आता है, तो उसे संज्ञा आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

   उदा. वह चाहता है कि मैं यहाँ कभी न आऊँ।

2. **विशेषण आश्रित**– जो आश्रित उपवाक्य मुख्य उपवाक्य की संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है उसे विशेषण आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

   उदा. जो किताब **मेज पर** रखी है वह मुझे पुरस्कार स्वरूप मिली है।

3. **क्रिया विशेषण आश्रित**– जब आश्रित उपवाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया की विशेषता बताता है, तब वह क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य कहलाता है।

   उदा. – जब वह मेरे घर आया तब मैं सो रहा था।

मिश्र वाक्य के कुछ उदाहरण –

पिताजी ने कहा **कि** शाम को जल्दी घर आना।

जैसे ही बादल घिर आए **वैसे** ही बिजली चमकने लगी।

जिस लड़के ने अधिक पौधे लगाए हैं उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

जो दवाएँ तुमने मुझे भेजी थी वे नकली हैं।

जिन्होंने मरीजों की सेवा की है उनका नाम जरूर आएगा।

जहाँ आग होती है **वहाँ** धुआँ जरूर होता है।

12.3.4 वाक्य और पद

वाक्य में शब्द रूप या पद का अटूट संबंध होता है। इस संबंध में दो मत प्रवाह या मत भिन्नता दिखाई देती है।

एक मत है वाक्य की अपेक्षा पद प्रधान होता है। (पदवाद)

दूसरा मत है पद की अपेक्षा वाक्य प्रधान होता है। (वाक्यवाद)

टिप्पणी

1. **अभिहितान्वयवाद (पदवाद)**– इसके प्रवर्तक आचार्य कुमारिल भट्ट हैं। पद की सत्ता को महत्व देते हैं और वे वाक्य को पदों का संयुक्त रूप मानते हैं। अभिधा शक्ति के द्वारा पदों की उपस्थिति के बाद उन पदार्थों के परस्पर (अन्वय) संबंध बोध के लिए 'तात्पर्य' नामक शक्ति को मानते हैं। पदार्थों के अन्वित रूप से वाक्यार्थ का बोध होता है।
2. **अन्विताभिधान (वाक्यवाद)**– इसके प्रवर्तक आचार्य कुमारिल भट्ट के शिष्य आचार्य प्रभाकर गुरु हैं। वाक्य की ही सार्थक सत्ता है और पद उसके तोड़े हुए अंश हैं। वाक्य का समूह हो यह हर समय जरूरी नहीं। प्रसंग, संदर्भ के अनुसार जा, हाँ, कल, परसों शब्द भी अर्थ प्रतीति कराते हैं। अर्थ की दृष्टि से वाक्य पूर्ण या अपूर्ण होने पर भी वाक्य का बोध पूर्णतः श्रोता पर निर्भर करता है।

अपनी प्रगति जांचिए

5. उद्देश्य और विधेय किसके अंग हैं?

(क) पद (ख) वाक्य

(ग) शब्द (घ) शब्दांश

6. सीता गई और नीता आई – वाक्य किस प्रकार का है?

(क) संयुक्त (ख) सरल

(ग) मिश्र (घ) साधारण

7. आ. कुमारिल भट्ट के वाद का नाम क्या है?

(क) वाक्यवाद (ख) पदवाद

(ग) अभिहितान्वयवाद (घ) भाषावाद

8. वाक्यवाद के प्रवर्तक कौन हैं?

(क) आ. कुमारिल भट्ट (ख) आ. वामन

(ग) आ. प्रभाकर गुरू (घ) आ. भर्तृहरि

12.4 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1. (घ)
2. (ग)
3. (क)
4. (ग)
5. (ख)
6. (क)

7. (ख)
8. (ग)

टिप्पणी

12.5 सारांश

वाक्य छोटा हो या बड़ा, उसके द्वारा बात करना, लिखना, सोचना आदि बातें संपन्न होती है। वाक्य के द्वारा वक्ता या व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। वाक्यों की शुद्धता, संरचना की दृष्टि से व्याकरण सम्मत नियमों की जानकारी आवश्यक होती है। अनेक विद्वानों ने भाषा की पूर्ण इकाई वाक्य को माना है। वाक्य शब्द, शब्दांशों या पदों का सार्थक समूह है जो किसी न किसी भाव की अभिव्यक्ति करता ही है।

भाषा शास्त्रियों ने वाक्य और पद को महत्व देते हुए वाक्यवाद और पदवाद की चर्चा की है।

वाक्य की संरचना में कर्ता, कर्म, क्रिया का योग, रचना के आधार पर बने सरल, संयुक्त, मिश्रित वाक्य सृजन को रोचक एवं प्रभावी बनाते हैं।

12.6 मुख्य शब्दावली

- **अधिगम**– सीखना, जानना।
- **साकांक्ष**– जिसके मन में कोई आकांक्षा हो।
- **आजीवन**– पूरे जीवन तक।

12.7 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. वाक्य के प्रमुख अंगों पर प्रकाश डालिए।
2. साधारण वाक्य को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य में अंतर बताइए।
4. वाक्य और पद को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. वाक्य शिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
2. वाक्य को परिभाषित करते हुए उसका स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
3. उपवाक्य किसे कहते हैं– सोदाहरण समझाइए।
4. रचना के आधार पर वाक्य भेद स्पष्ट करते हुए किसी एक को सोदाहरण समझाइए।

12.8 सहायक पाठ्य सामग्री

1. सामान्य भाषा विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. भाषा विज्ञान– डॉ. भोलानाथ तिवारी

खण्ड – 4 रचना

इकाई 13 रचना शिक्षण

टिप्पणी

संरचना

13.0 परिचय
13.1 उद्देश्य
13.2 रचना शिक्षण
13.2.1 कहानी रचना
13.2.2 कहानी–रचना–स्वरूप
13.2.3 मुद्दों पर आधारित कहानी रचना
13.3 निबंध रचना
13.3.1 निबंध के भेद
13.3.2 निबंध लेखन के उद्देश्य
13.4 पत्र–रचना
13.4.1 पत्र की विशेषताएं
13.4.2 पत्र–रचना के प्रकार
13.5 पल्लवन
13.5.1 पल्लवन के विषय : (कुछ प्रारूप)
13.5.2 पल्लवन विषयक कुछ विषय सूत्र
13.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर
13.7 सारांश
13.8 मुख्य शब्दावली
13.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास
13.10 सहायक पाठ्य सामग्री

13.0 परिचय

गद्य की विविध रचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के उपरांत छात्रों में कहानी निबंध, पत्रादि लिखने की प्रवृत्ति जाग्रत होती है। केवल पुस्तकों के पठन से रचना–लेखन संभव नहीं हो सकता। प्रत्येक विधा के विषय, आकार, प्रकार, शैली भिन्नता के कारण उनके रचना–प्रारूप या लेखन प्रक्रिया को समझना जरूरी होता है।

इस इकाई में कहानी, निबंध, पत्र आदि की रचना पर विचार किया जा रहा है। 'पल्लवन' के द्वारा भाव विस्तार करने की विधि को समझाया जा रहा है। इसके आधार पर छात्र स्वयं कहानी, निबंध लिख सकेंगे। पत्र–रचना के द्वारा मित्र, माता–पिता, स्कूल के प्रधानाचार्य, या अन्य प्रकार के पत्र लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। पल्लवन प्रक्रिया के ज्ञान से कठिन, क्लिष्ट भाव–विचारों को सहजता से समझने की क्षमता बढ़ा सकेंगे।

13.1 उद्देश्य

टिप्पणी

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- कहानी, निबंधादि की रचना विधि को समझ पाएंगे;
- कहानी, निबंध, पत्रादि के विविध प्रकारों और उनकी रचना प्रक्रिया को जान पाएंगे;
- 'पल्लवन' से भाव विकसित करने की प्रक्रिया समझकर प्रयोग कर पाएंगे।

13.2 रचना शिक्षण

रचना की प्रक्रिया भी रचनाकार के जीवन में किसी घटना या दुर्घटना की तरह होती है। वह भी अच्छे और बुरे बदलाव से प्रभावित होता है। नकारात्मक बदलाव को सकारात्मक रूप में वह बदलना चाहता है। अतः अच्छी–अच्छी रचनाओं का निर्माण होता है। उसे रचना निर्माण के लिए किसी की खोज करनी नहीं पड़ती। किंतु सामान्य जन, छात्रों के लिए रचना निर्माण की विधि को समझ लेना आवश्यक होता है।

हिंदी साहित्य विस्तृत एवं संपन्न रहा है। इसकी विधाएँ भी अनेक हैं। उन विधाओं में लेखन करने वाले लेखकों की भी कमी नहीं है। उनकी लिखित कृतियाँ असंख्य हैं। ये कृतियाँ कैसे, कहाँ लिखी गईं, उन स्थितियों का प्रतिबिंब भले हमें दिखाई देता हो पर हम उनका लेखन या उनकी रचना नहीं कर सकते। इसलिए रचना–शिक्षण, लेखन–कला के लिए सहायक बन सकता है।

कहानी, निंबध, पत्र एवं पल्लवन जैसी विधाओं की रचना विधि को समझ लेना छात्रों के लिए, उनकी लेखन क्षमता बढ़ाने के लिए, सामाजिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं से संबंधित आवेदन पत्र लिखने की योग्यता की इसकी आवश्यकता रही है। स्वयं लेखन से छात्र सृजनात्मकता का आनंद ले सकते हैं। मोबाइल, टेलीफोन आदि अत्यधिक नए साधनों से भी संपर्क बनाए रखना आसान हैं किंतु पत्र–लेखन से सगे–संबंधियों में जो आत्मीयता बनी रहती है, उसका स्थान कोई नहीं ले सकता। नये आविष्कार, भावाभिव्यक्ति के साधनों की सुविधा होने के बावजूद भी पत्र–लेखन के महत्व को दुर्लक्षित नहीं किया जा सकता। यही तो पत्र–रचना एवं उसके शिक्षण का मूल्य है।

13.2.1 कहानी रचना

रचना प्रक्रिया– रचनाकार के जीवन में घटनाएं तथा दुर्घटनाएं घटित होती हैं, और वे रचना प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। हर रचना के साथ उसका भला–बुरा इतिहास जुड़ा रहता है। घटना, दुर्घटना, अनुभव, अनुभूति को मिलाकर देखें तो वहीं से रचना का आरंभ होता है, क्योंकि रचना प्रक्रिया होते हुए भी प्रतिक्रिया अधिक होती है। प्रसिद्ध कवि गजानन माधव 'मुक्ति बोध' ने रचना प्रक्रिया के तीन स्तर माने हैं– (1) भाव संशोधन (2) सांस्कृतिक पक्ष (3) मनोवैज्ञानिक पक्ष।

भाव संपादन के बाद भाव संशोधन से उसे विशिष्ट से सामान्य बनाने के लिए, उद्देश्यों से प्रेरित होकर निरंतर भावों का संशोधन एवं वेदनात्मकता से रचना का निर्माण करने का प्रयास किया जाता है।

सांस्कृतिक पक्ष के द्वारा सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किया जाता है। इससे मनुष्य विकास, संस्कृति विकास, सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण जो संस्कृति के संवाहक बन सके, उनकी सहायता ली जाती है।

मनोवैज्ञानिक पक्ष के द्वारा भूख से पीड़ित लोग, अन्याय, शोषण, अत्याचार, विषमता आदि को रचना के द्वारा उजागर किया जाता है। प्रेरणादायी विषयों को रचना की कथावस्तु बनाया जाता है, इससे ही कहानी का निर्माण होता है।

कहानी गद्य की विधा है। इससे संबंधित विवेचन पिछली इकाई में किया गया है। यहां केवल कहानी–रचना के लिए कुछ संकेत दिए गए हैं। मनुष्य अपने चारों ओर जो हो रहा है, वह देखे, कुछ सोचे, फिर जो लिखता है उससे कहानी बन जाती है। जीवन से जुड़े हुए घटना–प्रसंगों से बनी कहानी सुनता है। सुनाता है। कुछ अपनी, कुछ दूसरों की बातें, स्वभाव से संबंधित सच्ची बातों को, कल्पना के योग से बताने की कोशिश की जाती है। आरंभ में धर्म प्रचार के द्वारा मौखिक रूप से कहानी का प्रसार हुआ। पंचतंत्र, कथा सरित्सागर वेद ऋचा आदि में कहानियों का भंडार उपलब्ध है। कहानी के लिखित रूप से कहानी पढ़ने में रुचि निर्माण होने लगा हैं। विविध विषयों, लेखन शैली, भाषा आदि की जानकारी कहानियों में मिलती है। समाज की वास्तविकता का कहानी द्वारा साक्षात्कार हो सकता है। कहानी सुनना, पढ़ना, अलग बात है किंतु कहानी लिखने के लिए उसकी रचना प्रक्रिया समझना आवश्यक है। इससे कहानी लिखने के लिए छात्रों को प्रवृत्त किया जा सकता है।

13.2.2 कहानी–रचना–स्वरूप

कहानी रचना के लिए कथानक के लिए ऐसी घटनाओं का चयन किया जाए जिनसे शिक्षा मिल सके। हर व्यक्ति की कहानी, वह जो लिखता है वही कहानी बन जाती है।

कहानी भूतकाल में लिखी जाती है। कम घटनाओं के आधार पर पात्रों की अच्छाई–बुराई को, अच्छे, संक्षिप्त, मौलिक संवादों से उद्देश्यों की ओर कथानक विकसित किया जाने से ही कहानी आकर्षक बनती है। फिर ध्यान रखा जाए कि कहानी का शीर्षक उत्सुकता निर्माण करने वाला हो।

कहानी के तत्वों के बिना कहानी की कल्पना करना असंभव है। कथावस्तु, पात्र–चरित्र चित्रण, संवाद–कथोपकथन, देश–काल, वातावरण, भाषा–शैली और उद्देश्य कहानी के तत्व हैं।

प्रेमचंद की कहानी 'कफन' में सामाजिक विषमता का वर्णन बड़ी ईमानदारी से किया गया है, जिसे पढ़कर पाठक का दिल दहल जाता है। कथानक का विकास– कहानी का आरंभ, विकास, चरम सीमा और अंत दृष्टि से पाठकों को अंत तक प्रेरित करता है। घीसू और उसके बेटे माधव के अंतर्द्वंद्व को रोचक प्रभावपूर्ण शैली में व्यक्त किया गया है चरित्र चित्रण में दोनों पात्रों के आंतरिक संबंध, उनके क्रियाकलापों द्वारा ('कफन' में मिले पैसों से मौज करना) उनके आलस, कामचोर वृत्ति पर प्रकाश पड़ता है। बेटे की बीवी बुधिया की प्रसव–वेदना उसकी उस झोपड़े से बाहर आने वाली चीख, प्रकृति का सन्नाटा, जाड़े की रात, गांव में सन्नाटा वातावरण में सहायक बने हुए प्रसंग, बुधिया की मौत, घीसू माधव कफन के पैसों से नशे में चूर, उछलते–कूदते, बेखबर

होकर गिर पड़ते हैं। मानवीय मूल्यों सद्भावना, आत्मीयता जैसे भावों का पतन हुआ है।

टिप्पणी

घीसू और माधव के जीवन यथार्थ को द्वंद्व एवं वातावरण के द्वारा लेखक ने कथानक का विकास किया है।

कहानी का विषय कोई भी हो कहानीकार अपनी प्रतिभा के सहारे जीवनोपयोगी संदेश देना नहीं भूलता।

उच्च शिक्षा के छात्रों के लिए कहानी पढ़ना, सुनना, समझना और लिखना संभव हो सकता है। किंतु प्राथमिक, उच्च प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों को कहानी लेखन के लिए प्रेरित किया जा सकता है। कहानी रचना के लिए छोटे–छोटे विषय दिए जाते हैं। उनके आधार पर छात्र अपनी कल्पना और क्षमतानुसार कहानी लिखता है। इससे छात्र के लेखन की योग्यता समझ सकते हैं। कहानी भले 70–100 शब्दों में तैयार की गई हो उसके लेखन से उसे आनंद जरूर मिलता है। बाल जगत की अनेक कहानियां इस कोटि में आती हैं।

13.2.3 विषयों पर आधारित कहानी रचना

छोटा गांव–किसान का परिवार–तीन बेटे–सयाने हो गए–बेटों में संघर्ष–पिताजी परेशान–बुढ़ापा–भविष्य की चिंता–बेटों को पास बुलाकर लकड़ी देना–छोटे–छोटे टुकड़े करना–पिताजी के पास टुकड़े ले आना– सबको एक साथ बांधना–एक एक को देना तोड़ न सकना– बेटों का लज्जित होना– सीख।

एकता का बल

चंदनगर नाम का एक छोटा सा गांव था। गांव में अलग–अलग जाति के लोग रहते थे। उसी गांव में मनोहर नाम का धनवान किसान रहता था। उसके खेत में अनेक मजदूर काम करते थे। हर साल अच्छी फसल–उपज होती थी। उसके परिवार में पत्नी और तीन जवान बेटे थे। खाना–सोना बस वे दो काम करते थे। पति–पत्नी दोनों अपने बच्चों से परेशान थे।

संपन्नता होने पर भी मनोहर चिंतित हो रहा था। बुढ़ापे के कारण, बच्चों के भविष्य को लेकर उसकी चिंता बढ़ने लगी थी। ऐसा क्या करें कि सभी समझदारी से अपनी जिम्मेदारी संभाल सके। बहुत दिनों तक सोचते रहे। एक उपाय उसके दिमाग में आया। पत्नी को अपने मन की बात बताई। ठीक है! आज सबके साथ हम बात करेंगे।

शाम के भोजन के समय पिताजी ने बच्चों को समझाया और पास बुलाकर तीनों बेटों को गट्ठर से एक–एक लकड़ी निकाल कर दी। कहा इसके टुकड़े–टुकड़े करके मेरे पास ले आओ, अब नहीं कल सबेरे ले आना। सभी रातभर सो न सके। पिताजी क्या चाहते हैं, किसी की समझ में नहीं आ रहा था। सबेरा होते ही तीनों बेटे लकड़ी के टुकड़े कर ले आए।

पिताजी ने गट्ठर में बंधी लकड़ियों को उठाकर सबके सामने रख दिया और कहा– "इन्हें तोड़कर दिखाओ।" तीनों ने काफी प्रयास किया, किंतु गट्ठर की

टिप्पणी

लकड़ियां टूट न सकी। सभी एक दूसरे की ओर देखने लगे। पिताजी की बात को समझते उन्हें देर न लगी। लज्जित हुए, पछतावा करते हुए पिताजी के चरणों पर नतमस्तक होकर कहने लगे, हम अब झगड़ा नहीं करेंगे। साथ ही रहेंगे। उनके बर्ताव से माता–पिता हर्षित हुए। सीख– एकता में बड़ी शक्ति होती है।

बच्चे या छात्र विषयों के आधार पर छोटी ही क्यों न हो कहानी लिख सकते हैं। बच्चों को इसके अतिरिक्त कहानी रचना के उपाय बताएं जा सकते हैं जैसे–

(1) बच्चों या छात्रों को कहानी पढ़ने के लिए दी जाए। उसके बाद उन्हें वही कहानी अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रेरित किया जाए।

(2) छात्रों को प्राणी, पशु, खेलने वाले बच्चे, तालाब के निकट का जमघट आदि के चित्र दिखाकर उन्हें कहानी लिखने के लिए तैयार किया जा सकता है।

इनसे बच्चों में रुचि पैदा होने लगेगी और वे उक्त तरीकों से कहानी लिखना सीख जाएंगे। बड़ी कक्षाओं के छात्र विविध कहानीकारों की रचनाएँ पढ़कर कहानी लिख सकेंगे तो छोटी कक्षा के छात्र विषयों के या चित्रों के माध्यम से कहानी लिखने की कोशिश करेंगे।

हिंदी कहानी साहित्य में प्रेमचंद की बड़े भाई साहब, कफन, सद्‌गति, बड़े घर की बेटी, पंचपरमेश्वर, नमक का दरोगा आदि प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। मानसरोवर उनका कहानी संग्रह है।

पिंजरे की उड़ान, तुमने क्यों कहा, मैं सुंदर हूँ– आदि यशपाल के कहानी संग्रह हैं।

फांसी, पाजेब, नीलम देश की राजकन्या– जैनेंद्र के कहानी संग्रह हैं। एटम बम, सेठ बांकेलाल– अमृतलाल नागर, ज्ञानरंजन, भीष्म साहनी, अमरकांत, अज्ञेय, प्रसाद, गुलेरी आदि ने कहानियों के क्षेत्र में योगदान दिया है। इनकी कहानियाँ पढ़ने से छात्रों में कहानी–रचना निर्माण करने की रुचि निर्माण हो सकेगा।

अपनी प्रगति जांचिए

1. रचना प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण सोपान कौन से हैं?
   (क) कहानी, चित्र, कथा
   (ख) भाव, संस्कृति और मनोविज्ञान
   (ग) आरंभ, कथन और अंत
   (घ) चरित्र–विकास और द्वंद्व
2. 'कफन' कहानी के घीसू और माधव पात्रों द्वारा जीवन का यथार्थ चित्रित करने वाले कहानीकार कौन हैं?
   (क) प्रेमचंद
   (ख) जैनेंद्र
   (ग) अज्ञेय
   (घ) भीष्म साहनी
3. बच्चों को कहानी रचना के लिए कैसे प्रेरित करेंगे?
   (क) विषयों पर ध्यान देकर
   (ख) कहानियां पढ़कर
   (ग) चित्रों को दिखाकर
   (घ) उपर्युक्त सभी

टिप्पणी

13.3 निबंध रचना

निबंध लेखक के व्यक्तित्व को प्रकाशित करने वाली रचना है किंतु यह गद्यललित रचना है। इसे साहित्य की सृजनात्मक विधा माना जाता है। अन्य विधाओं की अपेक्षा निबंध अधिक स्वतंत्र होने के कारण उसकी परिभाषा करना कठिन है। निबंध के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए निबंध की परिभाषा की गई है।

- **आ. रामचंद्र शुक्ल** : "निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्तियों के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर–उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता है। यही उसकी अर्थ संबंधी व्यक्तिगत विशेषता है। अर्थ संबंधी सूत्रों की टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएँ ही भिन्न–भिन्न लेखकों के दृष्टि पथ को निर्दिष्ट करता है। यही व्यक्तिगत विशेषता का मूल आधार है।"

निबंध में ऐसे ठोस रचना नियमों और तत्वों का निर्देश नहीं किया जा सकता जिनका पालन करना निबंधकार के लिए आवश्यक है। शायद इसीलिए कहा गया है कि निबंध एक ऐसी कलाकृति है जिसके नियम निर्माण लेखक द्वारा ही होते हैं। निबंध में सहज, सरल और आडंबरहीन ढंग से व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति होती है। आधुनिक निबंध के जनक मौन्तेन के अनुसार– "विचारों, उद्धरणों एवं कथाओं का संमिश्रण निबंध है।"

- **हिंदी साहित्य कोश** : "लेखक बिना किसी संकोच के अपने पाठकों को अपने जीवन–अनुभव सुनाता है और उन्हें आत्मीयता के साथ उनमें भाग लेने के लिए आमंत्रित करता है। उसकी यह घनिष्ठता जितनी सच्ची और सघन होगी, उसका निबंध पाठकों पर उतना ही सीधा और तीव्र असर करेगा।"

निबंध में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और सहभागिता का आत्मीय स्तर महत्वपूर्ण गुण हैं। किसी नियम या निर्देश को मानना निबंधकार के लिए बंधन नहीं। वह तो अपनी प्रेरणा और विषयवस्तु की संभावनाओं के अनुसार अपने व्यक्तित्व का प्रकाशन और रचना का संगठन करता है। इसी कारण निबंध में शैली का विशेष महत्व रहा है।

निबंध शब्द– नि+बंध इन दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है– भली प्रकार से बंधी हुई रचना। अर्थात् वह रचना जो विचारपूर्वक, क्रमबद्ध रूप से लिखी गई हो।" निबंध वह गद्य रचना है, जो किसी विषय पर क्रमबद्ध रूप से लिखी गई हो।"

अच्छे निबंध लेखन के सूत्र :

- निबंध लेखन के पूर्व उसका आरंभ, मध्य और उपसंहार में विषय विभाजन हो।
- भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
- विचारों को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाए।
- विचारों की पुनरावृत्ति न हो।
- लेखन समाप्ति के बाद उसे पढ़िए, आवश्यक सुधार कीजिए।
- भाषा संबंधी अशुद्धियों को दूर करें।
- उपयुक्त कथन को यथास्थान जोड़ा जाए।

इन बातों के कारण ही निबंध मौलिक, रोचक बन सकता है।

टिप्पणी

निबंध की विशेषताएँ

- निबंध की भाषा विषयानुरूप हो। आरंभ शीर्षक के चयन से करें।
- विचारों में परस्पर तारतम्यता होनी चाहिए।
- विषय से संबंधित सभी पहलुओं पर चर्चा की जाए।
- अंतिम अनुच्छेद में उपर बताई गई बातों का सारांश होना चाहिए।
- निबंध के पर्याय रूप में संदर्भ, रचना और प्रस्ताव का उल्लेख किया जाए।
- व्यक्तित्व का प्रकाशन हो।
- सहज, सरल और आडंबरहीन भाषा हो।
- निबंधकार की स्वच्छंदता का विशेष महत्व है।
- आत्मप्रकाशन ही लक्ष्य है।
- भूमिका, विषय–विस्तार, उपसंहार–तीन अंगों का ध्यान रखा जाता है।

निबंध लेखन और विशेषताओं के बाद उनके भेदों को समझना होगा।

13.3.1 निबंध के भेद

विषय वस्तु के अनुसार निबंध के निम्न भेद होते हैं–

(1) वर्णनात्मक

(2) विवरणात्मक

(3) विचारात्मक

(4) भावात्मक

(5) आत्मपरक

(1) वर्णनात्मक निबंध : किसी सजीव या निर्जीव पदार्थ का वर्णन वर्णनात्मक निबंध कहलाता है। प्राणी, स्थान, दृश्य, परिस्थिति, व्यक्ति, वस्तु आदि के आधार पर ये निबंध लिखे जाते हैं।

वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक निबंधों को विषय प्रधान माना जाता है। व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य पक्ष, उसकी आदतें, पसंद–नापसंद आदि का इनमें वर्णन किया जाता है। वर्णनात्मक निबंधों में कल्पना का मेल होता है। जैसे– मेरी पहली यात्रा, सपना, मेरा दोस्त, आ. हजारी प्रसाद की कल्पना, अशोक के फूल, भट्ट का मेला–ठेला, माधव प्रसाद मिश्र का रामलीला वर्णन प्रसिद्ध है।

(2) विवरणात्मक निबंध : किसी ऐतिहासिक, पौराणिक, आकस्मिक घटनाओं का वर्णन विवरणात्मक निबंध कहलाते हैं। इसमें यात्रा, मेला, घटना, ऋतु, मैच संस्मरण आदि विवरण दिया जाता है।

उदा. बालकृष्ण भट्ट, भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रताप नारायण मिश्र, शिवभूषण सहाय आदि निबंधकारों ने वर्णनात्मक निबंध लिखे हैं। भट्ट का 'चंद्रोदय' प्रसिद्ध संग्रह है। इसके विषय मेरा देखा हुआ क्रिकेट मैच, दीपावली, हिमालय की सैर, चांदनी रात, जी.एस.टी. का प्रभाव, भारतीय अर्थव्यवस्था, इंटरनेट के दुष्परिणाम आदि हैं।

टिप्पणी

(3) **विचारात्मक निबंध**— किसी गुण, दोष, धर्म आदि का वर्णन जो केवल कल्पना और चिंतनशक्ति के आधार पर किया जाता है। यह श्रमसाध्य होने के कारण इसके लिए विशेष रूप से अभ्यास की आवश्यकता होती है। निबंध लेखन के लिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल, श्यामसुंदरदास आदि प्रबुद्ध लेखकों की रचनाएं पढ़नी चाहिए। इन निबंधों में समाज, परंपरा, आस्था आदि को स्थान दिया जाता है।

विचारात्मक निबंधों में बुद्धि की प्रधानता होती। विविध विषयों को लेकर निबंध एवं निबंधकार प्रसिद्ध हैं— आ. रामचंद्र शुक्ल के "चिंतामणि" से लोभ और प्रीति, क्रोध, श्रद्धा और भक्ति प्रसिद्ध निबंध हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल के पृथ्वी पुत्र, कला और संस्कृति; जैनेंद्र कुमार के जैनेंद्र के विचार, जड़ की बात निबंध संग्रह इसके उदाहरण हैं।

- विचारात्मक निबंध लिखने के लिए विषय को निम्न विभागों में विभाजित करना चाहिए— किस आधार पर निबंध की रचना की जा सकती है?
- अर्थ, परिभाषा, भूमिका और परिचय
- सार्वजनिक या सामाजिक, स्वाभाविक या अभ्यास जन्य।
- संचय, तुलना गुण एवं दोष
- हानि—लाभ
- दृष्टांत, प्रमाण आदि।
- उपसंहार

(4) **भावात्मक निबंध**— इनमें भावों की तीव्रता, कल्पना का मेल, भाव प्रधानता होती है। पं. पूर्ण सिंह के आचरण की सभ्यता, सच्ची वीरता, निबंध प्रसिद्ध हैं। प्रसाद के आकाशदीप, स्वर्ग के खंडहर; प्रतापनारायण मिश्र के— नाम भौ; बालकृष्ण भट्ट के माता का स्नेह, आँसू, रामवृक्ष बेनीपुरी के गेहूं और गुलाब, मीरा नाची रे प्रसिद्ध निबंध हैं। अमीर इरादे—गरीब इरादे— माखनलाल।

(5) **आत्मपरक निबंध**— मानवीय संवेदना, सह्रदयता, आत्मीयता, व्यक्तिगत संबंध आत्मपरक निबंध की विशेषता है। महादेवी वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी प्रसिद्ध निबंधकार हैं। महादेवी का "श्रृंखला की कड़ियां" संग्रह हैं। शांतिप्रिय द्विवेदी के धरातल, प्रतिष्ठान संग्रह हैं। अज्ञेय के आत्मनेपद, लिखी कागज कोरे निबंध संग्रह इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

13.3.2 निबंध लेखन के उद्देश्य

- छात्र अपने विचारों को संकलित करना सीख जाए।
- विचारों को संतुलित तरीके से व्यक्त कर सके।
- भाषा को उपयुक्त रूप से प्रयोग करना सीख सके।
- किसी भी विषय पर छात्र स्वयं विचार करके लिख सके।
- उनका वैचारिक स्तर निश्चित हो सके।

टिप्पणी

- संवेदनात्मक एवं वैचारिक स्तर पर वह परिपक्व हो सके।
- वह अपने विचारों को सकारात्मक रूप दे सके।
- अपने विचारों को दृढ़ता से रख सके।
- आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सके।
- छात्र विचारशील एवं विचार संपन्न बन सके।

इन उद्देश्यों को सामने रखकर पाठ्यक्रम में निबंध रचना को शामिल किया गया है। निबंध रचना या लेखन करते समय निम्न बातों पर गौर किया जाए–

(1) निबंध लेखन करने से पूर्व संबंधित विषय का पर्याप्त ज्ञान हो।

(2) विचारों का क्रमबद्ध रूप हो।

(3) भाषा रोचक एवं सरल हो।

(4) वाक्य छोटे–छोटे तथा प्रभावशाली हों।

(5) अनावश्यक बातों को टाल दें, निबंध संक्षिप्त हो।

(6) व्याकरण के नियम, विराम चिन्हों पर विशेष ध्यान दें।

(7) भाषा की वर्तनी पर ध्यान दें।

(8) आरंभ, मध्य या उपसंहार में सूक्ति, उक्ति, कविता का उल्लेख करें।

(9) निबंध की शब्द–सीमा का ध्यान रखें।

(10) विषय से संबद्ध पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त करें।

(11) निबंध का लेखन अनुच्छेदों में करें, अनुच्छेद एक दूसरे से जुड़े हों।

(12) निबंध के लिए आवश्यक सामग्री, अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करें।

हिंदी के निबंधकार और उनके निबंध/निबंध संग्रह

छात्र अधिकाधिक निबंधकारों के निबंध पढ़कर उनके विषय, लेखन एवं भाषा शैली का ज्ञान प्राप्त करके, निबंध लेखन के लिए प्रवृत्त हो सकते हैं। निबंध लिखना आसान तो है नहीं किंतु निबंध में लेखक को अपने भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति–स्वतंत्रता गद्य की अन्य विधाओं से अधिक होती है।

हिंदी साहित्य में अनेक दिग्गज हैं जिनके निबंध एवं निबंध संग्रह प्रसिद्ध है–उदा.

आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के कुटज, शिरीष के फूल आदि निबंध संग्रह हैं जिनमें भारतीय संस्कृति, प्रकृति प्रेम की झलक मिलती है।

कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" के जिंदगी मुस्ककाई, महके आँगन चहके द्वार, बाजे पायलिया घुँघरू आदि निबंध संग्रह हैं।

पं. शांतिप्रिय द्विवेदी के – धरातल, प्रतिष्ठान, आधान, वृत्त और विकास निबंध संग्रह हैं। संवेदना और भावुकता के कारण विषयों का आत्मीयता पूर्ण प्रतिपादन किया गया है।

अज्ञेय के – आल बाल, आत्मपरक, आत्मनेपद, लिखि कागज कोरे भवन्ती आदि निबंध संग्रह है। अनुभवी, चिंतक भारतीयता के समर्थक हैं।

रामवृक्ष बेनीपुरी के मेहू और गुलाब, वन्देवाणी विनायकी संग्रह हैं। मानव जीवन, कला एवं संस्कृति के दर्शन निबंधों में होते हैं।

अध्यापक पूर्ण सिंह के – आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता केवल तीन प्रसिद्ध निबंध हैं। इनमें शांति, किसान, मजदूरों की भावनाओं का यथार्थ वर्णन किया है।

डॉ. गुलाबराय के मन की बातें, मेरे निबंध संग्रहों में विचारात्मकता है। इनके अतिरिक्त पं. विद्या निवास मिश्र, 'हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी, रघुवीर सहाय, भवानीप्रसाद मिश्र आदि अनेक निबंधकारों के निबंध संग्रह प्रसिद्ध हैं।

अपनी प्रगति जांचिए

4. निबंध लेखक अपने मन की प्रवृत्तियों के अनुसार स्वच्छंद गति से इधर–उधर फूटी हुई सूत्र शाखाओं पर विचरता है– यह किसका मत है?

   (क) डॉ. गुलाब राय (ख) आ. हजारी प्रसाद द्विवेदी

   (ग) आ. रामचंद्र शुक्ल (घ) अज्ञेय

5. आधुनिक हिंदी निबंध का जनक किसे माना गया है?

   (क) भारतेंदु हरिश्चंद्र (ख) मान्तेन

   (ग) कन्हैयालाल मिश्र (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी

13.4 पत्र–रचना

दूर स्थित अपने परिचितों से संबंध स्थापित करने के लिए या विचार–विमर्श करने के लिए पत्र एक महत्वपूर्ण साधन है। पत्र एक व्यक्ति या संस्था द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था को भेजा गया संदेश है। जिसमें कुछ जानकारी और सूचना भेजी जाती है या मांगी जाती है। इसमें लिखने वाला अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त करता है कि पढ़ने वाला उसे समझ जाए। पत्र मनुष्य और मनुष्य के बीच संबंधों की अटूट श्रृंखला है, अर्थात् पत्र अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है।

पत्र–लेखन एक कला है। इसलिए सभी लोग इसमें निपुण नहीं होते। विचारों की संपन्नता होते हुए भी क्या लिखें? कैसे लिखे? इस संभ्रम में विचारों की श्रृंखला टूट जाने से पत्र लिखना अधूरा रह जाने से लिखने वाला व्यक्ति दुःखी हो जाता है। पत्र–लेखन की कला से अवगत होने के लिए उसका शिक्षण, अभ्यास करना होता है। अपने विचारों को सुव्यवस्थित और स्पष्ट रूप में लिखने से औपचारिकता के स्थान पर अपनेपन की भावना का निर्माण होता है। पत्र एक प्रकार से प्रेषक के दूत का दायित्व निभाता है।

पत्र लिखते समय मन स्थिर होना चाहिए। अपने विचारों को विषय पर केंद्रित करके, संदर्भों से युक्त प्रामाणिक जानकारी सार्थक और समुचित शब्दों में बद्ध करके पत्र लिखना चाहिए। पत्र के विषयानुसार उसका स्वरूप छोटा या बड़ा हो सकता है। प्रशासन, व्यापार, समाज की सुविधा एवं समस्याओं के संदर्भ में पत्र की आवश्यकता होती है।

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी लेखक जेम्स हाडल के मतानुसार "जिस प्रकार कुंजियां मंजूषाओं के पत्र लेखन की एक कला है, जो दो व्यक्तियों के विचारों को साहित्यिक तकनीक में समेटकर प्रस्तुत करती है। पत्र मनुष्य के विचारों का आदान–प्रदान सरल, सहज, लोकप्रिय तथा सशक्त माध्यम से करता है।"

'पत्र' का शाब्दिक अर्थ है, ऐसा कागज जिस पर कोई बात लिखी या छापी जाती है। पत्र एक–दूसरे के बीच आत्मीय संबंध स्थापित करता है जो बात हम मौखिक रूप से कहने में संकोच करते हैं, उसे पत्र के माध्यम से लिखित रूप में बेझिझक अभिव्यक्त कर सकते हैं।

आजकल बातचीत करने के अनेक साधन उपलब्ध हैं– टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स आदि। फिर पत्र–लेखन सीखना क्यों? फोन आदि पर दी गई जानकारी अस्थायी होती है। विद्यालय, सरकारी तथा अन्य संस्थाओं के अधिकारियों को जानकारी देने के लिए पत्र लिखना पड़ता है। इससे दस्तावेज स्थायी रूप ले लेता है।

मनुष्य के भावों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पत्राचार से होती है। मानवीय संबंधों की नींव पत्र सुदृढ़ करता है। अतः व्यावहारिक जीवन का यह सेतु है।

पत्र मनुष्य के भावों और विचारों को दूसरों तक संप्रेषित करने का सहारा है। क्योंकि यह व्यावसायिक, सामाजिक, कार्यालय से संबंधित भावों को प्रकट करने का साधन है।

मित्र–परिजनों से आत्मीय संबंध एवं संपर्क स्थापित करने का माध्यम जिससे प्रेम, सहानुभूति, क्रोध के भाव व्यक्त किए जा सकते हैं।

कार्यालय अेर व्यवसाय के संबंध में मुद्रित रूप से प्राप्त पत्र का अधिक महत्व होता है क्योंकि मुद्रित रूप सुरक्षित रखा जा सकता है।

छात्रों के जीवन में भी इसका काफी महत्व रहा है– स्कूल से अवकाश लेना, फीस माफी, स्कूल छोड़ना, स्कॉलरशिप पाने के लिए, व्यवसाय चुनने, नौकरी प्राप्त करने के लिए पत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पत्र सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाए रखने का माध्यम है। पत्र भविष्य के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

पत्र के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं–

- पत्र रचना या लेखन की भाषा– सरल, सुबोध हो, क्लिष्ट, कठिन शब्द प्रयोग एवं पांडित्य प्रदर्शन न किया जाए।
- आकार– पत्र संक्षिप्त हो, अनावश्यक चर्चा न हो।
- क्रम– महत्वपूर्ण बातें पहले, अनंतर दूसरी बातें बताई जाएँ।
- सभ्यता– कटु शब्द प्रयोग न किए जाएं, विनम्र शब्दों में संबंधों के अनुसार संबोधन जिनसे आत्मीय संबंध बने रहते हैं।
- लिखावट– 'पत्र' का कागज साफ, सुथरा हो, कागज पर लिखावट सुंदर हो, इससे पत्र पढ़ने में आनंद आ सकता है।

टिप्पणी

13.4.1 पत्र की विशेषताएं

अच्छी पत्र रचना की निम्न विशेषताएँ मानी जाती हैं–

- **प्रभावोत्पादकता**– प्रथम प्रभाव स्थायी होता है जैसे आकर्षक वेशभूषा में मनुष्य– अर्थात् अच्छे दर्जे का कागज, हासिया छोड़कर सुंदर अक्षरों में लिखाई, लेखन को आकर्षक बनाती है।
- **सुगठित ढांचा**– पत्रों के विविध अंगों की जानकारी से पत्र का रूप अच्छा बनता है। जैसे– प्रेषक का नाम, पता, तारीख

– प्राप्तकर्ता का नाम, पता

– विषय एवं संदर्भ

– संबोधन

– विषय वस्तु–मूल कथ्य

– आभार एवं अभिवादन

– हस्ताक्षर

- **विषय की अभिव्यक्ति**– पत्र से व्यक्ति का मानसिक स्तर, विषय का ज्ञान स्पष्ट होता है। विषयानुसार अभिव्यक्ति, स्पष्टता, मौलिकता, शुद्धता, विनम्र एवं दृढ़ सम्प्रेषण आदि विशेषताओं के कारण प्रेषक की बौद्धिकता प्रकट होती है।
- **विनम्रता और शिष्टता** : इससे मनोवैज्ञानिक प्रभाव स्पष्ट होता है। उच्च अधिकारी, तथा अन्य अधीनस्थों हेतु विनम्र शब्दों के प्रयोग से शिष्टता व्यक्त होती है।
- **भावपक्ष पर नियंत्रण** : व्यक्तिगत पत्र में भावपक्ष प्रबल होता है, सरकारी पत्रों में नहीं। वैयक्तिक संबोधन का उच्चाधिकारी के लिए प्रयोग अयोग्य होता है। औपचारिकता की अपेक्षा वहां मर्यादाओं का पालन करना आवश्यक है।
- **क्रमबद्धता** : भावों की शुद्धता एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए विचारों की क्रमबद्धता रखना अनिवार्य है। एक विचार एक अनुच्छेद में व्यक्त होना चाहिए।
- **बोलचाल की भाषा का प्रयोग** : व्यक्तिगत पत्रों में इसका प्रयोग होता है। किंतु सरकारी एवं व्यावसायिक पत्राचार बोलचाल की हिंदी में होने चाहिए। आज तक अंग्रेजी और हिंदी में पत्राचार हो रहा है।
- **विराम चिह्नों का उचित प्रयोग** : अर्थ का अनर्थ न हो, इसलिए विराम–चिह्नों का उचित प्रयोग, शुद्धता पर ध्यान दिया जाए।
- **उद्देश्यपूर्णता** : पत्र अधूरा न हो, लिखे हुए पत्र से जिज्ञासा शांत होने पर पत्र की परिपूर्णता हो सकती है।
- **सद्भावना** : शिकायती पत्रों में विशेष रूप से इसका ध्यान रखा जाता है। धमकी देने वाला शब्द प्रयोग न करें। संयम रखना चाहिए। पत्र रचना की

विशेषताओं के साथ–साथ पत्रों के भाग हैं– शीर्षक, संबोधन/अभिवादन, विषय वस्तु, मंगल कामनाएं और अंत।

13.4.2 पत्र–रचना के प्रकार

(अ) अनौपचारिक पत्र : अनौपचारिक पत्र के द्वारा दूरस्थ सगे, संबंधियों, परिवार के सदस्यों से निकट के संबंध स्थापित हो जाते हैं। इनमें खास बात यह है कि पत्र लिखने वाला और पत्र को प्राप्त करने वालों के बीच मधुर संबंध होते हैं, उनमें पत्र से प्यार बढ़ता है। सामाजिक पत्राचार भी इसके अंतर्गत आता है। निमंत्रण पत्र, बधाई–पत्र, सांत्वना या संवेदना–पत्र आदि इसके उदाहरण हैं।

जन्मदिन, विवाह, नामकरण आदि के लिए निमंत्रण, किसी की सफलता प्राप्ति पर बधाई, अनिष्ट या किसी की मौत पर शोक संवेदना व्यक्त की जाती है। इन पत्रों को निजी पत्र, व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है। अनौपचारिक पत्रों के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं–

निमंत्रण–पत्र

जन्मदिन, उद्‌घाटन समारोह, सेवानिवृत्ति, विवाह, फर्म खोलने, सत्य–नारायण पूजा आदि के लिए निमंत्रण पत्र तैयार किया जाता है। उनका प्रारूप भिन्न–भिन्न रहता है।

जन्मदिन के लिए निमंत्रण–पत्र

29ए विजयनगर

नई दिल्ली

22.08.2021

प्रिय मित्र राकेश,

सप्रेम नमस्ते।

आपका पत्र आज प्राप्त हुआ। समाचार मिले। बड़ी खुशी की बात है कि हमारा पोता विजय पांच साल का होने वाला है। इसी उपलक्ष्य में उसका जन्मदिन समारोह हमारे निवास स्थान पर 30 मार्च, संख्या 7.00 बजे संपन्न होने वाला है। आप सब जरूर आना। सभी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जन्मदिन समारोह हम अलग ढंग से मनाने जा रहे हैं। आने पर तुम्हें पता चलेगा। भाभी जी और गुड्‌डी को साथ ले आना।

यहाँ पर सब कुशल मंगल है। आशा है कि आप सभी स्वस्थ और सानंद होंगे।

आपका मित्र,

गोविंद

बधाई पत्र

वार्षिक परीक्षा में सर्वप्रथम आने के कारण सहेली को पत्र

202 बी स्टेट बैंक कॉलोनी

जालना

टिप्पणी

22.08.2021

प्यारी सहेली अनु।

सस्नेह नमस्कार।

कल ही समाचार पत्र में तुम्हारी सफलता का संदेश पढ़ा। मुझे इस बात की बहुत खुशी हुई कि तुमने 12वीं कक्षा में केवल स्कूल में नहीं अपितु नागपुर विभाग में सर्वप्रथम आई हो। तुम्हें हार्दिक बधाई देती हूं। तुमसे यही आशा थी। तुम्हारी लगन, जिद और मेहनत पर भरोसा था। तुमने अपना और परिवार का नाम रोशन किया, धन्यवाद देती हूँ।

ईश्वर से प्रार्थना है कि जीवन में तुझे सफलता मिलती रहे। आगामी शिक्षा एवं परीक्षाओं में भी तुझे सफलता मिलती रहे, यह उम्मीद करती हूं। मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।

दादा, दादी को प्रणाम, छोटू को प्यार भरा आशीष।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारी वीणा

सांत्वना–समवेदना–शोक पत्र

107, लोहिया बाजार,

ग्वालियर

22.08.2021

प्रिय सरोज,

आपको ज्येष्ठपुत्र वधू नयना के असामयिक निधन की घटना से मुझे बहुत दुःख हुआ। मृत्यु तो अपने वश में नहीं है। पहाड़ जैसी इस महान घटना में धैर्य धारण करना होगा। आजतक तुम अनेक संकटों से जूझती आई हो। किंतु संकट असहनीय ही है। अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी भी तुम्हें संभालनी है।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूं कि मृत–नयना की आत्मा को शांति दे और शोकाकुल परिवार को शोक सहन करने की शक्ति दे।

तुम्हारी सहेली,

सविता

शुभकामना–पत्र

अपने मित्र सचिन को दीपावली की शुभकामनाएं देते हुए पत्र–

112 मोहननगर

औरंगाबाद

तारीख–23.08.2021

प्रिय मित्र सचिन,

नमस्ते।

टिप्पणी

आशा करता हूं कि तुम सकुशल होंगे। तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है। कोराना–19 की वजह से सभी परेशान हैं। महाविद्यालय बंद हैं। ऑनलाईन पढ़ाई चल रही है। दीवाली का त्यौहार जल्द आ रहा है। किंतु परीक्षाओं के कारण छुट्टियां केवल चार दिनों की मिलने वाली है। अतः हम दिवाली की छुट्टियों में इस वर्ष मिल नहीं सकेंगे।

मित्र, दिवाली के इस महान पर्व में लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। इसी दिन राम, रावण का वध करके, लक्ष्मण और सीता के साथ अयोध्या पधारे थे। उनके आने की खुशी में सारी अयोध्या दीपों से जगमगा उठी थी। उसी दिन से यह त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। दीपावली प्रसन्नता एवं भाईचारा का त्यौहार है। मैं आशा करता हूं कि तुम्हारे जीवन में भी यह त्यौहार ढेर सारी खुशियां ले आएगा। चाचा–चाची को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा मित्र,

राकेश

(ब) औपचारिक पत्र :

अधिकारी एवं व्यवसाय से संबंधित पत्र, जिनमें उद्देश्य का होना आवश्यक है। व्यावसायिक और कार्यालयी या शासकीय पत्रों का इसमें समावेश होता है। किसी सरकारी या प्राइवेट कार्यालयों से जुड़े व्यक्तियों या अधिकारियों को औपचारिक पत्र लिखे जाते हैं। ये व्यक्ति सामान्यतः अपरिचित होते हैं।

ऐसे पत्र स्कूल के प्रधानाचार्य, सरकारी विभाग के अधिकारियों, अखबार के संपादकों के नाम, नगर निगम के मेयर, बिजली या पानी विभाग के अधिकारियों या लोक निर्माण के अधिकारियों आदि को लिखे जाते हैं। इन पत्रों की भाषा शिष्टतापूर्ण होती है। कम शब्दों में समस्याओं को प्रभावपूर्ण तरीके से लिखना पड़ता है।

अवकाश प्राप्ति, छात्रवृत्ति की मांग, खेल की सामग्री मंगवाने, स्थानांतरण, वेतन वृद्धि, बिजली संकट, दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए संपादक, अपराधों को रोकने के लिए पुलिस अधीक्षक, बिजली–पानी के बिल को माफ करने, स्कूल में प्रवेश के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखे जा सकते हैं।

जानकारी के लिए पत्रों के कुछ नमूने दिए जा रहे हैं। आवेदन पत्रों का स्वरूप विषयानुसार बदलता है। अतः आवेदन लेखन की बातों का ज्ञान होना चाहिए।

आवेदन पत्र का स्वरूप

व्यावहारिकता और विषयों की समस्याओं के संदर्भ में छात्रों, कर्मचारियों एवं जनसामान्य को आवेदन पत्र लिखने पड़ते हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य, विश्वविद्यालय के कुलपति, कुल सचिव, परीक्षा नियंत्रक आदि को छात्र विषय परिवर्तन, चरित्र प्रमाण पत्र, प्रवेश–नियमों में छूट, परीक्षा में बैठने की अनुमति आदि विषयों से संबंधित आवेदन पत्र लिख सकते हैं।

कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारी, कार्यालय, संस्थान के अधिकारियों को संबोधित करके आवेदन पत्र लिख सकता है। अवकाश की स्वीकृति, स्थानांतरण, वेतन वृद्धि, पदोन्नति, आवास सुविधा आदि से संबंधित आवेदन पत्र लिख सकते हैं।

सामान्य जन की दैनिक जीवन की समस्याओं के लिए विभिन्न विभागों एवं कार्यालयों में आवेदन देना पड़ता है। समस्या निराकरण के लिए संबंधित अधिकारियों को आवेदन–पत्र द्वारा प्रार्थना करनी पड़ती है। इसमें व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक समस्याएं शामिल होने के कारण विषय सीमा बहुत बड़ी बन जाती है। बिजली, पानी, कूड़ा–कचरा, तार, सड़क, फोन आदि से संबंधित समस्या आवेदन–पत्र के विषय बन सकते हैं।

आवेदन पत्र लेखन की कुछ महत्वपूर्ण बातें– इन पर ध्यान दिया जाए।

- सबसे ऊपर दायीं ओर तारीख तो पत्र के अंत में बायीं ओर भी तारीख लिखें।
- बायीं ओर सेवा में लिखें– फिर अधिकारी का पद, कार्यालय/स्थान लिखें।
- पत्रारंभ में महोदय, श्रद्धेय, आदरणीय, मान्यवर आदि संबोधन का प्रयोग हो, (जैसे– प्राचार्य, गुरुजनों के लिए आदरणीय, श्रद्धेय का प्रयोग)
- पत्र के मध्य भाग में विषय लिखें।
- संबोधन के बाद मूल पत्र का आरंभ करते हुए सविनय है कि, सादर निवेदन है कि– का प्रयोग किया जाए।
- आवेदन में बातों का अलग–अलग अनुच्छेदों में उल्लेख किया जाए।
- पत्र के अंत में आभार सूचक शब्दों का प्रयोग करें– स्वीकृति देने की कृपा करें। मैं सदा आपका आभारी रहूंगा, आशा है– आदि
- पत्र के अंत में भवदीय, आज्ञाकारी, कृपाकांक्षी आदि लिखकर हस्ताक्षर तथा हस्ताक्षर के नीचे नाम, पद। छात्र ने अपनी कक्षा आदि का उल्लेख करना है।
- आवेदन कर्ता सामान्य व्यक्ति हो तो अपना नाम, पता भी दे।
- पत्र व्यावसायिक संस्थान के अधिकारी को देना हो तो आवेदन में ऊपर तारीख से पहले नाम लिख सकता है।

भाई के विवाह हेतु तीन दिनों के अवकाश हेतु प्रधानाचार्य को पत्र–

परीक्षा भवन,

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

केंद्रीय विद्यालय, जालना

जालना

तारीख 23–08–2021

विषय– अवकाश प्राप्ति हेतु पत्र

श्रीमान,

सविनय निवेदन करती हूं कि मैं आपके विद्यालय में बारहवीं की छात्रा हूं। महोदय, अगले सप्ताह में मेरे बड़े भाई का विवाह होने जा रहा है। अतः मुझे सिर्फ तीन दिन का अवकाश चाहिए।

महोदय, मुझे आशा है कि दि. 26 अगस्त 2021 से 28 अगस्त 2021 तक का अवकाश प्रदान करने की कृपा करेंगे।

आपकी आज्ञाकारी छात्रा

×××

टिप्पणी

पुस्तकों की मांग करते हुए पुस्तक विक्रेता को पत्र

परीक्षा भवन

प्रकाशक,

लोकभारती, प्रकाशन,

इलाहाबाद।

विषय– पुस्तकें मंगवाने हेतु प्रार्थना पत्र

मान्यवर,

निवेदन है कि मुझे निम्न पुस्तकें यथाशीघ्र भेजने का प्रबंध करें–

कविता का मन – नामवर सिंह	10 प्रतियाँ
गांव का मन – विद्यानिवास मिश्र	10 प्रतियाँ
लोग भूल गए – रघुवीर सहाय	10 प्रतियाँ
हिंदी व्याकरण – पं. कामता प्रसाद	5 प्रतियाँ

महोदय, मैं सभी पुस्तकों का मूल्य आपको बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज रही हूं। पुस्तकें कोरियर या रेल पार्सल द्वारा भेजने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

स्व. शिरीष चौक, नंदुरबार

नौकरी के लिए आवेदन–पत्र

सेवा में,

प्रबंधक महोदय,

केन्द्रीय विद्यालय, जलगांव

विषय– नौकरी के लिए आवेदन पत्र

दैनिक लोकमत द्वारा पता चला कि आपके विद्यालय में हिंदी शिक्षक की जरूरत है। मैंने पुणे विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। लेखन–पठन में मुझे रुचि है। मेरा परिचय निम्नांकित है–

नाम– मनीष शर्मा

पिता का नाम– मोहन शर्मा

जन्मतिथि– 31–12–81

पता– 107 दौलत नगर, जलगांव।

टिप्पणी

शैक्षणिक योग्यताएँ

(1) पुणे विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी 2009

(2) पुणे विश्वविद्यालय से बी.एड. 2013

विशेष योग्यता

(1) बी.ए. में विश्वविद्यालय में सर्वप्रथम

(2) लेखन में रुचि, अब तक दो पुस्तकें प्रकाशित की है।

अनुभव– वर्तमान में अंग्रेजी स्कूल में हिंदी पढ़ा रहा हूं।

दो वर्ष के अनुभव का प्रमाण–पत्र संलग्न है।

यदि श्रीमान् कृपावश उक्त पद पर नियुक्ति की जाए तो मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं कड़ी मेहनत और लगन से अध्यापन कार्य करूंगा जिससे आप संतुष्ट होंगे।

भवदीय,

मनीष शर्मा

107, दौलत नगर

जलगांव

तारीख 31.08.21

मनीऑर्डर की प्राप्ति न होने का शिकायत पत्र अधीक्षक पोस्ट ऑफिस को भेजना है–

शिकायत पत्र

सेवा में,

अधीक्षक

मुख्य डाक घर, जलगांव

तारीख–23–08–2021

विषय– मनीऑर्डर की प्राप्ति न होने पर कार्यवाही हेतु पत्र।

महोदय,

मैं जलगांव में रहता हूं। मेरे पिताजी ने 15 अगस्त को 3,000 रुपये का मनीऑर्डर (रसीद नं. ×××) जालना से भेजा है। किंतु आज तक मनीऑर्डर मुझे नहीं मिला। इस संदर्भ में मैंने क्षेत्र पोस्ट ऑफिस के क्लर्क से संपर्क किया। किंतु उनका यह कहना है कि इस बारे में उन्हें कुछ भी पता नहीं है।

एम.एस.सी. की परीक्षा का फॉर्म भरने के लिए मैंने पैसे मंगाए। तीस अगस्त तक फॉर्म भरना है। नहीं तो मेरा पूरा साल बरबाद हो जाएगा। आपसे निवेदन है कि इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाएं और जल्द से जल्द मुझे मनीऑर्डर के पैसे दिलवाएं।

मुझे विश्वास है कि आप मेरी समस्या पर ध्यान देकर उचित कार्यवाही करेंगे।

मैं सदैव आपका आभारी रहूंगा।

धन्यवाद।

भवदीय,

मुकेश पाण्डेय

107, दौलतनगर,

जलगांव

टेलीफोन नं. 2235789

दुर्घटनाओं की जानकारी देते हुए संपादक को पत्र

परीक्षा भवन,

सेवा में,

प्रधान संपादक,

दैनिक भास्कर

तारीख–

विषय– बस चालक की असावधानी से हुई दुर्घटना का समाचार

मान्यवर,

मैं आपके समाचार पत्र का नियमित पाठक हूँ। समाचार पत्र के द्वारा दैनिक जीवन में अनेक दुर्घटनाओं की सही जानकारी आपके समाचार पत्र से मिलती है। परसों मैं गांव से शहर की ओर बस से सफर कर रहा था। अचानक एक ट्रक की बस को ठोकर लगी और वह उलटा–पुलटा हो गई। दो लोगों की मौत हुई, दस–बारह लोग घायल हो गए। चार–पांच लोग मेरे साथ मदद कार्य में जुट गए। ट्रक चालक वहां से भाग निकला।

दुर्घटना का कारण, ट्रक चालक द्वारा सड़क के नियमों को तोड़ना तथा शराब पीकर ट्रक चलाना था। मोबाइल से पुलिस प्रशासन से बात की। पुलिस के घटना–स्थल पर पहुंचने से पहले ही एक मां की मौत हो गई और साल–दो साल की भूखी बच्ची मृत मां से लिपट कर रो रही थी। लगभग एक घण्टे के बाद पुलिस की मदद से मामले की जांच आरंभ हुई।

महोदय, मैंने आंखों देखी घटना को मोबाइल में चित्र, छवियों के रूप में कैद किया है, उन्हें भेज रहा हूं। मनमाने ढंग से ट्रक–बस चलाने वाले चालकों पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए। आप अपने शब्दों में दुर्घटना का समाचार प्रकाशित करेंगे तो अन्य चालक सचेत हो जायेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

×××

कॉलोनी में बिजली की समस्या हेतु बिजली अभियंता को पत्र

परीक्षा भवन

सेवा में,

मुख्य अभियंता,

बिजली विभाग, रिंग रोड

जलगांव

तारीख 23–08–2021

टिप्पणी

विषय– हमारी कॉलोनी में बिजली की समस्या बढ़ने हेतु।

श्रीमान,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि स्टेट बैंक कॉलोनी, गली नं. A112, जलगांव में हम रहते हैं। महोदय, हमारी कॉलोनी में लगभग दो हफ्तों से बिजली की समस्या चल रही है। कभी दिन में तो बहुत बार रात में दो–चार घंटे बिजली गुल हो जाती है। गर्मी के दिनों में हम कॉलोनीवासी अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

महोदय, बिजली न होने के कारण बच्चे, बूढ़े लोगों की नींद हराम होने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है।

अतः महोदय से विनम्र निवेदन है कि शीघ्रातिशीघ्र इस क्षेत्र के लाइनमैन को भेजकर बिजली की लाइन को ठीक करने की कृपा करें ताकि कॉलोनी के सभी लोग चैन की सांस ले सकेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

×××

रिंगरोड, जलगांव

शहर में बढ़ते हुए अपराधों को रोकने हेतु पुलिस अधीक्षक को पत्र

सेवा में,

पुलिस अधीक्षक,

जिला पेठ, जलगांव

तारीख–23–08–2021

विषय–शहर में बढ़ते हुए अपराधों को रोकने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन इस प्रकार है कि हमारे शहर में कई महीनों से गुंडों, चोरों द्वारा दिन–दहाड़े लड़कियों के साथ छेड़छाड़, गाली–गलौच और चोरी की घटनाएँ बढ़ रही हैं। पुलिस प्रशासन से भी ये लोग नहीं डर रहे हैं। अतः लड़कियों का घर से बाहर निकलना कठिन हो गया है। स्कूल, ऑफिस, बैंक, बाजार जाने में भी वे डर रही हैं।

अतः महोदय, से निवेदन है कि इन गुंडों, चोरों, आवारा–गर्दी करने वालों पर कानूनी तौर पर कठोर कार्रवाई की जाएं। ताकि सभी लड़कियां अपने आपको सुरक्षित महसूस कर सकें। घर–बाहर के जरूरी काम वे निपटा सकें।

धन्यवाद।

×××

जलगांव (महाराष्ट्र)

उपर्युक्त अनौपचारिक एवं औपचारिक पत्र रचना–लेखन विधि के आधार पर विविध प्रकार के पत्रों को लिखने की क्षमता निर्माण हो सकेगी।

अपनी प्रगति जांचिए

6. दूर स्थित अपने परिचितों से संबंध स्थापित करने या विचार–विमर्श करने का महत्वपूर्ण साधन कौन–सा है?
   (क) औपचारिकता (ख) अनौपचारिकता
   (ग) पत्र–लेखन (घ) संदेश
7. भविष्य हेतु सुरक्षित दस्तावेज किसे माना गया है?
   (क) पत्र (ख) पत्र–पत्रिका
   (ग) निवेदन (घ) सूचना
8. बधाई पत्र, सांत्वना पत्र, शुभकामना पत्र, पत्र के किस भेद के उदाहरण हैं?
   (क) सरकारी पत्र (ख) औपचारिक पत्र
   (ग) व्यावसायिक पत्र (घ) अनौपचारिक पत्र

13.5 पल्लवन

'पल्लवन' का अर्थ है, बढ़ाना या विकास करना। किसी भाव का विस्तार करना। इसमें किसी उक्ति, वाक्य सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ का विस्तार किया जाता है। विस्तार की आवश्यकता तभी होती है, जब मूल भाव संक्षिप्त, सघन या जटिल हो। इसी भाव को पल्लवन कहा जाता है।

पल्लवन व्यास शैली में लिखा होता है पल्लवन के लिए दिए गए वाक्य या उक्ति को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। इसमें सरल शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

पल्लवन की रचना करते समय उसके भाव एवं भाषा की अभिव्यक्ति पूरी तरह से स्पष्ट, मौलिक और सरल भी होनी चाहिए। उसी प्रकार लघुता का भी ध्यान रखें। अनावश्यक बातों का विस्तार नहीं करना चाहिए।

पल्लवन एक अनुच्छेद में किया जाता है और एक अनुच्छेद में 100–125 शब्दों का उपयोग किया जाता है। पल्लवन करते समय किसी भी विधि अर्थात् कोई भी तरीका अपनाया जाए किंतु उसका उद्देश्य वही रहना चाहिए जो लेखक का उद्देश्य है वही उससे स्पष्ट हो। पल्लवन में संदर्भ एवं प्रसंग को कोई स्थान नहीं दिया जाता है उक्ति की सीधी व्याख्या की जाती है। व्याख्या करते समय कुछ बातों पर जरूर ध्यान देना होगा।

जैसे– भाव क्या है उसे समझ लेने के बाद उसे स्पष्ट किया जाए।

पल्लवन की विशेषताएँ –

- पल्लवन के वाक्य छोटे और सरल हों।
- वाक्य सुस्पष्ट हों, उनके दो–दो अर्थ न निकलें।
- व्याख्या समझा कर या उदाहरण, दृष्टांत, कहानी के किस्से आदि के द्वारा सूत्र वाक्य को स्पष्ट किया जा सकता है।

- तुलनात्मक अध्ययन द्वारा भी पल्लवन किया जा सकता है किसी भी प्रकार की पद्धति अपनायी जाए पर लेखक के विचारों को प्रस्तुत करना ही उद्देश्य हो।
- पल्लवन और निबंध के अंतर को समझें और दिए गए सूत्र वाक्य में निहित भाव को स्पष्ट किया जाए। यदि पल्लवन है तो उसमें दिए गए शब्दों का विश्लेषण करना निबंध कहा जाएगा।

जैसे – "साहित्य का आधार है जीवन" इस वाक्य का पल्लवन करते समय यदि साहित्य की परिभाषा बताएंगे तो वह निबंध कहा जाएगा। यदि आधार में छिपे हुए भाव को प्रस्तुत करेंगे तो वह पल्लवन कहा जाएगा।

- पल्लवन का लेखन अन्य पुरूष में किया जाता है।
- वर्तमान काल और भविष्यकाल का प्रयोग पल्लवन में नहीं किया जाता।
- छोटे–छोटे वाक्य या वाक्य खंडों में छिपे हुए विचारों को खोलना, फैलाना, विस्तार कर देना ही पल्लवन है।
- पल्लवन में विचारों एवं अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता का ध्यान रखा जाता हैं।
- पल्लवन का सहज रूप ही सभी को आकर्षित कर सकता है।
- स्पष्टता पल्लवन की आवश्यकता होती है।
- कल्पनाशीलता– पल्लवन भाव विस्तार के लिए लेखक द्वारा विशेष सीमा तक कल्पना का उपयोग करना श्रेयस्कर होता है।
- सर्जनात्मकता– पल्लवन में लेखक को सृजन का अवसर और संतोष भी मिलता है।
- प्रवाहमयता– पल्लवन को पढ़ते समय बीच–बीच में अवरोध का अनुभव न हो अर्थात् भाषा प्रवाहमय होनी चाहिए।
- शब्द–चयन– पल्लवन में शब्द–चयन का अधिक महत्व है। तर्कसंगत शब्दों का प्रयोग, छोटे–छोटे वाक्य जो क्रमबद्ध रूप में भाव स्पष्ट कर सकें। इससे पल्लवन रोचक एवं उत्सुकता निर्माण कर सकता है।
- पल्लवन लेखक को भाषा का ज्ञान एवं भाषा विस्तार क्षमता, विश्लेषण, संश्लेषण, तर्कसंगति एवं अभिव्यक्ति कौशल की आवश्यकता होती है।

13.5.1 पल्लवन के विषय : (कुछ प्रारूप)

आधुनिक युग में पल्लवन एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है प्रत्येक लेखक की अपनी निजी शैली होती है। उसके भाव, भाषा और विचार उसके व्यक्तित्व के अनुरूप होते हैं। व्यक्तित्व के अनुरूप ही वह अपनी भाषा और साहित्य के अन्य उपकरणों के स्वरूप का निर्धारण करता है। हिंदी में कई महान साहित्यकार हैं जिन्होंने छोटे–छोटे वाक्यों को गंभीर भाव और विचारों में बांध दिया है। जैसे– सत्यमेव जयते, मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे, स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, जहाँ चाह वहाँ राह, जैसी करनी वैसी भरनी, परहित सरिस धरम नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई, आदि।

इन वाक्यों को समझने के लिए पल्लवन की आवश्यकता है 'पल्लवन या विस्तार के द्वारा ऐसे वाक्य को समझा जा सकता है' इन उदाहरणों को सूत्रवाक्य कहा जाता है। इन वाक्यों के विश्लेषण से ही पूरा संदेश समझ सकते हैं। ये सूत्रवाक्य, उक्ति या

सूक्ति के भाव समझने के लिए पहले मालूम करें कि ये वाक्य कहाँ और किसने कहा है, किस संदर्भ में कहा और इसकी भूमिका क्या है?

उदाहरण— 'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' इस उक्ति का पल्लवन करते समय स्वाधीन होने का महत्व क्या है? यह बताने के लिए निजी अनुभव काम आएगा कि किसी की दया पर आश्रित रहना स्वाधीनता नहीं है बल्कि यह हमारा अधिकार है।

पल्लवन के संदर्भ में कहा जाता है कि—

- किसी निर्धारित विषय— सूत्रवाक्य, उक्ति, सूक्ति को उदाहरण, तर्क आदि से पुष्ट करते हुए प्रवाहमयी, सहज अभिव्यक्ति, शैली में मौलिक, सारगर्भित विस्तार देना पल्लवन है। इसे विस्तारण, भाव—विस्तारण, भाव—पल्लवन भी कहते हैं। सुगंठित विचार या भाव को विस्तार दे दिया जाता है जिससे सामान्य पाठक आसानी से उसे समझ सकते हैं। ये वाक्य गागर में सागर की तरह होते हैं। अतः उनके भावों या विचारों को अलग—अलग करके, उनकी व्याख्या करके उन्हें विस्तार पूर्वक समझाया जाता है।

भाव पल्लवन के लिए कुछ विषय—

- परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
- परिश्रम सफलता की कुंजी है।
- नर और नारी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं।
- मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।

1. "मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।"

मनुष्य जीवन में पारस्परिक सहयोग का महत्व रहा है। इस सद्भावना के अनेक रूप हैं। कहीं स्वार्थपरता, कहीं धूर्तता, कूटनीति के कारण यह बदले की भावना में बदल जाता है। सद्भावना ही उपकार का दूसरा नाम है। बदले की भावना का त्याग करना दूसरों के लिए परोपकार का भाव कहलाता है। आज के युग में परोपकार मानव का सबसे बड़ा गुण है। दूसरों के लिए अपने स्वार्थ का त्याग करना ही परोपकार है। अतः प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है कि मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे। इस उक्ति में मानवता का लक्ष्य दर्शाया गया है।

उक्ति का तात्पर्य है कि जो दूसरों के उपकार के लिए तत्पर रहता है वही वास्तव में मनुष्य है। सच्चा मनुष्य वही है जो जन—कल्याण के लिए अपने प्राणों को न्योछावर करता है वही मानवीय गुणों से विभूषित होता है। उसका जीना—मरना जनहित के लिए ही होता है।

परोपकारी मनुष्य में मानवीय गुणों का समावेश हो जाता है। प्राचीन काल में शिबि नामक राजा था, परोपकारी था। व्रत अनुष्ठान में उसकी निष्ठा थी। एक दिन उसकी गोद में एक घायल, डरा हुआ कबूतर आकर बैठ गया। तत्काल एक बाज वहाँ पहुंचा। राजा शिबि से कबूतर मांगने लगा। राजा ने शरणागत कबूतर को देने से इन्कार किया। बाज ने कहा कि आप धर्मात्मा हैं, कबूतर मेरा भोजन है। मुझे भूख लगी है। कई दिनों से भूखा हूँ। यदि आप कबूतर नहीं देंगे तो मैं यहीं प्राण त्याग दूंगा। राजा ने उत्तर दिया कि हे बाज! यह डरा हुआ पक्षी मेरी शरण में आया है। इसकी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है।

टिप्पणी

तुम्हारी भूख मिटाने का कोई दूसरा उपाय बताओ। बाज ने तुरंत उत्तर दिया कि महाराज! यदि आप इस कबूतर के बराबर अपने शरीर का मांस दें, तो मेरी क्षुधा मिट सकती है। इस बात से राजा राजी हो गए। कबूतर को तराजू के पलड़े में रखकर अपने शरीर से मांस काटकर रखते गए किंतु कबूतर के वजन को पूरा न कर सके। फिर राजा स्वयं तराजू पर चढ़ गए तभी तराजू भार से बराबर हो सका। चंद्र और अग्नि ने जो कबूतर और बाज के रूप में आए थे, उन्होंने यह देखा। वे राजा शिबि की सराहना करने लगे और राजा को वरदान देकर अन्तर्धान हो गए। इस तरह धर्मनिष्ठ राजा शिबि शरणागत कबूतर की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर भी कर सकते हैं। ऐसे लोग देवता समान समझे जाते हैं।

इस प्रकार के उदाहरणों से हमारे ग्रंथ भरे पड़े हैं। मनुष्य वही है जो दूसरों का पेट भरता है, दूसरों के दुःखों का निवारण करता है। राष्ट्रपिता गांधी, जननायक लाल बहादुर शास्त्री आदि महापुरुषों ने जनहित के लिए सुख–सुविधाओं का त्याग किया। इसलिए वे महापुरुष कहलाए। महर्षि दयानंद और महर्षि श्रद्धानंद आदि महात्माओं ने जन–कल्याण के लिए आत्म–बलिदान दिया। ऐसे महापुरुषों में मानवता के दर्शन होते हैं।

स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों और शहीदों में त्याग, स्वाभिमान और जनकल्याण की भावना का प्रबल प्रभाव था। इस तरह के महान व्यक्तित्व का आज भी अभाव नहीं है जो मनुष्य के लिए जीते–मरते हैं। बलिदान देने वाले ऐसे कार्यों की एक परंपरा बन जाती है जिससे समाज के लोग प्रभावित होते रहते हैं। आपातकाल में भी ऐसे लोग तत्पर रहते हैं। समाज का विकास होता है। मानवता को परखने की यह वास्तविक कसौटी है।

मानव जीवन की सार्थकता ही परोपकार में निहित है और मानवीय गुणों का इसमें समावेश रहता है। अतः मैथिलीशरण गुप्त जी की यह उक्ति "मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए मरे।" उचित एवं सत्य है। मनुष्य के लिए, दूसरों के हित में मरना–जीना ही मानवता है।

2. "परिश्रम ही सफलता की कुंजी है।"

मनुष्य जीवन में परिश्रम आवश्यक है। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। इससे ही मनुष्य बहुत बड़ा बन सकता है। परिश्रम से सभी कार्य संपन्न होते हैं। यदि मनुष्य कठिन परिश्रम एवं दृढ़ संकल्प करके कोई भी काम करता है तो वह सफलता प्राप्त कर सकता है।

प्राचीन युग से आधुनिक युग तक ग्राम एवं नगरों का विकास, अनेक नए–नए उपकरणों एवं यंत्रों का निर्माण परिश्रम से संभव हुआ है। परिश्रम से मनुष्य अपना भाग्य बदल सकता है। अनेक अर्थशास्त्रियों ने परिश्रम को श्रेष्ठ माना है। क्योंकि इससे ही वस्तुओं का निर्माण हो सका है।

आज मनुष्य ने परिश्रम के सहारे ही संसार पर स्वर्ग उतारने की कल्पना को साकार किया है। अनेक आविष्कार परिश्रम के ही परिणाम हैं। मनुष्य ने मनोरंजन के लिए दूरदर्शन, सिनेमा, मोबाइल, कम्प्यूटर एवं अन्य साधनों का निर्माण किया है। परिश्रमी मनुष्य कभी भूखा नहीं रह सकता। अपने बलबूते पर वह परिश्रम से सब कुछ पा सकता है।

- **परिश्रम का महत्व**– मनुष्य जीवन की सफलता की कुंजी परिश्रम ही है। आज के युग में जितने भी बड़े उद्योगपति, राजनेता, अभिनेता हैं सभी कठोर परिश्रम से ही सफल हुए हैं। परिश्रम एवं रात–दिन की मेहनत का ही यह परिणाम है। समूचे संसार में वे प्रसिद्ध है, बड़ी–बड़ी उपलब्धियों को वे प्राप्त कर रहे हैं।

  किसी काम को न छोटा समझें न कठिन। यदि परिश्रम करने की क्षमता है तो कठिन से कठिन काम आसानी से हो सकता है। अतः परिश्रम का मानव जीवन में बहुत महत्व है।
- **मानव जीवन का विकास**– परिश्रम से मानव जीवन का विकास संभव है। प्राचीन काल से आज तक परिश्रम से ही मनुष्य स्वावलंबी बनकर जीवन जी रहा है। महान वैज्ञानिक डार्विन के सिद्धांत के अनुसार बंदर जैसा जीवन जीने वाला मनुष्य परिश्रम से अपने पैरों पर चलने लगा। गुफाओं, जंगलों से निकलकर खेती करने लगा, घर बनाने लगा, आवश्यकतानुसार वस्तुओं का निर्माण करने लगा। धीरे–धीरे शहरों में बस गया। यह सब परिश्रम से ही हो सका है।
- **परिश्रम की उपयोगिता**– जीवन के हर क्षेत्र में परिश्रम उपयोगी है। परिश्रम से ही चित्रकार, मूर्तिकार बने हैं। वे कड़ी धूप में कड़ी मेहनत का फल संसार को देते हैं। म. गांधी परिश्रम को ही सच्चा जीवन मानते थे। व्यापारी, उद्योगपति परिश्रम से ही नाम कमा रहे हैं। रात–दिन के परिश्रम से तुलसीदास ने रामचरितमानस की तथा संस्कृत कवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुंतलम' की रचना की है।
- **उपसंहार**– परिश्रम सफलता की कुंजी है। अतः निरंतर परिश्रम करें। सफलता के पीछे परिश्रम ही होता है। खुद प्रेरित होकर दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं।

1. जहाँ चाह वहाँ राह

प्रबल इच्छा शक्ति से मनुष्य अपने लक्ष्य के पथ पर सरलता से पहुंच सकता है किंतु उसके लिए आवश्यकता होती है परिश्रम की। जो मनुष्य किसी भी तरह से परिस्थितियों का गुलाम बनकर नहीं रहता, मेहनत–परिश्रम से मुंह नहीं मोड़ता और कठिनाइयों का सामना करना जानता है उसे ही चाह या इच्छा का अधिकार होता है।

अपनी इच्छा की पूर्णता के लिए उसे शारीरिक ही नहीं बौद्धिक क्षमता की भी आवश्यकता होती है। प्रकृति की ओर देखने से पता चलता है कि नदियां कभी उसके रास्ते में बाधा आती है तो उन पर पुल बनते हैं। ऋतुओं से होने वाली परेशानियां– विशेष रूप से गर्मी में मनुष्य ने पंखों का निर्माण किया। विकास की गति को बढ़ावा देने के लिए पानी में जलयान तो आकाश में हवाई जहाज को बनाया। बीमारियों का सामना करने के लिए अस्पतालों का निर्माण किया। आने वाली कठिन स्थितियों के आगे वह झुका नहीं, राह खोजकर वह अपनी मंजिल तक पहुंच गया।

मनुष्य के अंदर जो चाह है, वह उसे प्रेरित करती है। उसके जोशपूर्ण जीवन का सच यही है कि कड़ी मेहनत और परिश्रम से वह अपने जीवन का रास्ता तैयार करता है। हाथ तभी मजबूत होंगे जब उसके हृदय में कार्य करने की प्रबल इच्छा पैदा होगी। चाह की ज्योति के आलोक में वह सारी कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए लक्ष्य तक

टिप्पणी

पहुँचता है। दृढ़ संकल्प मनुष्य को शांत बैठने नहीं देता। अनेक साहित्यिक, लेखक, कलाकार, संशोधक विषम परिस्थितियों से जूझते रहे। लेखन की चाह के कारण प्रेमचंद्र जी को गरीबी रोक न पाई। अल्बर्ट आइस्टाइन अपनी खोज तक पहुंच गए। प्रकाश–विद्युत् उत्सर्जन की खोज करके सिद्धांत प्रस्तुत किया।

चाह ऐसी शक्ति है जो जीवन के मजबूत संकल्प को प्रकट करती है, जो निश्चित रूप से समस्याओं पर काबू पाकर निर्धारित लक्ष्य तक पहुंचाने में मदद करती है। सफलता पाने का यह एक रास्ता है। कमजोर व्यक्ति अपने भाग्य को कोसता है। इच्छा शक्ति के बिना वह कुछ कार्य नहीं कर सकता। "प्यासा कौआ" कहानी से यही सीख मिलती है। प्यास बुझाने के लिए कौवे को छोटे–छोटे कंकड़ों से घट भरना पड़ा, मेहनत करनी पड़ी। प्यास बुझाने की इच्छा ने कठिनाइयों को हराकर सफलता प्राप्त की तभी अंतिम लक्ष्य तक पहुंचा कौआ प्यास बुझा सका। म. गांधी, स्वामी विवेकानंद आदि महान पुरुषों ने बड़े संकल्प किए थे, वे सक्षम थे, प्रबल इच्छा शक्ति से कठिनाइयों का सामना करके वे अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुंच सके।

जीवन में अगर कुछ प्राप्त करना है चाह जरूर करें।

चाह उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है और कार्य को जीवन में छोटे–छोटे कार्यों से गति देनी चाहिए। गति के लिए आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की तभी मनुष्य अंतिम लक्ष्य साध्य कर सकता है। जहां चाह वहाँ राह तभी संभव है जब मनुष्य अपनी प्रबल इच्छा शक्ति के आधार पर स्वयं अपना रास्ता कठिनाइयों को दूर करके बनाकर चलता रहे, तभी वह सफल बन सकेगा।

4. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

दुनिया में वही व्यक्ति विजयी होता है जिसने अपने मन को जीत लिया है। जिसने मन पर काबू नहीं पाया, वह अपनी इंद्रियों का दास बन जाता है। सफलता या जीत से वह काफी दूर हो जाता है। कुछ लोग हिम्मत हार जाते हैं, उनके मन में डर की भावना पैदा होने से उन्हें जीत का मार्ग बहुत कठिन लगता है। मन की कमजोरी के कारण दुर्बलता उन्हें घेर लेती है। जीवन में हर कदम उठाते हुए उनका दम घुटने लगता है। अनेक लोगों के बताने पर भी वे कुछ कोशिश नहीं करते।

समय और परिस्थितियों को अपने वश में कर लेने से जीवन का हर कार्य भले ही वह कितना भी मुश्किल हो – सरल लगता है। आत्मिक शक्ति के कारण मुश्किल कार्य को बड़ी आसानी से पार लगा देता है तो कमजोर मनुष्य को आसान काम भी मुश्किल लगता है। आसान काम करने में भी घबराता है।

मनुष्य का मन बड़ा चंचल होता है। उसमें भले–बुरे, सकारात्मक–नकारात्मक विचारों का चक्र चलता रहता है। अतः मन पर काबू रखकर अच्छे कार्य में बड़ी लगन से, कार्य साध्य किया जा सकता है। मन पर काबू न रखने से व्यर्थ ही तनाव बढ़ता है, व्यक्ति चिड़चिड़ा बन जाता है। व्यर्थ की सोच में वह अनमोल समय नष्ट करता है। इसीलिए अच्छे कार्यों में मन लगाने से, ऊर्जा का निर्माण होता है। संचित ऊर्जा से मन की शक्ति बढ़ती है और वह हार नहीं मानता।

जीवन में वही मनुष्य विजयी होता है जिसने अपने मन को जीत लिया है। मन में असीम शक्ति है। उस शक्ति को व्यर्थ बातचीत, सोच–विचार और बेकार काम करने में बरबाद ना करें। दूसरों की कमजोरियों, गलतियों की ओर ध्यान न दें। अपने मन

के अंदर झांकना है कि अपनी कमजोरियों को दूर करके अपनी शक्ति को कैसे बढ़ाएं जिससे हम जीवन में सफल होंगे। मन की शक्ति पर ही मनुष्य के जीवन में हार–जीत निर्भर है। अतः अच्छी सोच, अच्छे विचारों से मन की शक्ति बढ़कर सफलता की ओर प्रेरित कर सकती है।

टिप्पणी

13.5.2 पल्लवन विषयक कुछ विषय सूत्र

- दूर के ढोल सुहावने
- संतोष ही सबसे बड़ा सुख है।
- खाली दिमाग शैतान का घर
- अहिंसा परमो धर्मः।
- विद्या विनयेन् शोभते।
- सच्चरित्र सबसे बड़ा आभूषण है।
- धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।
- जिसकी लाठी उसकी भैंस
- चंदन विष व्यापै नहीं, लपटे रहत भुजंग।
- यथा राजा तथा प्रजा
- सभी जो चमकता है, सोना नहीं होता
- सत्य की ही जीत होती है।
- धन ही सब दुःखों का मूल है।
- अधजल गगरी छलकत जाय।
- अंत भला तो सब भला
- जिन ढूंढा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ
- आम के आम गुठलियों के दाम
- आसमान से गिरा खजूर में अटका
- खोदा पहाड़ निकली चुहिया
- चिराग तले अंधेरा
- पराधीन सपनेहुँ सुख नाही
- बोए पेड़ बबूल का आम कहां से होय
- सौ सुनार की एक लुहार की

अपनी प्रगति जांचिए

9. पल्लवन का अर्थ क्या है?

(क) भाव विकास (ख) अभिव्यक्ति

(ग) लोकोक्ति (घ) अनुच्छेद करना

टिप्पणी

13.6 अपनी प्रगति जांचिए प्रश्नों के उत्तर

1.	(ख)	2.	(क)	3.	(घ)
4.	(ग)	5.	(ख)	6.	(ग)
7.	(क)	8.	(घ)	9.	(क)

13.7 सारांश

गद्य की विविध विधाओं की रचना अर्थात लेखन प्रक्रिया की जानकारी, कहानी, निबंध, पत्र, पल्लवन आदि के लिए छात्रों को प्रेरित करना, लेखन में रुचि निर्माण करना हिंदी भाषा शिक्षण का अहम बिंदु है।

कहना, सुनना, सुनकर समझना, समझाना और लेखन करवाना अध्यापक के कार्य हैं। भाषा में शुद्धता का ध्यान रखा जाता है और कथा, पत्र निबंधादि के लेखन में भी शुद्धता का ध्यान रखना पड़ता है। इन विधाओं का महत्व, स्वरूप, विशेषताएं, प्रकार और आवश्यकतानुसार कुछ नमूने प्रस्तुत करने होते हैं। प्रारूप की ओर ध्यान देने से लेखन या रचना विधि सहज–सुलभ हो जाती है। इसके लिए केवल प्रयास करने की आवश्यकता होती है।

13.8 मुख्य शब्दावली

- **साक्षात्कार** : सामने आना, प्रत्यक्ष भेंट।
- **दस्तावेज** : महत्वपूर्ण कागजात (डाक्यूमेंट)।
- **उत्प्रेरक** : प्रेरित करने वाला।

13.9 स्व–मूल्यांकन प्रश्न एवं अभ्यास

लघु–उत्तरीय प्रश्न

1. कहानी रचना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
2. निबंध लेखन की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

दीर्घ–उत्तरीय प्रश्न

1. अनौपचारिक पत्र (विवाह हेतु अवकाश के लिए पत्र) को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. औपचारिक पत्र का नमूना प्रस्तुत कीजिए (बिजली समस्या हेतु पत्र) पल्लवन को परिभाषित करते हुए उसके विषयों का विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

13.10 सहायक पाठ्य सामग्री

1. हिंदी साहित्य की युगीन प्रवृत्तियाँ– डॉ. नामदेव उतकर
2. कहानी की रचना प्रक्रिया– परमानंद श्रीवास्तव
3. कहानी का रचना विधान– जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।